श्री भ० यशःकीर्ति दि० जैन सरस्वती भवन ऋषभदेव का प्रथम पुष्प

श्री प्राचीन पूजन संग्रह

रचयिता—विविध दिगम्बर जैनाचार्य

सम्पादक:-

जैनरत्न धर्मभूषण प्रतिष्ठाचार्य

पं. रामचन्द्र जैन

प्रकाशक:-

समस्त दि. जैन नरसिंहपुरा समाज गुजरात प्रान्त

वीर नि० सं० २४८३

कार्तिक शु० १ रविवार

प्रथमावृत्ति

५००

मूल्य

जिन पूजन

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
१	जलयात्राविधि	१
२	सकली करण विधान	६
३	समुच्चयपंच कल्याणक	१
४	लघु अभिषेक पाठ	३
५	ज्येष्ठ जिनवर पूजा	१७
६	देव पूजा	२०
७	शास्त्र पूजा	२७
८	गुरू पूजा	३१
९	सिद्ध पूजा	३४
१०	विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा	४०
११	शीतल नाथ पूजा	४३
१२	शांतिनाथ पूजा	४६
१	कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा	४८
१४	ऋषि मण्डल पूजा	५४
१५	श्री सम्मेद शिखर पूजा	५७
१६	षोडश कारण भावना पूजा	६०
१७	दस लक्षणधर्म पूजा	७०
१८	पंच मेरु पूजा (बड़)	८७
१९	पुष्पांजली पूजा	१११
२०	अष्टान्हिका पूजा	११५
२१	नन्दीश्वर द्वीप	११९
२२	रत्नत्रय पूजा	१३२
२३	सप्त ऋषि पूजा	१५४
२४	अनन्त व्रत पूजा	१६१
२५	महाभिषेक पाठ	२०६
२६	क्षेत्र पाल पूजा	२४७
२७	भैरवाष्टक स्तोत्र	२५१
२८	पद्मावती देवी पूजा	२५३
२९	पंचपर मेष्ठी जयमाला	२५८
३०	शांतिपाठ	२६०
३१	ऋषभनाथ की आरती	२६२
३२	विसर्जन पाठ	२६३
३३	लघु होम (यज्ञ)	२६४

प्रस्तावना

देवाधि देव चरणे, परिचरणं सर्व दुःख निर्हरणम् ।
काम दुहि काम दाहिनी, परिचिनुयाद्दाहतो नित्यम् ॥

जिनेन्द्र भगवान की पूजन करना प्रत्येक श्रावक का दैनिक कर्तव्य है। जैन समाज को यह बताने की आवश्यता नहीं है कि जिनेन्द्र पूजा का क्या महत्व है। पूजन के द्वारा परिणामों की निर्मलता बढ़ती है एवं पाप दूर होते हैं। श्रावक के षटकर्म "देव पूजा गुरुपास्ति" में भी देव पूजा को प्रथम स्थान दिया गया है, अतः जिनेन्द्र भगवान पूजन करना प्रत्येक श्रावक का प्रधान दैनिक कर्तव्य है। पूजन करने का प्रमुख साधन पूजन की पुस्तकें ही हैं। जैन समाज में पूजन की पुस्तकों की कमी नहीं है। परन्तु प्रस्तुत संग्रह का प्रकाशन कुछ विशेष कारणों को लेकर ही किया गया है। गुजरात प्रान्त में विशेष कर नरसिंहपुरा गद्दी के विद्वान् भट्टारकों द्वारा रचित प्राचीन संस्कृत तथा प्राकृत भाषा की पूजाएँ पढ़ाने की परिपाटी है परन्तु अब तक इन पूजाओं का प्रकाशन नहीं हुआ था।

जब पूज्यपाद भट्टारक श्री १०८ श्री यशकीर्तिजी महाराज का चातुर्मास जहेर में था, श्री संघ नरसिंहपुरा केलवणी मण्डल के चन्दे के लिये श्रीमान् जाति भूषण सेठ चन्दुलाल कस्तूरचन्द शाह का आगमन हुआ था मन्दिरजी में हस्त-लिखित गुटकों से पूजन पढ़ाई जारही थी। पूजाएँ लिखित होने के कारण पठन-पाठन में कठिनाई होना एवं हस्त-लिखित प्राचीन गुटकों के जीर्ण-शीर्ण हो जाने के कारण श्रीमान् सेठ चन्दुलाल कस्तूरचन्द शाह ने कहा कि उक्त पूजाएँ छप जायं तो इनका पठन-पाठन सर्व सुलभ हो जाय एवं प्राचीन पूजन साहित्य की सुरक्षा भी हो जाय।

पूज्यपाद भट्टारक यशकीर्तिजी महाराज तथा हमारी भी बहुत समय से अभिलाषा थी कि यह संस्कृत पूजन साहित्य जो की हमारे पूर्वज आचार्योंने अपने स्वाध्ययन के समय में से समय बचाकर रचा है, संग्रहीत कर प्रकाशित करें ताकि श्रद्धालु भक्तगण भक्ति रस से परिपूर्ण इन रचनाओं से लाभ उठावें। एवं गुजरात प्रांत की समाज की काफी मांग थी। इस लिये हमने खास तौर से पं० चन्दनलालजी जैन साहित्य रत्न ऋषभदेव को भेजकर जहेर अहमदाबाद कलोल नरोड़ा आमोद सूरत शास्त्र भंडारों एवं भ० यशकीर्ति सरस्वती भवन ऋषभदेव से पूजाओं की प्रति लिपि करवाई। प्रस्तुत संग्रह के सभी पाठ सोलहवीं सत्रहवीं सदी के विद्वान भट्टारकों तथा ब्रह्मचारियों द्वारा रचित हैं। पुरानी हस्त लिखित प्रतियां बहुत अशुद्ध रुपमें प्राप्त हुई थी। प्रस्तुत पाठक संशोधनमें- श्रीमान् विद्वद्वर्य पं० पन्नालालजी पार्श्वनाथजी शास्त्री शोलापुर विद्यालंकार पं० इन्द्रलालजी शास्त्री जयपुर, पं० महेन्द्रकुमारजी महेश ऋषभदेव का सहयोग रहा है। साथ ही मेरे अनन्य सहयोगी पं० चन्दनलालजी साहित्य रत्न ऋषभदेव का सम्पादन तथा संशोधन में महत्वपूर्ण योग रहा है। एवं पं०गुलजारीलालजी चौधरी शास्त्री प्र. शिक्षण संस्था, उदयपुर ने प्रूफ संशोधन में अच्छा सहयोग दिया है। इसके लिये उक्त सभी विद्वानों का अत्यन्त आभारी हूँ। श्रीमान् मान्यवर जाति भूषण श्रीमंत सेठ चंदुलाल कस्तूरचन्द शाह कलोल ने प्रति लिपि कराई का व्यय प्रदानकर इस कार्य के लिये मुझे उत्साहित किया इसके लिये उनकाभी पूर्ण आभारी हूँ। प्रस्तुत संग्रह से साधारण पढ़ालिया व्यक्ति भी लाभ उठा सके इसके लिये पूजन विधान में

❀ १ ब्रह्मजिनदास ❀

ब्रह्म जिनदास का समय विक्रम की सोलहवीं शताब्दी का अंतिमभाग रहा है। आप मूल संघी भ० सकलकीर्ति के शिष्य भ० भुवनकीर्ति के शिष्य थे। इनकी हिन्दीभाषा की पद्यमय रचनाओं में उद्यापन पुराण, व्रतकथा, तथा पूजाओं की कई कृतियां विद्यमान हैं लेकिन उनमें से मामूली पूजाएं तथा व्रत कथाएं ही प्रकाश में आई हैं। उन्होंने वि० सं० १५७५ में हरिवंश पुराण की पद्यमय रचना कीथी आपकी रचनाओं की संख्या करीब ५० से कम नहीं होगी। इस संग्रह में आपकी कृति ज्येष्ठ जिनवर पूजा, प्रकाशित की गई है।

॥ २ ब्रह्म कृष्णदास ॥

भट्टारक संस्थान में भट्टारकों के शिष्यों में से सुयोग्य शिष्य अथवा भावी भट्टारक को आचार्य विशेषण से सम्बोधित करने की प्रथाथा एवं तत्पश्चात् के शिष्यों को ब्रह्म (ब्रह्मचारी) इस विशेषण से सबोधित किया जाताथा ब्र० कृष्णदासजी काष्ठा संघी दसा नरसिंहपुरा समाज का गद्दी के भ. त्रिभुवन कीर्ति के पट्टस्थ भ. रत्न भूषण के शिष्यों मेंसे एक थे आप लोहारिया के निवासी श्रेष्ठी हर्ष के पुत्र थे आपकी माता का नाम वीरिका देवी था विक्रम सं० १६८१ में मुनि सुव्रत पुराण की रचना की थी, आपका समय विक्रम सं० १६४८ से १६८५ के करीब है। आपने पं० अभ्रराज (नेवराज) से शिक्षण प्राप्त किया था ऐसा ज्ञात होता है जैसाकि आपने अपनी ज्येष्ठ जिनवर जयमाला में उल्लेख किया है कि "पंडित राज अभ्रवच कलिया..। ये पंडित अभ्रराज भी इन्हीं ब्र० कृष्ण के साथियों में से थे और संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे इनकी रचि। एक कथा संग्रह भ० सुरेन्द्र-कीर्तिजी सोजित्रा के सरस्वती भवन में है जोकि संस्कृत में उत्तम रचना है ब्र० कृष्ण की यह जयमाल गुजरात, वागड़, मेवाड़ व मालवा प्रांतमें अत्यधिक प्रसिद्ध है। पूजन के अलावा अभिषेक के समय

में इस जयमाला का बहुत अधिक उपयोग होता है, इसका खास कारण इसकी भक्तिरस पूर्ण भाषा एवं सरल राग है।

॥ ३ भट्टारक राजकीर्ति ॥

आप ईडर की काष्ठासंघी गादी के भट्टारक थे आपका समय विक्रम सं० १६८१ से १६९७ तक का है इनके गुरु भ० चन्द्रकीर्ति थे जिन्होंने संस्कृत में कई ग्रंथ लिखे हैं आपके शिष्य भ० लक्ष्मी सेन थे। भ० राजकीर्ति बहुत अल्प समय में ही स्वर्गवासी हो गये थे अतः वे विशेष कुछ भी नहीं कर पाये थे। आपकी कृति देवशास्त्र गुरु पूजा इस संग्रह में है।

॥ ४ भट्टारक उदयसेन ॥

आप भी काष्ठा संघी नरसिंहपुरा समाज की सूरत की गद्दी के भट्टारक थे आपका समय विक्रम संवत १५९० से १६१५ तक का है आप भ० यशकीर्ति के शिष्य थे जिन्होंने कि अंबास तथा ऋषभदेव (केशरियाजी) में प्रतिष्ठाएं की थीं। आप भी संस्कृत भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। आपने भी कई प्रतिष्ठाएं की थी आपके शिष्य भ० त्रिभुवन कीर्ति थे। इस संग्रह में आपकी शास्त्र पूजा प्रकाशित हुई है।

५ कवि जीवनलाल ॥

कवि जीवनलाल के पिता का नाम वासुदेव था, जैसा कि आपने स्वयं गुरु जयमाला में लिखा है "श्री वासुदेव तनयो कवि जीवनोऽहं,, आपका समय विक्रम सं० १७९५ से १८०० तक का है आप के जीवन चरित्र का निश्चित हाल मालुम नहीं हो सका है फिरभी इतना अवश्य कहा जा सकता है कि आप गुजरात प्रान्त के निवासी थे एवं आपकी जाति व्यास (बारोठ) है। आपकी गुरु जयमाला के अलावा और कोई कृति प्राप्त नहीं हुई है।

॥ ६ भट्टारक विश्वसेन ॥

काष्ठा संघी सूरत की गद्दी के भट्टारक भुवन कीर्ति के शिष्य भ० विश्वसेन हुए हैं आपका समय १७२५ से १७५० तक का है आपके शिष्य भ० महीचन्द्र थे तथा महीचन्द्र के शिष्य भ० सुमतिकीर्ति थे। जो कि अत्यधिक प्रसिद्ध हुए हैं भ० सुमतिकीर्ति उद्भव विद्वान और परमतवादियों का मान मर्दन करने वाले थे। भ० विश्वसेन की सिद्ध जयमाला के अलावा और कोई कृति उपलब्ध नहीं हुई है एक भ० विश्वसेन ईडर की काष्ठा संघी गद्दी पर भी हुवे हैं जिन का समय विक्रम सं० १५६० से ८५ तक का है जिन्होंने पद्मावती क्षेत्र पाल पूजा की रचना की है।

॥ ७ ब्रह्म चन्द्रसागर ॥

काष्ठा संघी सूरत की गद्दी के भ० जयकीर्ति के शिष्य थे। आपका समय १७०० से १७२० तक का है आपने भाषा में कई पूजाएं तथा रास आदि की रचना की है। आपकी रचित शीतलनाथ पूजा इस संग्रह में छपी है।

॥ ८ भट्टारक चन्द्रकीर्ति ॥

ईडर की काष्ठासंघी गद्दी के सुप्रसिद्ध भ० श्री भूषण के शिष्य भ० चन्द्रकीर्ति थे। आप हिन्दी के साथ २ संस्कृत तथा प्राकृतिक भाषा के भी अच्छे विद्वान थे। आपने संस्कृत में आदिपुराण पार्श्वनाथ पुराण उपासकाध्ययन श्रावकाचार आदि अच्छे २ ग्रंथों की रचना की है ये ग्रंथ भ० यशकीर्ति सरस्वती भवन ऋषभदेव में उपलब्ध हुये हैं इनकी टीका होने की खास आवश्यकता है। बड़े शास्त्रों के अलावा कई बड़ी २ पूजाएं उद्यापनादी के भी आपने रचना की है। दुखः है कि अभी तक आपकी कोई कृति प्रकाश में नहीं आई है। आपकी रचित पंचमेरु पूजा तथा शांतिनाथ पूजा इस संग्रह में प्रकाशित की गई है।

॥ ९ ब्रह्म ज्ञान सागर ॥

ईडर की काष्ठा संघी गद्दी के भ० श्री भूषण के शिष्य तथा भ० चंद्रकीर्ति के साथी ब्र० ज्ञान सागर थे। इनका समय विक्रम संवत १६६० के आस पास का है। ये संस्कृत हिन्दी तथा प्राकृत भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। इनके बनाये हुवे पूजाएं व्रत कथाएं व्याकरण पुराण तथा स्तवनादि उपलब्ध हैं। दशलक्षण और सोलह कारण की संस्कृत पूजाओं की रचना आपने ही की है आपके भाषा के सवैये भी प्रकाशित हो चुके हैं जो कि प्रसिद्ध हो हैं।

॥ १० भट्टारक इन्द्र भूषण ॥

आपका समय विक्रम संवत १७०८ के आस पास का है आप ईडर की काष्ठासंघी गद्दी के भ० लक्ष्मीसेन के शिष्य थे आपने भी कई प्रतिष्ठाएं करवाई हैं। आपके शिष्य भ० सुरेन्द्रकीर्ति थे जो कि अच्छे विद्वान और उस समय के प्रसिद्ध भट्टारक थे ऋषभदेव (केशरियाजी) में अधिकांश प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा आपने ही कराई है। आपके शिष्य कवि गोविन्द थे जोकि अच्छे विद्वान थे इन्होंने भी पद्मावती पूजा आदि कई पूजाओं की रचना की है।

* भट्टारक हेमचन्द्र *

दिगम्बर सम्प्रदाय के काष्ठासंघ में रामसेनाचार्य की शिष्य परंपरा में अनेकों भट्टारक हुए हैं। जिनमें से १०···वें पट्ट पर भट्टारक हेमचन्द्र हुए हैं। पवित्र तीर्थ भूमि केशरियाजी के पास स्थित टोंकर गांव को आपका जन्म स्थान बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आप बीसा नरसिंहपुरा जाति में उत्पन्न हुए थे। वि० सं० १८४५ के करीब भ० नेमीसेन ने आपको शिष्य बनाया था। भट्टारक पद पर आसीन होने के बाद आपने अनेक मंदिरों की प्रतिष्ठाएं कराई, तीर्थों की यात्रा की एवं समाज में धर्म प्रचार किया। आपके जीवन में दो महत्वपूर्ण उल्लेखनीय कार्य हुए हैं जो कि भट्टारकीय चमत्कारों को समीचीन मानने के लिये विवश करते हैं। खांधु में मन्दिर के पीछे एक कुआ खुदवाया गया था। जिस का पानी मीठा निकला इससे सब लोग निराश हुए और विचार करने लगे कि कुआ वापस पूर दिया जाय। तब महाराज श्री ने कहा कि हमने तो श्रीजी के पूजन प्रक्षाल व पीने के उपयोग के लिये कुआ खुदवाया था यदि पानी पीने के लिये उपयुक्त नहीं है तो दूसरे काममें तो आयगा ही इस पर किसीने कह दिया कि महाराज ऐसा था तो पहले ही स्थान का परिक्षण कर के कुआ खुदवाना था इस पर महाराज श्री तत्काल अन्न जल का त्याग कर किसी साधना में लग गए। अनंतर मंदिर के पुजारी से वहां की पोई नदी का मीठा जल मंगवाकर उसे मंत्रित कर कुए में डलवा दिया और लोगों से कह दिया कि अब कल से कुए का पानी काम में लाया जाय। दूसरे दिन लोगों ने पानी को देखा तो पानी बढ़िया मीठा और हल्का हो गया था। इस चमत्कार की बात सारे गांवमें फैल गई और लोग भट्टारक हेमचन्द्र की प्रशंसा करने लगे। इसी प्रकार दूसरा चमत्कार प्रतापगढ़ के पास ब्रह्मोत्तर (शांतिनाथ) में हुआ था वहां बीसा नरसिंह पुरा नाति के १०० घर थे। वहां की प्रतिष्ठा के लिये उनके गच्छ के भट्टारक जी नहीं आ सके अतः

उन्होंने भ० हेमचन्द्र को लिखा कि आप भी मेरे भाई ही हैं मैं नहीं आ सकता हूँ अतः यह प्रतिष्ठा आप करा दें। श्री हेमचन्द्राचार्य ने आमंत्रण स्वीकार कर लिया और प्रतिष्ठा के सब कार्य निर्विघ्नतया सम्पन्न कराये और प्रतिमाजी को वेदी में विराजमान करने का मौका आया तब मालूम हुआ कि प्रतिमाजी बड़ी है और द्वार छोटा है सब लोग विचार में पड़ गये कि प्रतिमाजी को अन्दर कैसे लेजाया जाय समाज में चिन्ता की लहर छा गई उस समय एक श्रावक ने कह दिया कि प्रतिष्ठाचार्य को प्रतिष्ठा कराने के पहले इसका विचार करना चहिये था इस पर महाराज श्री तीन दिन तक आहार जल का त्याग कर प्रतिमा के समक्ष ध्यानस्थ बैठ गये। तीसरे दिन समाज के मुखियाओं को बुला कर कहा कि उठाओ प्रतिमाजी को अन्दर ले जावें। लोग विचार में पड़ गये कि छोटे द्वार में से प्रतिमाजी को कैसे अन्दर लेजाया जायगा महाराज श्री ने कहा कि आप लोग चिन्ता न करें सब ठीक होगा। लोगों ने प्रतिमाजी को उठाया तो प्रतिमा का वजन बहुत हल्का हो गया था और ज्योंही द्वार के पास पहुँचे कि प्रतिमा छोटी होकर आसानी से अन्दर चली गई और जाने के बाद फिर उतनी ही बड़ी हो गई ईस घटना को जान कर सारी समाज ने हेमचन्द्राचार्य की महती प्रसंशा की आज भी शांतीनाथ में उसी मंदिर में वही प्रतिमाजी विराजमान है सैंकड़ों यात्री वहां की वन्दना करने जाते रहते है। सं १६१८ में खाधु में आपका स्वर्गवास हो गया आपके स्मारक के रुप में खांधु मंदिर जिसमें दाहिनी तरफ छतरी बनी हुई है जिसमें आपके चरण प्रतिष्ठापित किये गये है आपके शिष्य पं० दौलतराम पं० पन्नालाल और पं० गिरधारीलाल में से आपके आदेशानुसार आपके आदेशानुसार आपके पट्ट पर पं० गिरधारीलाल को भ० क्षेमकीर्ति के नाम से भट्टारक स्थापित किये थे।

---

* भट्टारक क्षेमकीर्ति *

भ० क्षेमकीर्तिजी को ५ वर्ष की उम्र में वि. सं० १६१० में भ० हेमचन्द्रजी ने शिष्य बनाये थे। आप जयपुर के निवासी खंडेलवाल जाति के पांड्या गोत्री थे आपका बचपन का नाम गिरधारीलाल था। विक्रम सं० १६२३ में नरोड़ा में सूरत निवासी श्रीमान् सेठ सोभागचन्द मेघराज ने बड़ा भारी उत्सव कर बड़े समारोहपूर्वक भ० हेमचन्द्र के पट्टपर स्थापित किये थे। आपने अपनी सच्चरित्रता के कारण सारी समाज में अच्छी ख्याति प्राप्त की थी।

आपकी वाणी में कुछ ऐसी सिद्धी थी कि आपने कह दिया वह अमिर होता था। इस प्रकार अपने शुभाशिर्वादों से सैंकड़ों लोगों का उपकार किया था। अनेकों बार तीर्थ यात्राएं की और अनेक मंदिरों की प्रतिष्ठाएं कराई थीं। उन दिनों १६३५ में केशरियाजी क्षेत्र में श्वेताम्बर समाज की ओर से ध्वजादण्ड कलश चढ़ाने के प्रयत्न किये जाने लगे थे। इस बात की जानकारी मिलते ही आपने इसका विरोध किया और इसके लिये भ० गुणचन्द्र, भ० कनककीर्ति, भ० धर्मकीर्ति, भ० राजेन्द्रकीर्ति को सहल बल आमंत्रित किये। सभी भट्टारक अपने शिष्यों व चपरासी आदि २०० व्यक्तियों को लेकर आये। उधर श्वेताम्बर साधु भी बड़ी संख्या में एकत्रित हुए थे। बाजार में ही भट्टारकों व श्वेताम्बर साधुओं के आपस में विसंवाद हो गया, विवाद बढ़ते बढ़ते मारा मारी तक नौबत आगई। अंत में सब भट्टारक अपने शिष्यों सहित मंदिर के समक्ष पंक्ति बद्ध खड़े हो गये और श्वेताम्बरों को मंदिर में जाने से रोक दिये और ध्वजादण्ड कलश नहीं चढ़ाने दिये।

आपने अनेकों स्थानों पर नरसिंहपुरा समाज के जगड़ों की मध्यस्थता कर उनको मिटाया। वि सं.

१९७४ मार्गशीर्ष शुक्ला ८ शुक्रवार को दिन में २ बजे प्रतापगढ़ में आपका स्वर्गवास हुआ। अपनी मृत्यु के दो घन्टे पूर्व पंचों की समक्षता में पं० प्यारेलाल को अपने पट्टपर भ० यशकीर्ति के नाम से स्थापित किये थे। आपका अन्तिम संस्करण बड़े समारोह पूर्वक किया गया था। करीब १०००० दस हजार जनता ने शव यात्रा में भाग लिया था। तालाब के रास्ते पर जहां आपका अन्तिम सस्कार किया गया था आपका स्मारक बना हुआ है। आपने ऋषभदेव (केशरियाजी) में एक मकान खरीदा था आज उसी स्थान पर भ० यशकीर्ति भवन बना हुआ है। आपके निम्न सुयोग्य शिष्य थे।

१ पं० किसनलाल, २ पं० चिमनलाल, ३ पं० मन्नालाल, ४ पं० हीरालाल,

५ पं० प्यारेलाल, ६ पं. रामचन्द्र, ७ पं. किशनलाल

❋ भ० यशकीर्ति ❋

भ० यशकीर्तिजी महाराज का जन्म विक्रम सं० १९५१ में ठाकरड़ा (वागड़) निवासी श्रेष्ठी उदयचन्द की पत्नी सुन्दर बाई के उदर से हुआ था। आप नरसिंहपुरा जाति के पटनर (खड़नर) नायक गोत्री थे। आपके ५ भाइयों में से ३ बड़े और एक आपसे छोटा था आपके काका पं० किशनलाल जो कि भ० हेम कीर्तिजी महाराज के शिष्य थे अंधे हो गये थे अतः उन्होंने अपने भाई उदयचन्द से एक पुत्र की मांग की। उदयचन्द ने कहा आप कहो उसको आपकी सेवा के लिये रखदूं। तब उन्होंने प्यारेलाल की मांग की सो सं० १९५७ में प्यारेलाल को भेंट कर दिया। प्यारेलाल बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और प्रतिभाशाली थे। आपका अध्ययन भ० हेमकीर्तिजी महाराज की संरक्षकता में ही हुआ था आप १५ वर्ष की उम्र में ही शास्त्र सभा में भाषण और भजनोपदेश द्वारा जनता को मुग्ध कर देते थे। आप

लेखन कला में भी बड़े प्रवीण थे और बड़े सुन्दर अक्षर लिखते थे। साथ ही आप यंत्र मंत्र वैद्यक ज्योतिष आदि में भी सिद्ध हस्त हो गये थे। आपके इन गुणों पर मुग्ध होकर विक्रम सं० १९०४ मार्ग शीर्ष शु० ८ को भ० क्षेमकीर्तिजी महाराज ने अपने पट्टपर भ० यशकीर्ति के नाम से स्थापित किये थे आपने भ० पदस्थ ग्रहण करने के बाद सर्व प्रथम गुजरात प्रान्त में भ्रमण कर अच्छा प्रभाव स्थापित किया उसके बाद १९८२ में अपने गुरु भ० क्षेमकीर्तिजी के स्मारक (छतरी) की प्रतिष्ठा कराई जिसमें सभी प्रान्तों की नरसिंहपुरा समाज एकत्रित हुई थी। और सब पंचोंने भ० यशकीर्ति महाराज को पछे-बड़ी समर्पित की धीरे धीरे आपकी त्याग भावना बढ़ती गई। २५ वर्षों से चातुर्मास में एक ही अन्न का आहार करते हैं। और १५ वर्षों से घृत का त्याग कर दिया है। आप भट्टारक पदस्थ पर होते हुए भी म्याना पालकी गद्दी तकिये छड़ी चँवर पशु वाहन की सवारी आदि का सर्व था त्याग कर दिया है। आपकी शान्त व गंभीर मुद्रा और आपका प्रभावक व्यक्तित्व प्रत्येक व्यक्ति के हृदय पर अपनी गहरी छाप डालता है। आपका उपदेश बड़ा ही प्रभावकारी होता है। साथ ही संगीत और सभी प्रकार के वाद्य बजाने में भी आप बड़े निपुण हैं आपने अपने जीवन में इतनी प्रतिष्ठाएं की हैं जितनी पहले के किसी भी भट्टारक ने नहीं की होंगी। समाज में अनेकों स्थानों पर आपसी वैमनस्य थे उनको निपटाये। वि. सं० १९९५ में ऋषभदेव में चौ मंजिला भ० यशकीर्ति भवन के नाम से भवन बनाया है जिसमें औषधालय, चैत्यालय और सरस्वती भवन की स्थापना की है। सर-स्वती भवन में हस्त लिखित व मुद्रित करीब ३००० ग्रंथों का संग्रह है। कई शास्त्र १३ वीं शताब्दी के लिखे हुए तक हैं। यशकीर्ति भवन का उद्घाटन समारोह बड़ी धूम धाम से किया गया था उस अवसर पर १ माह तक इन्द्रध्वज विधान कराया गया था। पूज्य आ. शांति सागरजी म. छाणी ५०० अनेक त्यागी मुनि और श्रावक गण एकत्रित हुए थे। सारे गांव की आम जनता को प्रीतिभोज दिया था देवस्थान विभाग ने केशरियाजी मंदिर से तमाम लवाजमा उपकरण आदि देकर पूर्ण सहयोग दिया था। आपने शिक्षा प्रचार के क्षेत्र में भी बड़े ही प्रसंशनीय कार्य किये हैं। वि.म सं० २०००

में प्रतापगढ़ में विशाल छात्रालय की स्थापना की है। छात्रालय की अठारशि । अनेक पद विभूषित श्रीमंत सर सेठ हुकमचन्दजी साहिब र स थी वि. सं. २०११ में बड़े भारी समारोह पूर्वक श्री सीमधर जिनालय की प्रतिष्ठा कराई थी। इसी प्रकार [illegible] कलासिया बावखेड़ा और बांसवाड़ा में भी छात्रालय स्थापित कराये एवं अनेक पाठशालाएं स्थापित कराई। आपने सारे भारत वर्ष के जैन तिर्थों की कई बार यात्राएँ की है। कुछ वर्षों तक तो प्रति वर्ष तीर्थराज सम्मेद शिखरजी की यात्रा करते थे अपना सारी सम्पत्ती को संस्थाओं में देदी है। ऋषभदेव का भ० यशकीर्ति भवन भी ट्रस्ट डीड कर समाज को सौंप दिया है। भवन के साथ १००००) रु० नकद एवं गद्दी का लवाजमा उपकरण शास्त्र बरतन फर्निचर आदि सब समाज को सौंप कर अपना अधिकार हटालिया है। ज्यों ज्यों आप सम्पति से मोह हटाते जाते हैं समाज आपको अधिक भेंट देने लगी है अब भी जो कुछ भेंट आता है सब संस्थाओं को देदी जाती है। आप के उपदेशों से लाखों लोगों ने आत्म कल्याण का मार्ग अपनाया है सारी दिगम्बर समाज में आपके नाम के अनुरुप यशकीर्ति का विस्तार हुआ है। पूज्यवर आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की समक्षता में और अन्य प्रसंगो पर अनेक उपाधियां एवं अभिनन्दन पत्र समर्पित किये हैं। आपके ३ सुयोग्य शिष्य १ श्री पं. रामचन्द्रजी २ पं. किशनलालजी ३ पं. डाड़मचंदजी हैं। पं. रामचन्द्रजी शिक्षण संस्थाओं की देखभाल करते हैं। पं. डाड़मचन्दजी उपदेश के साथ २ यन्त्र मंत्र और ज्योतिष के भी जानकार हैं। और संगीत कला में तो बड़े ही निपुण हैं।

आपकी संगीत कला पर मुग्ध होकर आपको " संगीत शिरोमणी " की उपाधी प्रदान की गई है। पं. किशनलालजी महाराज श्री की सेवामें रहते हैं वे भी पूजन पाठ एवं संगीत आदि के जानकार हैं। वर्तमान समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए महाराज श्री ने नया शिष्य बनाने का विचार छोड़ दिया है और भट्टारक गद्दी की स्मृति हमेशा स्थायी रखने के लिये सम्पति का ट्रस्ट डीड कर दिया है।

श्रीमद् पंडित रामचन्द्र

खादी की धोती और चादर से ढँका हुआ मुट्ठी भर हड्डियों का ढांचा, छोटा कद और लम्बी चाल गौर वर्ण और उन्नत ललाट वृद्धत्व के परिचायक पूर्ण श्वेत केश सभाषण के पूर्व तक छिपा रहने वाला व्यक्तित्व, आलस्य और निराशा के कट्टर शत्रु जबसे जगे तभी से सुबह मान कर काम में जुट जाने वाले। बाहर से कुछ उग्र दिखाई देने वाला स्वभाव परन्तु भीतर से अत्यन्त कोमल यह है श्रीमद् पं रामचन्द्र का संक्षिप्त परिचय।

आपका जन्म विक्रम सं० १९६२ में नीमच के पास आकरा गांव के निवासी गुजरगौड़ ब्राह्मण जगन्नाथ के घर में हुआ था आपकी माता का नाम हगामबाई था आपके पिता जगन्नाथ आपको ६ माह का रखकर ही स्वर्गवासी हो गये थे। हगामबाई आजीविका के लिये एक वर्ष के बालक रामचन्द्र को लेकर प्रतापगढ़ चली गई। विक्रम सं. १९६९ में भ० सेमकीर्तिजी महाराज का प्रतापगढ़ में चातुर्मास था उनके पास ऋषिमण्डल का पाठ सुनने एक श्वेताम्बर स्थानक वासी धूलजी सेठ आया करते थे एक दिन उन्होंने कहा कि एक ४ वर्ष का ब्राह्मण का लड़का है आप शिष्य रखना चाहें तो मैं उसकी मां को समझा कर दिलवा दूं। महाराज श्री ने कहा कि ब्राह्मण को शिष्य रखने में क्या लाभ होगा परन्तु यहां पर बैठे हुए महाराज श्री के शिष्य पं. किशनलाल पं. हीरालाल पं. प्यारेलाल और रसोइयां बालजी आदि ने कहा कि ब्राह्मण है तो क्या हर्ज है गौतम गणधर भी तो ब्राह्मण थे अपने यहां एक छोटा बालक होगा तो हम सब का मनोरंजन भी होगा

और पढ़ लिख कर योग्य बनेगा तो लिख रहेगा नहीं तो गाड़ी में दूसरा काम करेगा ऐसा कह कर सब पंडित बालक को देखने गये बालक को तीक्ष्ण बुद्धि और चपल देख कर खुश हो गये और प. हीरालालजी बालक को उठा लाये। विक्रम सं. १९६७ दीपावली के दिन से आदिनाथ स्तोत्र से आपका अध्ययन प्रारंभ कराया गया। विक्रम सं. १९७४ में भ० हेमकीर्तिजी महाराज का स्वर्गवास हो गया तो भ० यशकीर्तिजी महाराज ने आपके अध्ययन के लिये एक पंडित की व्यवस्था कर दी। परन्तु १९७६ में भ० यशकीर्तिजी महाराज गुजरात में भ्रमण करने पधारे तब से आपका अध्ययन छूट गया और गद्दी के सारे कार्यों का उत्तरदायित्व आपके कंधों पर आपड़ा फिरभी आपने अध्ययन प्रारंभ रक्खा और गद्दी के संपूर्ण कार्यों की योग्यतापूर्वक व्यवस्था करने लगे यद्यपि आपने कोई परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की परन्तु सभी विषयों में अच्छी योग्यता रखते हैं। शास्त्र सभा में जनता को मुग्ध कर देते हैं। यंत्र मंत्र ज्योतिष और वैद्यक में भी आपकी अच्छी योग्यता है। वास्तु शास्त्र में तो आपकी गति अत्यन्त प्रशंसनीय है। मन्दिर मूर्ती ध्वजादण्ड कलश वेदी आदि के प्रमाणिक नाप तत्काल निकाल देते हैं। आपकी देख रेख में कई शिखर बद्ध मंदिरों और हजारों जिन मूर्तियों का निर्माण हुआ है। इसी प्रकार गृह वास्तु शास्त्र का भी अच्छा ज्ञान है। आपके द्वारा सैंकड़ों प्रतिष्ठाएँ और विधान कराये गये हैं।

प्रतिष्ठा पाठ के शास्त्रीय ज्ञान के अलावा प्रखर बुद्धि के कारण तत्सम्बंधी अन्य आयोजन भी बड़े रमणीय और चित्ताकर्षक रहते हैं। प्रतिष्ठा कराने और विधि विधान सम्पन्न कराने की आपकी अपनी निराली ही शैली और विशेषताएं हैं। प्रतिष्ठा में कल्याणक एवं अन्य दृश्य ऐसी सजधज के साथ दिखाये जाते हैं जिनसे जनता बड़ी प्रसन्न होती है। आपकी प्रतिष्ठा कराने की पद्धति की अनेक आचार्यों मुनियों प्रतिष्ठाचार्यों विद्वानों और समाज के प्रतिष्ठित नेताओं आदि ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। जिन दिनों प्रतिष्ठा में कल्याणक की क्रियाएं होती हैं आप इतने

कार्य व्यस्त रहते हैं कि खाना पीना और सोना तक छोड़ देते हैं यही कारण है कि समाज आपको हजारों रुपये भेंट करता है। परन्तु आपने अपने पास मात्र १००) रु० से अधिक न रखने की प्रतिज्ञा करली है तदनुसार भेंट की रकम संस्थाओं में देते रहते हैं। सारे भारत वर्ष की दिगम्बर जैन समाज में आपकी ख्याति है आपने अपना सारा जीवन संस्थाओं की सेवामें लगादिया है।

प्रतापगढ़ में आपके द्वारा संचालित श्री भ० यशकीर्ति दि. जैन बोर्डिंग प्रतापगढ़ दिगम्बर जैन समाज की अद्वितीय विशाल शिक्षण संस्था है। जिस के अन्तर्गत भ० यशकीर्ति माध्यमिक विद्यालय (राजस्थान सरकार द्वारा प्रमाणित) श्री रमण बहिन दि० जैन कन्याशाला आदि संस्थाएँ चल रही हैं। छात्रालय में श्री सीमन्धर भगवान का भव्य जिनालय बनवाया है जिसकी प्रतिष्ठा बड़े समारोह पूर्वक की गई थी। इस प्रतिष्ठा के पूर्व प्रतिमाजी लाने के दिन से ही आपने जब तक प्रतिष्ठा नहीं होगी तब तक दूध और चावल खाने का त्याग कर दिया था। प्रतिष्ठा होने के बाद प्रतापगढ़ की समाज ने ६ मन दूध की खीर बनाकर आपकी प्रतिज्ञापूर्ति का समारोह किया था नया मन्दिरजीमें आमसभा कर आपको मान पत्र समर्पित किया गया था। प्रसिद्ध तीर्थ भूमि केशरियाजी (ऋषभदेव) में भ० यशकीर्ति भवन का निर्माण आपकी देख रेख में ही किया गया था एवं वहाँ पर श्री ऋषभ दि० जैन मण्डल श्री जीवदया संघ श्री ऋषभदेव दि० जैन तीर्थ रक्षा कमेटी आदि संस्थाएं आप ही के द्वारा स्थापित की गई हैं। ऋषभदेव की समाज ने आपकी सेवाओं के उपलक्ष्य में कृतज्ञता स्वरूप आपको "जैनरत्न" की उपाधी प्रदान कर बहुत बड़ा रजत शिल्ड समर्पित किया था। आपका ही साहस था कि ऋषभ देव में अ० भा० दिगम्बर जैन नरसिंहपुरा समाज का ऐतिहासिक महा सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ था और अ. भा. दि० जैन नरसिंहपुरा महासभा की स्थापना हुई थी।

पण्डितजी के अनन्य स्नेही श्रीमान जौहरी मोतीलालजी मीण्डा उदयपुर की समाज के प्रमुख व्यक्ति हैं आपने उदयपुरमें बड़े समारोह पूर्वक सिद्ध चक्र विधान कराया था, उस अवसर पर उदयपुर की दि० जैन समाज ने आपको "धर्मरत्न" की उपाधि प्रदान की थी। साथ ही पंडित रामचन्द्रजी महोदय को भी अभिनन्दन

पत्र समर्पित किया था। इसी प्रकार सरोदा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर एकत्रित समाज ने आपको धर्म भूषणकी उपाधि से विभूषित कर अभिनन्दन पत्र अर्पित किया था। फलासिया (झालावाड़) में पद्म प्रभ दि० जैन बोर्डिंग एवं बांसवाड़ा में श्री भ. यशकीर्ति दि जैन छात्रालय की स्थापना आपके ही प्रयत्नों का फल है। वर्तमान में भी ये संस्थाएँ आपके ही महामंत्रीत्व में चलारही हैं।

अ. भा० दिगम्बर जैन महासभा, मालवा प्रां० दि० जैन महासभा, शांति सागर स्मारक समिति, दिगम्बर जैन मंदिर जीर्णोद्धार कमेटी चित्तौड़ आदि अनेक संस्थाओं के सदस्य रहकर समाज की सेवा कर रहे हैं। आप की इस वृद्धावस्था में कार्य करने की वही स्फूर्ति हैं। आपकी कर्मठता को देख कर पूज्य आचार्य कुंथुसागर जी महाराज आपको लोहे का पुतला" कहा करते थे। और प्रतापगढ़ के कवि श्री देवी चन्दजी तो आपको " करामात का पुतला " कह कर अपनी कविताओं में गाया करते हैं। इस प्रकार आपका साराजीवन समाज की सेवा कार्यों में लग रहा है। हम श्री जिनेन्द्र देव से आपके दीर्घायुष्य की कामना करते हैं।

पं० चन्दन लाल साहित्यरत्न

ऋषभदेव (राजस्थान)

जल यात्रा विधि

नोट:—जल यात्रा विधि की आवश्यक सामग्री कलश, श्रीफल, आच्छादन, छन्ना, अंग पोंछणा, अष्ट द्रव्य, पान, माला, रोकड़ (रुपा नाणा), दूध, शक्कर (मिश्री) दीपक, दर्पण, ध्वजा पाटला, सूत, (लच्छा) कुंकुम आदि पहले से तैयार कर साथ में ले लेना चाहिये ।

सर्व प्रथम शुभ मुहूर्त में प्रातःकाल मन्दिरजी या मण्डप से यन्त्रजी लेकर गाजे बाजे संगीत आदि बड़े समारोहपूर्वक सहधर्मी श्रावक श्राविकाओं के साथ तालाब या वापिका पर जाना चाहिये फिर दो हरे छन्ने को उसके चारों कोने पकड़ कर जल में डूबता हुआ झूले की तरह पकड़ रक्खें उस छन्ने में यन्त्रजी विराजमान करके वरुण देवता का आह्वाहन करके मध्य कर्णिका पूजा (वरुण देवता की) अष्ट द्रव्य से करें । जिसमें १ श्रीफल भी चढ़ावें ।

तत्पश्चात् क्रम से श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी, तुष्टि, पुष्टि, इन आठ देवियों का आह्वानन करके आठों को अलग २ अर्घ चढ़ावें । पश्चात् विसर्जन करके पूजन में चढ़ाया हुआ द्रव्य श्रीफल सहित जलमें क्षेपण करदें तथा यन्त्र का अभिषेक करके चौकी (पाटा) पर विराजमान कर केशर पुष्प चढ़ावें । पश्चात् छने हुवे जल से घड़ों को साफ कर यन्त्र की साक्षीपूर्वक कलश भरें । पश्चात् कलशों के तिलक करके सभी कलशों में दूध, सर्करा (खड़ी साकर) रजत मुद्रा (चांदी का रुपया, अठन्नी, चवन्नी आदि) क्षेपण कर कलशों पर श्रीफल रख कर शुद्ध वस्त्रों से आच्छादित करे एवं पान रख कर सूत्र (लच्छे) से बांध कर कलशों को पुष्प माला पहिनावें । मुख्य कलश पर पांच या सात ध्वजाएं तथा दर्पण विशेष रूप से बांधे । पश्चात् कलश उठाने वाली इन्द्राणियों (श्राविकाओं) के तिलक कर माला पहिनावे । पश्चात् एक अर्घ्य चढ़ा कर श्राविकाओं को कलश दे देवें । समस्त श्रावक गण आगे यन्त्रजी के साथ रहें । उनके पीछे सर्व प्रथम मुख्य कलश वाली श्राविका तथा उसके पीछे बाकी सब कलशों वाली बहिनें रहें । इस प्रकार पूर्ववत समारोहपूर्वक जिनेन्द्र भगवान जय ध्वनि पूर्वक मण्डप में पहुँच कर प्रतिष्ठाचार्य पुष्प तथा अक्षत से कलशों को बधावे पश्चात् वेदी के पास विराजमान करे ।

॥ जल यात्रा विधि ॥

प्रथमं तडागे जल समीपे चतुष्पथे स्नपनं क्रियते पश्चाज्जल मध्ये धौत वस्त्रं द्वाभ्यां पार्श्वे प्रधार्य जल मध्ये निमज्ज्य यंत्रं धौत मध्ये प्रक्षिप्य पूज्यते । प्रथमं यंत्र मध्ये कर्णिका पूजा पश्चाद्देवीनां पूजा कर्तव्या ।

(वरुण देवताह्वाननम्)

वारुणं यंत्र मुद्धृत्य, पूजयेद्विधि पूर्वकं
भोगैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं, जनानां हित काम्यया ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं वरुणदेव जलयात्रा महोत्सवे अत्रागच्छागच्छ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् । आह्वाननं, स्थापनं, सन्निधिकरणं, ॥ यंत्रस्थापनं ।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

॥ अथ मध्य कर्णिका पूजा ॥

पाशपाणिमपानाथं, पश्चिमाशा पतिं वरम् ।
पूजयामि महा भक्त्या, सर्व कल्याण कारकम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वरुण देव सपरिवारेण जलयात्रा महोत्सवे आगच्छागच्छ बलिं गृहाण २ जलं मुंच२ स्वाहा ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत)

ॐ ह्रीं वरुण देवाय इदं जलमित्यादि ॥ इति मध्य कर्णिका पूजा ॥

॥ अथ प्रत्येक पूजा ॥

हिमाद्रि संस्थितां रम्यां, पद्म द्रह निवासिनीम् ।
पूजयामि महाभक्त्या, श्री देवीं श्री विधायिनीम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्ण चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते श्री देवी आगच्छ २ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्री देव्यैः इदं जलं गंधं इत्यादि ॥

जन्मोत्सवे जिनेन्द्रस्य, मातुर्भक्ति परायणां

पूजयामि महाभक्त्या, ह्रीं देवीं ह्रीं विधायि नीम् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते ह्री देवी आगच्छागच्छ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा

ॐ ह्रीं ह्री देव्यै: इदं जलंगंधमि त्यादि ॥

मुक्तदां सर्वदा लोके नित्यानंद विधायिनीम्

पूजयामि महा भक्त्या धृतिं धृति विधायिनीम् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते धृति देवी आगच्छागच्छ बलीं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा

ॐ ह्रीं धृति देव्यैः जलं गंध मित्यादि ।

शरद् भूचंद्र धवलां, कीर्ति कल्याण कारिणीम्

पूजयामि महा भक्त्या, कीर्तिं कीर्ति विधायिनीम् ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते कीर्ति देवी आगच्छागच्छ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं कीर्ति देव्यैः जलं गंधमित्यादि ॥
पन्च पल्योपमा लक्षा, विमलाश्रविनीं सदा
पूजयामि महाभक्तया, बुद्धिं बुद्धि विधायिनीम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते
बुद्धि देवी आगच्छ २ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं बुद्धि देव्यैः इदं जलं गंधमित्यादि ॥
कमलाऽऽगच्छतु गेहे, परमानन्द दायिनी ।
पूजयामि महाभक्तया, लक्ष्मीं लक्ष्मी ॥ करां नृणां ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कलम मुख हस्ते
लक्ष्मी देवी आगच्छ २ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं लक्ष्मी देव्यैः जलं गंधमित्यादि ॥
तुष्टिं करोति तुष्टिः स-ततं सर्व शरीरिणां ।
पूजयामि महाभक्तया, तुष्टिं तुष्टि विधायिनीम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्णवर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल मुख हस्ते
तुष्टि देवी आगच्छ २ बलिं गृहाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं तुष्टि देव्यैः जलं गंधमित्यादि ॥

जन्माभिषेक कल्याण, कारिणीं परमेश्वरीम् ॥
पूजयामी महाभक्तया, पुष्टि पुष्टि विधायिनीम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सुवर्ण वर्णे चतुर्भुजे पुष्प कमल हस्ते पुष्टि देवी आगच्छ २ बलिं गृह्णाण २ जलं मुंच २ स्वाहा ।

ॐ ह्रीं पुष्टि देव्यैः जलं गंधमित्यादि ॥

(विसर्जन मंत्रः)

इत्थंच देवताः सर्वाः पूजिताच मयाधुना ।
सर्वा· मम प्रसिदन्तु सर्व कल्याण दायिनः ॥ इति विसर्जन मंत्रः ॥

पश्चान्नारिकेलं सहित पूजोपहारं जलमध्ये संत्यज्य, यंत्र संनिधौ धौत मध्यजलेन कुंभान् संभृत्य तिलकं कुर्यात पश्चात् शर्करा दुग्धे प्रक्षिप्येते तदनंतरं अष्ट विधार्चनं क्रियते । पश्चात् महोत्सवेन चैत्यालये समानीया ।

॥ इति जलयात्रा संपूर्णम् ॥

सकलीकरण विधानम्

सर्व प्रथम पूजा या विधान करने वाला स्नान कर शुद्ध होकर श्री जिनेन्द्र भगवान के सन्मुख निम्न मन्त्र का १०८ बार जाप्य करके आत्म शुद्धि करे ।

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं,

ॐ ह्रीं णमो आईरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं,

ॐ ह्रीं णमो लोएसव्व साहूणं ।

अष्टोत्तर सहस्र जाप्येनेन्द्रेणात्म शुद्धिः कर्तव्या ।

पश्चात् निम्न मन्त्र पढ़ते हुवे २१ लोग अपने दोनों हाथों को तर्जनी (अंगुष्ठ के पास वाली) अंगुली से पकड़ कर अपने सिर पर रखता अपने आपको इन्द्र होने का चिंतवन करे ।

ॐ वज्राधिपतये आं ह्रां अः ऐं ह्रीं हः सूं हैं क्षः इन्द्र संवौषट् एक विंशतिवारानात्मान मधिवासयेत् ॥

(इति इन्द्र आह्वानं)

पश्चात् मुकुट, कुण्डल, मुद्रिका, कंकण, मेखला, करधनि, आदि आभूषण धारण करे।

❀ वचो निर्मली करण मन्त्र ❀

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनी नमः स्वाहाः ॥

यह मन्त्र पढ़ कर दर्भ शलाका से अपनी जीभ पर जल छांट कर वचन शुद्धि करे ।

॥ शिखा बंधन मंत्र ॥

ॐ नमो भयवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स चक्क जलंतं गच्छ २ आयासं पायाल लोयाणं भूयाणं जुणश्र विवाहो वारायंगणेवा घणेश मोह मेर रक्ष २ स्वाहा । ॐ ह्रीं वषट्

इस मंत्र को पढ़कर चोटी के गांठ लगावे ।

प्रथम अंगन्यास

दोनों हाथों के अगुष्ठों से हृदय आदि स्थानों को स्पर्श करने की क्रिया को अंगन्यास कहते हैं ।

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं स्वाहा । (हृदये)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा । (ललाटे)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं स्वाहा (शिरसो दक्षिणे)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा (शिरसः पश्चिमे)

ॐ ह्रः लोए सव्व साहूणं स्वाहा (शिरसो वामे)

द्वितीय अंगन्यास

अनंतर ऊपर के मंत्रों को फिरसे पढ़ते हुवे निम्न प्रकार दूसरा अंगन्यास करे ।

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं स्वाहा (शिरसः मध्ये)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा (शिरसः आग्नेय भागे)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं स्वाहा (शिरस नैऋत्य भागे)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा (शिरसः वायव्ये)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा (शिरसः ईशाने)

॥ तीसरा अंगन्यास ॥

ॐ ह्राँ णमो अरहंताणं स्वाहा (दक्षिण भुजे)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा (वाम भुजे)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं स्वाहा (नाभि मंडले)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा (दक्षिण पृष्ठे) दाहिने पछवाड़े

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं स्वाहा (वाम पृष्ठे) बांये पछवाड़े

ॐ अट्ठेवय अट्ठसया, अट्ठ सहस्साइ अट्ठ कोडिउ ।

रक्खंतु मे शरीरं, देवासुर पणमिया सिद्धाय स्वाहा ॥

इत्यंगन्यासः ॥

हस्त निर्मली करण मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरहंताए श्रुतांमदेवी प्रशस्त हस्ते ह्रूँ फट् स्वाहा

इति हस्त निर्मली करणम्

हृदय शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हन्मुख कमलवासिनी सर्वपाप क्षयंकरी श्रुतज्ञानदेवी हन हन दह दह क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षौं क्षः क्षीर धवले अमृत संभवे वं वं ह्रूँ फट् स्वाहा काय शुद्धिमहे स्वाहा ।

(इति हृदय शुद्धिः)

निम्न मंत्र पढ़कर अपने मुख की शुद्धि करे

ॐ नमो भगवते क्रौं ह्रीं चन्द्र प्रभाय चन्द्रेन्दु महिताय चन्द्र मूर्तिनि सर्व सुख रंजिनि पुनी महे स्वाहा ।

(इति आत्म मुखाभिमंत्रणम्)

नेत्र पवित्री करण मंत्र

ॐ ह्रीं चौं महामुद्रे कपिल शिखे हूं फट् स्वाहा ।

(लोचनाभिमंत्रणम्)

उपांग पवित्री करण मंत्र

ॐ नमो भगवते ज्ञान मूर्ते सप्तशत क्षुल्लकादि महा विद्याधिपते विश्व रुपाणि क्रौं ह्रां ह्रीं ह्रौं संवौषट् ।

(उपांग पवित्री करणम्)

हृदय रक्षा मंत्र

ॐ नमो अरहंताणं हृदयं ह्रीं रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा

(हृदय रक्षा)

शिरो रक्षा मंत्र

ॐ नमो सव्व सिद्धाणं हर हर शिरो रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा (शिरोरक्षा)
ॐ नमो आइरियाणं ह्रीं शिखां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा (शिखा रक्षा)
ॐ नमो उवज्झायाणं एह्येहि भगवती वज्र कवचं वज्रिणि रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा ।

(इति मुख रक्षा)

नीचे का मंत्र पढ़कर वज्र कवच धारण करने का चिंतवन करे ।

ॐ नमो लोए सव्व साहूणं क्षिप्रं साधय २ वज्र हस्ते शुक्लिनी दुष्ट रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा ।

(इन्द्रस्य कवचम्)

ॐ अरिहाय सर्वे रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा

(इति परिवारक रक्षा)

पश्चात् इन्द्र दशों दिशाओं में पुष्पाक्षत क्षेपण करता हुआ विघ्नों की शांति के लिये निम्न शांति पाठ पढ़ें ।

विक्षिपन् दिक्षु सिद्धार्थान्, यवाक्षत विमिश्रितान्
इन्द्रो विघ्नोपशान्त्यर्थं शांतिकं तदिदं पठेत् ॥

ॐ हूँ क्षूं फट् किरिटि घातय २ परिविघ्नान् स्फोटय २ सहस्र खंडान् कुरु २ पर मुद्रां छिन्द २ घातय २ पर मंत्रान् भिन्द २ चः फट् स्वाहा ॥

सुसिद्धार्थानभि मन्त्र्य सर्वासु दिक्षु विक्षिपेत् ।
सर्व विघ्नोपशान्त्यर्थं सकली करणं भवेत् ॥

कर्माष्टक विनिर्मुक्ता गुणाष्टक समन्विता ।
सिद्धाः सन्निहिता सन्तु भव्य सत्व विमुक्तिदा ॥

ॐ नमो भगवद्भ्यः सिद्धेभ्यः क्षूं क्षूं क्षूं ह्रीं क्षं ठं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः सर्वौषट् ।

इस मन्त्र को पढ़ कर सब दिशाओं में पुष्पाक्षत क्षेपण करे ।

यावन्मेरुर्महीयावद्यावच्चन्द्रार्कं तारकाः तावद्भद्राणि पश्यन्तु शांतिक स्नान पाठकाः ॥

॥ इति सकली करणम् ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

❀ समुच्चय पञ्च कल्याणक ❀

[भट्टारक-भुवन कीर्ति कृत]

प्रथमहु जिन चौबीस के पञ्च कल्याण जी, गर्भ जन्म तप ज्ञान अरु निर्वाण जी ।
बांचि समुच्चय मंगल पाठ बखान जी, तजि सर्वार्थ पयान करे त्रय ज्ञानजी ॥

प्रथम ज्ञान धारी गर्भ आये, मात स्वप्न जु देखिये ।
उठि के प्रभातहि पूछि पिउ को फल तीर्थंकर लेखिये ॥
लखि इन्द्र अवधि धनद पन्द्रह मास वर्षहु रत्न सों ।
छप्पन कुमारी गर्भ शोधन, राखि माता यत्न सों ॥ १ ॥

इह विधि उत्सव धार, इन्द्र सब सुर सबे, प्रश्नोत्तर नव मास मात पूरण भये ।
जन्म समय तब देव घंट हरि बाजियो, इन्द्र चल्यो सब सैन्य, गमन तब गाजियो ।

गाजियो ऐरावत चढ़िय सुर, जन्म नगरी आइया ।
इन्द्राणी माया मयि शिशु रखि, मात से प्रभु लाइया ॥
जय जय करत सुर देव नाचत, मेरु गिरि पै ले गये ।
इम सहस आठ सु हेम कलशा, क्षीर जल ढारत भये ॥२॥

करि श्रृंगार सुलाप मात पितु सौंपिवाराज तिलक सुरदेय धर्म ध्वज रोपिया ।
करि विवाह शुभ राजनीति मय धारिया, अन्त वैराग्य सुपाय मपन्त्र निवारिया ॥

ममता निवारी धन्य प्रभु तुम आय लोकान्तिक भने ।
प्रभु चार भावे भावना तहां इन्द्र जो आये घने ॥
आरूढ़ हैं प्रभु पालखी में, क्षत्रन जन समझाविया ।
नमः सिद्ध कह लौंच करिके तप कल्याणक पाविया ॥ ३ ॥

शील वृत्त पुनि त्रय ऋतु में प्रभु तप करें, मनः पर्यय शुभ पाय भव्य जड़ता हरें ॥
आहार विहार करे सु निहार करे नहीं, कर्म घातिया नाश, ज्ञान केवल लही ॥

लहि ज्ञान केवल इन्द्र ज्ञानी समवशरण रचाइया ।
गणधर सुमुनि अरु आर्जिका चउ देव नर पशु आइया ॥
करि धर्म तत्व बखान से बहु भव्य जीव सम्बोधिया ।
थुति करि इन्द्र विहार को, गिरि शिखर योग निरोधिया ॥४॥

एक मास किय ध्यान शुक्ल मन धारिया, प्रकृति सहित जु अघातिय कर्म निवारिया ।
लघु पञ्चाक्षर मांहि प्रभु गति शिव लये, रहे केश नख, तन परमाणु खिर गये ॥

लिर गये जब सुर आप के, मायामयि तनु निरमये ।
चन्दन प्रमुख मुकुटाग्रितैं शुभ क्रिया कर सब सुर गये ॥
श्री पञ्च कल्याणक महातम, सुनत भवि सुख पाइये ।
कहि भाव सेन सुदेव यश त्रैलोक्य मंगल गाइये ॥५॥

सलिल चन्दन पुष्प शुभाक्षतै-श्चरू सुदीप सुधूप फलार्घ कैः ।
धवल मंगल गान रवाकुले जिन गृहे जिनराज महं यजे ॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकराणां गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण पञ्च कल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

❀ श्री लघु अभिषेक पाठ ❀

ॐ श्री मन्मंदर सुन्दरे शुचिजलै र्धौतैः सदर्भाक्षतैः ॥
पीठे मुक्ति करं निवाय रचितं, त्वत्पाद पद्म स्रजः ॥

(पीठ प्रक्षालनं, श्री कारार्चनं)

इन्द्रोऽहं निज भूषणार्थं ममलं, यज्ञो पवीतं दधे ।
मुद्रा कङ्कण शेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥ १ ॥

(इन्द्रा भरणं यज्ञोपवीत धारणं)

इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋत्य, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, धरणेन्द्र, सोम इति दश दिग्पालेभ्योऽर्घं ॥

(क्षेत्र पाल स्थापनं कुर्यात)

इन्द्राग्न्यान्तक नैऋतोदधिमरु–वायेश क्षेत्रो ईशान ;
आहूतान्निज वाहनायुधवधून् युक्तान्सुसंस्थापितान् ।

(इति दिक्पाल आह्वानम्)

[सिंहासन के चारों तरफ चांवल के १० ढेर स्थापित कर दिग्पालों की स्थापना करें]

आगत्य देवी जननी प्रपूज्या, नित्याभिभूत्या नगराज मूर्ध्नि ।
मृगेन्द्र पीठे वर पांडु कायां, निवेश्य पूर्वाभिमुखं जिनेन्द्रम् ॥
क्षीरोद क्षीरैरमरोप नित्यैः, त्रिवंगुसच्चन्दन चन्द्र मिश्रैः ।
आपूरितामष्ट सहस्र संख्यान्, प्रगृह्य सत्कंचन रत्न कुंभान् ॥
वः पांडुकामल शिलागत, मादिदेव–पस्नापयन्सुरवरा; सुर शैल मूर्ध्नि ।
कल्याण भीप्सु रह मप्तत तोय पुष्पैः संभावयामि पुर एव तदीय बिम्बं ॥

(प्रतिमा स्थापनं)

[निम्न मंगल स्तुति पढ़ते हुए वाद्यों के साथ भगवान को लाकर विराजमान करें]

कैलाशे वृषभस्य निर्वृति मही–वीरस्य पावापुरे ।
चम्पायां वसु पूज्य सज्जिनपतेः सम्मेद शैलेर्हताम् ॥
शेषाणामपिचोर्जयंत शिखरे, नेमीश्वर स्याहतः ।
निर्वाणक्षितयः प्रसिद्ध विभवाः कुर्वन्तुनो मंगलम् ।
मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणिः ॥
मंगलं राम सेनाद्याः जैन धर्मोस्तु मंगलम् ॥

(इति मंगल स्तुतिः)

ॐ आर्हंत्य, स्नपनोसितोपिकरणं, दध्यक्षताद्यर्चितान् ।
संस्थाप्योज्वल वर्ण पूर्ण कलशान्, कोणेषु सूत्रावृतान् ॥
तूर्यान्संस्तुति गीत मंगल रवै, क्षुब्धे जयत्सुध्वनिः ।
सोत्साहं विधिपूर्वकं जिनपतेः स्नानक्रियां प्रस्तुवे ॥

(चतुः कलश स्थापनम्)

[चारों कोनों पर ४ कलश स्थापन करें]

हे इन्द्रदेव समाह्वानयामहे स्वाहा । हे इन्द्र देव आगच्छ २ इन्द्राय स्वाहा । इन्द्र परिजनाय स्वाहा । इन्द्रानुचराय स्वाहा । इन्द्रमहतराय स्वाहा । अग्नये स्वाहा । अनिलाय स्वाहा, सोमाय स्वाहा । वरुणाय स्वाहा । प्रजापतये स्वाहा । ॐ स्वाहा । भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा । स्व स्वाहा । स्वधा स्वाहा (पुष्पांजलि क्षिपेत ,

ॐ इन्द्र देवाय स्वगण परिवृताय इदं जलं गंधं पुष्पं अक्षतं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं अर्घं बलिकं यज्ञ भाग्यं यजामहे प्रतिगृह्णतामीति स्वाहा (अर्घं)

यस्यार्थं क्रियते कर्म, सप्रीतो भव मे सदा ।
शांतिकं पौष्टिकं चैव सर्व कार्येषु सिद्धिदः ॥ (इत्याशीर्वादः)

(इसी प्रकार दशों दिग्पालों के अर्घ चढ़ाना चाहिये)

ॐ अर्घं स्वस्तिक यज्ञ भाग चरुकै रोंभूर्भुवः स्व स्वधा ।
स्वाहा चैत्यभिमंत्रितैः प्रति दिशं संतर्पयामि क्रमात् ॥
सच्चन्दनाद्यक्षत तोयमिश्रैः विकास पुष्पांजलिना सुभक्तया ॥
जैनाभिषेकेन समं समेतान् नव ग्रहान् शान्ति करान्यजामि ॥

आदित्य सोम मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनिश्चर राहु केतु नवग्रह देवताभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(इति दिक्पालानामर्घावतारणम्)

सद्यो नाति सुगन्धेन स्वच्छेन बहुलेन च स्नपनं क्षेत्र पालस्य, तैलेन प्रकरोम्यहं ॥

तैल स्नपनम् ॥

सिन्दूरैररुणाकारैः पीत वर्णैश्च कुंकुमैः, चर्चनं क्षेत्रपालस्य सिन्दूरेण करोम्यहम् ॥

सिन्दूरार्चनम् ॥

सद्यः पूतैः महास्निग्धैः शुभ्रः गुडार्च पिण्डकैः, क्षेत्रपाल मुखे देयात् गुरू विघ्नः विनाशनम् ।

गुड़ार्चनम् ॥

सुस्वच्छ सौगन्ध्य सुनिर्मलेन सद्यैन तैलेन गुड़ान्वितेन ।
श्री क्षेत्रपालं बहु विघ्न शान्त्यै, संस्नोमि सिन्दूर कृतानुलेपम् ॥

भो क्षेत्रपाल जिनपः प्रतिमाकपाल दंष्ट्रा कराल जिन शासन रक्षपाल ।
तैलाभिषेक गुड़ चन्दन दीप धूपैः भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वर यज्ञ काले ॥

श्री कुमुद अंजन चामर पुष्पदंत जय विजय अपराजित, मणिभद्रादि अष्ट क्षेत्रपालेभ्यो अर्घं ॥

॥ अथाष्टकं ॥

स्थानान्सुनर्घ्यान् प्रति पत्ति योग्यान्, सद्भावसन्मान जलादिमिश्च ।
जैनाभिषेके समुपागतानां, करोमि पूजामह दिक्पतीनाम् ॥

ॐ ह्रीं दशदिग्पालेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ।

श्री खंडकर्पूर सुकुंकुमाढ्यैः गन्धैः सुगन्धीकृत दिग्विभागैः ॥ जैनाभि० ॥ चन्दनं ॥
शाल्यक्षते रक्षत दीर्घगात्रैः सुनिर्मलैश्चन्द्र करावदातैः ॥ जैनाभिषे० ॥ अक्षतम् ॥
अंभोजनीलोत्पलपारिजातैः कदम्ब कुन्दादिवर प्रसूनैः ॥ जैनाभिषे० ॥ पुष्पं० ॥
नैवेद्यकैः कांचन रत्नपात्रैर्न्यस्तैर्दत्तैः हरिणासुहस्तैः ॥ जैनाभिषे० । नैवेद्यम् ।
दीपोत्करैः ध्वस्त तमोभिधाते, रुद्योदिताशेष पदार्थ जातैः ॥ जैनाभि० ॥ दीपम् ॥
तरुत्थकृष्णागरुचन्दनाद्यैः, सच्चूर्णजैरुत्तम धूपवर्गैः ॥ जैनाभि० ॥ धूपम् ॥
लवंग नारंग कपित्थ पूगैः, श्री मोचचोचादि फलैः पवित्रैः । जैनाभि ॥ फलम् ॥
श्री खंडकर्पूर सुगन्धवाभिः फलैश्च पुष्पाक्षत धूप नाद्यैः ॥ जैनाभि० । अर्घं ।

(शुद्ध जल से अभिषेक करें)

ॐ श्रीमद्भिः सुरसैः निसर्ग विमलैः पुण्याश्रयाभ्यावृतैः ।
शीतैश्चारु घटाश्रितैः रविरथैः, सन्ताप विच्छेदकैः ॥
तृष्णोद्रेक हरैः रजः प्रशमनैः, प्राणोपमैः प्राणिनाम् ।
तोयैर्जैनवचो, मृतातिशयिभिः, संस्नापयामोजिनम् ॥
ॐ जय जय अर्हन्त भगवंतं, जलेन स्नापयामीति स्वाहा ।
जे के वि भव्व जीवा, इच्छन्ति मण वयण काय संजुत्ता ।
सव्वे मणुपुव्वं, पच्छेहवन्दामियां सव्वे ॥

भवणालय चालीसा, विन्तर देवाण होंति बत्तीसा ।
कप्पामर चउवीसा, चन्दो सूरोणरो तिरिओ ।

भगवतः गर्भ जन्म दिक्षा ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो जलं यजामहे स्वाहा ।

जल स्नपनम् ॥

पुण्यैः वार्भिः प्रसिद्धैः परिमल बहुलैश्चन्दनै रक्षतोघैः ।
पुष्पैः पुन्नागनागैश्वरुभि सुरवरैः दीपकैः दीपिताभैः ॥
धूपैः सद्द्रव्य युक्तै रिव सुकृत फलैः मातुलिंगाम्र पूगैः ।

पुष्पांजलि प्रयुक्तै रुपवनमहितैः, संयजे देव देवं ॥ अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(घृताभिषेक)

ॐ दण्डी भूत तडिद्गुण प्रगुणया, हेमाद्रिवत् स्निग्धया ।
चञ्च च्चंपक मालया रुचिरया, गौरोचना पिंगया ॥
हेमाद्रिस्थल सूक्ष्मरेणु विलसद्, धातुल्यिका लोलया ।
द्राक्षीयो घृत धारया जिनपतेः, स्नानं करोम्यादरात् ॥

ॐ जय जय अर्हतं..... घृत स्नपनम् । पुण्यैः वार्भिः इत्यादिना अर्घं ॥

❀ दुग्धा भिषेक ❀

ॐ माला तीर्थ कृतः स्वयंवर विधौ क्षिप्रा पवर्ग श्रिया ।
तस्येयं शुभगस्य हार लतिका, प्रेम्णातया प्रेषिता ॥

वर्त्मन्यस्य समर्चितो विनिहिता, दिग्विथि संख्या कृता
कुर्म शर्म समृद्धये भगवतः संस्नापयेधारया ॥

ॐ जय जय अर्हन्त····· दुग्ध स्नपनं ॥ पुण्यैः वार्भिः इत्यादिना: अर्घं ॥

(दध्याभिषेक)

ॐ शुक्ल ध्यान मिदं समृद्ध मथवा, तस्यैव भर्तुर्यशो ।
राशीभूत मिदं स्वभाव विशदं, वाग्देवतायाः स्मितं ।
आहोस्वित्सुर पुष्प वृष्टि रियमि,—त्याकार मातन्वितैः ।
दध्नेन हिम खंड पांडुर रुचा संस्नापयामो जिनम् ॥

ॐ जय जय अर्हन्तं····· दधिस्नपनम् ॥ पुण्यै वार्भिः इत्यादिना अर्घम् ॥

—:ईक्षुरसाभिषेकः—

ॐ देवाने कैरनेकै स्तुति मुखर मुखै वीक्षी ता यांति रिष्टैः ।
शक्रेशोच्चैः प्रयुक्तैर्जिन चरण युगैश्चारु चामीकराभा ।
धारां भोजक्षितीक्षु प्रचुर वर रसा श्यामला वो विभूत्या ॥
भूयात्कल्याण काले, सकल कलिमल क्षालने तीवदक्षः ।

ॐ जय जय अर्हन्तं····· इक्षुरस स्नपनम्, पुण्यै वार्भि इत्यादिना अर्घं ॥

॥ सर्वौषधि स्नपनं ॥

ॐ संस्नापितस्य घृत दुग्ध दधीक्षुवाहै सर्वाभिरौषधि भिरर्हत मुज्वलाभि ।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेक मेला कालेय कुंकुम रसोत्कट वारिपूरैः ॥

ॐ जय जय अर्हन्तं भग ...सर्वौषधि स्नपनम् ॥ पुण्यैःवार्भिः इत्यादिना अर्घं ॥

(शांतिधारात्रयम्)

संपूजकानां प्रति पालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिर्भगवान् जिनेन्द्रः ॥

"एक रकेबी में पुष्प अक्षत दीपक रख कर आरती उतारें"

दध्युज्ज्वलाक्षत मनोहर पुष्प दीपैः पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेण ।
त्रैलोक्य मंगल सुखानल कामदाह, मारार्तिकं तवविभोरवतारयामि ॥

(इति मंगलार्तिकावतारणम्)

(चारों कोनों के ४ कलशों से अभिषेक करे)

ॐ हृद्योद्वर्तन कल्क चूर्ण निवहैः, स्नेहापनो दंतिनो-
वर्णाढ्यैः विविधैः फलैश्च सलिलैः, कृत्वावतार क्रियां ।
संपूर्णैः सकुदुद्धतैः जल धरा कारैश्चतुर्भिर्घटैः ।
रंभापूरित दिङ्मुखैः रभिषवं कुर्मस्त्रिलोकीपतेः

ॐ जय जय अर्हतं ...चतुः कलशस्नपनम् ॥ पुण्यैः वार्भिः इत्यादिना अर्घम् ॥

निम्न श्लोक पढ़ते हुए भगवान के शरीर पर चन्दन का विलेपन करेः—

श्रद्धया च वृद्ध्या परया सुगंध्या, कर्पूर सम्मिश्रित चन्दनेन ।
जिनस्य देवासुर पूजितस्य विलेपनं चारु करोमि भक्त्या ॥

(चन्दनानु लेपनम्)

पुष्प वृष्टि

प्रफुल्ल पद्मोत्पल कंटकारि, कदम्बकै श्चंपक पाटलाभिः ।
अशोक पुष्पैः वरपारिजातै जिनस्य पूजां महतीं करोमि ॥

उक्त श्लोक पढ़ते हुए श्रीजीपर पुष्प वृष्टि करना चाहिये

—गंधोदक स्नपनम्—

ॐ कर्पूरोल्वण साद्र चन्दनरसा, प्राचुर्य शुभ्रत्विषा ।
सौरभ्याधिक गंधलुब्ध मधुपैः श्रेणी समाश्लिष्टया ॥
सद्यः संगत गांगया मुनिमहा श्रोतो विलासस्पृहा
सद् गंधोदक धारया जिनपतेः स्नानं करोमि श्रियैः ।
ॐ जय जय अर्हतं..... गंधोदक स्नपनम् ॥

ॐ स्नानानन्तर महतः स्वयमपि स्नानाम्बुपेकाद्रितो–
वागंधाक्षत पुष्पदाम चरुकैः दीपैः सुधूपैः फलैः ॥
कामोदाम गजांकुशां जिनपतेः स्वभ्यर्च्य स्वस्तोत्रया
सः स्यादारवि चंद्रमक्षय सुख प्रख्यात कीर्ति ध्वजः ॥

अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ पुष्पांजलि क्षिपेत्

अभिषेक के बाद निम्न शांति मन्त्र पढ़ते हुवे भगवान पर दूध दूधा जल की अखण्ड धारा करना चाहिये।

—: शांति धारा मन्त्र :—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ॐ श्रीं क्रौं मम पापं: खंड, खंड, हन हन दह दह पच पच पाचय पाचय शीघ्रं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमोऽर्हं झ झ्वीं क्ष्वीं हं सं झं वं ह्रः पः हः ह्रीं ह्रः असिआउसा नमः सर्वे पूजकानाम् ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः मम श्रीरस्तु, वृद्धिर पुष्टिरस्तु, शांतिरस्तु, कांतिरस्तु, कल्याणमस्तु, अस्मदुकार्य सिद्ध्यर्थं सर्व विघ्न निवारणार्थं श्रीमद्भगवते सर्वोत्कृष्ट त्रैलोक्य नाथार्चित पाद पद्म प्रसादात् सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभि-वृद्धिरस्तु स्वस्तिरस्तु धनधान्य समृद्धिरस्तु श्री शांतिनाथो मां प्रसीदतु श्री वीतराग देवो मां प्रसीदतु श्री जिनेन्द्र परम मांगल्य नाम धेयो ममेहामुत्र च सिद्धिं तनोतु।

ॐ नमोर्हते भगवते श्रीमते चिंतामणि पार्श्व तीर्थंकराय रत्नत्रय रूपाय अनंत चतुष्टय सहिताय धरणेन्द्र फणमण्डल मंडिताय समवशरण लक्ष्मी शोभिताय इन्द्र धरणेन्द्र चक्रवर्त्यादि-पूजित पादपद्माय केवल ज्ञान लक्ष्मी शोभिताय जिनराज महादेवाय अष्टादश दोष रहिताय षट्-चत्वारिंशद्गुण संयुक्ताय परम गुरू परमात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्य परमेश्वराय देवाधि देवाय

सर्वसत्व हितंकराय धर्मचक्राधीश्वराय सर्व विद्या परमेश्वराय त्रैलोक्य मोहनाय धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुलबल वीर्य पराक्रमाय अनेक दैत्य दानव कोटि मुकुट घृष्ट पाद पीठाय ब्रह्मा विष्णु रुद्र नारद खेचर पूजिताय सर्वभव्य जनानंद कराय सर्व रोग मृत्यु घोरोप सर्ग विनाशाय सर्व देश ग्राम पुर पट्टन राजा प्रजा शांतिकराय सर्व जीव विघ्न निवारण समर्थाय श्री पार्श्व देवाधि देवाय नमोस्तु । श्री जिनराज पूजन प्रसादात सर्व सेवकानाम् सर्व दोष रोग शोक भयपीड़ा विनाशनं कुरु कुरु सर्व शांति तुष्टि पुष्टि कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ नमो श्री शांति देवाय सर्वारिष्ट शांति कराय ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असिआ उसा मम सर्व विघ्नं शांतिं कुरु कुरु स्वाहा मम तुष्टि पुष्टं कुरु कुरु स्वाहा । श्री पार्श्वनाथ पूजन प्रसादात् सर्व अशुभानि पापानि छिन्द २ भिन्द २, मम पर दुष्ट जनोपकृत मंत्र तंत्र दृष्टि मुष्टि छल छिद्र दोषान् छिन्द २ भिन्द २ मम अग्नि चोर जल सर्प व्याधि छिन्द २ भिन्द २, मारी कृतोपद्रवान् छिन्द २ भिन्द २, सर्व भैरव देव दानव वीर नरनारसिंह योगिनी कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, डाकिनी शाकिनी भूत प्रेतादि कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी देव देवी कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, अग्निकुमार भयं छिन्द २ भिन्द २, उदधिकुमार भयं छिन्द २ भिन्द २, स्तनितकुमार भयं छिन्द २ भिन्द २, द्वीपकुमार दिक्कुमार भयं छिन्द २ भिन्द २ वातकुमार मेघकुमार भयं छिन्द २ भिन्द २, इन्द्रादि दश दिग्पाल देव कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २ जय विजय अपराजित माणिभद्र पूर्णभद्रादि क्षेत्रपाल कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, राक्षस वैताल दैत्यदानव यक्षादि कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, नवग्रह देवता कृत सर्व ग्राम

नगर पीड़ां छिन्द २ भिन्द २, सर्व अष्ट कुली नाग जनित विष भयान् छिन्द २ भिन्द २, सर्व ग्राम नगर देश मारी रोगान् छिन्द २, भिन्द २, सर्व स्थावर जंगम विषजाति वृश्चिक दृष्टि विष सर्पादिकृत दोषान् छिन्द २ भिन्द २ सर्व सिंह अष्टापद व्याघ्रव्याल वनचर जीव भयान् छिन्द २ भिन्द, २, पर शत्रु कृत मारणोच्चाटन विद्वेषण मोहन वशी करणादि दोषान् छिन्द २ भिन्द २, सर्व देशपुर मारीम् छिंद २ भिंद २, सर्व राज नरमारीं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व हस्ती घोटक मारीम् छिंद छिंद भिंद भिंद, गोवृषभादि तीर्यंच मारीम् छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व वृक्ष पुष्प लता मारीम् छिंद छिंद भिंद भिंद :

ॐ भगवती श्री चक्रेश्वरी ज्वाला मालिनी पद्मावती देवी अस्मिन् जिनेन्द्र भवने आगच्छ आगच्छ एहि २ तिष्ठ २ बलिं गृहाण २ मम धन धान्य समृद्धिं कुरु कुरु सर्व भव्य जीवानंदनं कुरु २ सर्व देश ग्रामपुर मध्ये क्षुद्रो पद्रव सर्व दोष मृत्यु पीड़ा विनाशनं कुरु २ सर्व परचक्र भय निवारणं कुरु २ स्वाहा ।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वृषभादि वर्द्धमानांताश्चतुर्विंशति तीर्थंकर परम देवा प्रीयंताम् २, मम पापानि शाम्यन्तु घोरोप सर्गाणि सर्व विघ्नानि शाम्यंतु ।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावती देवी प्रीयंताम् २ ।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री रोहिण्यादि महादेवी अत्र आगच्छ २ सर्व देवता प्रीयंताम् २ ।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री मणिभद्रादि यक्षकुमार देवाः प्रीयंताम् २, सर्वे जिन शासन रक्षक देवाः

प्रीयंताम् २, श्री आदित्य [illegible] मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनिश्चर राहु केतु सर्वे नवग्रह देवाः प्रीयंताम् २ प्रसीदंतु देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि व्यसन वर्जितम् ।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्ति रस्तु सदा मम ॥१॥
यस्यार्थे क्रियते कर्म, सप्रीतो नित्य मस्तु मे ।
शांतिकं पौष्टिकं चैव, सर्व कार्येषु सिद्धिदः ॥२॥
आह्वानं नैव जा नामि, नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जनं न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर ॥३॥

॥ इति शांति धारा मंत्रम् ॥

शांति मंत्र के बाद अवकाश हो तो उसी प्रकार भगवान पर अखंड धारा करते हुए आगे छपी हुई ज्येष्ठ जिनवर जयमाला पढ़ना चाहिये ।

आरती

आरती सुविशाल रत्न सारे निपाई, सुवर्ण मय करि पात्र इन्द्र हाथे विहूसाई ॥
प्रज्वलंति कर्पूर पुष्प माला करि सोहै, अन्धकार फोडंति भविय लोक मन मोहै ॥
जे जिनवर भक्ति करी आरती करंती, ते अज्ञान हणी करि केवल ज्ञान लहंती ॥
आरतीय कनक वरणी [illegible] जिनेश्वरतणो भुवन ।

उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, चहुँ दिशि जिन चैत्यालय ।
अतीत अनागत वर्तमान, तीन चौबीसी होय
कल्याण कीजिये कर जोड़ि जिये । जिन बहोत्तर होय चंग
प्रणमिजे पुरुषा, त्रिषठ सलाखा । नित्य नवा होई रंग ।
आरती हुई चौबीस जिनेश्वर, तणे भुवने हुई निनाद ।
तिहां झालर घण्टा, धोमधोमन्ता, श्री संघ मन आणंद ॥

देवताविसर्जनम्:—

आहूता ये पुरा देवाः लब्धभागा यथाक्रमम् ।
ते जिनाभ्यर्चनं दृष्ट्वा सर्वेयांतु यथास्थितिम् ॥
स्वस्थानं गच्छतु गच्छतु स्वाहा । इति दिक्पाल क्षमापनम् ।

निर्मलं निर्मलाकारं पवित्रं पाप नाशनम् ।
जिन गन्धोदकम् वन्दे अष्ट कर्म विनाशनम् ॥ गंधोदक वंदनम् ।

अनंतर निम्न श्लोक पढ़कर धूप खेवन करें:—

तरूत्थ काला गुरू चन्दनाद्यं प्रपूरिता शेष दिगन्तरालम् ।
सधूमवृत्या घनवृन्द कांत्या यजामिधूपं प्रवरं जिनाय ॥

तत्पश्चात केशर चढ़ा कर घण्टादि वाजित्र बजाते हुए भगवान को यथास्थान विराजमान करें ।

❀ अथ ज्येष्ठ जिनवर पूजा ❀

(ब्र० जिनदास कृत)

श्री नाभिराय कुल मंडन, मरु देवी उर रयण ।
प्रथम तीर्थंकर गाय सुं, स्वामी आदि जिणंद ॥
ज्येष्ठ जिनंद नवायु, सूरज उगमणे ।
सुवर्ण कलश अणाऊं, क्षीर समुद्र भरणे ॥ १ ॥

युगला धर्म निवारण स्वामी, आदि जिनंद ।
संसार सागर तारण, सेवित सुर गहनं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥

गण धर ऋषिवर यति वर मुनिवर ज्ञान धरं ।
आर्जिका श्रावक श्राविका पूजित चरण वरं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥

श्री सकल कीर्ति गुरु प्रणमी ने जिनवर पूज रचूं ।
ब्रह्म भणे जिन दास सु आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ जिनवर स्वामी अत्र अवतर २ संवौषट् ॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ जिनवर स्वामी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठ जिनवर स्वामी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

॥ अष्टक ॥

निर्मल शीतल सुगन्ध पुज्य रयं,
कर्ममल सब टालिय आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ जलं ॥

चन्दन कुंकुम कपूर विलेपन पूज्य रयं ॥
सुगन्ध शरीर लही करी आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ चन्दनम् ॥
मुक्ताफल लिम उज्ज्वल अक्षत पूज्य रयं ।
पूज्य पद लही करी आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ अक्षतम्
बाही जुही मच कुंद सेवत्री पूज्य रयं ।
पूज्यपद लही करी आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ पुष्पम् ॥
उत्तम अन्न बहु आणिय, पक्वान्न पूज्य रयं ।
वेदनीय कर्म विनाशिय आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ नैवेद्यम् ॥
कपूर तणी बहु ज्योति सु आरती पूज्यरयं ॥
घातीय कर्म विनाशिय आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ दीपम् ॥
अगर कपूर कृष्ण गुरू धूपइ पूज्य रयं ।
घातीय कर्म विनाशिय आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० धूपम् ॥
आम्र नारिंग जंबीर नारीकेल पूज्यरयं ।
मन वांछित फल मांगहुँ आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० ॥ फलम् ॥
अचल मंगल गीत महोत्सव अर्घइ पूज्य रयं ।
स्तवन करी फल मांगहु आत्मा निर्मलयं । ज्येष्ठ जि० ॥ अर्घम् ॥
सकल कीर्ति गुरू प्रणमिने जिनवर पूज्य रयं ।
ब्रह्ममणे जिन दास सु आत्मा निर्मलयं ॥ ज्येष्ठ जि० । कुसुमांजलिः ।

❀ जयमाला ❀

(अ० कृष्णदास कृत)

अमर नयरि सम नयरि अयोध्या, नाभि नरेन्द्र वसैं निरबुध्या ।
सुरपति मेरु शिखर लही चढ़िया कनक कलश क्षिरोदधि भरिया ॥

तस पटराणी मरु देवी माया, युगपति आदि जिनेश्वर जाया । सुरपति० ।
ज्येष्ठ मास अभिषेक जु करिया, अष्टोत्तर शत कुंभ जुभरिया । सुरपति० ।
भभकत जलधारा संचरिया, ललित कलोल धरणि उत्तरिया । सुरपति० ।
जय जय असुरनि करी उच्चरिया, इंद्र इन्द्राणी सिंहासन धरिया । सुरपति० ।
अंग अनंग विभूषण धरिया, कुण्डल हार हरित मणि जड़िया । सुरपति० ।
ऋषभनाम शत मुख विस्तरिया, कमल नयन कमलापति कहिया । सुरपति० ।
युगला धर्म निवारण करिया, सुर नर निकर गन्धोदक महिया । सुरपति० ।
रत्न कचोल कुमारिनि भरिया, जिन चरणाम्बुज पूजत हरिया । सुरपति० ।
हिमहिमांशु चंदन घन सरिया, भूरि सुगन्ध गन्ध परि सरिया । सुरपति० ।
अक्षत अक्षतवास लहरिया, रोहिणी कांत किरण सम सरिया । सुरपति० ।
देखत रुचि करि अमरनिकरिया, पंच मुष्ठि जिन आगे धरिया । सुरपति० ।
सुन्दर पारिजात मोगरिया, कमल बकुल पाटल कुमुदरिया । सुरपति० ।
चरूवर दीप लेई अपछरिया, जिनवर आगे उतारि उधरिया । सुरपति० ।

अगर लुबान धूप फल फलिया, फणस रसाल मधुर रस भरिया ॥ सुरपति० ॥
कुसुमांजलि सांजुलि समुजलिया, पंडितराय अभ्र वच कलिया ॥ सुरपति० ॥
त्रिभुवन कीर्ति पद कज वरिया, रत्न भूषण सूरी मदापद कहिया ॥ सुरपति० ॥
ब्रह्म कृष्ण जिन राजस्तविया, जय जय कार करि मन हरिया ॥ सुरपति० ॥
कुम्भ कलश भरी जय जिन वरिया, शाश्वत शर्म सदा अनुसरिया ॥ सुरपति० ॥

घत्ता– यावंति जिन चैत्यानि, विद्यंते भुवन त्रये ।
तावंति सततं भक्त्या, त्रिः परित्य नमाम्यहं ॥ अर्घं ॥

नोटः— ऊपर की जयमाला अभिषेक के समय में भी पढ़ी जाती है एवं उस समय इन्द्र जल या दूध की अखंड धारा करे तथा इन्द्राणी एक थाल में [illegible] रख कर भगवान की आरती उतारे। यह प्रथा खास कर गुजरात प्रांत में प्रचलित है।

॥ अथ देव पूजा प्रारभ्यते ॥

(भ० सुमति कीर्ति के शिष्य यशवन्त सागर कृत)

ॐ जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ॥
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥

चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलम् ।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो-

धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि ॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा ॥ पुष्पांजलि क्षिपेत्

(निम्न मंगल पाठ पढ़ते हुवे पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

अपवित्रः पवित्रोवा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपिवा । ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥१॥
अपवित्रः पवित्रोवा, सर्वावस्थांगतोऽपिवा । यः स्मरेत् परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचि ॥२॥
अपराजित मंत्रोऽयं सर्व विघ्न विनाशनः मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः ॥३॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलम् ॥४॥
अर्हमित्यक्षर ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥५॥
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं । सम्यक्त्वादि गुणोपेतं सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यांति, शाकिनी भूतपन्नगाः विषं निर्विषतां याति पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥७॥
युगादि देवं प्रणिपत्य पूर्वं, श्री काष्ठ संघे महिते सुभव्याः
श्री मत्प्रतिष्ठा सुतरो जिनस्य श्री यज्ञ कल्पं स्वहिताय वक्ष्ये ॥८॥
आदि देवं जिनं नत्वा केवल ज्ञान भास्करं ।
काष्ठा संघ श्चिरंजीयाद् क्रिया काष्ठादि देशकः ॥९॥
जय जय श्री सदा शांतिः, कल्याणं सर्व मंगलम् ।
तनोतु सर्वदा श्रेयः पूजा प्रारभ्यते जिनैः ॥१०॥

श्री नाभि नंदन जिनं प्रणिपत्य भक्त्या षड्दर्शनामृत रसेन जगत्प्रपूर्णम् ।

श्री काष्ठ संघ वर मंगल हेतु भूत, यदागमे निगदितं प्रकरोमि पूजा ॥१॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

[निम्न स्वस्ति विधान पढ़ते हुवे पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये]

स्वस्ति त्रिलोक गुरवे जिन पुंगवाय, स्वस्ति स्वभावात महिमोदय सुस्थिता ।

स्वस्ति प्रकाश सहजोर्जितदृङ्मयाय, स्वस्ति प्रसन्न ललितादुद्भुत वैभवाय ॥१॥

स्वस्त्युच्छल द्विमल बोध सुधाप्लवाय, स्वस्ति स्वभाव पर भाव विभास काय ।

स्वस्ति त्रिलोक विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल सकलायत विस्तृताय ॥२॥

द्रव्यस्य शुद्धि मधि गम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धि मधिका मधि गंतु कामः ।

आलम्बनानि विविधान्यवलंब्य वल्गान् भूतार्थ यज्ञ पुरुषस्य करोमि यज्ञं ॥३॥

अर्हत्पुराण पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव

अस्मिन्नकाद्विमल केवल बोध वन्हौ, पुण्यं समग्र मखमेकमना जुहोमि ॥४॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञे जिन प्रतिमाग्रे पुष्पांजलिंक्षिपेत् ॥

(आह्वाननम्)

सार्वः सर्वज्ञनाथः सकल तनुभृतां, पाप सन्ताप हर्ता,

त्रैलोक्याक्रान्त कीर्तिः क्षतमदनरिपुर्घाति कर्म प्रणाशः ।

श्री मन्निर्वाण संपद्वर युवति कराश्लीढ कण्ठैः सुकण्ठै-

देवेन्द्रैर्वंद्य पादो जयति जिनपतिः प्राप्त कल्याण पूजा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं ।

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

देवि श्री श्रुत देवते भगवति त्वत्पादपंकेरुह-

द्वन्द्वे पाणिशिलीमुखत्वमपरं भक्तया मया प्रार्थ्यते ।

मातश्चेतसि तिष्ठ में जिन मुखोद्भूते सदा पाहि मां

दृग्दानेन मयि प्रसीद भवतीं सम्पूजयामोऽधुना ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत द्वादशांग श्रुत ज्ञान अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत द्वादशांग श्रुतज्ञान अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत द्वादशाङ्ग श्रुत ज्ञान अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

इत्युच्चार्य पुस्तकोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

सम्पूजयामि पूज्यस्य, पाद पद्म युगं गुरोः ।

तपः प्राप्त प्रतिष्ठस्य, गरिष्ठस्य महात्मनः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु समूह अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् ।

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु समूह अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः ।

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय सर्व साधु समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गुरु पादुका स्थापनम् ॥

(समुच्चयाष्टक)

देवेन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्रवन्द्यान् शुम्भत्पदान्शोभितसार वर्णान् ।
दुग्धाब्धि संस्पर्द्धि गुणैर्जलौघैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं परं ब्रह्मणे अनंतानंत ज्ञान शक्तये अष्टादशदोष रहिताय षट् चत्वारिंशद्गुण सहिताया-र्हत्परमेष्ठिने, जिनमुखोद्भूत स्याद्वाद नय गर्भित द्वादशांग श्रुतज्ञानाय, सम्यग्दर्शनादि गुण-विराजमानाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यश्च जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तान्यत् त्रिलोकोदर मध्यवर्ति, समस्त सत्वाहितहारिवाक्यान् ।
श्री चन्दनैर्गंध विलुब्ध भृङ्गैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ चंदनं ॥ २ ॥

अपार संसार महासमुद्र प्रोत्तारणे प्राज्यतरीन् सुभक्त्या ।
दीर्घाक्षतांगैर्धवलाक्षतौघैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

विनीत भव्याब्ज विबोध सूर्यान्वर्यान्सुचर्या कथनैक धुर्यान् ।
कुन्दारविन्दप्रमुखैः प्रसूनैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

कुदर्पकंदर्पविसर्प सर्प असह्य निर्णाशन वैनतेयान्
प्राज्याज्य सारैश्चरुभीरसाढ्यैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ नैवेद्यम् ॥५॥

ध्वस्तोद्यमान्धीकृत विश्व विश्व मोहान्धकार प्रतिघाति दीपान् ।
दीपैः कनत्कांचन भाजनस्थैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ दीपम् ॥६॥

दुष्टाष्टकर्मेन्धन पुष्ट जाल संधूपने भासुर धूमकेतून् ।
धूपैर्विधूतान्यसुगन्ध गन्धैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

क्षुभ्यद्विलुभ्यन्मनसामगम्यान् कुवादि वादा स्खलित प्रभावान् ।
फलैरलं मोक्षफलाभिसारैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन्यजेऽहम् ॥फलं ॥ ८ ॥

सद्वारिगन्धाक्षत पुष्प जातैर्नैवेद्य दीपामल धूप धूम्रैः ।
फलैर्विचित्रैर्घन पुण्य योग्यान् जिनेन्द्र सिद्धांत यतीन्यजेऽहम् ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

ये पूजां जिननाथ शास्त्र यमिनां भक्त्या सदा कुर्वते ।
त्रैसन्ध्यं सुविचित्र काव्य रचना मुच्चारयन्तोनराः ॥

पुण्याढ्या मुनिराजकीर्ति सहिता भूत्वा तपो भूषणा-
स्तेभव्याः सकलात्र बोध रुचिरांसिद्धिलभंतेपराम् ॥ इत्याशीर्वादः ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ऋषभोऽजित नाभाच, संभवश्चाभिनन्दनः सुमतिः पद्मभासश्च, सुपार्श्वोजिन सत्तमः ॥ १ ॥

चन्द्राभः पुष्पदन्तश्च शीतलो भगवान्मुनिः, श्रेयांश्च वासु पूज्यश्च विमलो विमल द्युतिः ॥२॥
अनंतो धर्म नामाव शांतिः कुन्थुर्जिनोत्तमः, अरश्च मल्लिनाथश्च, सुव्रतो नमि तीर्थकृत् ॥३॥
हरिवंश समुद्भूतोऽरिष्टनेमिर्जिनेश्वरः, ध्वस्तोपसर्गदैत्यारिः पार्श्वो नागेन्द्र पूजितः ॥४॥
कर्मान्तकृन्महावीरः सिद्धार्थ कुल सम्भवः, एतेसुरा सुरौघेण पूजिता विमलत्विषः ॥५॥
पूजिता भरताद्यैश्च, भूपेन्द्रैर्भूरिभूतिभिः, चतुर्विधस्य संघस्य शांति कुर्वन्तु शाश्वतीम् ॥६॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिः सदास्तुमे, सम्यक्त्वमेव संसार वारण मोक्षकारणम् ॥७॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

❀ देव जयमाला ❀

घत्ताः— चौवीस जिणंदह तिहुयणचंदह, अट्ठय लक्खण भायणहं ।
जयमाल विरामी, गुणगणभरमी, कर्ममहागिरी चूरणयं ॥ १ ॥

जय जय रिसह णमो भव रहिया, जय जय अजिय सुरासुर महिया ।
जय संभव दुक्ख खयकारा, जय अहिणंदण भवभय टारा ॥ २ ॥

जय जय सुमइ कुबुद्धि विणासण, जय पउमप्पह कलिमल णासण ।
जय सुपास जैनेन्द्र भण्डारा, जय चन्दप्पह तिहुयण सारा ॥ ३ ॥

जय जय पुप्फयंत परमेश्वर जय जय सीयल जिण जोगेश्वर ।
जय जय सेय भवोदधि तारा, जय जय वासु पुज्ज गुण धारा ॥ ४ ॥

जय जय विमल सुनिरमल देहा, जयहि अणंत अणंत जिणेशा ।
जय जय धम्म सु धम्म पयासा जय जय सांति सांति नय भासा ॥५॥

जय जय कुंथु परम सुभ कारण जय अर कर्माण कलमस दारण
जय जय मल्लि मरणभय भज्जिय, जय मुणिसुव्वय सुर नर पुज्जिय ॥६॥

जय णमि विकल कमल दल कोमल, जयहि अरिट्ठणेमि अतुलीबल ।
जय जय पास फणी मण भूषण, जय जय वड्ढमाण गय दूषण ॥७॥

घत्ता:-इय णर देवे, णीय सूयसंत्तिए, जिण चौबीसइ पणमिया भत्तिए ।
एजिण वर जो अणुदिणु भावई, सो पुणु अणसुण पच्छई आवई ॥८॥

ॐ ह्रीं वृषभादि महावीरान्तेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

❀ अथ सरस्वती (शास्त्र) पूजा ❀

देवि श्री श्रुतदेवते भगवति, त्वत्पाद पंकेरुह-
द्वन्देयामि शिखी मुखत्वमपरं, भक्त्या मया प्रार्थ्यते ।
मातश्चेतसि विष्ठ मे जिन मुखोद्भूते सदापाहिमां,
दत्तानेन मयि प्रसीद भवतीं सम्पूजयामोऽधुना ॥१॥ स्थापनम् ॥
इत्युच्चार्य पुस्तकोपरि पुष्पांजलिंक्षिपेत् ।

वृषभ वक्त्र सरोरुह निर्गता, प्रकटिता वृष सेन गणाधिपैः ।
जगति तत्व विदां हृदयं गता जयतु जैन वचोऽमल भारती ॥१॥

सकल भव्य मनोम्बुज भास्करी, भविक मानस हंस मनोहरी ।
धृतसु पक्षसु चन्द्र करोज्वला, जयतु०····· ॥ २ ॥

अमल बोध चतुष्टय पूरिता, परम केवल लक्षित चिन्मयी ।
विदित विश्व विचेष्टित वाग्वरं, जयतु०····· ॥ ३ ॥

दशमाधिक अंग विवर्द्धिता, नव पदार्थ नवीकृत भूषणा ।
रुचिर वर्ति पदावलि नूपुरा, जयतु०····· ॥ ४ ॥

मनसि जोत्कट कुञ्जर सिंहिका, कलि कराल तमोरवि सत्प्रभा ।
व्यसन वृन्द दवानल वारिणी, जयतु०····· ॥ ५ ॥

वचन जाड्य निवर्हण पण्डिता, हृदय कल्पित कल्पतरूपमा ।
ससुर शक्रशतेन नमस्कृता, जयतु०····· ॥ ६ ॥

अनुक्रमामृत संश्रित निश्चला, शिव सुखेष्ट फलानु प्रदायिनी ।
भवभृतां भवबारि तरंतिका, जयतु०····· ॥ ७ ॥

त्रितय रत्न परार्घ्य निधान भू वितत तथ्य वितर्क पटीयसी ।
जनन मृत्यु जरादि भया पहा, जयतु०····· ॥ ८ ॥

सतत संश्रित कामित कामिभिर्विविध विघ्न विपक्ष विघाटनैः ।
भगवती मम तिष्ठतु मानसे, जयतु०····· ॥ ९ ॥

उदयेनान्त सेनेन कृतेयं भारती स्तुतिः ।
भूयादज्ञान नाशाय, पावनी भव्य देहिनां ॥ १० ॥

इति शारदा स्तुतिः ॥

॥ अथाष्टकम् ॥

पयः पयोधेस्त्रिदशापगायाः, पयः पयोजात पराग रम्यम् ।
समन्त भद्रश्रुत देवतायै भक्त्या परायै परया ददामि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै जलम् ॥

सद्द्रव्य सौरभ्य समाहुतालि कोलाहल स्तोत्र मनोभिरामैः ।
कालीय सत्कुंकुमचन्दनार्घैः गिरं चिरं तीर्थ कृतां यजामि । चन्दनम् ॥ २ ॥

सदावदातैः सरलैर्विचित्रैर्मुनेर्मनः साम्यमुपाश्रयद्भिः ।
सदक्षतैरक्षत शासनानां तीर्थंकराणां गिरमर्चयामि । अक्षतम् ॥ ३ ॥

मन्दार सन्तानक पारिजात जातैः प्रसूनैरलिचुम्बिताग्रैः ।
देवेन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्र वर्यां, गिरं जिनना महमर्चयामि । पुष्पम् ॥ ४ ॥

शान्योदनैः क्षीर दधीक्षु भक्ष्य, द्राक्षाम्र खर्जूरक चोच पाद्यैः ।
प्रमाण बाधादि विरोध मुक्तां स्याद्वाद वाणीं परिपूजयामि । नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

शिखावलैः स्नेह दशान्तमोह मलं विमुन्चद्भिरलं प्रतापैः ।
सदा समस्थैरिव भाजन स्थैः प्रदीपकैः श्री श्रुतमर्चयामि । दीपम् ॥ ६ ॥

सग्रंथ पर्णैरूज संकु एव स्वर्कंदयद्भिः प्रसरद्भिरूर्ध्व ।
धूपैर्विधूमानल संशयद्भिः कण्ठोपमैर्गां महमर्चयामि । धूपम् ॥ ७ ॥

जम्बीर नारंग लविंग पूग फलैर्ददामीष्ट फलाभिलाषैः ।
अर्चा स्मरोरः श्रुतदेवतायै, जगत्यहं श्री जिन नायकस्य । फलम् ८ ॥

सिद्ध गुणैर्नेत्र विशाल रम्यं वस्त्रं वर स्त्री वदनोपमानं ।
संशोभ कौशेय पटानुकूलं ददामि जैन श्रुत देवतायै ॥ वस्त्राभरणम् ॥ ९ ॥

पाटीर वाथोऽक्षत पुष्प पुन्ज चरू प्रदीपोत्तम धूप धूम्रैः ।
फलैर्जिनेन्द्रास्य पयोज पुत्रीं यजामि जैन श्रुत देवतां ताम् ॥ अर्घं ॥ १० ॥

❀ जयमाला ❀

घन मोह तमः पटलापहरं, यम संयम संजम भावधरं ।
भृत भूरि भवार्णव शोक हरं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं ॥ १ ॥

कृत दुष्कृत कौसिक भाव हरं, मिथ्यात्व निशाचर दूर करं ।
भुवि भव्यपयोज विकास सहं, प्रणमामि सुबोध दिनेशमहं ॥ २ ॥

कलि कर्दम कल्मष शोषमलं, हृदयाद्वसर्पित कर्ममलं ॥ भुवि० ॥ ३ ॥
निखिलामल वस्तु विकास पदं, धृत दुर्धर दुर्भर श्रेष्ठ पदं ॥ भुवि० ॥ ४ ॥
जड़तामपहार विहार समं, सुमनोभव भंग विभंग समं ॥ भुवि० ॥ ५ ॥
हृदयामल लोचन लक्षमितं, जिन भासुर भानु सहस्र युतं ॥ भुवि० ॥ ६ ॥
निजमण्डल मंडित लोक मुखं, निज सत्व समर्पित लोक सुखं ॥ भुवि० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

❀ अथ गुरू पूजा ❀

(शिखरिणी च्छन्दः)

सुसंघे काष्ठाख्ये विमल शुभ नंदीतटमिते,
सुगच्छे पुण्येशे प्रविजयति विद्यासु गण के ॥
सुनाम्ना विख्यातः सुमति रिह कीर्त्यंत मतिमान् ।
सरामाशेषोऽभूत् प्रबलतर सेनोन्नतमतिः ॥ गुरू पादुका स्थापनं ॥१॥

श्रीमत् श्री जयकीर्तिवंश विल सत् श्री मन्महीचंद्रजित्,
तत्पट्टे मुनि वृन्द वंद्य महिमा, भट्टारकाणां प्रभु ।
नाम्नायः सुमति परो विजयते यः कीर्तितः सज्जनैः ॥
श्रीभट्टाम्बर देशवंश विलसत् चिन्तामणि सार्थदः ॥ २ ॥

इत्युच्चार्य गुरूपादुकोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

❀ अथ गुरु पादुका स्तुतिः ❀

निज जनान्परि पालयति स्वयं करूणया मलयासु मुनीश्वरः
सुमति कीर्तिरसौ जयतेऽनिशं शशि मुखं कमनीय गुणा करः ॥१॥

विरजता मनसोभवदद्भुतः सकल सज्जनरंजित पंडितः ॥ सुमति० ॥ २ ॥
निखिल लोकसुवंदित सत्पदं प्रबल काव्य कला कुल कोविदं ॥ सुमति० ॥ ३ ॥
भुवन जीवदया करूणोद्यमः, कमल कोमल रूङ् मुनि गौतमः ॥ सुमति० ॥ ४ ॥

जिन जनार्ति हरो हत पातकः सुनयनः प्रतिवन्दित भक्तितः ॥ सुमति० ॥ ५ ॥
निज गुणो मुनिमान्य गुणोदधि, स्वजमहो कवितागुण वारिधिः ॥ सुमति० ॥ ६ ॥
विमलयाजित नागमहा निधिः, सकल तन्त्र समुच्चय तोयधिः ॥ सुमति० ॥ ७ ॥
प्रबल पंच व्रतादि करं परः, प्रथित शास्त्र कलार्थ परं परः ॥ सुमति० ॥ ८ ॥

(मालिनी छंद)

निखिल खल विकारान् वर्जयन्नैक वस्तु, प्रकटित निगमाब्धिस्त्यक्त संसार संगः ॥
जयति सुमति कीर्तिः सर्व गच्छे हि वंद्यो, विदित गुण गुणौघः सर्व भट्टारकेशः ॥

इति गुरू स्तुतिः ॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(अथाष्टकम)

नाना नदी सिन्धु सुताम्रवीपैः श्री मत्कलिंद गिरिजा विधियोद्भवैश्च ।
सम्पूजयामि विधिना विधिना तमादौ भट्टारकः सुमति कीर्ति मुनीश्वरेन्द्रः ॥ जलम् ॥ १ ॥
श्री चन्दनैः सकल चन्द्र करावदातैः पाथोरुहोद्भव पराग पराग काम्रैः ॥ । चन्दनम् ॥ ॥ २ ॥
रम्याक्षतैः परिमलाक्षत चञ्चरीकैः लीला विलोलकमलाकर निर्मितैश्च ॥ सम्पूज ॥ अक्षतं ॥ ४ ॥
शुम्भत्सुरेश्वर तरु प्रभवैः प्रसूनैः पंकेरुहै बकुल जाती सुकेतकैश्च ॥ सम्पूज ॥ पुष्पम् ॥ ३ ॥
स्फुजत्प्रभापरितिरस्कृत चंद्रबिम्बैः सुस्वादुभिश्चरुवरैर्विविधैः घृताढ्यैः ॥ सम्पूज ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
उर्जन्कदम्ब कलितैस्फुरदश्रुभिर्वा दीपैः प्रकाशितदिशैरपुंजहारैः ॥ सम्पूज ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

हम्यावशाकर सुगंध महाप्रधूपैः कर्पूर चन्दन लविंगललाचयुक्तैः ॥ सम्पूज ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
रम्याफलै स्फुटफलै पनसेन कैश्च कंकोरकै कमल कर्कठिकादिभिश्च ॥ संपूज ॥ फलं ॥ ८ ॥

श्री काष्ठ संघ महीचन्द्र पदाद्रि भानो, तोयादिभिः सुमति कीर्ति गुरुं गरिष्ठं ॥
योवत्यमु स लभतेवर भोगसौख्यं, लक्ष्मीश्वशिष्य यशवंतमुनीश्वरेण ॥ अर्घं ॥

रत्नत्रयस्य जाप्यं देयात् ।

१ ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः २ ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ३ ॐ ह्रीं सम्यक् चारित्राय नमः ॥

॥ जयमाला ॥

श्री मज्जिनेश्वर महं प्रणिपत्य कुर्वे श्रीमद्गुरो गुणगणान्प्रतिबुद्ध बुद्धया ।
श्री वासुदेव तनयो कवि जीवनोहं, भट्टारकस्य सुमतेर्जयकारी माला ॥ १ ॥

निखिलादि जिनागमदेह धरं धरणीधरवद्बहु शास्त्र धरं ।
प्रण मामि सुकीर्ति परं सुमतिः मतिदं गतिदं कृतदिव्य नुतिः ॥ २ ॥
निज बोध सुबोधित शिष्य परं वचनामृत तर्पित भव्यभरं ॥ प्रणमामि० ॥ ३ ॥
शुभ नित्य विवेक विचार परं, विजितारिभरं स्वजनेष्ट करं ॥ प्रणमा० ॥ ४ ॥
हत मोह महान्वित सैन्य बलं, बल निर्जित क्रोध मनन्यकलं ॥ प्रणमा ॥ ५ ॥
सुतपोव्रत सत्कृत देहधरं, धृतधर्म परं परमेष्ठी परं ॥ प्रणामा० ॥ ६ ॥
निजचित्त निवृत्ति पुरा कलुषं, रजनीपति वर्धित सद्वपुषं ॥ प्रणमा० ॥ ७ ॥
धृत दिव्यदयं विधिपालनकं, कलि पातक संघ निवारणकं ॥ प्रणमा० ॥ ८ ॥

कृत काम महाभट दिव्य जयं, विमलैक विवेक हतारि भयं ॥ प्रणमा० ॥ ९ ॥
वचनैरनुरञ्जितदिव्य सदं, निज शास्त्र बलार्दित वैरी मदं ॥ प्रणमा० ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं गुरु चरण कमलेभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

❀ अथ सिद्ध पूजा ❀

ऊर्ध्वाधोरयुतं सबिन्दुमपरं ब्रह्मस्वरावेष्टितं, वर्णापूरित दिग्गताम्बुजदलं तत्सन्धितत्वान्वितम् ।
अन्तः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकार संवेष्टितं देवं ध्यायति यः स मुक्ति सुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥१॥
ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपते, सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपते, सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं सिद्ध चक्राधिपते सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

सिद्ध चक्र स्तवन

अर्हमित्यक्षर ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ॥ १ ॥
अकारादि हकारान्तं रेफ व्यञ्जन संयुतं । ह्रींकारस्य स्वरूपाभं, सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ २ ॥
मध्यतो अर्हतः प्रोक्तं, बीज लक्षण लक्षितम् । भावितं सर्वरूपत्वं सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ ३ ॥
लकार वर्गमाराति, पकार षट् वर्ग कं । लोक मध्य गतो भद्रं, सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ ४ ॥
ईकारान्त प्रतीकारं, ललना वर्ग मालातिः । मध्य पीठ गतो ध्यानं, सिद्ध चक्रं नमाम्यहं ॥ ५ ॥

स्रग्धराच्छन्दः

यो देवेन्द्रै र्नरेन्द्रैः फणिपति सहितं सर्व सत्वोपकारं ।
संसाराम्भोधिपोतं, कमलदीगदलं मुक्तिशर्म प्रदेयं ।

शान्तै शान्तैकरूपं, बहु विध महितं कर्म संघापनोदं

तच्चक्रं चक्रनाथं जयति गुरुवरं सिद्ध चक्राभिधानं ॥ ६ ।

यत्शुद्धं व्योम बीजं अवर परियुतं शांति सिद्धाक्षरेण,

तत्सन्धौतत्व युक्तं परम पद सरैः वेष्टितं कर्म बीजं ।

यः श्रीमंतं निरन्तं विगतकलिमलंमायया वेष्टितांगं,

बीयत्रेसिद्धचक्रं विमलतर गुणं देव नागेन्द्र वंद्यं ॥ ७ ॥

॥ शार्दूल विक्रीडितच्छन्दः ॥

यद्गर्भाष्टक पूरितं वर दलं सानाहतंनीरजं,

यस्त्रोंकार कला सबिन्दु सहितं गर्भा स्त्रि मुर्त्या वृतं ।

यः सर्वार्थ करं परं गुणभृतां काल त्रये वर्तिनां,

तत्क्लेशौघ विनाशनं भवतु मे श्री सिद्ध चक्रेश्वरं ॥८॥

यद्वश्यादिक कारकं बहुविधं कामाधिक मोहितं ।

यल्लक्ष्यादिक जाप्य साध्य महिमा यत्संपदा दायकं ।

यत्कुष्टादिक दर्प दोष दलनं दुःखाभिभूतात्मनां

तद्वाहुत फलप्रदं वर यशः श्री सिद्ध चक्रेश्वरं ॥ ९ ॥

यत्सर्वांगहितं मनुष्यमहिमं, सौख्यालयं धार्मिणां

येदोषैः परिवर्जितं हि शिवदं ध्यानादि रूढ़ सतां ।

ततः पातु जिनं भवति शमनं मन्त्राधिपं सर्वदा,
यत्कर्म क्षय कारकं सुधवलं श्री सिद्ध चक्रेश्वरं ॥ ०१ ॥

व्यस्तं हस्तेषुरुद्धं, स्वर पर कलितं मण्डलंशोय युग्मै,
भूरि क्लेश प्रणाशंपतदमृत भवं स्वेतं हकारान्वितं ।
पश्चादागम्य भर्वीं चर्वीं कृत ममलगुण मासनं मंत्र नाम,
आहूतं ज्ञान रूपं सकल भयहरं अर्चये सिद्ध चक्रं ॥११॥

ॐ जिह्वायां करग्रे नशित मृतभवं स्वेतं हकारान्वितं,
पश्चाद्ध्यायेत्स्वरूपं विगत कलिमलं दग्ध कर्मेन्ध नौघं ।
त्रिप्रो स्वाहा समेतं निशित सुरमुखे अंगभागे समस्तं ।
एवं कृत्वाभिधानं परम फल प्रदं अर्चये सिद्ध चक्रं ॥१२॥

शब्द ब्रह्मैकलीनं प्रबल बल युतं सर्व सत्व प्रभावं,
सम्मेदं सर्व भद्रं गणधर वलयं दुःख पाप प्रणाशं ।
यन्नैमित्तं वरिष्टं विशद हृदि गतं सज्जनानां च नित्यं
यद्वर्णं यत्स वाह्यं रिपुकुलमघनं सिद्ध चक्रं नमामि ॥१३॥

यन्त्राणां मन्त्र बीजं सकल कलिमलं ध्वंसनं सिद्ध वंद्यं,
भूत्वाभिष्टार्थवंतं निखिल वर गुणालंकृतं दीप्ति वन्तं ।
रोगाणां दुर्निमित्तं ग्रहगण सकलान्भूतरक्षा करंतं,
श्री चक्रं चक्रनाथं मुनिभिरभिनुतं ध्यान गम्यं नमामि ॥१४॥

पठति परम भक्ति कश्चिदर्थं प्रभेद, सभवति गुण लीन सर्व सत्व प्रवीण ।
श्रुत गुण विमलेन भव्य साधारणेन कृतमखिल गुणाढ्यं संस्तुवे सिद्ध चक्रं ॥१५॥

इत्युच्चार्य श्री सिद्ध चक्र यन्त्रोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(अथाष्टकम्)

सिद्धौ निवास मनुगं परमात्मगम्यं, हीनादि भाव रहितं भवतीत कायम् ।
रेवापयोवर सरोयमुनोद्भवानां नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्ध चक्रम् ॥ जलम् ॥ १ ॥

आनन्द कन्द जनकं घनकर्म मुक्तं सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीतम् ।
सौरभ्य वासित भुवं हरिचन्दनानां, गन्धैर्यजेपरिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥चन्दनम् ॥२॥

सर्वावगाहन गुणं सुसमाधि निष्ठं सिद्धं स्वरूप निपुणं कमलं विशालम् ।
सौगन्ध्य शालिवनशालिवराक्षतानां पुञ्जैर्यजेशशिनिभैर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ अक्षतम् ३ ॥

नित्यं स्वदेह परिमाण मनादि संज्ञं, द्रव्यानपेक्ष ममृतं मरणाद्यतीतम् ।
मन्दार कुन्द कमलादि वनस्पतीनां, पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ पुष्पम् ४ ॥

उर्द्ध स्वभाव गमनं सुमनोव्यपेतं, ब्रह्मादिबीज सहितं गगनावभासम् ।
क्षीरान्नसाज्यघटकैं रसपूर्णगर्भैं, नित्यंयजे चरूवरैर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

आतंक शोक भय रोग मद प्रशान्तं, निर्द्वन्द भाव धरणं महिमा निवेशम् ।
कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातैं, दीपैर्यजेरुचिवरैर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

पश्यन्समस्त भुवनं युगपन्नितान्तं, त्रैकाल्य वस्तु विषये निविड प्रदीपम् ।
सद्द्रव्य गंध घनसार विमिश्रितानां धूपैर्यजेपरिमलैर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

सिद्धासुराधिपति यक्ष नरेन्द्र चक्रै, र्ध्येयं शिवं सकल भव्य जनैः सुवन्द्यम् ।
नारिंग पूग कदली फल नारिकेलैः सोऽहंयजेवरफलैर्वर सिद्ध चक्रम् ॥ फलम् ॥ ८ ॥

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत गणैः संगं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत चयं रम्यं चरूं दीपकं ।
धूपं गन्ध युतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं सेनोचरं वांछितं ॥ अर्घ्यं ॥ ९ ॥

ज्ञानोपयोग विमलं विशदात्मरूपं, सूक्ष्म स्वभाव परमं यदनंतवीर्यं ।
कर्मौघ कक्ष दहनं सुख शस्य बीजं, वन्दे सदा निरूपमं वरसिद्ध चक्रं ॥ महार्घ्यं ॥१०॥

॥ जाप्यं कुर्याद् ॥

ॐ ह्रीं असिआउसाय नमः ॥ ॐ ह्रीं सम्यक्त्वाय नमः ॥ ॐ ह्रीं ज्ञानाय नमः ॥
ॐ ह्रीं दर्शनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं वीर्याय नमः ॥ ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः ॥
ॐ ह्रीं अवगाहनाय नमः ॥ ॐ ह्रीं अगुरु लघवे नमः ॥ ॐ ह्रीं अव्याबाधाय नमः ॥

एभिर्मंत्रैर्जाप्यं कुर्याद् ॥ अर्घ्यं चापि समुद्धरेत् ॥

❀ जयमाला ❀

(भ० विश्वसेन कृत)

घत्ताः— पणमवि परमेसर णेमि जिणेसर णासिय दुक्खिय कम्ममलो ।
पुर अरकमि भत्तिय, णियमण सत्तिय, सिद्ध चक्क जयमाल फलो ॥ १॥

तमाला सभा भंयडा सीस केसा, खरा दारूणा लोयणा रत्त भीसा ।
गहा भूय वेयालणं सांति चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥२॥

तणु भीसणा वंक दढ्ढा कराला, चलालोयणा जीह णासा विसाला ।
वसी होंति सिहाय डड्ढेण चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ ३ ॥

सरोसा सघोरा महाकाल रूवा, कुरुरा विषा सेविसा दुट्ठभावा ।
सकोहाण डंकं तिहोणाय चक्कं, वरं भावये णिम्मलं सिद्ध चक्कं ॥ ४ ॥

जरा खेय रोगावलि कण्ठमाला, पमेहा विरुठा विषा कुट्ठसूला ।
विणासंति खासाण लावाहि चक्कं वरं भावये•••• ॥ ५ ॥

सधूमावलि भीसणा संजलंता, फुलिंगाय मेलंति चंडाधिगंता ।
ण डाहोंति देहं सही जाल चक्कं वरं भावये•••••• ॥ ६ ॥

सकल्लोल लोला बहुला तरंगा, अपारा सिवोसा वसि सिंधु गंगा ।
अगाधासुतारंति सोणीर चक्कं, वरं भावये•••••• ॥ ७ ॥

झसाया सङ्कंता सतिला सखला, सकोदंडबाणा करे भीड माला,

णमारंति रो संगरे चोर चक्कं, वरं भावये० ·····॥ ८ ॥

सगाढ़ा विबंधा बणा घोर बंधा, अछेसाण अंगा ऊवंगा विबंधा,

विमुंचंति लासंखला पास चक्कं, वरं भावये० ·····॥९॥

सणा सग्गि भ्याणेण कम्मठणासं, ललाटे सुवीयं करेमोक्खवासं ।

फुडं देवकी दिट्ठी झाणं पयाउ' सुक्कन्दो वियाउ भुजंगप्पयाउ ॥१०॥

इह वर जयमाला, वर सफला विस्स सेणेण कहिय बुहं,

जो भणे भणावे णियमण भावे सोणर पावदि सिद्ध सुहं ॥ महार्घ्यं ।

॥ इति सिद्धचक्र पूजा समाप्तम् ॥

❀ विद्यमान वीस तीर्थंकर पूजा ❀

पूर्वा पूर्व विदेहेषु, विद्यमान जिनेश्वराः ।
अहं संस्थापयाम्यत्र, शुद्ध सम्यक्त्व हेतवे ॥

ॐ ह्रीं सीमंधर, युगमंधर, बाहु, सुबाहु, सुजात, स्वयं प्रभ, ऋषभानन, अनन्तवीर्य, सौरी प्रभ, विशाल, वज्रधर, चंद्रानन, भद्रबाहु, श्री भुजंग, ईश्वर, नेमि प्रभु, वीरसेन, महाभद्र, यशोधर, अजीत वीर्य, विद्यमान विंशति तीर्थंकराअत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

अत्र तिष्ठ २ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि करणम ॥

॥ अथाष्टक ॥

कर्पूर वासित जल भृत हेम भृंगं धारा त्रयं ददति जन्म जरा पहान्यौः ।
तीर्थंकराय जिन विंशति विद्यमान संचर्चयामि पद पंकज शांति हेतु ॥ जलम् ॥
काश्मीर चन्दन विलेपन अग्रभूमि, संसार ताप हर दूर करोति नित्यं । ती० चन्दनम ।
सद्तंडुलैः खंड विवर्जितैश्च, अक्षय पदस्य सुख सम्पति प्राप्ति हेतु ॥ ती० अक्षतम् ।
अम्भोज चम्पक सुगन्ध केरोमिपूजा मदनस्य मानंच विमर्दनाय ॥ ती० । पुष्पं ॥
नैवेद्यकैः शुचितरैर्घृत पक्व खंडैः, क्षुधादिरोगहर दूर करोतिनित्यं । तीर्थंक ॥ नैवेद्यम् ।
दीपैः प्रदीपित जगत्त्रय रश्मिजातैः दूरीकरोति तम मोह विनाशनार्थं । तीर्थंक. ॥ दीपम् ॥
धूपैः सुगंध कृष्णागुरु चंदनाद्यैः गंधैः सुगंधी कृत सार मनोहराणि । तीर्थंक. ॥ धूपम् ॥
नारिंग दाडिम मनोहर श्री फलाद्यैः फलैरभिष्ट सुख सम्पति प्राप्ति हेतुः । तीर्थंक. ॥ फलम् ॥
वार्गंध पुष्पाक्षत व्यंजनैश्च, सदीप धूपफल मीश्रित हेमपात्रे ।
अर्घं करोमि जिन पूजन शांति हेतोः संसारपार करुणात्कुरु सेवकानां ॥ अर्घ्यम् ॥

❀ जयमाला ❀

घत्ता– जय बीस जिणेसुर, णमीत सुरासुर, चक्रीश्वर पूजित चरणा ।
जय ज्ञान दिवाकर, गुणरत्नाकर, पूजत नाशै विघ्न घणा ॥१॥

जय बीस जिनेश्वर विद्यमान, तनु पंच शतक धर धनु प्रमान ।
जय भव्यकमल प्रतिबोध देत, ... ॥२॥

सीमंधर प्रणमुं जिन वरिन्द वन्दु जुगमंधर बहु वलिन्द ।
हुँ वन्दूं बाहु सुबाहु स्वामी, जिन लीन विदेहे मोक्ष ठाम ॥३॥

सुजात स्वयं प्रभ जिन वरिन्द, ऋषभानन धर्म प्रकाशकंद ।
तहां नंत वीर्य सौरी प्रभोय, वन्दु विशाल वज्जर धरोय ॥४॥

चन्द्रानन आठम दीवसवीर हूँ प्रणमुं जिनसो भवह तीर ।
तिहां पुष्कार्द्ध जिन भद्र बाहु, भुर्यगम ईश्वर जगह नाह ॥५॥

नेमि प्रभ वन्दू वीरसेन, महाभद्र भव्य हित मधुर वैन ।
पद नमुं यशोधर शुद्ध भाव, जय अजित वीर्य वर मुक्ति पाय ॥६॥

यह नाम जपंता जाय पाप, नहीं व्यापै भव भव मोह ताप ।
जिन नाम जपंता होय रिद्धि, अनुक्रमे लहेते मोक्ष सिद्धि ॥७॥

. . . . . .

घत्ताः—जय बीस जिनेश्वर नमित नरेश्वर विद्यमान जिन सौख्यकराः ।
जे भणे भणावे, अरू मन भावे, पावे अविचल मोक्ष धराः ॥ महार्घ्यं ॥

❀ श्री शीतलनाथ पूजा ❀

(ब्र० चन्द्रसागर कृत)

दोहा:—श्री सजोधपुर मंडनं, शीतल नाथ जिनेश
आह्वानन संनिधि करी, थापुं आवहु ईश ॥

ॐ ह्रीं सजोधपुरतीर्थस्थ शीतल नाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर २ संवौषट । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् ;

(राग—म्हारी दीन तणी सुनो विनती)

प्राणी गंगोदक शुभ जलभरी, रत्न जड़ित भृंगार सुमारहो ।
जिन चरणाम्बुज धारिये, जन्म जरा मरण निवार हो ॥ श्री शीतल जिन पूजिये

प्राणी सजोधपुर वर मंडणो, सुखकरी भविषण सार हो ।
इन्द्र नरेन्द्र सेवा करे पामे नवनिधि अरथ भंडार हो । श्री शीतल. ॥ जलम्

प्राणी बावन चन्दन घसिकरि मलयागिरि शुभवास हो ॥
जिन चरणाम्बुज चर्चिए, भव आताप कष्ट विनाश हो ॥ श्री शीतल० चन्दनम् ।

प्राणी अखंड अक्षत ऊजला, ज्योतिचन्द्र किरण समजाण हो ।
अक्षतसुं जिन पूजिये, लहे अक्षय पद सुख खाण हो । श्री० अक्षतम् ।

प्राणी जाही जूही चंपो सेवती, और केतकी परम रसाल हो ॥

पुष्पसुं श्री जिन पूजिये, होवत मदन सुबाण विनाश हो । श्री शीतल ॥ पुष्पम्

प्राणी खाजा फेणी लाडुवा, और घेवर बावर सार हो ।

सुवरण थाल भरी करी, क्षुधा रोग न उपजे लगार हो । श्री शी० । चरूम् ।

प्राणी रत्न जड़ित करी आरती, शुभ कर्पूर ज्योति विशाल हो ।

जगमग जगमग चमकती, मोह तिमिर न रहे लगार हो ॥ श्री. दीपम् ।

प्राणी अगर तगर कृष्णा गुरू, जिन चरणे अग्रेउ खेव हो ।

परिमल दश दिशी निर्मली, अष्ट कर्म न रहे ततखेव हो श्री शी० ॥ धूपम् ।

प्राणी श्रीफल आम्र बिजोरड़ा और पूग बदामरू ईख हो ।

फल सुं श्री जिन पूजिये, शिव फल पामे बहुलाख हो । श्री शी० फलम् ।

प्राणी जल गंध पुष्पाक्षत चरु, दीप धूप फल लेई हो ।

अर्घ उतारो भाव सुं पामे अर्थ सकल सुख देई हो ॥ श्री शीतल० ॥

प्राणी काष्ठा संघ सोहामणो, गच्छ नंदीतट मनोहार हो ।

सकल कीर्ति गुरु पदनमी, कहे चन्द्र सागर ब्रह्मचार हो । अर्घं० ॥

॥ जय माला ॥

घत्ता– शीतल जिनसार है, दुखनिवार है, सुखकारी जिनवर कहियो ॥
भव पातक हरता, शिव फल करता, परमानन्द पदते लहियो ॥

(राग—मणुयणा इन्द)

शीतलं जिनवरं पूज्य शिव गामिनं, गावए गुण गणा अप्सरा भामिनं ॥
सजोधपुर मंडणं, मदन रिपु खंडणं, वंश इक्ष्वायिकं वंशवर मंडणं ॥
आयु वर पूर्व लक्ष हेमवर्णं तनुं, समवशरणं वर, राजितं जिन मनुं ॥ सजो० ॥
सभा बारह प्रवि राजितं जिन वरं, वृक्ष अशोक शिर ऊपरं अम्बरं ॥ सजो० ॥
पुष्प वृष्टि करी देव मन निर्मलं, दिव्य ध्वनि गर्जितं पाप नाशि मलं ॥ सजो० ॥
तीन सिंहासनं शोभ प्रविराजितं, चामर द्वात्रिंश, युगलि सुभाजितं ॥ सजो० ॥
छत्र त्रयेण, डंडेण ऊपेखतं, रत्नमालावरा, चन्द्र सूरेण तं ॥ सजोधपुर० ॥
कोटि साद्र्द द्वादशं, दुंदुभि गर्जितं कर्म अष्टक रिपु मदन तेज तर्जितं ॥ सजो० ॥
नाचती किंकरी, देव देवी गणं, तान मानं, महा भाव गान रागणं ॥ सजोध० ॥
राग छत्तीस मुख, गान संगायती, हस्त वीणा लई मधुर सुखायती ॥ सजोध० ॥
देव नर नाग सुर असुर संसेवितं, दुख दावानलं दुरिकृतं देवतं ॥ सजोध० ॥

पंच कल्याण सुरकृत गर्भादिकं, मुक्ति रमणी वशीकरण सुखावितं ॥ सजोध० ॥

घत्ता:- इति गुण जयमाला, सुरभिसाला, कोटि पाप दूरी करण ।
शीतल जिन कहियं, गुणगण महियं, ब्रह्म चन्द्र एणि परे कहियं । पूर्णार्घ्यम् ।

卐

❀ श्री शांतिनाथ पूजा ❀

(भ० चन्द्रकीर्ति कृत)

राग:-भक्तामर स्तोत्र की

श्री मत्सुरेन्द्र मुकुटामल रत्न रोचि, पीयूष पूर परि पूजित पाद पद्म ॥
श्री कैरवान्वय नभस्तल पूर्ण चन्द्रः श्री शांतिनाथ जिनपं भुवनैर्महामि । जलम् ॥

अष्टादशार्द्ध निधि पूरित सर्व कामं, सप्तर्द्धि कामर सुरक्षित रत्न नाथं ।
श्री विश्वसेन तनुजं मनुजेन्द्र सेव्यं संचर्चयामि हरिचंदन केशरौघैः । चन्दनं ॥

षट् खंड भूप परि संस्तुत पाद पीठं, देवेन्द्र दिव्य रमणी परिगीत कीर्तिः ।
संप्राप्त सर्व नयनोत्सव कारी रूपं, शान्तीश्वरं परिचरे कमलाक्षतौघैः । अक्षतम् ॥

प्रस्वेद बिन्दु परिवर्जित दिव्य देहं, निर्वेद भाव विलीकृत मोह गेहं ।
दुर्वार पंचशर कुंजर कुंजरारि, संपूजयामि कुसुमैर्जिन शांतिनाथं ॥ पुष्पम् ॥

छत्रत्रयोत्तम विभूति विराजमानं, देवांगना ललित सुस्वर गीयमानं ।
सच्चामरालि परिवेष्ठित युग्म पार्श्वं, शांतीशमीश मुनयं चरुभिर्यजेहम् । चरुं ॥

यज्जन्म काल समुपागत देवराज, निर्माप्तिस्त्रिदश मेरु महाभिषेकः ।
दुग्धाब्धि वारि निव हैः परमोत्सवेन दीपैर्यजामि भगवन्तमुमेशशांतिं । दीपं ॥

दुष्टाष्ट कर्म गिरि भंजन वज्र तीर्थं, मिथ्यान्धकार पटलोज्वल बालसूर्यं ।
गंभीर दिव्य ननदामृत पुष्ट भव्यं शांतिजिनेन्द्र समलं परिधूपयामि । धूपम् ।

श्री हस्तिनागपुर संभव नाथ मीशं, निर्वाण धामगत रुप मनंत रुपं ।
श्री नारिकेल वर दाडिम मातु लिंगैरेरोशरीरजमलं परिपूजयामि । फलम् ।

काष्ठा संघ मुनीन्द्र वर्य विबुधैः श्री भूषणैः संस्तुतः ।
संसृत्यार्णवपार लब्धि करणैः श्री कर्ण धारोगितो ।
अम्भश्चन्दन पुष्पतंदुल हविः स्नेहप्रियाद्यर्पितो ।
भूयान्मोक्षफलायते जिनवराट् श्री चन्द्र कीर्तीश्वरम् ।

❀ जयमाला ❀

विराग विभाग विरोग वभोग, विकार विरेक विनेन्द्र वियोग ।
प्रसीद सनातन शांति जिनेन्द्र, स्वपाद सरोरुह भव्य शतेन्द्र ॥१॥

विवाद विनाट विपाद विराम, विजंत्र विमंत्र वितंत्र विकाम । प्रसीद० ॥ २ ॥
विरोष वितोष विमोष विषोष, विकोष विशोष विरोष विदोष ॥ प्रसीद० ॥ ३ ॥
विगन्ध विबंध विशब्द विरूप, विगेह विदेह विमोह विकूप ॥ प्रसीद० ॥ ४ ॥
विवर्ण विकर्ण विवित्त विचित्त, विरेख विलेख विमेष विचित प्रसीद. ॥ ५ ॥
विमाय विकाय विदंभ विलोभ । वितर्ष विमर्ष विदर्भ विशोभ । प्रसीद. ॥
विसाध्य विराध्य विमाध्य विशुद्ध विशोक विलोक, वितंद्र विबुद्ध ॥ प्रसीद. ॥
विवाल विवाल विकाल विमाल, विशाल विभाल विलाल विताल, ॥ प्रसीद. ॥
श्री संघ मांगल्य विधान पूर्ति, विशालवक्षस्थल दिव्य मूर्तिः
श्री शांतिनाथो चित चंद्रकीर्तिः, ददातुवः सर्व सुखाप्तमूर्तिः ॥ अर्घं ॥
कल्याणं विजयं भद्रं चिन्तितार्थं मनोरथाः
शांतिनाथ प्रसादेन, सर्वे अर्थाः भवन्तु नः ॥ ॥ इत्याशिर्वादः ॥

❀ अथ श्री कलिकुण्ड (पार्श्वनाथ) पूजा ❀

ह्रींकारं ब्रह्मरूढं स्वर पर कलितं, वज्र रेखाष्ट भिन्नं
वज्रस्याग्रंतराले प्रणवमनुपमा नाहतं संसृणीच ।
वर्णान्ताद्वान्सपिंडान् हभमरघकसखान्वेष्टयेतद्वदन्ति
वज्राणां यंत्र मेतत् पर कृतमशुभं दुष्ट विद्याविनाशम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् अत्र एहि एहि, संवौषट् । आह्वाननम् ।

पिण्ड स्थापापनोदं हमभरघभ्र सखान् शांतियुक्तादिदस्युः
शाकिन्यो यान्ति नाशं बरलक्षदसैर्फेनयुक्तै र्महोष्णा ।
यन्त्र श्री खंड लिप्तो शुचिवसे कांस्यपात्रे सुमंत्रैः
लेखिन्या दर्भ जातो निखिल जन हितं तस्य सौख्यं विमर्ति ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । स्थापनम् ।

सिद्धं विशुद्धं महिमा निवेपं, दुष्टारिमारि ग्रह दोष नाशं ।
सर्वेषु योगेषु परं प्रधानं, संस्थापये श्री कलिकुण्ड यंत्रम् ३॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधापनम् ॥ कलिकुण्ड यन्त्रो परि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(कलिकुण्ड यंत्र स्थापनम्)

❀ श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ स्तवनम् ❀

प्रणम्य देवेन्द्र नुतं जिनेन्द्रं सर्वज्ञ मज्ञं प्रतिबोध सुज्ञम्
स्तोष्ये सदाऽहं कलिकुण्ड यंत्रं सर्वाङ्ग विघ्नौघ विनाश दक्षम् ॥१॥
नित्यं स्मरन्तोऽपिहि एपि भक्तया शक्तया स्तुवन्तोऽपि जपत्सुमंत्रम् ॥

पूजां प्रकुर्वन्हृदयेदधानं सर्वेप्सितं यच्छतु मंत्र राजं ॥ २ ॥
गृहाङ्गणे कल्प लता प्रसूनं चन्तामणि चिन्तित वस्तु दाने ।
गावश्च तुल्या किल कामधेनो यस्यास्ति भक्ति कलि कुंड यन्त्रे । ३ ॥
नमामि नित्यं कलि कुण्ड यन्त्रं सदापवित्रं कृत रत्न पात्रं ।
रत्नत्रया राधन भाव लभ्यं, सुरासुरैर्वंदितमाद्यमिज्यम् ॥ ४ ॥
सिंहेभसर्पाग्नि जलाब्धि चौरा, विषादयो न्यानिसदापविघ्नाः ।
व्याधादयो राज्य भयं नृणां हि, नश्यन्त्यवश्यं कलि कुंड पूजनात् ॥ ५ ॥
प्रदुष्ट बन्धैर्निगडैर्नियन्त्रितै त्रुटन्ति शीघ्रं प्रजपन्सुमंत्रं ।
ज्वरादि मारा ग्रहणी विकारा, प्रयान्ति नाशं कलि कुण्ड पूजनात् ॥ ६ ॥
वन्ध्यापितारी बहु पुत्र युक्ता,, संसार सक्ता प्रिय वित्यरक्ता ।
यस्यास्ति चित्ते कलि कुण्ड चिन्ता, नमाम्यहं तं सततं त्रिकालं ॥ ७ ॥
अनर्थ सर्वे प्रति घात दक्षं, सौख्यंयशः शांतिक पौष्टिकाभ्यां ।
नमाम्यहं तं कलिकुण्ड यंत्रं विनिर्गतं यज्जिनराजवक्त्रात् ॥ ८ ॥
स्तवनमिदमनिन्द्यं, देवराजाभिवन्द्यम्, पठति परम भक्तया योनरः सर्वदा हि ।
सकल सुखमनर्घं कल्पितं प्राप्य सर्वं, विनिहित विघ्नौघं यंत्रराज प्रसादात् ॥९ ॥

॥ इति श्री कलिकुण्ड स्तवन विधानम् ॥

गंगा पगा तीर्थ सुनीर पूरैः शीतैः, सुगन्धि घनसार मिश्रैः ।
दुष्टोपसर्गैक विनाश हेतुं समर्चये श्री कलि कुण्डयन्त्रम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलि कुंड दंड स्वामिन् श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुल बल वीर्य पराक्रमाय सर्व विघ्न विनाशनाय नवग्रह शान्त्यर्थं जलं यजामहे स्वाहा ॥

श्री चन्दनैर्गंध विलुब्ध भृङ्गैः सर्वोत्तमैर्गंध विशाल युक्तैः । दुष्टोप० ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥
चन्द्रावदातैः सरलैः सुगन्धैरनिन्द्य पात्रैर्वनशालि पुञ्जैः । दुष्टोप० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥
मंदार जातैर्बकुलादि कुन्दैः सौरभ्य रम्यैः शतपत्र पुष्पैः । दुष्टोप० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥
बाष्पायमानैः घृत पूर पूरैः नानाविधैः पात्रगतैः रसाढ्यैः । दुष्टोप० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
विश्व प्रकाशैः कनकावदातैः दीपैश्च कर्पूर मयैर्विशालैः । दुष्टोप० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
कर्पूर कृष्णा गुरू चन्दनाद्यैर्धूपैः सुगन्धैर्वर द्रव्य युक्तैः ॥ दुष्टोप० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
खर्जूर राजादन नालिकेरैः पूगैः फलैः मोक्ष फलाभिलाषैः ॥ दुष्टोप० ॥ फलं ॥ ७ ॥
जलगंधाक्षत पुष्पैर्नैवेद्य दीप धूप फल निकरैः ।
श्री कलि कुण्डाय वरं ददामि कुसुमांजलि विमलां ॥ अर्घ्यं । ९ ॥

जाप्यं कुर्याद् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन्श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुल बलवीर्य पराक्रमाय सर्व विघ्न विनाशनाय नमः आत्म विद्यां रक्ष रक्ष पर विद्यां छिंदि छिंदि भिंदि भिंदि स्फां स्फीं स्फुं स्फूं स्फैं स्फौं स्फः हूं फट् स्वाहा ।

एभि मंत्रैः जाप्यं कुर्यादर्घं चापिसमुद्धरेत ॥ उक्त मंत्र के नव जाप्य देकर अर्घ चढ़ावे ।

❀ जयमाला ❀

वर सम्मत विहु सग हो, भवियण जिणवर समरणे ।
णासिय पाउ असेस लहु, तमजम दिवार विथरणे ॥ १ ॥

(राग–विराग सनातन०)

सुदुद्धर अंजण पुव्वय काउ, दिसाकर तासण मेह णिणाउ ।
सुदुप्प विविंजण देउ करिंद मणम्मि भणंतां देउ जिणंद ॥ २ ॥
पसत्त समि हिय दिंतु समूह महाबल लोल लोला विह जीह ।
सरोसण दे उप कम्म मयंदु, मणम्मि० ..... ॥ ३ ॥
तमाल महीरूह झंपड सीस, दिणेसर सण्णिय लोयण भीस ।
हवेई पसूण पयासुर इंदु, मणम्मि०..... ॥ ४ ॥
विअंभिय वेलण हिंगण वेल, जलोमद्दव जीव पयासिय रोल ।
अथाहु विगोप्पय मित सुरेन्द मणम्मि०..... ॥ ५ ॥
फुडंति फोडायण रुद्दय यंति, विलोय खयंकर शायक यति ।
विले विणु डंकई कूर फणेंदु, मणम्मि. ..... ॥ ६ ॥
दुसंचर तीरण पुव्वय दुग्गि; असंख महीरूह भीसह मग्गि ।
कहेप्पणु लग्गई तक्कर विहु, मणम्मि,.. ॥ ७ ॥
घिराण वि सक्कई तिव्व जलंति, जगत्त उजालण शायक यंति ।
ससोम हवेई सही जम चंद, मणम्मि, .. ॥ ८ ॥

णेमिलिय वंधय सज्जण चक्खु, अणेयपयार पणासिय दुक्खु ।

विहडई भृंखल बिन्दु सुरेन्दु, मणम्मि,··· ॥ ९ ॥

मणोहर द्रन्दिय सोमय चारू भयंदर सूल सिलेसम सारू ।

पणासिय रोउत हाजर बिंदु, मणम्मि,···· ॥ १० ॥

दुलंघण ए विणु पासह बूह, णमारि वि मक्कई सत्त समूह ।

किंजाण हवेई अलं अरविंदु मणम्मि.··· ॥ ११ ॥

घत्ता–वर खगेंदु भायंबहा, गारूडिया किटि विसुबीह ।

भवियण णयणाणंद जिणसमरंता उवसग्ग तह ॥ १२ ॥ महार्घ्यम् ॥

सर्पत्सर्पेषु दर्प, स्फुट तरल तरोत्तार फुत्कार वेला ,

संघट्टोत्पत्ति वाताहत शठ कमठोद्भूत नीमूत जातः ।

खेलत्स्वर्गापवर्गोत्तरणि तरल सल्लोल डिंडिर पिंडः,

व्याजा श्री पार्श्वनाथो जयविजय यशो राज हंसो वताद्वः ॥

इत्याशीर्वादः ॥

दधे मूर्ध्नाहृताशेषः नाहुता सर्व देवता ।

मयाक्रमाद्विसर्ज्जेत निर्गच्छामि जिनालये । इति विसर्जन मंत्रः ॥

शांति वृद्धि जयं सौख्य, मैश्वर्यारोग्य मिच्छता ।

कल्याणं तुष्टि तुष्टिच संतुतेऽर्हत्प्रसादतः ॥

❀ श्री ऋषि मंडल पूजा ❀

प्रणम्य श्री जिनाधीशं, समस्त लब्धि संयुतं ।
ऋषि मंडल यंत्रस्य, वच्ये पूजादिमल्पशः ॥

ये जित्वा निज कर्म कर्कश रिपून्, कैवल्यमाभाजिरे ,
दिव्येन ध्वनिनावबोधमखिलं चक्रम्यमाणं जगत् ।
प्राप्ता निर्वृतिमक्षयामतितरा,– मंतातिगामादिगा ,
वच्ये तान् वृषभादिकान् जिनवरान् वीरावसानाहं ॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवाः अत्रावतर अवतर संवौषट् ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानान्तस्तीर्थंकर परम देवाः अत्रतिष्ट तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानान्तास्तीर्थंकर परमदेवाः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ॥ यंत्र स्थापनं ॥

कर्पूरपंकज पराग सुगंध शीतै,– राकाशशांक विमलैः सलिलैर्जलौघैः ।
सत्पात्रतामुपगतैर्मधुरैर्लविष्टै–र्द्विद्वादश प्रभजिनाघ्रियुगं महामि ॥
ॐ ह्रीं वृषभादि वर्धमानान्तास्तीर्थंकर परम देवेभ्यो जलम् ॥१॥

काश्मीरपूरघनसारगतोद्भवैः, बाह्यान्तरंगपरितापहरैर्पवित्रैः ।
श्रीचन्दनोत्कटरसैः सुरसै सुभक्त्या द्विद्वादश० ॥ चन्दनं ॥

माधुर्ये गन्धं निवहान्वित दिव्यदेहै कुन्देन्दुसागरकफोज्वलचारुशोभैः ॥
शाल्यक्षतैः शुभगयात्रगतैरखंडै द्विद्वादश० ॥ अक्षतं ॥

मंदार कुन्द कमलान्वित पारिजातैः, जाति कदंब मसलातिथिसत्प्रसूनैः ।
गंधागतभ्रमरजात रवप्रशस्तैः द्विद्वादश० ॥ पुष्पं ॥

नैवेद्य मंडक सुमोदक खज्जलाद्यैः सत्पोलिका वटक व्यंजन पंच भक्षैः ।
सच्छालिभक्तघृतयुक्तवरैर्विशुद्धैं, द्विद्वा० ॥ चरू ॥

दीपव्रजैरमलकीनकलाप सारैं, निर्धूमता मुपगतैः सरमलैर्ज्वलद्भिः ।
पीतद्युति प्रचय निर्जित जात रूपैं, द्विद्वा० ॥ दीपम् ॥

कृष्णागुरू प्रमुखसार सुगंधद्रव्यैं प्रोद्भूतमूर्तिभिरलं वरधूप जालैः ।
धूमव्रज प्रमुदितां दितिनंदनोघैः द्विद्वा० धूपं० ॥

नारिंग पूगकदली फल नारीकेल, सन्मातुलिंग क्रमुक प्रमुखैर्फलोघैः ।
शाखा सुपाकमधिगम्य विरक्त चित्तैं, द्विद्वादश० ॥ फलम् ॥

जल गंधाक्षतैः पुष्पैश्चरूभिर्दीपधूपकैः,
फलैरर्घं विधायासु श्री जिम्यो ददे मुदा ॥ अर्घं ।

ॐ ह्राँ ह्रिं ह्रुँ ह्रूँ ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असि आउसा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रींनमः अस्य मंत्रस्य शताष्ट वारं जाप्यं कुर्यात् ॥

(उक्त मंत्र के १०८ जाप्य देकर अर्घ चढावे)

❀ जयमाला ❀

पणमवि जिण देवं, सुरकिय सेवं, णासिय जम्म जरा मरणं ॥

सिव सुह कयरावं, गय भय रावं णिय भत्ति जुतिए थुणमि ॥

जय आईणाह कम्मारिवाह, जय अजिय जिणेसर मोह दाह ।

जय संभव गय यवराज डंभ, जय अहिणंदण जिण परम बंभ ॥

जय सुमई कुमई गय देव देव, जय पुहुमप्पय सुर विहियसेव ।

जय जय सुपास मणिहर सुभास, जय चन्दप्पह जीयचंद हास ॥

जय पुप्फ दंत जोय पुप्फयंत, जय सीयल सीयल जिय पिकंत ।

जय सेय देव कय सव्व सेव, जय वासुपूज्ज सुरकियतीसेव ॥

जय विमल जिनेसर विमलणाण, जय जिण अणंत गय परमठाण ।

जय धम्म धम्म देसण समत्थ, जयसांति सांति गय गंथ सत्थ ॥

जय कुंथु सामि गय कम्मपंक, जय जय अर सामी समिय संक ।

जय मल्ली सामीगय सत्तभंग, जय जय मुणिसुव्वय जिय अणंग ॥

जय णमि जिणणिर जिय सव्व संग, जय णेमि मुक्करांई य रंग ।

जय पास देव फणि नई परिट्ठ । जय वड्ढमाण गुण गण गरिट्ठ ॥

घत्ता–इयथुणमि जिणेसर, महि परमेसर णासियकम्म कलंकभर ।

सुरपई बहु सामिय भव भयं भामिय, उत्तारि जे अटयुवई ॥ अर्घं ॥

निशेषामर शेखरार्चितपदः, दुन्दौल्ल सत्सत्रलः ।
ब्रात प्रोद्धत कांति संहति हतः, प्रव्यक भक्तया सब ॥
निर्वाणेश महोतमांग मुकुट, प्रस्फूर्ति मभद्वतरा ।
ऋद्धि वृद्धि मनारतं जिनवराः, कुर्वन्तु वः सर्वदा ॥ इत्याशिर्वादः ॥

श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा

सम्मेदाचल तीर्थ है, सब तीर्थों का राज ।
जहँ तैं शिवपुर को गये विंशति श्री जिनराज ।
आह्वानन विधि सौ करूँ, करूँ स्थापना सार
सन्निधि करण क्रियाकरी, मैं उतरूं भव पार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र अत्र अवतर २ संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

क्षीराम्बुधि सारं, पयसमकारं, मिश्रित हेम भृंगार भरं ।
जल धारा दीजे, अशुभ हरीजे, कर्ममलामल धौत करं ।

पूजो गिरि धामं, शिखर सुठामं, बीस जिनेश्वर पद कमलं ।
जहं बम्ब विराजैं, महिमा छाजै पार्श्व जिनेश्वर सौख्य करं ॥१॥ जलम् ॥

कर्पूर सुसारं, जग उद्धारं, मिश्रित घसिये प्रेमकरी ।
हेमादिक चित्रं जड़ित विचित्रं, चन्दन चरचों भाव धरी । पूजो० ॥ चन्दनम् ॥

धवलाक्षत राशि, कमल सुवासी, तंदुल पूज्य सु अग्रधरं ।
शशि किरण समानं, कीजे ज्ञानं, अक्षय पद जिम सौख्य करं । पू० ॥ अक्षतं ॥

चम्पक द्रुय जातं, कमल विख्यातं, केतकी कुन्द मंदार चयं ।
शुभ मोगर लीजे, काम हणीजे, पद पूजीजे बीस जिनं । पूजो० ॥ पुष्पम् ॥

घेवर बहु पूरी, साकर चूरी, खज्जक लाडू सुंवाली करी ।
शुभव्यंजन लीजे, थाल भरीजे, अग्र उतारे भाव धरी । पूजोगि० । नैवेद्यं ।

रत्नादिक दीपं, सहज स्वरूपं, कर्पूरामल ज्योति करं,
वर कंचन पात्रं, जड़ित विचित्रं, भावे उतारो दीप वरं ॥ पूजोगि० । दीपम् ॥

कृष्ण गुरु चन्दन, तगर सुगंधं, अगरादिक बहुधूप चयं,
दशदिशी शुभवासं, कर्मविनाशं, श्री जिन आगे धूप करं ॥ पूजोगि० । धूपम् ॥

द्राक्षादिक सारं, कदली भारं, श्रीफल पूग जम्बीर फलं,
फणसादिक लीजे, थाल भरीजे, शीर फल लीजे भविक अलं । पूजोगि० ॥ फलम् ॥

जल आदिक श्रीफल, अर्घ समुज्वल, आरती गही करी ज्ञान करं,
जिन चरण उतारो, तीर्थ जुहारो, लक्ष्मी सेन शुभ भाव करं । पूजोगि० ॥ अर्घ्यम् ॥

❀ जयमाला ❀

समेद शीखर सिद्धा जिन बीसं, वन्दौं भवियण भाव धरीशं ।
शिखर वंध जिन पयडि विशालं, घंटा भेरी ध्वजा गुण मालं ॥ १ ॥

वन उन्नत जहां मधुक विराजे, पार्श्व जिनेश्वर महिमा छाजे ।
उत्तम वन मधि वृक्ष विशालं, कदली स्तंभावली सुरसालं ॥ शीखर० २ ॥

जय दुंदुभि नित मंगल नादं, सुनतां उपजे परमाल्हादं ।
परवत पयडि समुन्नत सोहे, देखत भविजन के मन मोहे ॥ शिखर० ३ ॥

करत है रक्षा क्षेत्र सुपालं, सीता नाला सजल विशालं ।
चैत्य अनूपम विशति छाजे, मुक्ति गये बीसों जिन राजे ॥ शिखर० ४ ॥

अवर न तीरथ शिखर समानं, देवेन्द्रादि सु करत प्रणामं ।
जे भवि प्राणी यात्रा करहि अनुक्रमतैंते शिवतिय वरहि ॥ शिखर० ॥ ५ ॥

घत्ता— यह शुभ जयमाला, भाव रसाला, जे पठंति भवि भावधरि ।
गुरू सकल सुकीर्ति, पट्ट सोहे मूर्ति लक्ष्मीसेन शुभ भाव धरि ॥ ६ ॥

पूर्णमिदम् ॥

अथ षोडशकारण भावना पूजा

इन्द्रं पदं प्राप्य परं प्रमोदं धन्यात्मतामात्मनि मन्य मानः

दृग्शुद्धि मुख्यानि जिनेन्द्र लक्ष्म्या, महाभ्यहं षोडश कारणानि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयादि षोडश कारणानि अत्र अवतरत अवतरत, संवौषट् ।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयादि षोडश कारणानि अत्र तिष्ठत तिष्ठत, ठः ठः ।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयादि षोडश कारणानि अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत, वषट् ।

सुवर्ण भृङ्गार विनिर्गताभिः पानीयधाराभिरिमाभिरुच्चैः ।

दृक शुद्धि मुख्यानि जिनेन्द्र लक्ष्म्या महाभ्यहं षोडश कारणानि ॥ जलं ॥ १ ॥

श्री खण्ड पिण्डोभव चन्दनेन, कर्पूर पूरैः सुरभीकृतेन । दृक्शु. ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

स्थूलैरखण्डैरमलैः सुगन्धैः शाल्यक्षतैः सर्व जगन्नमस्यैः । दृक्शु. ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

गुञ्ज दद्धिरेफैः शतपत्र जाती सत्केतकी चम्पक मुख्य पुष्पैः । दृक्शु. ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

नवीन पक्वान्न विशेष सारै र्नानाप्रकारै श्चरुभिर्वरिष्टैः । दृक्शु. ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

तेजो मयोल्लास शिखै प्रदीपैः दीपप्रभैर्ध्वस्त तमो वितानैः ॥ दृक्शु. ॥ दीपम् । ६ ॥

कर्पूर कृष्णागुरू चूर्णरूपै धूपै हुताशाहुत दिव्य गन्धैः ॥ दृक्शु. ॥ धूपम् । ७ ॥

सन्नारिकेल क्रमुकाम्रबीजैः पूगादिभिश्चारुफलैः रसाढ्यैः ॥ दृक्शु. ॥ फलम् ॥ ८ ॥

पानीय चन्दन रसाक्षत पुष्प भोज्य, सद्दीपधूपफलकल्पितमर्घपात्रं ।

अर्हंतहेत्वमल षोडश कारणानि पूजा विधौ विपुल मंगलमातनोमि ॥ अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

यद्यायदोष वासाद्युराकर्षयं ते तदातदा । मोक्ष सौख्यस्य कर्तृणि कारणान्यपि षोडश ॥

॥ पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

❀ अथ प्रत्येकार्घ्य ❀

असत्य सहिता हिंसा मिथ्यात्वं चन दृश्यते । अष्टाङ्ग यत्र संयुक्तम दर्शनं तद्विशुद्धये ॥ १ ॥

कवित्त–दर्शन शुद्ध न होवत जां लगि, तां लगि जीव मिथ्यात्वी कहावे ।
काल अनंतफिरे भवमें, महा दुःखनको कहीं पारन पावे ।
दोष पच्चीस रहित गुणाम्बुधि सम्यक दर्शन शुद्ध अराधे ।
ज्ञान कहेनर सोही बड़ो जो मिथ्यात्व तजि जिन मारग साधे ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयै अर्घ्यम् ॥

दर्शन ज्ञान चारित्र तपसां यत्र गौरवम् मनो वाक्काय सशुद्धया सा ख्याता विनय स्थितिः ॥ २ ॥

देव तथा गुरुराय तथा तप संयम शील व्रतादिक धारी ।
पापके हारक कामके मारक शल्य निवारक कर्म निवारी ।
धर्म के धारक पापके भेदक पंच प्रकार संसार के तारी
ज्ञान कहे विनयो सुख कारक भावधरी मन राखो विचारी ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नतायै अर्घम् ॥ २ ॥

अनेकशील सम्पूर्णं व्रत पंचक संयुतम् । पंच विंशति क्रियायत्र तच्छील व्रतमुच्यते ॥ ३ ॥

शील सदा सुख कारक है, अतिचार विवर्जित निर्मल कीजे,
दानव देव करैं तस सेव विषाद न मूल पिशाच पसीजे ।
शील बड़ो जगमें हथियार जु शील को ओपमा काहे की दीजे
ज्ञान कहे नहीं शील बराबर तातैं सदादृढ़ शील धरीजे ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं शील व्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् ॥ ३ ॥

काले पाठस्तवो ध्यानं शास्त्रे चिन्ता गुरौनुतिः । यत्रोपदेशना लोके शास्त्रज्ञानोपयोगता ॥ ४ ॥

ज्ञानसदा जिनराज को भाषित, आलस छोड़ि पढ़े जु पढ़ावे ।
द्वादश दोऊ अणेकह भेद सु नाम मति श्रुत पंचम पावे ।
चारह वेद निरन्तर भाषित ज्ञान अभिक्षण शुद्ध कहावे,
ज्ञान कहे श्रुत भेद अनेकजु लोक अलोक प्रत्यक्ष दिखावे ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगाय अर्घ्यम् ॥ ४ ॥

पुत्र मित्र कलत्रेभ्य संसार विषयार्थतः विरक्तिर्जायते यत्र स संवेगो बुधैः स्मृतः ॥ ५ ॥

मात न तात न पुत्र कलत्र न संपति सज्जन यह सब खोटो,
मंदिर सुन्दर काय सखा सब कोई कहे हम अन्तर मोटो ।
भावहु भावधरी मन मेदन नांहि संवेग पदारथ छोटो ।
ज्ञान कहे शिव साधन को जैसे साह को काम करेजु बनोटो ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं संवेगाय अर्घ्यम् ॥ ५ ॥

जघन्य मध्यमोत्कृष्ट पात्रेभ्यो दीयते भृशम् शक्तया चतुर्विधं दानं साख्याता दान संस्थितिः ॥ ६ ॥

पात्र चतुर्विधं देख अनूरम दान चतुर्विध भावसों दीजे ।
शक्ति समान अभ्यागत को बहु आदर सों प्रणिपत्य करीजे ।
देव तजैं नर दान सु पत्तहिं तासौं अनेकह कारण सीजे ॥
बोलत ज्ञान देहु शुभदान जु भोग सु भूमि महासुख लीजे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागाय अर्घ्यम् ॥ ६ ॥

तपो द्वादश भेदं हि क्रियते मोक्ष लिप्सया ।
शक्तितो भक्तितो यत्र भवोत्सा तपसः स्थितिः ॥ ७ ॥

कर्म कठोर गिरावन को निज शक्ति समान उपोषण कीजे ।
बारह भेद तपोतय सुन्दर पाप तिलांजलि काहे न दीजे ॥
भाव धरी तप घोर करी नर जन्म सदा फल काहे न लीजे ।
ज्ञान कहे नर जे तपते तप ताके अनेकह पातक छीजे ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपसे अर्घ्यम् ॥ ७ ॥

मरणोपसर्ग रोगादिष्ट वियोगा दनिष्ट संयोगात्, न भयं यत्र प्रविशति साधु समाधिः सविज्ञेय ॥८॥

साधु समाधि करो भवि भावक पुण्य बड़े उपजे अघभाजे,
साधु की संगति धर्म को कारण भक्ति करै परमारथ भावे ।
साधु समाधि करे भव छूटत कीर्ति छत्रत्रय लोक में गाजे ।
ज्ञान कहे जग साधु बड़ो गिरि शृंग गुफा विच जाय विराजे ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं साधु समाधये अर्घ्यम् ॥ ८ ॥

कुष्टोदर व्यथा शूलैर्वात पित्त शिरोतिभिः ।
कास श्वास ज्वरा रोगैः पीडिता ये मुनीश्वराः ॥
तेषां भैषज्यमाहारं शुश्रूषापथ्यमादरात् । यत्र तानि प्रवर्तन्ते वैयावृत्यं तदुच्यते ॥ ९ ॥

कर्म के योग विथा उपजे मुनि पुंगव को तस भैषज कीजे,
पित्त कफानल तास भगन्दर तापको शूल महागद छीजे ।
भोजन साथ बनाय के औषध पथ्य कुपथ्य विचार के दीजे
ज्ञान कहे निज एसी वैयावृत्ति जेहिंकरें तस देव भी पूजें ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं वैयावृतिकरणाय अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

मनसा कर्मणा वाचा जिन नामाक्षर द्वयं । सदैव स्मर्यते यत्र सार्हद्भक्तिः प्रकीर्तिता ॥ १० ॥

देवसदा अरहन्त भजो जिन दोष अठारह किया अतिदूरा ।

पाप पखाल भये अति निर्मल कर्म कठोर किये अति चूरा ।

दिव्य अनंत चतुष्टय सोभित घोर मिथ्यात्व निवारण शूरा,

ज्ञान कहे जिन राज आराधो निरन्तर जे गुण मन्दिर पूरा ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तये अर्घ्यम् ॥ १० ॥

निर्ग्रंथ भुक्तितो भुक्ति स्तस्य द्वारावलोकनम् तद्भोज्या लभते वस्तु रसत्यागोपवासता ॥

तत्पाद वन्दना पूजा प्रणामो विनयो नतिः

एतानि यत्र जायन्ते गुरु भक्तिर्मतेतिसा ॥ ११ ॥

देवत हैं उपदेश अनेक सु आप सदा परमारथ धारी,

देश विदेश विहार करैं दश धर्म धरैं भव पार उतारी ।

एसे आचार्य को भावधरी भजि जे शिव चाहत कर्म निवारी,

ज्ञान कहे जिन भक्ति कीनों नर देखतहों मनमांही विचारी ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं आचार्य भक्तये अर्घ्यम् ॥ ११ ॥

भवस्मृतिरनेकान्त लोकालोक प्रकाशिका ।प्रोक्ता यत्रार्हता वाणी वर्ण्यते सा बहुश्रुतिः ॥ १२ ॥

आगम छन्द पुराण पढ़ावत साहित्य तर्क वितर्क बखाणे ।

काव्य कथा नव नाटक बूझत ज्योतिष वैद्यक शास्त्र प्रमाणे।

एसे बहुश्रुत साधु मुनीश्वर जो ममर्में दोउ भाव जु आणे,
ज्ञान कहे तस पाय नमूं श्रुत पारग वे मन गर्व न आणे ॥१२॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्तयेऽर्घ्यम् ॥ १२ ॥

षट् द्रव्य पन्च कायत्वं सप्त तत्वं नवार्थता ।
कर्म प्रकृति विच्छेदो यत्र प्रोक्तः स आगमः ॥ १३ ॥

द्वादश अंग उपांग सदा गम ताकि निरन्तर भक्ति कराये ।
वेद अनूपम चार कहेतस अर्थ भले मन मांहि ठराये ।
पढो बहुभाव लिखो निज अक्षर भक्ति करावहु पूज रचाये ।
ज्ञान कहे जिन आगम भक्ति करो सद्बुद्धि बहु शुभ पाये ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्तयेऽर्घ्यम् ॥ १३ ॥

प्रति क्रमस्तनूत्सर्गः समता वन्दना स्तुतिः ।
स्वाध्यायः पठ्यते यत्र तदावश्यक मुच्यते ॥ १४ ॥

भाव धरे समता सब जीवन स्तोत्र पढे मनतैं सुखकारी ।
कायोत्सर्ग करे मन प्रीतसों वन्दन देव तणी भवहारी ॥
ध्यान धरि मद चूर करी दोउ वेर करे पडिकम्मण भारी ।
ज्ञान कहे मुनि सो भनवंत जु दर्शन ज्ञान चरित्र उधारी ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणये अर्घ्यम् ॥ १४ ॥

जिन स्नानं श्रुताख्यानं गीत वाद्यं च नर्तनम् ।
यत्र प्रवर्तते पूजा सा सन्मार्ग प्रभावना ॥ १५ ॥

श्री जिन पूजा रचैं परमारथ आगम नित्य महोत्सव ठानैं ।
गावत गीत बजावत ढोल मृदंग के नाद सुथान बखानैं ।
संघ प्रतिष्ठा रचै जल जात्रा सद्गुरु को साहमों कर आनैं,
ज्ञान कहे जिनमार्ग प्रभावन भाग्यविशेष सुजानहि जानैं ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावनायै अर्घ्यम् ॥ १५ ॥

चारित्र गुण युक्तानां मुनीनां शील धारिणां
गौरवं क्रियते यत्र तद्वात्सल्यं च कथ्यते ॥ १६ ॥

गौरव भाव धरि मन में मुनि पुंगव को नित वत्सल कीजे,
शील के धारक भव्य के तारक तासौं निरन्तर स्नेह धरीजे ।
धेनु यथा निज बालक को अपने निय छूटन और पसीजे ॥
ज्ञान कहे भवि लोक सुनो जिन वत्सल भाव धरै अघ छीजे ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं प्रवचन वत्सलत्वाय अर्घ्यम् ॥ १६ ॥

कर्तव्यानि सदंगानि केवली श्रुत केवली, समीपे तीर्थकृन्नाम भव्या बध्नंति भावतः ॥ १७ ॥

सुन्दर षोडश कारण भावन निर्मल चित सुधार के धारे ।
कर्म अनेक हरे अति दुर्गति जन्म जरा भय मृत्यु निवारे ।

दुःख दारिद्रय विपत्ति हरे भव सागर को पर पार उतारे
ज्ञान कहे यह षोडश कारण कर्म निवारण सिद्ध सुठारे ।

इत्युच्चार्य षोडश कारण यंत्रोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

निम्न मन्त्रों का जाप्य कर के अर्घ चढ़ावें ।

१ ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयै नमः ॥
२ ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नतायै नमः ॥
३ ॐ ह्रीं शील व्रतेष्वनतिचाराय नमः ॥
४ ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगाय नमः ॥
५ ॐ ह्रीं संवेगाय नमः ॥
६ ॐ ह्रीं शक्ति तस्त्यागाय नमः ॥
७ ॐ ह्रीं शक्तितस्तपसे नमः ॥
८ ॐ ह्रीं साधुसमाधये नमः ॥
९ ॐ ह्रीं वैयावृत्याय नमः ॥
१० ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तये नमः ॥
११ ॐ ह्रीं आचार्य भक्तये नमः ॥
१२ ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्तये नमः ॥
१३ ॐ ह्रीं प्रवचन भक्तये नमः ॥
१४ ॐ ह्रीं आवश्यका परिहाण्यै नमः ॥
१५ ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावनायै नमः ॥
१६ ॐ ह्रीं प्रवचन वत्सलत्वाय नमः ॥

एभि मंत्रै जाप्यंकुर्यादर्घ्यंचापि समुद्धरेत् ॥

❀ जयमाला ❀

भव भमण णिवारण, सोलहकारण, पयडमि गुण गण सायरहम् ।
वण विवि तित्थंकर, असुह खयंकर, केवलणाण दिवायरहम् ॥ १ ॥

॥ पद्धरी छन्द ॥

दिढ धरहु पढम दंसण विसुद्धि, मण वयण काय विरइयति सुद्धि
मा छंडहु विणउ चउ पयार जो हुत्ति वरंगण हियहि हार ॥ २ ॥
अणु दिणु परि पालउ सीयल भेउ, जो हुत्ति हरइ संसार हेउ ।
णाणोपयोग जो काल गमइ, तसु तणिय कित्ति भुवणयहि भमइ ॥३॥
संवेउ चाउ जे अणुसरंति, वेएण भवण्णउ ते तरंति ।
जे चउविह देय सुपत्तदाण सो पावइ अणुकम अचलठाण ॥ ४ ॥
जे तव तवंति बारह पयार ते सग्ग सुरिंदिह विविह सार ।
जो साहु समाधि धरंति थक्कु, सो हवइण काल मुहंधुवक्कु ॥ ५ ॥
जो जाणइ वैयावच्चकरण, सो होइ सव्व दोसाण हरण ।
जो चिंतइ मण अरिहंत देव, तसु विसय अणंताक्खरण खेव ॥ ६ ॥
पव्वयण सरिस गुरू जेणमंति, चउगइ संसारण ते भमंति ।
बहु सुयह भत्ति जे णर करंति, अप्पउ रयणत्तय ते धरंति ॥ ७ ॥

जे इह आवस्सई चित्त देय, सो सिद्ध पंथ सहरत्थ लेय ।

जेमग्ग पहावण आइरंति ते अहभिद्दंसण संभवंति ॥ ८ ॥

जे पवयण कज्ज समत्थ हंति तह कम्म निणंदह खवण भंति ।

जे वच्छ लच्छ कारण वहंति ते तित्थयरत्तउ पुह लहंति ॥ ९ ॥

घत्ता–इह सोलहकारण कम्म णिवारण जे धरंति वयसील धरा ।

ते दिवि अमेरसुर पहुमि णरेसुर सिद्धवरंगण हियहि हरा ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुध्यादि षोडश कारणेभ्यो पूर्णार्घ्यम् ॥

एताः षोडश भावना यतिवराः कुर्वंति ये निर्मला,

स्ते वै तीर्थकरस्य नाम पदवीमायुर्लभंते कुलं ।

वित्तं कांचन पर्वतेषु विधिना स्नानार्चनं देवतां

राज्यं सौख्यमनेकधा वर तपो मोक्षं च सौख्यास्पदं ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

❀ अथ दश लक्षण धर्म पूजा ❀

भवाम्भोधि निमग्नानां जन्तूनां तारण क्षमम् ।

उत्तमादि क्षमाद्यन्तं यजे धर्म समूहकम् । १ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलाक्षणिक धर्म अत्रावतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिक धर्म अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलाक्षणिक धर्म अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(दश लक्षण यंत्रं स्थापयेत्)

चञ्चत्काञ्चन भृङ्गार नालि निर्गम सज्जलैः

उत्तमादि क्षमाद्यन्तं, यजे धर्म समूहकम् ॥ १ ॥ जलम् ॥

चन्दनैश्चँद्रवर्णाढ्यैं र्मलयाचल संभवैः ॥ उत्तमादि० ॥ चन्दनम् ॥

शालेयैः सान्द्रकैः शुद्धैः सकलैः सरलैः शुभैः ॥ उत्तमादि० ॥ अक्षतम् ॥

मंदार मालती पुष्पैः पारिजातैः सुवर्णकैः उत्तमादि० ॥ पुष्पम् ॥

नैवेद्यैः परमाहारैः स्वर्ण भाजन मध्यगैः ॥ उत्तमादि० ॥ नैवेद्यम् ॥

उद्योतित दिशाचक्रैर्दीपैः सद्धर्म पात्रगैः ॥ उत्तमादि० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

धूपैर्धूपितदिक्चक्रैर्दशांगैर्नर दुर्लभैः ॥ उत्तमादि० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

आम्रादि फल संघातैर्नासा नेत्र सुखाकरैः ॥ उत्तमादि० ॥ फलम् ॥ ८ ॥

तोयैर्गंधाक्षतैः पुष्पैर्दीपधूप फलादिभिः ॥ उत्तमादि० अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रत्येकार्घ ॥

येन केनापि दुष्टेन पीडितेनापिकुत्रचित् ,

क्षमा त्याज्या न भव्येन, स्वर्ग मोक्षाभिलाषिणा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमाधर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

घत्ता— उत्तम खम मद्दउ, अज्जउ सच्चउ, पुण सउच्च संजम सुतऊ ।
चाउवि आकिंचणु, भय भय वंचणु, बंभ चेरु धम्मजु अखऊ ॥ १ ॥

उत्तम खम तिल्लोयह सारी, उत्तम खम जम्मो वहितारी ।
उत्तम खम रयणत्तयधारी, उत्तम खम दुग्गई दुह हारी । २ ।

उत्तम खम गुण गण सहयारी, उत्तम खम इंदिविंद पयारी ।
उत्तम खम बुहयण चिंतामणि, उत्तम खम संपज्जइ थिरमणि ॥ ३ ॥

उत्तम खम मह णिज्ज सयल जणु, उत्तम खम मिच्छत्त विहंडणु ।
जहं असमत्थह दोसु खमिज्जइ, जहिं असमत्थह णवि रूसिज्जइ ॥ ४ ॥

जहिं आकोसण वयण सहज्जइ, जहि पर दोसण वण भासिज्जइ ।
जह चेयण गुण चित्त धरिज्जइ तहिं उत्तम खम जिणे कहिज्जइ ॥ ५ ॥

घत्ता– उत्तम खम जुया, सुरखग णुया, केवलणाण लहंवि थिरू ।
हुयसिद्ध णिरंजण भव दुह भंजणु, अगणिय रिसि पुंगमजि चिरू ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

पंच जिनेन्द्र धरूं मनमें जिन नाम लिये सब पातक भाजैं,
शारद मात प्रणाम करूं, जाके हस्थ कमण्डल पोथी विराजै ।

गौतम पाय नमूं मन शुद्धसौं, अंग उपांग बखाण हि गाजै ।
सद्गुरू को उपदेश सुण्यो हम, धर्म सदा दशलक्षण छाजै ॥ १ ॥
केवल एक क्षमा विनही, तप संयम शील अकारथ जाणौ ।
पाक सुपाक बण्यो सुथरो जैसे लोण विहीन अनाज को खाणौ ।
देव जिनेन्द्र कहे सुरतैं लगमें जग तारण मोक्ष पियाणौ ।
ज्ञान कहे नर अन्तर सूझत सार क्षमा दशलक्षण राणौ ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥

मृदुत्वं सर्व भूतेषु कार्यं जीवेन सर्वदा ,
काठिन्यं त्यज्यते नित्यं धर्म बुद्धि विजानता ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगायार्घ्यम् ॥

घत्ता:—मद्दव भव भद्दणु, माणणिकंदणु दय धम्मजु मूलहु विमलु ।
सव्वह हियपारउ, गुण गण सारउ, तिस उत्तउ संजम सयलु ॥ १ ॥
मद्दव माण कसाय विहंडणु, मद्दउ पंचेंदिय मण दंडणु ।
मद्दउ धम्मइ करुणा वल्ली, पसरइ चित्त महीरुह वल्ली ॥ २ ॥
मद्दउ जिणवर भत्ति पयासइ, मद्दउ कुमइ पसरु णिरणासइ ।
मद्दवेण बहु विणय पवड्ढइ मद्दवेण जण वइरी हड्ढइ ॥ ३ ॥

मद्दवेण परिणाम विसुद्धि, मद्दवेण विहु लोयह सिद्धी ।
मद्दवेण दुई विह तव सोहइ, मद्दवेण तीजो णर मोहइ ॥ ४ ॥
मद्दउ जिण सासण जाणिज्जइ, अप्पा पर सरूव भासिज्जइ ।
मद्दउ दोस असेस विणासउ, मद्दउ जणण समुद्द तारउ ॥ ५ ॥
आर्या–सम्मद्दंसण अंगु, मद्दउ परिणाम जु मुणहु ।
इय परियाण विचित्तं मद्दउधम्म अमल थुणहु ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

मार्दव भाव न आवत जौं लग तौं लग धर्म कहा उपजावे,
भाव कठोर रहे घट भीतर नूतन पाप संयोग बढावे ।
आरत रौद्र वर्सै उसके मन पापतैं निश्चय दुर्गति पावे,
ज्ञान कहे मृदुभाव को धारके, फेरि संसार कबहुं नहीं आवे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय अर्घ्यं ॥ २ ॥

आर्यत्वं क्रियते सम्यक् दुष्ट बुद्धिश्च त्यज्यते ,
पाप चिन्ता न कर्तव्या श्रावकैर्धर्म चिन्तकैः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

वत्तः– धम्महवरलक्खणु, अज्जउथिरमणु, दुरिय विहंडणु सुह जणणु ,

तं इत्थुजि किज्जइ, तं पालिज्जइ, तंसि सुणिज्जइ खय जरणु ॥ १ ॥

जारि सुणिजय चित्त चिंतज्जइ, तारिसु अण्णहु पुण्ण भासिज्जइ ।

किज्जइ पुण्ण तारिसु सुह संचणु; तं अज्जव गुण मुणहु अवंचणु ॥ २ ॥

माया सल्ल मणहु णीसारहु, अज्जउ धम्मपवित्त वियारहु ।

वउ तउ माया वियउ णिरत्थउ, अज्जउ सिव्पुर पंथ सउत्थउ ॥ ३ ॥

जत्थ कुटिल परिणाम चइज्जइ, तहिं अज्जउ धम्मजु संपज्जइ ।

दंसण णाण सरूव अखंडो, परम अतिंदिय सुक्ख करंडो ॥ ४ ॥

अप्पे अप्पउ भवह तरंडो, एरिसु चेयण भाव पयंडो ।

सो पुण अज्जउ धम्मे लब्भइ अज्जवेण वैरिय मण खुब्भइ ॥ ५ ॥

घत्ता-अज्जउ परमप्पउ, गय संकप्पउ, चिम्मितु सासय अभयपऊ ।

तं णिरुजाइज्जइ, संसउहिज्जइ, पाविज्जइ सिहिअचल पऊ ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

आर्जव भाव धरै मनमें जिससे भव ठार के मोक्ष सिधारै ।

डूबत है भव सागर में तस हाथ गही पर पार उतारै ॥

संपति देह निवाज खडो करे, आर्जव कर्म को मान विगारै ।

ज्ञान कहै सोइ मूढ़ बड़ो भव मानव पायके आर्जव छारै ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥ ३ ॥

असत्यं सर्वथा त्याज्यं, दुष्ट वाक्यं च सर्वदा ।
पर निन्दा न कर्तव्या भव्येनापि च सर्वदा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

घत्ता–दय धम्म हु कारण, दोस णिवारण, इह भव पर भव सुक्खयरु ।
सच्चुजि वयणुल्लउ, भुवणि अतुल्लउ, बोलिज्जइ वीसास यरु ॥ १ ॥

सच्चुजि सव्वह धम्म पहाणु, सच्चुजि महियल गरुव विहाणु ।
सच्चुजि संसार समुद्द सेउ, सच्चुजि भव्वह भण सुक्ख हेउ ॥ २ ॥

सच्चेणजि सोहइ मणुवजम्मु, सच्चेण पवित्तउ पुण्ण कम्मु ।
सच्चेण सयल गुण गण सहंति, सच्चेण तियस सेवा वहंति ॥ ३ ॥

सच्चेण अणुव्व महव्वयाइ, सच्चेण विणासिय आवयाइ ।
हिय मिय भासिज्जइ णिच्च भास, णवि भासिज्जइ पर दुह पयास ॥ ४ ॥

पर वा हायर भासहु ण भव्व, सच्चुणि छंडउ विगय गव्व ।
सच्चु जि परमप्पा अत्थि एक्कु, सो भावहु भव तम दलण अक्कु ॥ ५ ॥

रूंधिज्जइ मुणिणा वयण गुत्ति, जंखणा किज्जइ संसार अंत्ति ।
पुण सच्चेण पावइ सग्गसुखं, धम्मेण लहइ कम्मक्खय मोक्खं । ६ ॥

आर्या–सच्चुजि धम्म फलेण केवल णाण वहेइ थणु ।
तं पालहु भो भव्व, मणहुण अलियउ इह वयणु ॥ ७ ॥

(भाषा सवैया)

साँच नहीं घट भीतर सो नर क्यों नर की गिनती में गिनाये ।
राय वसु जग देखत डूबत दुर्गति पावत बोहर आये ।

झूठ बसै जिसके मुखमें नरते जगमें नरकै हि समाये,
ज्ञान कहै जग सत्य बड़ो षट् दर्शन में जिनराज कहाये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥ ४ ॥

बाह्याभ्यंतरैश्चापि मनोवाक्काय शुद्धिभिः शुचित्वेन सदा भाव्यं पाप भीतैः सु श्रावकैः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगायार्घ्यम् ॥

घत्ता:– सच्चुजि धम्मंगो, तं जि अभंगो, मिरणंगो उवओग्गमई ।
जर मरण विणासणु, तिजय पयासणु काइज्जइ अहिणिसुजि थुई ॥ १ ॥

धम्म सउच्च होइमण सुद्धिय, धम्म सउच्च वयणधण गिद्धिय ।
धम्म सउच्च लोह वज्जंतउ, धम्म सउच्च सुतव पहि जंतउ ॥ २ ॥

धम्म सउच्च बंभ वय धारणु, धम्म सउच्च मयट्ठणिवारणु ।
धम्म सउच्च जिणायम भणणे, धम्म सउच्च सुगुण अणु मणणे ॥३॥

धम्म सउच्च सल्ल कयचाए धम्म सउच्चुजि णिम्मलभाए ।

धम्म सउच्च कसाय अहावे, धम्म सउच्च ण लिप्पइ पावे ॥ ४ ॥

अहवा जिणवर पूज विहाणे, णिम्मल फासुय जल कयण्हाणे ।

तं पि सउच्च गिहत्थउ भासइ णवि मुणिवरह कहिउ लोयासिउ ॥ ५ ॥

घत्ता:—भव मुणिवि अणिच्चउ, धम्म सउच्चउ पालिज्जइ एयग्गमणि ।

सिव मग्ग सहाओ सिव पयदाओ, अणुप्प चिंतहिं किंणि खणि ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

शौच करो जिन पूजन को मनशुद्ध रहै परमारथ केरो ।

इन्द्रिय पांच रहैं अपने वश कर्म कषाय को पाड़त एरो ॥

मंत्र को स्नान करैं मुनि पुंगव, पावत नांहि संसार को फेरो ।

ज्ञान कहै जग शौच बड़ो, परमारथ सुमरन ज्ञान बढ़ेरो ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥ ५ ॥

संयमं द्विविधं लोके, कथितं मुनि पुंगवैः ।

पालनीयं पुनश्चिते, भव्य जीवेन सर्वदा ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

घत्ता:—संजम जणि दुल्लहु, तं पालिल्लहु, जो छंडइ पुण मूढ मई ।

सो भमै भवावलि, जरमरणावलि किम पावइ सुइ पुण सुगई ॥ १ ॥

संजम पंचेंदिय दंडणेण, संजम जि कसाय विहडणेण ।
संजम दुद्धर तव धारणेण, संजम रस चाय वियारणेण ॥ २ ॥

संजम छक्खास नियंमणेण, संजम मणु पसरहु थंभणेण ।
संजम गुरु काय कलेसणेण, संजम परिगह गिह चायणेण ॥ ३ ॥

संजम तस थावर रक्खणेण, संजम तिण्णि जोयणियत्तणेण ।
संजम सु तत्थ परिरक्खणेण, संजम बहु गमण चयंतणेण ॥ ४ ॥

संजम अणुकंप कुणंतणेण, संजम परमत्थ वियारणेण ।
संजम पोसइ दंसणहु अत्थु, संजम तिसहूणिरू मोक्ख पत्थु ॥ ५ ॥

संजम विणु णर भव सयल सुण्णु, संजम विणु दुग्गई जिउपवण्णु ।
संजम विण घडियम इत्थ जाउ, संजम विण विहली अत्थि आउ ॥६।

घत्ताः-इह भव पर भवणो संजम सरणो, होज्जउ जिण णाहे भणिओ ।
दुग्गई सर सोसण, खरकिरणोवम, जेण भवारि विसम हणिओ ॥ ७ ॥

भाषा (सवैया)

संयम दोय कहे जिन आगम, संयम से शिव मारग लहिये ।
पाप गले मन संयम-सौंधरि, कर्म कठोर कषाय को दहिये ॥

संयम तैं भव पार तिरै नर, संयम मुक्ति सखा जग कहिये ।
ज्ञान कहै यह संयम में अब कर्म लगाय कहो कि न रहिये ॥ ६ ॥

द्वादशं द्विविधं लोके, बाह्याभ्यंतर भेदतः । स्वयं शक्ति प्रमाणेन क्रियतेधर्म वेदिभिः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय अर्घ्यम् ।

घत्ता—सुर भव पावे पिणु, तच्चसुणेप्पिणु, खंडवि पंचेंदिय समणु ।
सिव्वेउवि मंडिवि, संगइ छंडिवि, तव किज्जइ जाये विवणु ॥ १ ॥

तं तउ जहि परिगह छंडिज्जइ, तं तउ जहि मयणुजि खंडिज्जइ ।
तं तउ जहि सुग्गत्तणु दीसइ, तं तउ जहि गिरिकंदर णिवसइ ॥ २ ॥
तं तउ जहि उवसग्ग सहिज्जइ, तं तउ जहि रायाइ जिणिज्जइ ।
तं तउ जहि भिक्खइ भुंजिज्जइ, सावइ गेह काल णिव सिज्जइ ॥ ३ ॥
तं तउ जत्थ समिदि परि पालणु, तं तउ गुत्ति तयह णिहालणु ।
तं तउ जहि अप्पा पर बुज्झिउ, तं तउ जहि भव माणुजि उज्झिउ ॥४ ॥
तं तउ जहि ससरूव मुणिज्जइ, तं तउ जहि कम्मह गण खिज्जइ ।
तं तउ जहि सुर भत्ति पयासहिं, पवयणत्थ भवि यणह पभासहि ॥ ५ ॥

जेण तवे केवल उपवज्जइ, सासय सुक्ख खिच्च संपज्जइ ।

घत्ता—बारह विहु तउवरू, दुग्गइ परिहरू, तं पुजिज्जइ थिर गणिणा ।

मच्छर मय छंडिवि, करणइ दंडिवि, तं पिघरिज्जइ गौरविणा ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

दुर्द्धर कर्म गिरीन्द्र गिरावण, वज्र समान महा तप एसो ।
बारह भेद भणंत जिणेसुर पाप पखालन पानीय जैसो ॥
दुःख विहंडण सुख समर्पण, पंच विइन्द्रिय रचण तैसो ।
ज्ञान कहे तपस्या बिन जीव जु मोक्ष पदारथ पावेगो कैसो ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम तपो धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥ ७ ॥

चतुर्विधाय संघाय, दानं देयं चतुर्विधम् । दातव्यं सर्वथा सद्भिश्चिंतकैः पारलौकिकैः ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय अर्घ्यम् ॥

घत्ता–चउविह धम्मंगो, करहु अभंगो, णियसत्तिइ भत्तिय जणहु ।
पत्तह सुपवित्तह तव गुण जुत्तह परमइ संवलु तं मुणहु ॥ १ ॥

चाए आवासयखउ हट्ठइ, चाए णिम्मल कित्ति पविट्ठइ ।
चाए वयणिय वणमिह पावे, चाए भोग भूमि सुह जाए ॥ २ ॥
चाउ विहिज्जइ णिच्च जि विणए, सुयवयणे भासेप्पिणु पणए
अभयदाण दिज्जइ पहिलारउ, जिमि णासइ परभव दुह यारउ ॥ ३ ॥
सत्थ दाण बीजो पुण किज्जइ, णिम्मल णाण जेण पाविज्जइ ।

ओसह दिज्जइ रोय विणासणु, कह विस पित्थइ वाहि पणासणु ॥ ४ ॥

आहारे वस रिद्धि पविट्ठइ, चउविहु चाउ जि एहु पविट्ठइ ।

अहवा दुहु वियप्पह चाए, चाउ जि एहु मुणहु समवाए ॥ ५ ॥

आर्या-दुहियहिं दिज्जइ दाण, किज्जइ माणु जि गुणियणहिं ।

दुख खलिर अभंग, देसण चिंतिज्जइ मणहं ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

दान बड़ो जगमें नर दान तैं मानको पावत है जग मानव,

भूप दयाल भये सबकूं अरि मित्र भये अरू सेवत दानव ।

दान तैं कीर्ति बढ़ै जग भीतर दान समान न और कहावे ।

ज्ञान कहै भव पार उतारन दान चतुर्विध सार कहावे ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥

चतुर्विंशति संख्यातो, यो परिग्रह ईरितः ।

तस्य संख्या प्रकर्तव्या तृष्णा रहित चेतसा । ९ ।

ॐ ह्रीं उत्तमाकिंचन्य धर्मांगाय अर्घ्यम् ।

घत्ता:-आकिंचणु भावहु, अप्पा ज्झावहु देह भिण्ण उज्झाण मऊ ।

निरुवम मयवण्णउ, सुह संपण्णउ, परम अतींदिय विगय मउ ॥ १ ॥

आकिंचणु चउसंगहखिविचि, आकिंचणु चउ सुज्झाणसत्ति ।
आकिंचणु चउ विय लियमभत्ति, आकिंचणु रयणत्तय पवित्त ॥ २ ॥

आकिंचणु आउ चि एहिचित्त, पसरंतउ इंदियवणि विचित्त ॥
आकिंचणु देह हणेइ चित्त, आकिंचणु जं भव सुइ विरत्त ॥ ३ ॥

तिणमत्त परिग्गह जत्थणत्थि; मणिराउ विहिज्जइ तव अवत्थि ।
अप्पा पर जत्थ वियारसत्ति, पयडिज्जइ जहि परमेट्ठि भत्ति ॥ ४ ॥

जह छंडिज्जइ संकप्प दुट्ठ भोयण वंछिज्जइ जह अणिट्ठ ।
आकिंचण धम्म वि एम होइ तं जझाइज्जइ खंड इत्थ लोई ॥ ५ ॥

घत्ताः—ए दुज्जि पहावे, लद्ध सहावे, तित्थेसर सिव नयरि गया ।
ते पुणरिसि सारा, मयण वियारा, वंद विज्ज एतेस सया ॥ ६ ॥

॥ भाषा सवैया ॥

आलस अंगतैं दूर करि कर, नाम आकिंचन अंग धरावो ।
आल पंपाल तजौ घटतैं मन शुद्ध करी समता घर आवो ॥

जप तीर्थ करी फल इच्छित होत समूल भये फल किंचित पावो ।
ज्ञान कहे नर को सुख दायक, शुद्ध मनैं परमारथ ध्यावो ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥ ९ ॥

नवधा सर्वदा पाल्यं, शीलं संतोष धारिभिः ।

भेदा भेदेन संयुक्तं सद् गुरुणां प्रसादतः ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय अर्घ्यम् ।

घत्ता:–बंभव्वउ दुक्कउ, धारिज्जइ वरु, केडिज्जइ विसयासथिरु ।

तिय सुक्खयरत्तो, मणकरिमत्तो, तं जि भव्व रक्खेहु थिरु ॥ १ ॥

चित्त भूमि मयणु जि उप्पज्जइ तेणजु पीडउ करइ अकज्जइ ।

विगइ सरीरइ विदइ सेवइ, णिय परणारि ण मुढ़उ वेवइ ॥ २ ॥

णिवडइ णिरय मराडुह भुंजइ, ओ दीणुजिय बंभव्वउ भंजइ ।

इय जाणे विणु मण वयकाए बंभचेरु पालहु अणुराए ॥ ३ ॥

णव पयार सत्थिय सुहयारउ बंभव्वे विणु चउ तउ जिय सारउ ।

बंभव्वे विणु काय किलेसइ विहल सयल भासिय जिणेसइ ॥ ४ ॥

बाहिर फरसेंदिय सुह रक्खउ, परमबंभ आभिंतर पिक्खउ ।

एण उवाय लब्भइ सिवहरु, इम रइधू बहु भणइ विसय यरु ॥ ५ ॥

घत्ता–जिय णाह महिज्जइ, मुणि यण विज्जइ, दहलक्खण पालीइ थिरु ।

भो खेम सियासुय, भव्व विणय जुय, होलि बम्मयहु करहु थिरु ॥ ६ ॥

(भाषा सवैया)

शील सदा नरको सुख दायक शील समान बड़ो नहीं कोई ।
शील फलै अति शीतल पावक जानकी को जग देखत होई ।
शाह सुदर्शन शूलि सिंहासन शील फलै भव साधत दोई ।
ज्ञान कहै नर सोई विचक्षण जो नर पालत शील समोई ॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय महार्घ्यम् ॥ १० ॥

(भाषा सवैया)

सार क्षमा अरु मार्दव आर्जव सत्य सदा जग शौच सहाई ।
संयम सार तपो तप भेदसु दान अकिंचन धर्म कहाई ।
ब्रह्म बड़ो भव तारण को दश लक्षण है सबको सुख दाई ।
ज्ञान कहै परमारथ सौं न करे तिसको जिनराज दुहाई ॥ ११ ॥

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

एभिर्मंत्रैर्जाप्यं कुर्यात्

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय नमः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय नमः ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय नमः ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्मांगाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः ॥ १० ॥

(अर्घं समुद्धरेत्)

❀ अथ जय माला ❀

इय कम्मरय णिज्जरं जे हणंति भव पिंजरं । नीरोयं अजरामरं ते लहंति सुक्खं परं ॥ १ ॥

जेण मोक्ख फल लब्भिज्जइ, सो धम्मंगो एहहु गिज्जइ ।
खम खमायलु तुंगय देहउ, महउ पल्लउ अज्जउ सेहउ ॥ २ ॥

सच्च सउच्च मूल संजम दलु, दुविह महा तव खंध कुसुमाउलु ।
चउविह चाउय साहिय परमलु पी णिय मंबलोय छप्पइयलु ॥ ३ ॥

दिय संदोह सदकल कलयलु, सुरणर वर खेयर सुइ सयफलु ।
दीणा णाह दीह सम णिग्गहु सुद्ध सोम तणु मिच परिग्गहु ॥ ४ ॥

बंभचेरु छायइ सुहासिउ, राय हंस नियरेहि समासिउ ।
एहउ धम्म रुक्ख लाखिज्जइ जीव दया वयणहि राखिज्जइ ॥ ५ ॥

झाणट्ठाण भल्लारउ किज्जइ, मिच्छामई पवेस ण दिज्जइ ।
सील सलिल धारहि सिंचिज्जइ, एम पयत्त ण वड्ढाविज्जइ ॥ ६ ॥

घत्ता– कोहानल चुक्कऊ, होउ गुरुक्कउ, जाइ रिसिंदिय सिद्धगई ।
जगताइ सुहंकरु धम्म, महातरु, देइ फलाइ सुमिट्ठमई ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो पूर्णार्घ्यम् ॥

यो धर्मं दशधा करोति पुरुषः, श्रीवाकृतोपस्तुतं,
सर्वज्ञध्वनि संभवं त्रिकरुणा, व्यापार शुद्धयानिशं ।
भव्यानां जयमालया विमलया, पुष्पांजलिं दापये,
नित्यं सश्रिय मातनोति सकलं स्वर्गापवर्ग स्थितिः ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः ॥

अथ पंच मेरू पूजा (बड़ी)

श्रीमन्नाभेय देवं जिनवरममलं विश्व विद्या प्रधानं,
कामेभोत्तुंग कुंभस्थल दलन परं सर्व सम्पन्निदानम् ।
नत्वा श्री मेरु पूर्वे जिनवर सगृहा संति शून्याष्टमेय,
स्तेषां पूजा विधानं प्रविवद सुतरां स्थापयामि प्रमोदात् ॥ १ ॥

सुदर्शनाख्यः प्रथमश्च मेरु द्वीपे स्थितं जम्बूपदे पवित्रे,
लक्षैकसद्योजन तुंग वर्यश्चतुर्वनैः षोडशभिश्च चैत्य ॥ २ ॥
द्वीपेद्वितीये विजया चलाख्यो मेरू च पूर्वापर सन्निविष्टो ।
चतुर्युतासीति सहस्रतुंगैस्तावद्वनैश्चैत्य युतैर्विभाति ॥ ३ ॥
द्वौ मन्दिरौ मंदिर विद्युदादि मालीति संज्ञौ किल पुष्करार्द्धे ।
द्वीपे तृतीये खलु तावदुच्चै, स्तावत्प्रमाणैर्वन चैत्यगेहे ॥ ४ ॥

सर्वाण्यशीति संख्यानि, चैत्यान्युच्चैस्तराण्यलं ।

संति स्वर्ण मयान्युच्चै स्तोरणाध्वज राजितं ॥ ५ ॥

प्रत्येकं चैत्य गेहेषु सर्वज्ञ प्रतिमा वराः ।

अष्टोत्तर शतं तत्र नाना माणिक्य भासुराः ॥ ६ ॥

पंचा चाप शतोत्सेधाः सवशक्र समर्चिता ।

पुष्पांजलि विधौ स्थाप्या पूजास्ताः शमं हे तवे ॥ ७ ॥

(इत्युच्चार्य पंच मेरु स्थापनार्थं पुष्पांजलि क्षिपेत् ।)

सुदर्शनाह्वो विजयाचलाख्यो श्रीमदरो विद्युत एव माली

एषां गिरिणां किल पूर्व दिक्षु: सस्थापये चैत्य जिनेन्द्र बिम्बान् ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं पंच मेरूस्थ पूर्व दिशि विंशति चैत्या लयान्यत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् ॥

स्वर्धुनि वर वारिभिः सुख कारिभिः मल हारिभिः ।

केशरेन्दु सुधारिभिः ज्वर दारिभिः रस सारिभिः ।

पंच मेरु जिनालयान् हरि दिग्विभान्हरि वत्प्रभान्

पूजयेऽहमकृत्रिमान्गुण भूषणान्गत दूषणान् ॥ जलं । १ ॥

सुन्दरैर्हरिचन्दनैरलिनन्दनैरभिनंदनैः कुंकुमागुरु मंडनैरघ खंडनैर्गत दंडनैः । पंचमे. ॥ चन्दनम् ।

जैन वाक्य सुमंजुलैः शशिभोज्वलैर्वर तदुलैः

हेम पात्र समाश्रितैः कज वासितैरधिवासितैः ॥ पंचमे. ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

पारिजात महोत्पलैः कनकोत्पलैरति कोमलैः ।

सिंदुवार सुचम्पकैः स्फुट नीपकैरिव दिव्यकैः । पंचमे. ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

हेम भाजन संस्थितै रधिकाश्रितैर्घृत पाचितैः ।

दिव्य पोली नवोदनैः सुखनोदनै रभिमोदनैः ॥ पंचमे. ॥ नैवेद्यम् । ५ ॥

तामसासुर नाशकै, रविनाशकै परि भासकैः

द्योतिताऽखिल दिङ्मुखै र्मणि दीपकै गुणदीपकैः ॥ पंचमे, ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

मेचका गुरू संभवै गुरू धूपकै बहु धूपकैः

गंध लुब्ध शिली मुखैर्गत दिङ्मुखैर्हत कल्मषैः ॥ पंचमे. ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

नालिकेर सदाफलै र्बहुधामलै र्वन सत्फलैः

बीजपूर सु जृंभलै रति पेशलै बहु कोमलैः ॥ पंचमे. ॥ फलम् ॥ ८ ॥

पाथो गंधाक्षतोघैः शतदल निचयैः भार नैवेद्य दीपैः

धूपैरामोदयुक्तैः रुचिर तरु फलै र्दर्भ दूर्वावितानैः ।

मेरूना पूर्व भागे जिनवर निलयान् विंशतीस्येव संख्यान्

नत्वा स्तुत्वा त्रिसंध्यं सुविमल मनसा संयजे चन्द्रकीर्तिः ॥ अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

॥ जय माला ॥

जम्बू धातकी पुष्करार्द्ध विषये शक्रादि संसेविते,
भीमनन्दन पाण्डुकादि सहिते संतप्त हेम प्रभे ।
नाना रत्न विचित्र वर्ण निचिते रम्याणि चैत्यानि वै,
तत्रस्थं जिनराज बिम्ब निकरं संस्तूयते भावतः ॥ १ ॥

किन्नर नाग अमर गण महितं, प्रातिहार्य वसुशोभा सहितं ।
पूर्व दिशि संस्थित जिनराजं, संस्तवेमि शिव सौख्य समाजं ॥ २ ॥

संगीताकुल कृत बहु मानं, महा तुम्बर रचित सु विमानं । पूर्व दि० ॥ ३ ॥
नृत्य महोत्सव विविधप्रकारं, वाद घोष सप्त स्वर सारं । पूर्व दि० ॥ ४ ॥
भविक जीव वांछित दातारं, ईन्द्रादिक सुर कृत जयकारं ॥ पूर्व दि० ॥ ५ ॥
भव पाथो निधि प्रापीत तीरं, किल्बिष पक विशोधन नीरं ॥ पूर्व दि० ॥ ६ ॥
(इन्द्र वज्रा छन्द)
अकृत्रिमं मेरू महिध्र संस्थ, प्राच्येव दिग्संस्थित मक्षयंच
सर्वज्ञ बिम्बं प्रकरं भजामि श्रीभूषण ज्ञान पयोधिवंद्यं ॥ ७ ॥ अर्घ्यम् ॥

॥ द्वितीय जयमाला ॥

घत्ता—युगमइ जिणदेवं, सुरकृत सेवं, पंच मेरू जिणधाम वरं ।
पूरव दिग सारं, जिण आगारं, पूजयामि तव सत्ति भरं ॥ १ ॥

सुदर्शनं विजया चल मेरू, मन्दिर विद्युन्माली महीरू ।
पूर्वदिशि विंशति आगारं, अमर खयर अर्चित मनहारं ॥ २ ॥

भद्रसाल नन्दन वन चंगं, सौमन पांडुक चार अभंगं ॥ पूर्व दि० ॥ ३ ॥
प्रति वन चउ उत्तम जिन गेहं, भवियण वन्दो पूजो तेहं ॥ पूर्व दि० ॥ ४ ॥
अष्टोत्तर शत प्रतिमा चंगं, प्रति चैत्ये वन्दौं मन रंगं ॥ पूर्व दि० ॥ ५ ॥
पन्च शतक कर धनुष उतंगं रत्न विनिर्मित तनु शुभरंगं ॥ पूर्व दि० ॥ ६ ॥
सात कुम्भ निर्मित जिन गेहं रत्नालंकृत तोरण तेहं ॥ पूर्व दि० ॥ ७ ॥
रत्न पुंजपरि धूप सुकुंभं, केतु पंक्ति सुर निर्मित शोभं ॥ पूर्व दि० ॥ ८ ॥
हेमालंकृत भुवनसुदारं, जड़ित रत्न मुक्ताफल सारं ॥ पूर्व दि० ॥ ९ ॥
ताल कसाल झन्झरिय केरी, दुंदुभि ढोल निशानन भेरी ॥ पूर्व दि० ॥ १० ॥
पूजा अष्ट विधि सुखकारं गीत नाद नृत रचित उदारं ॥ पूर्व दि० ॥ ११ ॥
वासवेश नित चर्चित चरणं, नाग नरेश्वर गत पद शरणम् ॥ पूर्व दि० ॥ १२ ॥
जय जय जिनवर जगदाधारं जनमन मोहन भवदांधतारं ॥ पूर्व दि० ॥ १३ ॥

घत्ताः— श्री पूर्व दिगेशं, जिनवर ईशं, संभजामि भव भय हरणम् ॥
वसुधा सुत चरणं, मुनि जन शरणं, कर जोड़ी गोविन्द कहियम् ॥

महार्घ्यम् ॥

श्री दिगम्बर जैन ग्रन्थ
भण्डार
श्री सरस्वती भवन

॥ अथ दक्षिण दिशि पूजा ॥

(वसन्त तिलका वृत्त)

श्री मत्सुदर्शन इमौ विजया चलाख्यौ, श्री मन्दरश्च सुतडित्पद पूर्व मालौ,
एषां हि दक्षिण दिशासु महा गिरिणां, संस्थापये विमल चैत्य जिनेन्द्र बिम्बान् ॥

ॐ ह्रीं पञ्च मेरु दक्षिण दिशि विंशति चैत्यालयानि अत्रावतरावतर संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

श्री मत्सुरेन्द्र तटनीवर गंधनीरैः पाथोज केसर पराग पिशंगधारैः
श्री पंच मेरूवर दक्षिण दिग्विभाग चैत्यालयान् जिनवरां प्रतिमान्यजेऽहम् ॥ जलं ॥
काश्मीर जन्म घनसार परागमिश्रैः श्री चन्दनै र्दशदिगाहृत चंचरीकैः ॥ श्रीपंच. ॥ चन्दनम् ॥
उन्निद्र कैरव सुधाकर चन्द्र रश्मि, प्रोत्फुल्ल कुंद धवलैः सरलाक्षतौघैः । श्रीपंच, । अक्षतम्
श्रीमत्सहस्रदल कुंद कदम्बजाति मंदार कैरव मनोहर पारिजातैः ॥ श्रीपंच. ॥ पुष्पम् ॥
नानारस प्रचुर शाक विराजितेन, नव्योदनेन घृत सूप मनोहरेण । श्रीपंच. ॥ नैवेद्यम् ॥
दुर्भेद्य तामसमहेम हरीश्वरेण माणोय दीप निवहेन महोज्वलेन ॥ श्रीपंच, ॥ दीपम् ॥
निर्धूम वह्निनिहितागुरू संभवेन सौरभ्यधूप निचयेननशः प्रियेन । श्रीपंच । धूपम् ॥
रंभाफलामल मनोहर नालिकेर जंबीर पूग सहकार सदा फलौघैः । श्रीपंच. ॥ फलम् ॥
जलैः परम पावनैः, सुरभिगंध पुष्पाक्षतैः, प्रदीपचरु धूपकैः सरस चोच रंभाफलैः
सुमेरु यमदिग्गतान् स्वयुग संख्य चैत्यालयान्, यजामि भव भंजकान्, सकलचंद्रकीर्ति प्रदान् ॥अर्घ्यम् ॥

❀ जय माला ❀

सारे सारंग वर्षे, खचर गणकृता स्थान रम्ये विचित्रे,
सन्मेरो दक्षिणस्यां दिशि जिनवर सद्गेह बिम्बप्रजानां ।
कृत्वा शुद्धात्मचित्तं, सुरपतिरनिशं, सर्व पूजोपचारं,
पूजामष्टप्रकारा, रचयति सततं, संस्तवे श्री जिनेन्द्रम् ॥ १ ॥

कर्म महागिरि वज्र समान सुमोह हरं, मोह महान्ध निवारण भानु रुचि प्रकरं ।
सुन्दर श्री जिन पद्कज मव्यय सौख्यकरं, जन्म जरामय नाशन मंघ्रति पापहरं ॥ २ ॥
दुरित महावन दावनिभं कल्पित वस्तु समर्पण कल्पतरू सदृशं ॥ सुन्दर. ॥ ३ ॥
छत्र त्रय शोभा प्रवृतं पांडुर चामर पंक्ति विराजित कांतिधरं । सुन्दर. ॥ ४ ॥
सुरगण सेवित चरण युगं, दुर्धर दुष्कृत पंक विशोषण सहस करं । सुन्दर. ॥ ५ ॥
निर्जित भव्य जनौघ मदं, चिंतित दायक मंत विवर्जित धर्म प्रदं । सुन्दर. ॥ ६ ॥

नरामरेन्द्रैः स्तुतपाद पंकजं, श्री भूषणाद्यैः मुनिभिः प्रवंदितं ।
श्रीज्ञान पाथो निधि सौख्य दायकं संपूजयतिस्म पुरंदराः वरं ॥ ७ ॥ अर्घ्यम् ।

॥ द्वितीय जयमाला ॥

घत्ता=तिपयाइण दंति, विणउ करंति, भत्तिय जिण चउवीसयहं ।
विजई रयणांजलि, दुक्ख जलांजलि, मंचिये णिहय रसहं ॥ १ ॥

सिर संतोषिहि रिसह जिणु जायहि अजिय जिणंदु ।

जिणं दहपय कमले इय कुसुमांजलि होय मणोहर मे लहिए ।
गिरि कैलासे नाह पहावई जिम रलिए ॥ २ ॥

संभव जिणु सेयं तिणहि, अभिणंदण इवणेहि : जिणंदह, ॥ ३ ॥
सुमइ भंडार असुर तरु हि, पउमप्पहु पउमेहि । जिणंदह० ॥ ४ ॥
मंदारिहि सुपास जिणु, चंदप्पह चंपेहि । जिणंदह० ॥ ५ ॥
वियल्लिय हुल्लिहिं सुविहि जिणु सीयल सीय कुसुमेहि ॥ जिणंदह. ॥ ६ ॥
जिण सेयांस असोहियहि, वासुपुज्ज विमलेहि ॥ जिणंदह ॥ ७ ॥
विमल भंडारउ कं इयहि, सुह अंबेहि अणंतु ॥ जिणंदह० ॥ ८ ॥
बहुमच कुंदहि धम्म जिणु : रत्तोप्पल शांति जिणदु । जिणंदह. ॥ ९ ॥

कुजय हुल्लिहि कुंथु जिणु अर जिण पारिय हुल्लि ॥ जिणंदह. ॥ १० ॥

मल्लय हुल्लिय मल्लीजिणु, सुव्वयकंचणहुल्लि ॥ जणंदह० ॥ ११ ॥
णमि जिणवरणेवलिय हि तगरहिणेमि जिणंदु ॥ जिणंदह० ॥ १२ ॥

पाडल हुल्लि पास जिण, वड्ढमाण कमलेहि ॥ जिणंदह० ॥ १३ ॥
वोमिउ अज्जउ अट्ठ लई अक्खिणि अवर चियार ॥ जिणंदह० ॥ १४ ॥
इय रयणांजलि विणय सहू जोणीणाह हुदेई ॥ जिणंदह० ॥ १५ ॥

गुरु पय पुज्जहुतिणि लहई जिमनपडउसंसार ॥ जिणंदह० ॥ १६ ॥
भादव शुक्ल जा पंचमि ए पंचइ दिवस करेहि ॥ जिणंदह० ॥ १७ ॥
तारणे विणु चारु एहु, सो त्रिदशिवपुर जाया ॥ जिणंदह० ॥ १८ ॥
इय कुसुमांजलि सयल जिणु मुनिवर अक्खइ एह । जिणंदह० ॥ १९ ॥

घत्ता–सुरनर वज्जाहर, होंति मणोहर, पुष्पांजलि विधि जेकरई ।
तंसगी सुरेसुर पुहवि नरेसर मोक्ख महापुरि संचरई ॥

महार्घ्यम ॥

॥ अथ पश्चिम दिशि पूजा ॥

आद्यो मेरू जिनवर मतोदर्शनांतः स पूर्वो ,
मेरूश्चान्यो विजय उदितः संस्मृतोऽन्योऽचलाख्यः ।
तूर्योमेरूर्निविड सुतरूमंदरोमाली नामा ।
ह्येतेषांवैजलपतिदिशि स्थापये चैत्य बिम्बान् ॥

ॐ ह्रीं पंच मेरू पश्चिम दिशि विंशति चैत्यालयानि अत्रावतरावतर संवौषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

सुधा समाम शीतलैस्त्रिमार्गगा सरो जलैः मुनीश चित्त निर्मलैः सुवांशुधूलिपेशलैः ।
सुपंचमेरूवारुनी दिगाभितान् जिनालयान् यजामि तीर्थनायकन् स्मरेत्र कुंभसिंहकान । जलम्

अपूर्व चन्द्र केसरैर्हिमांशु पाद शीतलै,

महामनोज्ञ चन्दनैः द्विरेफराजिनन्दनैः । सुपंचने० ॥ चन्दनम् ॥

अखंड कोटि तंदुलैरनेक शालि संभवैः

हिमांशु पाद पाण्डुरैः सुवर्ण पात्ररोपितैः । सुपंच. ॥ अक्षतम् ॥

सरोज जाती चम्पकैः प्रफुल्ल मल्लि मालया ।

वपाप्रसून शालया भ्रमद्विरेफ मालया ॥ सुपंच. ॥ पुष्पम् ॥

नवीन भव्य पायसाज्य शर्करासोत्तमैः

विचित्रशाक नव्य गव्य सूप भक्त सुंदरैः । सुपंच. ॥ नैवेद्यम् ॥

मसार भाजन स्थितै रनर्घरत्न दीपकैः

स्फुरन्म्यूख राजितै विपार्श्वतामसोत्करैः । सु पंचमे. ॥ दीपम् ॥

सुपर्व दारु यक्षधूप काकतुंड संभवैः

प्रधूपधूम संचयैरनंत लुब्ध षट्पदैः ॥ सु पंच. ॥ धूपम् ॥

सदा फलाम्र माधवी लविंग पूग दाडिमैः ।

सुनालिकेर बीजपूर कर्कटी कपित्थकैः ॥ सुपंच. ॥ फलम् ॥

अंभो गंधै रक्षतैः पुष्प हव्यै, दीपैर्धूपै. श्रीफलैश्चन्द्र कीर्तिम् ॥

वारुणपाशा संस्थिता-जैन विम्बान् पंचानां श्री मंदराणां यजेहं ॥ अर्घम् ॥

॥ जयमाला ॥

श्रीमन्ना कि किरीट कोटि किरणैरुद्भावित सर्वदा,
श्रीमन्मन्दर पर्वते चिरतरं शक्रैः कृताराधनम् ।
त्रैलोक्योदर जीव सौख्य जनकं धर्माब्धि चंड प्रभं,
वन्देतं जिन पुंगवं प्रतिदिनं देवाद्रि मूर्ध्नि स्थितम् ॥ १ ॥

प्रातिहार्य गण नायक जय जय, अजरामर पद दायक जय जय ।
पाप तिमिर भर भंजन जय जय, विद्याधर गण रंजन जय जय । २ ॥
जनन पयो निधि तारण जय जय, कर्म कलंक निवारण जय जय।
सुर समाज पद वंदित जय जय, दूषण निखिल निकंदित जय जय ॥ ३ ॥
किल्विष सुभट विखंडन जय जय, त्रिभुवन मंदिर मंडन जय जय।
मुक्ति रमणी वशी करण सु जय जय, सकल दोष परिहरण सु जय जय ॥ ४ ॥
अशरण शरण कृपाधर जय जय, भविक जीव गण सुखकर जय जय ।
गज मद कंद निकन्दन जय जय, गणधर मुनिजन वन्दन जय जय ॥ ५ ॥

घत्ता—जय दोष विहंडन, त्रिभुवन मंडन, निखिल जीव शीव सुख करण ।
श्री भूषण वन्दित, पाप निकंदित, ब्रह्म ज्ञान भव भव शरणः ॥ अर्घम् ॥

॥ द्वितीय जयमाला ॥

आर्या–अट्ठम जिण थुण महं दलियं जिण मयण माणहि ।
समरे सरसति पायं चये चइय किट्टिमा किट्टीः ॥

पंच मेरूह अस्सी भवनं, गयदंत वीस आधार । भवियण भाव धरि ।
रत्नालंकृत हेम जिनालय जिय धरे, पूजू अष्ट प्रकार कपूरे दीपकरे ॥ १ ॥

त्रीस भुवन कुल पर्वत ही, अस्सी गिरी वखार ॥ भवि० । २ ॥
सिंचरसु विजयारध ही, कुरूद्रुमेहश होई ॥ भवि० ॥ ३ ॥
इक्ष्वाकार कुंडल गिरिए, मानुषोत्तर च्यार च्यार ॥ भवि० ॥ ४ ॥
रुचिके गिरि चऊ जिन भवना, नन्दीश्वर बावन्न । भवि० ॥ ५ ॥
मध्य लोक ए भवन कह्या, चउसे अट्ठावन्न ॥ भवि० ॥ ६ ॥
लाख चौंसठ असुर तणाए, चौरासी नागेन्द्र ॥ भवि० ॥ ७ ॥
सुपण लाख छिहोंत्तर ए छिहोंत्तर दीप कुमार । भवि० ॥ ८ ॥
लाख छिहोंत्तर स्तनीत कह्या, उदधि छहोंत्तर लाख ॥ भवि० ॥ ९ ॥
विद्युत्कुमर लाख छिहोंत्तर ए, दिग्सुरछहोंत्तर लाख ॥ भवि० ॥ १० ॥
दीप कुंवर लाख छिहोंत्तर ए अग्नुवात कुमार ॥ भवि० ॥ ११ ॥
सात कोड़ी लाख छिहोंत्तर ए अकृत्रिम आगार ॥ भवि० ॥ १२ ॥

सौधर्मे लाख बत्रीस कह्या, अट्ठावीस ईशान ॥ भवि० ॥ १३ ॥
सनत कुमर लक्ष बारह कह्या, आठ लाख माहेन्द्र ॥ भवि० ॥ १४ ॥
ब्रह्म ब्रह्मोत्तर पुजिइये, चैत्यालय लक्ष चार ॥ भवि० ॥ १५ ॥
लांतव अरु कापिष्ठे कह्या, सहस्र पचास उदार ॥ भवि० ॥ १६ ॥
शुक्र महा शुक्र चैत्यालय ए, पूजूं सहस्र च्यालीस । भवि० ॥ १७ ॥
षट् सहस्र सतार जुए, जिन आगार अकृत्य ॥ भवि० ॥ १८ ॥
आनत प्राणत आरुणए,, अच्युत गिरि सतसात ॥ भवि० ॥ १९ ॥
एकादश शत आगलाए, अधः ग्रैवेयक उद्धार ॥ भवि० ॥ २० ॥
मध्य ग्रैवेयक जिन भवना, सात अधिक शतएक ॥ भवि० ॥ २१ ॥
उर्ध्व ग्रैवेयक जिन जाणिये, एकाणु अगार ॥ भवि० ॥ २२ ॥
नव नवोत्तर नव भवना, पंच पचोत्तर पंच ॥ भवि० ॥ २३ ॥
व्यंतर अरु ज्योतिष पटले, जाणो आगार असंख्य । भवि० ॥ २४ ॥
सहस्र कोटि जे जिनप्रतिमा, अकृत्रिम अरचेहिं । भवि. ॥ २५ ॥
अष्टापद सम्मेदाचलए, पावापुरी महावीर । भवि. ॥ २६ ॥
वासु पूज्य चम्पापुरीच, चरचों चन्दन भंग । भवि० ॥ २७ ॥
ऊर्जयंत गिरि अरचा करीए, पूजो नेमि जिणद । भवि. ॥ २८ ॥
शत्रुञ्जय शीखर सोहामणीए, अरचो अष्ट प्रकार । भवि. ॥ २९ ॥

मांगी तुंगी गिरि सिद्ध हुवा, गजपंथे मुनिराय । भवि. ॥ ३० ॥
मुक्ता गिरि पावागिरिए, तारंगो तारक होय । भवि. ॥ ३१ ॥
चलणा चरणें कुलगिरिए, रेवा तट ऋषिराय । भवि. ॥ ३२ ॥
अंतरीक्ष प्रभु पूजिइए, प्रणमुं लोढण पास । भवि. ॥ ३३ ॥
सूर्यपुरे चन्द्रनाथ जिन, प्रणमुं पुजूं पाय । भवि. ॥ ३४ ॥
इन्द्र भूषण अरचा करिए, हरषे गोविन्द गाय ॥ भवि० ॥ ३५ ॥

महार्घ्यम् ॥

इति पश्चिम दिशि पूजा सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ उत्तर दिशि पूजा ॥

पर सुदर्शन मेरु रिहोदितः, सुविजयाचल मंदिर मालिनः ।
धनद दिक्षु सुमेरु महीभृतां जिन पतिन सकलान्विनिवेशयत् ॥

ॐ ह्रीं उत्तर दिशि विंशति जिन चैत्यालयस्थ जिन प्रतिमा समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम् ॥

हिम पर्वत संभव पद्म महानद सुन्दर शीतल नीर भरैः ।
मकरंद महाभर भारित सारस, केसर रंजित गौर तरैः ॥

शुभ मन्दिर पंचक ध्यानद् दिग्गत हाटक विंशति चैत्यगृहान् ।
प्रयजामि मनोहर गान सुमंगल नृत्य महोत्सव वाद्यवरान् ॥ जलम्

घनसार सु कुंकुम मिश्रीत शीतल नंदन चन्दन पंक भरैः ।
वर गंध समाश्रित षट् पद् संतति मंजुल गुंजन रम्य तरैः ॥ शुभ. चन्दनं॥

मचकुन्द कलाधर फेन समुज्वल निर्मल कोमल तन्दुलकैः ।
मणि भूषितं भासुर कांचन बन्धुर भाजन रोपित सौम्य तरैः ॥ शुभमं० ॥ अक्षतं ॥

नव कैरव केतक चम्पक पंकज कुन्द कदम्बक मल्लि सुमैः ।
स्फुट केसर रक्तकनव्यल विंगक, मेचक वालक मूल दलैः ॥ शुभमं० ॥ पुष्पम् ॥

वर मोदक मंडक खज्जक पूपक सूपक व्यंजन हव्य रसैः ।
घृत दुग्ध महेक्षुति मिश्रित पायस तिक्तक शाक सुखाद्य रसैः ॥ शुभमं० नैवेद्यम् ॥

दश दिग्गत लोचन बाधक तामस संचय भेदन सूर्य करैः ।
परितेजित रत्न कदम्बक शोभित दीर्घशिखाधर दीप वरैः ॥ शुभमं० दीपम् ॥

अपधूप धनंजय मुक्त सुगन्धि महागुरु निर्गत धूप चयैः ।
निज सौरभ लुब्ध मधुव्रत निर्मित सुन्दर निष्कण चारु तरैः ॥ शुभमं० ॥धूपम्

सहकार लता फल दाडिमचिर्भट पक्व कपित्थक पूग दलैः ।
कदली फल जम्भल चोच सदा फल गोस्त निकोमल निम्बु फलैः । शुभ० फलम्

विमल कमल धारा, गंध शाल्य क्षतोघैः
विविध कुसुम हव्यैर्दीप धूपैः फलोघैः ॥
अखिल परममेरू दिक्स्थितान् चैत्य बिम्बान्,
परचर इह सु श्री भूषणाश्चंद्रकीर्तिन् । अर्घ्यम् ॥

❀ अथ जयमाला ❀

आनंदामृत संरूपं, चिदानंदं सदोदयं ।
नरामरेन्द्र संसेव्यं, सर्वज्ञं संस्तुवे मुदा ॥ १ ॥

शक्र गणैः कृत पूजन मष्ट विधंसुतरं, गर्भ कलंक विमुक्त मनूपम सौख्य करं ।
श्री जिन बिम्ब, गणं प्रयजे, चिर पाप हरं, धर्म सुर द्रुम वर्धन पुष्कर वारि धरं ॥२॥
केवल लोचन दर्शित सुन्दर मुक्ति पथं, पंचमगत्युपसर्पण सत्वर धर्म रथं ॥ श्रीजिन० ३ ॥
दुर्गतिदुःख तमोभर भंजन भानु भरं, जन्म जरांतक वर्जित किल्विष पंक हरं ॥ श्रीजिन० ४ ॥
शुद्ध नयाश्रित तत्व प्रकाशन सूरतरं, जन्म पयो निधि शोषण कुंभ भवं प्रवरं ॥ श्री जिन०५ ॥
श्री आदि विवर्जित मूर्ति मखंडित लक्ष्मी करं, अन्तविवर्जित रूपमनंत सुबोध धरं ॥ श्रीजिन० ६ ॥
विधाय पूजां जिन नायकस्य, शक्रोऽपि भक्तया गिरिराज मूर्द्धनि ।
श्री भूषणं मुक्ति पद प्रदेयात् सुखाधिकं ज्ञान पयोधि धम्यम् ॥ अर्घ्यम् ॥

॥ अथ द्वितीय जयमाला ॥

सुरनर पति वंद्यं, नाग नागेन्द्र वंद्यं,
सकल भविक सेव्यं, नर्तिकं नर्तिकीभिः ।
जनन जलधि पोतं, पापतापापहारं,
जिन वर वर चैत्यं, स्तौमिकर्मारि हान्यैः ॥

वन्दौं नाग भुवन जिन दास, कोड़ी बि सात बहत्तर लाख ।
व्यंतर ज्योतिष के जिन गेह, असंख्य भवियण वन्दौं तेह ॥ १ ॥
लाख चौरासी सत्ताणु सहस, तेविसह वन्दौं स्वर्ग निवास ।
मेरू सुदर्शन मध्यह लोक, विजया चल दोये गत शोक ॥ २ ॥
मेरू चतुर्थह मंदिर नाम, विद्युन्माली छे जिन धाम ।
पंचह मेरू असी जिन गेह भवियण वन्दौं पूजौं तेह ॥ ३ ॥
षट् कुल जिनवर गेह छत्तीस, विजयारध सत्तर सुईश ॥
सहस कूट वन्दौं जिन देव, सीता सीतोदा करूं कंठ सेव ॥ ४ ॥
अष्टापद वन्दौं जिनतार, आदि जिनेश्वर गय भव पार
बीस जिनेश्वर पूजो संत, सम्मेदाचल मुक्ति लहंत ॥ ५ ॥
वासूपूज्य चम्पापुरी देव, वर्धमान पावापुरी सेव
गिरनारी छे नेमि जिनंद, पूजौं भवियण परमानंद ॥ ६ ॥

पाण्डु पुत्र मुनि अट्ठह कोड़ि, शत्रुंजय वन्दौं कर जोड़ी ।

हस्तिनागपुर कुरू वंशी जिनंद, शांति कुंथु अर सेवें फणिन्द ॥ ७ ॥

वाणारसी जिन पार्श्व सुपार्श्व, जे वंदे नाशे भव त्रास ।

नाग नरामर चर्चित पाद, लोढ़ण पार्श्व हरे विखवाद ॥ ८ ॥

वंशस्थल गिरी जिनवर धाम, आगल देव धारा सन ठाम ॥

तेह नयर वन्दौं वर्धमान, अम्बापुरी चिंतामणि भाण ॥ ९ ॥

मुक्ता गिरि मुनि मुक्ति निवासः तुंगीश्वर पूरे मन आश ।

वन्दौं गज पन्था गिरिराय, वाघन गज विंद्याचल ठाय ॥ १० ।

कुलपाक वन्दौं माणिक देव, गोम्मट स्वामी करू नित सेव ।

नव निधि वन्दौं देहि शिव वास, सेल गांव कमेठश्वर पास । ११ ॥

अम्बापुरी श्री मल्लि जिनेश; पैठण सुखद मुनि सुव्रतेश ।

एरण्ड वेली नेमीश्वर देव, त्रिभुवन तिलक खंडव पुर सेव ॥ १२ ॥

अंतरीक्ष वन्दौं जिन पास, श्रीपुर नयर पूरे मन आश ।

होला गिरि वन्दौं शंख जिनेश, तारंगे पूजौं मुनि ईश ॥ १३ ॥

सुवुगढ़ जिन बिम्ब मनोहार, आदि नाथ पालें भवपार ॥

वड़ावली पूजो अभी झरा पास, धुलेव नयर ऋषभजिन भाष । १४ ॥

पूजौं माण्डव गढ़ महावीर, उज्जयनि अवंति धीर ।

मालव मण्डन मनसी पास; धरणेंद्र पद्मावती सेवें जास ॥ १५ ।

श्रवणाचल अड़ी कोड़ी मुनीश, बड़गामपूजौं गौतम गणीश ।

जम्बू स्वामी मथुरा पुर थान, सेठ सुदर्शन पाटली पुर जान ॥ १६ ॥

ग्वालियर गढ़ वन्दौं जिनराय, बावनगज पुर छे सुख काय ।

वाटरड़े वन्दौं जिनदेव, अशिन्धो पार्श्व करे सुर सेव ॥ १७ ॥

जाम नयर जय सहित आदीश, वर्धमान सारंग पुर ईश ।

रावण पास अचलपुर राय, पूज्यपाद मुनि प्रणमित पाय ॥ १८ ॥

डूँगरपुर वन्दौं मल्लीनाथ, सागवाड़े आदि भव पाथ ।

वासु पूज्य बांसवाड़े धाम, खांधु नयर शीतल जपौं नाम ॥ १९ ॥

वन्दौं जलधिमांही जयवंत, काशगीउ बाहुबली संत ।

नन्दीश्वर जिन गेह बावन्न, कुण्डल गिरिवन्दौं जिनधन्न ॥ २० ॥

पूरब पश्चिम जिनवर गेह, उत्तर दक्षिण वन्दौं तेह ।

बीस जिनेश्वर क्षेत्र विदेह वन्दौं भवियण शाश्वत तेह ॥ २१ ॥

चन्द्र नक्षत्र सु भानु विमान, ताराग्रह वन्दौं जिन भान ।

त्रिभुवन मांहीं जिनवर सार, वंदत भवियण लहे भवपार । २२ ॥

घत्ता=जय जिनवर स्वामी, पदशिर नामि, करजोड़ी मनभाव धरी ।

जय सागर वंदित, पाप निकंदित, रत्न भूषण गुरू नमस्करी ॥ २३ ॥

इति जय माला पूर्णाध्यम् ॥

❀ समुच्चयाष्टकम् ❀

निर्मलेन पवित्रेण, वारिणा मल हारिणा, ।
पंच मेरूस्थ बिम्बानां, कर्माभ्यां पूजये मुदा ॥ जलम् ॥

मलया चल जातेन, चन्दनेन सुगन्धिना ॥ पंचमे० ॥ चन्दनम् ॥
धवलाक्षत पुंजेन, खंड वर्जित शोभिना ॥ पंचमे० ॥ अक्षतम् ॥
जाति चम्पक पुष्पेन, केतकादिवनेन च ॥ पंचमे० ॥ पुष्पम् ॥
घृत पाचीत पक्वान्नैः शाल्योदनेन श्रीमतः ॥ पंचमे० ॥ नैवेद्यम् ॥
तमोन्नरवि नाशाय, रत्न दीपेन द्योतिना ॥ पंचमे० ॥ दीपम् ॥
सुगन्धी धूप धूम्रेण नक प्रियेण सतां सदा ॥ पंचमे० ॥ धूपम् ॥
श्री फलाम्र कपित्थादि, फलेन फलदायकान् ॥ पंचमे० ॥ फलम् ॥
तोयादि वसु द्रव्येण शिव सौख्य विधायकान् ॥ पंचमे० ॥ अर्घम् ॥

॥ जयमाला ॥

जम्बू द्वीप वरे सुदर्शन इति, द्वीपे तथा धातकी,
खंडे श्री विजया चलौ निगदितौ श्री पुष्करार्द्धे द्वये ।
द्वीपे मन्दर विद्युदादि पदतौ मालाह्वयो मन्दरौ,
तेषु श्रीजिन मन्दराणि सततं सन्त्येव सवर्णयः ॥ १ ॥

भद्रशाल विपिनाश्रय मिष्टं, दिक्षुजतसपु जिन संदिष्टं ।

पंचसु मेरु जिनाखर भाई, भव्य जनाय विनाशनिवारं । २ ॥

एकीकृत्य सु विंशति संख्य, केवलनेत्र विलोकित संख्यं ॥ पंचसु० ॥ ३ ॥

नन्दन वेश्व पिता दर्वा सेयं, सौमन शेष्व पितादश गेयं । पंचसु० ॥ ४ ॥

पाण्डुकाख्य गहनेष्ववधेयं, द्वेवमशीति जिनालयमेवं ॥ पंचसु० ॥ ५ ॥

रत्न विनिर्मित बहु सोपानं, सोचित समतल कोमल मानं ॥ पंचसु६ ॥ ६ ॥

दुर्गत्रय नाना विधि चित्रं, खात त्रय जल विम्बित चित्रं ॥ पंचसु० ॥ ७ ॥

कांचन मय दृढ भिति विशालं, नाना स्तंभ विचित्र विशालं । पंचसु० ॥ ८ ॥

कांचन कुंभ विराजित शृंगं, बहुधा वृक्ष विकुंजित भृंगं । पंचसु ॥ ९ ॥

अंतरीक्षरि चूम्बित भागं, किन्नर तुम्बर गीत सुरागं । पंचसु० ॥ १० ॥

मध्यान्तर्गत मानस्थंभं, गोपुर मंडित मानस्थंभं । पंचसु० ॥ ११ ॥

वृक्षा शोक विराजित मध्यं, कल्पवृक्ष कुसुमोच्चय सध्यं । पंचसु० ॥ १२ ॥

मेदुरनाद चतुर्विधनाद्यं, वीणावेणु मृदंग खाद्यं । पंचसु० ॥ १३ ॥

डिंडिम झर्झर ताल कंसालं, मद्रतार ख मूर्छितमालं । पंचसु० ॥ १४ ॥

सुर ललना ललिता ख नृत्यं, हाव भाव रस विभ्रम कृत्यं । पंचसु० ॥ १५ ॥

नवरस नाटक लीला खेलं, परिहित नवा नव कोमल चेलं । पंचसु० ॥ १६ ॥

नंद नंद जय जय बहुराणं, पुष्पसु वृष्टि गत परिमाणं । पंचसु० ॥ १७ ॥

अभिनव बहुतर निर्मल दीपम् काला गुरू भव घट वरधूपं । पंचसु. ॥ १८ ॥
निर्मल वर्तुल मौक्तिक मालं; दशविध नाना केतन मालं । पंचसु. ॥ १९ ॥
कोमल निष्कण किंकणी नादं, भव्य मुख निर्गत साधुवादं । पंचसु. ॥ २० ॥
चित्र विचित्रित तोरण जालं, विविध खनांचित चंदनमालं । पंचसु. ॥ २१ ॥
सुरभि समुज्जल चामर वार, चैत्यवृक्ष बहुधा सुखकारं । पंचसु ॥ २२ ॥
अष्टोत्तर शत हाटक कुंभं, तावत्परिमित दर्पण लंभं ॥ पंचसु. ॥ २३ ॥
पीठोपविष्ट जिनवर देवं, सकल लोक विरली कृतमोहं ॥ पंचसु. ॥ २४ ॥
भामयडल मंडित जिन देहं; भविक लोक विरली कृतमोहं । पंचसु. ॥ २५ ॥
योगीश्वर सुविहित तनुयोगं, तदुपदेश वीतनुकृत भोगं । पंचसु. ॥ २६ ॥
पुष्पांजलि विद्यागत शक्रं, तदनुज्ञांगत वरसु चक्रं ॥ पंचसु. । २७ ॥
भाद्रव शुक्ल तर पंचम घसे, समर्मारब्ध चतुर्विध रसे । पंचसु ॥ २८ ॥
त्रिसंध्यं विहित सकल सपर्यं, सोत्र सु आप्याचित परिवर्यं । पंचसु. ॥ २९ ॥

काष्ठा संघ पुरंदराद्रि महितान् श्री मेरू चैत्यालयान्
अर्हद्बिम्ब विराजितान् बहुतरान् श्री भूषणालंकृतान् ॥
तीर्थं मोवर चन्दनाक्षत शुभैः नैवेद्य दीपैर्वरैः
पूपैःपक्व फलैर्महामि महतः श्री चन्द्रकीर्तिन्सदा ॥ ३० ॥

अर्घम् ॥

॥ अथ द्वितीय जयमाला ॥

श्रीमद् वृषभ तीर्थेशो. जिनेन्द्रोऽजित नाम भाक्
संभवो भव संहारी, शर्म कार्योभिनंदनः ॥ १ ॥
सुमतिः सुमतीशानो, श्रीमान्पद्म प्रभः प्रभुः ।
सुपार्श्वो भगवान्पूज्यश्चन्द्रप्रभजिनेश्वरः ॥ २ ॥
पुष्पदंतो लसत्कुन्द दन्तः शीतल तीर्थराट् ।
श्रेयान् श्रेयो विधाताच, वासुपूज्यो वृषार्चितः ॥ ३ ॥
विमलो मल संहर्ता, तीर्थेशोऽनंत दायकः ।
धर्मो धर्म विदां मान्यः शांतिः षोडश तीर्थराट् ॥ ४ ॥
कुंथु कुंठित दुर्मार्गो, भगवानर संज्ञकः ।
मल्लिकाम महामल्लो, विश्वजिन्मुनिसुव्रतः ॥ ५ ॥
नमि नम्र सुराधीशो, नेमीर्मदन मर्दनः ।
पार्श्व पद्मेन्द्रसंपूज्यो, महावीरोन्त्य तीर्थकृत ॥ ६ ॥
एतेऽवसर्पिणी जाताश्चतुर्विंशति तीर्थपाः ।
श्री ह्री तुष्टि महाकीर्ति तुष्टिदाः सन्तु शाश्वतम् ॥ ७ ॥

॥ महार्घ्यम् ॥

सकल मेरु जिनालय वासिनो, गगन वेदषडाष्टमितार्जनाः ।
ददतु शर्म निरंतरमव्ययं, सकल भव्य जनेभ्य इहार्चिताः ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

(इति पुष्पाञ्जलि विधानम्)

॥ पन्च मेरु उत्थापन विधि ॥

(यह विधि खास कर गुजरात प्रान्त में प्रचलित है)

भाद्रपद शुक्ला नवमी के दिन पूजनादि क्रिया हो जाने के पश्चात् निम्न विधि पूर्वक मेरु उत्थापन करे। सर्व प्रथम निम्न पाठ पढ़ते हुये नीचे से लगाकर ऊपर तक एक एक मेरु को हाथ लगावे (स्पर्श कर आशीर्वाद ले)

१ पन्च मेरु. २ ढाई द्वीप ३ एक सौ सित्तर क्षेत्र ४ अस्सी चैत्यालय ५ पद्मावती माता कहती हैं, शासन देवी सुनती हैं यहां करे सो वहां पावे वहां करे सो यहां पावे।

सलिल चन्दन पुष्प शुभाक्षतैश्चरु सुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः ।
धवल मंगल गान रवाकुलैः जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥
ॐ ह्री सुदर्शन मेरुस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अर्घ्यम् ॥

ऊपर का श्लोक पढ़ कर अर्घ्य चढ़ावे एवं आरती उतार कर निम्न आशीर्वाद पढ़े ।

पांचो मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करुं प्रणाम ।
महासुख होय, महा सुख होय, देखे नाथ परसुख होय ॥ १ ॥

पुष्पांजलि क्षेपणकर नमस्कार करे एवं नीचे के मेरु की प्रतिमाजी को उत्थापन कर वेदी पर विराजमान करे । इसी प्रकार ऊपर के मेरु की भी अलग २ विधिकर (अर्घ चढ़ाना, आरती उतारना, आशीर्वाद व नमस्कार करके) पांचों मेरु की प्रतिमाजी उत्थापन करे ।

जम्बू धातकि पुष्करार्द्ध वसुधा, क्षेत्र त्रये ये भवा
श्चन्द्राम्भोज शिखंडि कण्ठ कनक प्रादुर्भवनाभाजिनः ।
सम्यग्ज्ञान चरित्र लक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेंधना
भूतानागत वर्तमान समये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

ऊपर का श्लोक पढ़कर पुष्पांजलि क्षेपण करे पश्चात् मेरुजी उत्थापन कर यथेष्ट स्थान में रखदे ।

॥ इति मेरु उत्थापन विधि ॥

❀ पुष्पाञ्जलि पूजा ❀

आदौ दर्शन यो मेरु विजयोऽप्यचल स्थितः ॥
चतुर्थो मंदिरोनाम; विद्युन्माली सु पंचमः ॥

ॐ ह्रीं पंच मेरुस्थ प्रतिमाभ्यो अत्र अवतर २ संवौषट् आह्वाननं ॥
ॐ ह्रीं पंचमेरुस्थ प्रतिमाभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा, प्रतिष्ठापनं ॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुस्थ प्रतिमाभ्यो अत्र मम सन्निहितो भव २ वषट् । संन्निधापनं ॥

पुष्पांजलि यंत्र स्थापनम् ॥

स्थानान्सुनम्र्य प्रतिपत्ति योग्यान्, सद्भाव सन्मान जलादिभिश्च ।
पुष्पाञ्जलिर्भाद्रपदादि मासे, समर्चयत्पंच दिनानि भक्त्या ॥ ९ ॥ जलं ॥
श्रीखंड कर्पूर सु कुंकुमाद्यैः, गंधैः सुगन्धी कृत दिग्विभागैः ।

पुष्पांजलि भाद्र० ॥ चन्दनम् ॥

शाल्यक्षतै रक्षत दीर्घमात्रैः, सुनिर्मलैश्चंद्रकरावदातैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ अक्षतं ॥
अंभोज नीलोत्पल पारिजातैः कदंब कुंदादि वर प्रसूनैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ पुष्पं ॥
नैवेद्य कैः कांचन रत्न पात्रैः न्यस्तै रुदस्तै हरिणासुहस्तैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ नैवेद्यम् ॥
दीपोत्करै र्ध्वस्त तमोभिघातैरुद्योदिता शेष पदार्थ जातैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ दीपम् ॥
तरुत्थ कृष्णागुरु पद्मनाद्यैः संचूर्ण जैरुत्तम धूप वर्गैः ॥ पुष्पांजलि० ॥ धूपम् ॥
लविंग नारिंग कपित्थपूगैः श्रीमोचचोचादिफलैःपवित्रैः ॥ पुष्पांजलि० । फलम् ॥
श्रीखंड कर्पूर सुगंध वार्भिः, फलैश्च पुष्पाक्षत धूपनाद्यैः ॥
पुष्पांजलि भाद्रपदादिमासे, समर्चयेत्पंच दिनानि भक्त्या ॥ अर्घं ॥

॥ जयमाला ॥

घत्ता—पणविवि सुपसण्णउ, कंचण वण्णउ, रिसिह णाह णिज्जिय मयणु ।
जगि धम्म पयासणु, कम्मविणासणु, असुरा सुर नर थुय वलणु ॥ १ ॥

वास्तुछंद–चउणीकायहं चउणीकायहं मिलिय सुर वरहिं ।

कैलास पव्वय सिहरे, भरहे आसिजे जिण पयट्टिय ।

वरगीय मंगल रवे कणरहि, सुवणु पुज्जउ कंठिय ॥

पोमा वेजा चिरु कहिय पब्भावई सुरसएण ।

मा कुसुमांजलि लेवि करि, जिण चौवीसह दिएण ॥

सु दिमि दिमि मद्दल करड कंसाल, सुतिविलिय झल्लरी भेरी रसालं ।

सुगेय विलंबण देई सुरसत्ती, सुणच्चहिं किण्णर सुरणर पत्ती ॥ १ ॥

जलंमि सुचंदण अक्खय सारु, सु फुल्ल चरुमिय दीवय फारु ।

सुगंधय धूव विचित्त फलोहं, पुष्पांजलि णिम्मल दिएण समोहं ॥ २ ॥

रिसिसर केवल णाण पयासु, सु पुज्जहु संताणिहि दुहणासु ।

अणोवम जाई हि अजिउ जिणंदु, सेवंतिहि संभव देव अणंदु ॥ ३ ॥

पयचहू अहिणंदणु दयणेहिं, णिवालिय सुमइ हिं पूज रहहीं ।

पफुल्लहि पउप्पहु पउमेहिं, सुपास सुहंकरु वरदरोहिं ॥ ४ ॥

णिरंजणु सासय णाण णिवासु, सु चम्पय चंदप्पहु ससिभासु

सुवियलहि सुविहि जिणंदु अवाहु सुपरिमण पाडल सीयल णाहु ॥ ५ ॥

सेयंसु सुहंकरू वर मंदारि, सु पुज्जहु वासु पुज्ज कचणारि ।

सु किंचिहि णिम्मलू विमलू कयंबि, अणंतु असोयहि णिरू णिकयंबि ॥ ६ ॥

सु कुंजय हुल्लहिं वम्मु अलेउ, रतुप्पलि संति जिणेसरु देउ ।

जगत्त मुंकुंधु सुपज्जह कुंदि, जिणेसरु जासु वणहि अरु वंदि ॥ ७ ॥

बहुविहि मल्लिहिं मल्लि चयारि, सु वउलहि मुणिसुव्वय तिउगारि ।

सु सुज्जल आयीचत्त णमि पायः करंजलि णेमि जिणह मुणाय ॥ ८ ॥

फणा मणि मंडिउ पास जिणंदु, चड़ावहि बहुविहि वर मचकुंदु ।

जुदेवह दुल्लहु वर कणवीरु, सु लेवि जिणेसरु पुज्जहु वीरु ॥ ९ ॥

जि ईच्छहिं सासय सुक्खु अतुल्लु, ति इणि परि जिणह चड़ावहि फुल्लु ।

जो भावण विंतर जोइसी कप्पि, पुप्पांजलि ताह जिणेसर अप्पि ॥ १० ॥

जे मेरू हि असिय जिणेसर संति, ति वदमी विस जिणेसमदंति ।

कुल गिरि तीस अकिट्टिम देव, बखारह असीयहं कियसुर सेवं ॥ ११ ॥

वियहिहि सत्तरि सउ जिणगेह कुरूदुमि जिणंदह गयभवणेह ।

जे कुंजल पवयण जिण चचारि, रुजय गिरि चारि जिणेह चयारि ॥ १२ ॥

चयारि विईगा रव जगचंद, मणोतरि तेतिय जाणि जिणंद ।

जे संठीय णंदीसरी बावण्ण, ति सासु सुहु मह देउ पसण्ण ॥ १३ ॥

अठाइयहिवहिं विहिमि समुद्द, पण्णारम कम्मय भूमि जिणंद ।

अकित्तिम कित्तिम जे जिण गेहु, पुप्पांजलि ताहं जिणेसर देहु ॥ १४ ॥

णमुंसह माव मुणिसर चंदु अभयमणि माधव णंदि मुणिन्दु ।

अकित्तिम कित्तिम जे सुवकीत्ति, ति पणमिहु विमल पयासि विभत्ति ॥ १५ ॥

जिणेसरु वम मंगल संयसारू, ति ईसर मुत्ति रमणि गलि हारु ।
जिणेसर जे पुष्पांजलि देई सो सामय सुक्खु अणंतु लहेई ॥ १६ ॥

घत्ता—सुरनर विज्जाहर, होंति मणोहर; पुष्पांजलि विहि जे करहिं ।
ते सग्गि सुरेसर, पुहवि णरेसर, मोक्ख महा पुरि संचरहि ॥ १७ ॥ पूर्णार्घ्यम् ।

॥ इति पुष्पांजलि पूजा समाप्तम् ॥

❀ अथ अष्टाह्निका पूजा ❀

द्वीपेऽपि नन्दीश्वर संज्ञके हि, गिरीन्द्रवर्जा जिन मुख्य संस्थान् ।
जिनेन्द्र गेहान् मणि हेम मूर्ति, द्विपन्च संख्या सहितान्नमामि ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर दीपे द्विपन्चाशज्जिनालयस्थ प्रतिमा समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ॥

कर्पूर पूर परि पूरित भूरि नीर, धाराभिराभिरभितः श्रम हारिणीभिः ॥

नन्दीश्वराष्ट दिवसानि जिनाधिपाना, मानन्दतः प्रतिकृतिं परिपूजयामि ॥ जलम् ॥

हृद् घ्राण तर्पण परैः परि तर्प सर्वैं, गन्धैः सुचन्दन रसैर्घन कुङ्कुमाद्यैः ॥ नन्दीश्व ॥ चन्दनम् ॥

उन्निन्द्र चन्द्र विलसत्किरणावदातैः, सत्कुन्दकोरकमिभैः कलमाक्षतोघैः । नन्दीश्व ॥ अक्षतं ॥

मंदार चारु हरिचन्दन पारिजात संतान भूरुह भवैः कुसुमैर्विचित्रैः ॥ नन्दीश्व ॥ पुष्पम् ॥

सिद्धै विशुद्ध नव कांचन भाजनस्थैः पीयूषमिष्ट ललितैश्चरुभिर्विचित्रैः ॥ नन्दीश्व ॥ नैवेद्यम् ॥

ध्वस्तांधकारनिकरैः कनकावदातै दीपैः प्रदीपित समस्त दिगन्तरालैः ॥ नन्दीश्व ॥ दीपम् ॥

धूपै रमन्दतर सौरभ बाल गुंजद्, भृंगाकुलैरगुरु चन्दन चन्द्रमिश्रैः ॥ नन्दीश्व ॥ धूपम् ॥

कम्राम्रदाडिम मनोहर मातुलिंग, जाती फल प्रभृति सौरभ सत्फलाद्यैः ॥ नदीश्व ॥ फलम् ॥

द्वीपे नन्दीश्वरेस्मिन् विविधमणिगणा क्रान्तकान्ताङ्ग कान्ति ।

प्राग्भारप्रास्त चन्द्रद्युतिकर निकर, ध्वस्त मिथ्यान्धकारम् ॥

चैत्यं चैत्यालयांश्चोज्वल कुसुम फलाद्यैरनिन्द्य प्रभावै ।

भक्त्यायेभ्यर्चयन्ति स्फुटमसम सुखां ते लभन्ते विमुक्तिम् ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

आर्या–कम्पिल्ला णयरी मन्डणस्स विमलस्स विमलणाणस्स ।

आरत्तियवर समये, णच्चंति अमर रमणीओ ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥

अमर रमणीउ णच्चंति जिणमंदिरं, विविह वर ताल तेरहिं संगमपुरं ।

जड़िय बहु रयण चामीयरं पत्तयं, जोइयं सुन्दरं जिणव आरत्तियं ॥ २ ॥

रुण झडंकारणे वरघचल णुट्टिया, मोतिया दामवच्छच्छले संठिया ।

गीय गायंति णच्चंति जिणमंदिरं, जोइयं सुन्दरं जिणव आरत्तियं ॥ ३ ॥

केस भरि कुसुम पय सरस ढोलंतिया, वयण कणइंद सम कंतिय संतिया ।

कमलदल णयण जिण वयण पेखंतिया, जोइयं सुन्दरं जिणघ आरत्तियं ॥ ४ ॥

इंद धरिणिन्द जक्खेन्द वोहंतिया, मिलिय सुर असुर सण रत्ति खेलंतिया ।

केवि सिय चमर जिण बिम्ब ढोलंतिया, जोइयं सुंदरं जिणघ आरत्तियं ॥ ५ ॥

गाथा–णंदी सुरम्मि दीवे बावण्ण जिणालयेसु पडिमाणं

अट्ठाहि वर पव्वे इन्दो आरत्तियं कुणई ॥ ६ ॥

छंद–इंद आरत्तियं कुणइ जिण मंदिरं, रयण मणि किरण कमले हि वर सुन्दरं ।

गीय गायंति णच्चंति वर णाडियं, तूर वज्जंति णाणा विहप्पाडियं ॥ ७ ॥

गाथा–एक्केक्कम्मि य जिणहरे चउ चउ सोलह वावीओ ।

जोयण लक्ख पमाणं, अट्ठम णंदीसुरं दीवे ॥ ८ ॥

छंद–अट्ठमं दीव णंदीसुरं भासुरं, चेत्य चैत्यालये वंदि अमरासुरं ।

देव देवीउ जह धम्म संतोसिया, पंचमं गीय गायंति रस पोसिया ॥ ९ ॥

गाथा–दिव्वेहिं खीर णीरेहि गंधड्ढाइहिं कुसुममालाहिं ।

सव्वसुर लोय सहिया पुज्जा आरंभए इंदो ॥ १० ॥

छन्द–इंद सोहम्मि सग्गाव वज्जोसयं, आयउ सज्जि एरावयं वर गयं ।

सव्व दव्वेहिं भव्वेहिं पूजा करा मिलिव पंडि वक्खया तस्स तिहु देसया ॥ ११ ॥

गाथा—कंसाल ताल तिवली, झल्लर भर भेरि वेणु विण्णाओ ।

वज्जंति भाव सहिया, भव्वेहिं णउजिया सव्वे ॥ १२ ॥

छन्द—सव्व दव्वेहिं भव्वेहिं कर ताडियं, सद्दए संभिगाण भिगाण खिद्धाडयं ।

भिगिनिजं भिगिनिजं वज्जये झल्लरी, णच्चये इंद इंदायणी सुंदरी ॥ १३ ॥

णयण कज्जल सलायामयं दिण्णयं, हेम हीरालयं कुंडलं कंकणं ।

झम्झणं झंकरं तंपि ये णेवरं, जिणय आरत्तियं जोइयं सुंदरं ॥ १४ ॥

दिट्ठिणासग्गि अंगुलिय दावंतिया, खिणहिं खिण खणहिं जिण बिम्ब जोइत्तिया ।

णारि णच्चंति गायंति कोइल सुरं, जिणयआरत्तियं जोइयं सुंदरं ॥ १५ ॥

रुणु झुणं कारणे वरय कर कंकणं, णाइ जंपंति जिणणाहवे बहुगुणं ।

जुवइ णच्चंति सुपरंति ण उ णिय घरं, जिणय आरत्तियं जोइयं सुंदरं ॥ १६ ॥

कंठ कदलोह मणिहार झुल्लंतउ, जिणइ थुइ थुई सोणार संतुट्ठउ ।

विविह कोऊहल रयहि णारी णरं, जिणय आरत्तियं जोइयं सुंदरं ॥ १७ ॥

घत्ता:—आरत्तिय जोवइ; कम्मइ धोवइ, सग्गावग्ग हलहु लहइ ।

जं जं मण भावइ तं सुह पावइ, दीणु वि माणुस माणुणइ ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे, द्विपंचाशज्जिनालयेभ्यो अर्घं ॥

यावंति जिन चैत्यानि, त्रियंते भुवन त्रये ।
तावन्ति सततं भक्त्या त्रिः परीत्य नमाम्यहं ॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजा ॥

मालिनीच्छंदः—श्रीमतीर्थाधीश सद्वाद पद्मौ, नत्वा पूजामष्टमस्याष्टभांहं ।
वच्मे भक्त्या द्वीप नंदीश्वरस्य द्वापंचाशच्छैल चैत्यानि तस्य ॥ १ ॥

पंचत्रिंशच्चतुष्ट हव्या, सरसेऽयंक प्रमाणकैः, योजनैर्विस्तृतो द्वीपो, भाति नंदीश्वरोऽष्टमः ॥ २ ॥
पंचमाष्ट तु सप्तद्वि, हव्याशीतमितैरलं, तन्नाम्ना वेष्टितोऽब्धिना, योजनैर्विस्तृतो नवैः ॥ ३ ॥
तच्चतुर्दिक्षु चत्वारोंजनाख्योमत्यगोत्तमः, षोडशेतैश्चतुर्दिक्षु दीर्घिकासत्य मुष्मिता ॥ ४ ॥
दधिमुखभिधाशैला, दीर्घिकामध्यसंस्थिता; षोडशा रेजिरे नित्यं, सागरे कलशा इव ॥ ५ ॥
तद्बाह्ये कोणयोः संस्था, द्वौ द्वौ हि वापिका प्रति, द्वात्रिंशद्रतिकुच्छैलास्ते सर्वेवन राजिताः ॥ ६ ॥
तत्रैकैकं तमाख्यातं, चैत्य स्वर्ण मय जिनैः बाणाश्च योजनोतुंगं तदर्धं पूर्व पश्चिमं ॥ ७ ॥
शतैक योजनायामं दक्षिणोत्तर भागयोः द्वापंचाशत्सु चैत्यानि, द्वापंचाशतयोरपि ॥ ८ ॥
एवं मणि मयैश्चूर्णैः सप्त द्वीप युताष्टकं । लिखित्वा द्वीपमुत्तुंगं पूजयंताह्वदन्वितं ॥ ९ ॥

॥ एतत्पठित्वा पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

❀ पूर्व दिशि स्थित चैत्यालयपूजा ❀

नन्दीश्वरे हरि दिशि स्थित कज्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश गिरि स्थित चैत्य पंक्तिः
संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुनौरु शुक्लाष्टमी प्रभृति तो दिवसाष्ट कांतम् ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे पूर्व दिशि संस्थि तांजनगिर्यादि पर्वत वर्त्यकृत्रिम त्रयोदश चैत्यालयानि अत्र अवतर अवतर संवौषट् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

रेवा कलिन्द तनया सुर सिंधु सिप्रा, नीरैः सुगंधतर वस्तुयुतैर्यजेऽहम् ।
नन्दीश्वरे हरि दिशि स्थित कज्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश गिरि स्थित चैत्य गेहान् ॥ जलम् ॥

काश्मीरजागुरु सिताम्ररसाभिमिश्रैः, संलेपयामि मलयोद्भवचन्दनैश्च ॥ नंदीश्व० ॥ चन्दनं ।

कुन्देन्दुहार हार हिम मौक्तिक तुल्य वर्णैं, गांगेय पात्र निहितैः कलमैर्यजामि ॥ नंदीश्व. ॥ अक्षतं ॥

पुष्पांध यौव परिपीत पराग सारैं, मंदार कुंदकलिकाभिरलं करोमि । नंदीश्व० पुष्पम् ॥

शाल्योदनैरतितरां घृत सूप मिश्रैः सद् व्यंजनः रसभरैः परि तर्पयामि ॥ नंदीश्व० ॥ नैवेद्यम् ॥

स्वीय प्रभा परितिरस्कृतमर्त्यपादैः, प्रज्वालयामिमणि दीप चयै विचित्रैः ॥ नंदीश्व० ॥ दीपम् ॥

श्रीकाक तुंड मणि गुरू यक्षधूपैः, संधूपयाम्यशुभ कर्म विनाशनाय ॥ नंदीश्व० ॥ धूपम् ।

नारंग चोच कदली क्रमुकाम्र बीजैः, द्राक्षाफलैः प्रतिदिनं सफली करोमि ॥ नंदीश्व. ॥ फलम् ॥

नंदीश्वर द्वीप पूर्वे, जिनवर निलयाभ्यंतरे श्री जिनेन्द्रान् ।
भक्त्या देवेन्द्र वर्यैस्त्रिविध परिणतैरंजनाद्याचलेषु ॥

द्रव्यैरष्टाभिरेभिः गुण गण निलयान्पूजयत्यादरार्घैः

ते भुक्त्वा स्वर्ग सौख्यं पर पद मनघं संश्रयाति क्रमेण ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

सुर नर फणि मूर्द्धा शेष मौलिद्ध तेजो, मणि निकर विभावाः चालितांघ्रांबुजाता ।

जिन पति विधुवर्या यत्र तिष्ठंति चैतान्निवसति जयमालां संकरिष्ये रसालां । १ ॥

दक्षिणे चोत्तरे योजनानां शति, विस्तुति विद्यते सुन्दरं येऽष्टकम् ।

अंजनाद्रौ स्थितान् वक्षि चन्द्रौ यमान्द्वीप पूर्वान्भजे सर्वे चैत्यालयान् ॥ २ ॥

पश्चिमे योजना नांच पूर्वेशके, ह्यस्ति पंचाशदा व्यासएषां सदा । अंजना. ॥ ३

उन्नता योजनै र्बाण सप्त प्रमै, स्तोरणैः गोपुरैः केतुभि र्लक्षिता ॥ अंजना. ॥ ४ ॥

रत्न भामंडल स्तेज सारांशिभि; जैन बिम्बा वरा यत्र सभात्यलम् ॥ अंजना. ॥ ५ ॥

छात पत्र त्रयैः पूर्व चन्द्रोपमैः, यत्र तैः रेजिरे रम्य मुक्ता फलैः ॥ अंजना. ॥ ६ ॥

नील शोभ भृताशोक वृक्षेण ते, पृष्ठ भागस्थिते नैव यत्रा बभुः ॥ अंजना. ॥ ७ ॥

हेम सिंहासनं रत्नमालाश्रितं, संश्रिता यत्रते सार शोभां दधुः ॥ अंजना ॥ ८ ॥

क्षीर सिंधुच्छलत् वीचि मालोपमै, र्भात्यलं यत्र ते वीजिताश्चामरैः ॥ अंजना ॥ ९ ॥

कृत्वा नाचलाद्रिस्थ, चैत्यानां जय मालिकां, ।

तेभ्यः सर्वज्ञ युक्तानां दत्तार्घं प्रार्थयेत्शिवं ॥ १० ॥ पूर्णार्घम् ।

॥ अथ दक्षिण दिशिस्थित चैत्यालय पूजा ॥

नन्दीश्वरे यम दिशि स्थित कज्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश गिरि स्थित चैत्य पंक्तिः ।
संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुणौरु, शुकलाष्टमी प्रभृति तो दिवसाष्टकान्तम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे दक्षिणदिशि सस्थितांजनगिर्यादि त्रयोदश पर्वत वर्त्यकृत्रिम चैत्यालय स्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अमृत जलधि तोयैः केशराब्जादि मिश्रैः, मुनिवर गुरु चेतः शीतलैः कुंभसंस्थैः ।
असित कुधर मुख्यानन्दु संख्याग संस्था, लयगत जिन बिम्बान्दीपयाम्यान्यजामि ॥ जलं ॥
प्रकृति सुरभिदेहान् छिन्नसंसार मोहान्, मलय विपिन जातैश्चन्दनैः कुंकुमाद्यैः । असित. ॥ चन्दनं ॥
हिमकर दधिहाराकारभारारखंडैः, विमल कनक पात्रन्यस्त शालीय पुंजैः ॥ असित. ॥ अक्षतं ॥
कमल कुमुद दाम्ना चंपकानेक धाम्ना सुमति प्रवर भूम्ना मालती संमहिम्ना । असित. ॥ पुष्पं ॥
दशदिशि गत गन्धैः निस्सरद्धूप जालैः, विलस सुरभिसर्पैः पायसैः शर्कराढ्यैः ॥ असित० ॥ नैवेद्यम् ॥
जिनपति शुभबोधोद्भासकैः रत्नदीपैः, निहित तिमिर वृन्दैस्तेजसाक्रांत दिक्कैः ॥ असित० ॥ दीपम् ॥
अगुरु सुरभिकाष्ठ च्छेद संजात धूपैः, विपुल दहन संगाद्धूम जालं वहद्भिः ॥ असित० ॥ धूपम् ॥
हृदय नयन नासा प्रीतिदैः काम्रगंधैः, क्रमुक पनस मोचा चोच सन्मातुलिंगैः ॥ असित० ॥ फलम् ॥

(इन्द्रवज्रा)

श्री द्वीप नन्दीश्वरयाम्य काष्टा, शीतादिवह्निद्वग चैत्यमाला ।
तोयादिभिः शारद चन्द्र कीर्ति, संपूजयंत्यादरतो जनौघाः ॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

(शार्दूल विक्रिड़ित छन्द)

विस्तीर्णा शत योजनैः स्थिर तरास्तद्दक्षिणे चोत्तरे । पूर्वे पश्चिम भाग एव ममलं व्यासं तदर्धं श्रिताः ॥
उच्चाः योजन पंचसत्यभिरभोजादि विचित्रान्विता ,
स्तान्सेवे किल संति यत्र सुभगाः सर्वज्ञ चैत्यालयाः ॥ १ ॥

(विद्युन्माला)

अष्टोत्तरसत भृंगारौघं, गांगेय यमनध मणि संघं ।
नन्दीश्वर यम दिशि नगराजं, सेवे धृत जिन वसति समाजं ॥ २ ॥
तत वितत शुषिरघनयुत तालं, पूर्व स्थान्वित सर्व विशालं ॥ नन्दीश्व० ॥ ३ ॥
उत्तम मणि नव कनक कुंभं, पूर्व गुणान्वित कृत वै शोभं ॥ नन्दीश्व० ॥ ४ ॥
वातान्दोलित केतु व्रातं, दर्शन मात्र विदर्शित सांतं ॥ नन्दीश्व० ॥ ५ ॥
कुंभसु शोभा भर सु प्रतीकं, मोहित किन्नर देवानीकं ॥ नन्दीश्व० ॥ ६ ॥
कांचन दंड सुशोभित छत्रं, तेजो निर्जित कैरव मित्रं ॥ नन्दीश्व० ॥ ७ ॥
अनघरत्न युत दर्पण स्तूपं, बिम्बित देव नरोरग रूपं ॥ नन्दीश्व० ॥ ८ ॥
ललना विजित सु चामर मालं गंगा वीचि समुज्वल बालं ॥ नन्दीश्व० ॥ ९ ॥
भृंगारा द्यष्टभिर्द्रव्यैरष्टोत्तर शतै युताः । एभिश्चैत्यालयानर्घ्यैर्हतामर्चये मुदा ॥
॥ अर्घम् ।

॥ पश्चिम दिशि पूजा ॥

(वसंत तिलका वृत्तम्)

नन्दीश्वरे वरुण दिग्गत कज्जलाद्रि, मुख्य त्रयोदश गिरिस्थित चैत्य पंक्तिः
संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुणौरु शुक्लाष्टमी स्मृति सदिवसाष्ट कान्तम् ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे पश्चिम दिशिस्थितांजन गिर्यादि त्रयोदश चैत्यालयस्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(इन्द्रवज्रा)

सुरापगा तीर्थ: जलैः सुगन्धैः, काश्मीर कर्पूर पराग मिश्रैः ।
प्रतीच्य शुभ्रा दिशि खीन्दु संख्या, गस्यालयस्थान् जिन पार्श्वयोगैः ॥ जलम् ॥
सुगंधीकाश्मीर रसौघ पीतैः, श्री चन्दनैराहृत षट्पदौघैः । प्रतीच्य० ॥ चन्दनं ॥
तुषार हारेन्दु निभैरखंडैः, सचंदुलैर्न्यक्कृत मौक्तिक कौघैः ॥ प्रतीच्य० ॥ अक्षतम् ॥
मंदार कुन्दाब्ज कदंब पुष्पैः रोलंब राजीकृन्मौक्तिकौघैः ॥ प्रतीच्य० ॥ पुष्पम् ॥
गांगेय पात्रे निहितैरनिर्घैः, पक्वान्न शाल्योदन सूप शाकैः ॥ प्रतीच्य० ॥ नैवेद्यम् ॥
जगत्त्रयध्वान्त विनाश दक्षैः, दीपैर्लसत् कांचन पात्रसंस्थैः ॥ प्रतीच्य० ॥ दीपम् ॥
सुगंधि काला गुरु धूप गंधैः व्याप्तोदिताशाखिल खेचरास्यैः । प्रतीच्य० ॥ धूपम् ॥
रसाल मोचामल मातुलिंग जंबीर राजदन नालिकेरैः प्रतीच्य० ॥ फलम् ॥

तत्पश्चात्पांजनमुखनगाग्नीन्दु संख्यालयस्थान् । देवाधीशान्सलिल कुसुमैः, पूजयित्वा प्रमोदात् ॥
स्वस्थो भूत्वा जिनवर पुरो ध्यानमंगी करोति, भव्यो योसौ भव निधि तटं याति सच्चन्द्रकीर्ति ॥

॥ अर्घम् ॥

॥ जयमाला ॥

(इन्द्र वज्रा)

तत्पश्चिमाशांजन मुख्यशैल, श्चैत्यस्थितान्शुद्ध सुवर्ण वर्णान् ॥
स्तुवे जिनेन्द्रान् जयमालयाहं, संसार पाथो निधिपारमाप्तान् ॥ १ ॥

निज दृष्टि विलोकित लोक हितं, विचरे हरि शंकर काम नुतं ।
सुतदं जन मुख्य जिनेश गृहं; स्थितवंत मनंत जिनेन्द्र महं ॥ २ ॥

सकलामल बोध सुसंगधरं, भविनां भव पाप विनाश करं । सुतदं० ॥ ३ ॥
सुख सागर मग्नमनंत सुखं, प्रणमामि मनोहर मुक्ति मखं ॥ सुतदं० ॥ ४ ॥
निरहंकृतमंत विकास करं, बहुवीर्यधरं तमकौघ हरं । सुतदं० ॥ ५ ॥
हत मोह तमोभर मान बलं, सुतपोवन धौत कु कर्म जलं । सुतदं० ॥ ६ ॥
शरदोज्वल दक्ष पवित्र मुखं, विरति द्रुम पल्लव रक्त नखं । सुतदं० ॥ ७ ॥
सदयं सदयं सनयं सनयं, परमं परमं पर हंसमयं सुतदं० ॥ ८ ॥
पदपंकज संनुत देव नरं, वर योग कदंबक लब्धिकरं । सुतदं० ॥ ९ ॥

श्लोक–नन्दीश्वरापराशास्तां–जनाद्रिस्थ सु वेश्मसु ।
स्थितान्सर्वान् जिनाधीशान्, पूर्णार्घैः पूजयाम्यहं ॥ १० ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

❀ उत्तर दिशि पूजा ❀

(वसंत तिलका)

तस्योत्तरांजन नगादि शिखीन्दु संख्या, शैलस्थ चेत्य भवनानि मनोहराणि ॥
संस्थापयामि शुचि कार्तिक फाल्गुणोरु, शुक्लाष्टमी प्रभृति सद्दिवसाष्टकान्तम् ॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वर द्वीपे उत्तर दिशि संस्थितांजन गिर्यादि त्रयोदशपर्वतवर्त्यकृत्रिम चैत्यालय स्थापनार्थं पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(विद्युन्माला छन्द)

निर्जर गंगा वरतर तोयैः, गंध विमिश्रैः कलिमल हान्यैः ।
श्री तदुदीच्यां जन मुख वह्नि, श्लोमित शैला लय जिनमर्चे ॥ १ ॥ जलम् ॥
केशर माला सुरभी रसोघैः, श्चन्दन पंकैः मधुकर रागैः ॥ श्रीतदु० ॥ चन्दनम् ॥
तंदुल पुंजैर्हिमकर रोचि मौक्तिक तुल्यैः परिमल सारैः ॥ श्रीतदु० ॥ अक्षतम् ॥
चम्पक माला शत दल कुन्दैः चेतक जाती कुवलय सारैः ॥ श्रीतदु० ॥ पुष्पं ॥
पायस शाल्योदन नव सर्पैः, मोदक हव्यैर्मधिमय मिष्टैः ॥ श्रीतदु० ॥ नैवेद्यम् ॥

दीपकलापै विधुरस जातै, स्तामस भेदैः रवि कर तुल्यैः ॥ श्रीतदु० ॥ दीपम् ॥
धूप कलापैरगुरुसमुच्चै, धूम वितानै र्जलधर नीलैः ॥ श्रीतदु० ॥ धूपम् ॥
दाडिम राजादन फलसारैराम्रकपित्थैः शिव पदसिद्ध्यै । श्रीतदु० ॥ फलम् ॥

(इन्द्र वज्रा)

नन्दीश्वरेदिक् स्थितकज्जलाद्री, खीन्दु प्रभागांस्थित चैत्य संस्थान् ।
यजाम्यनर्घ्यान् जलचन्दनाद्यैः, सर्वज्ञ वर्यान् शरदिन्दुकीर्तिन् ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

आर्या—नन्दीश्वराष्टमद्वीपांजन प्रमुख त्रयोदश नगेषु सुवर्ण मया क्रत्रिम त्रयोदश चत्यालयाः ।
संति तत्रार्हत्प्रति मानां, जयमाला पूजा विधिं वक्ष्ये ॥ १ ॥
पन्चम सागर श्रीतल वारा, स्नान विधिं विदधुः सहदारा ।
फाल्गुण मास पुरन्दर वर्या, उत्तर शैल जिनात्र सु पर्याः ॥ २ ॥
लिप्तसु चन्दन चन्द्र रसौघाः, रेजुर रहंत कर्म मलौघा ॥ फाल्गुण ॥ ३ ॥
न्यस्त मनोहर तंदुल मंजा, रेजुरिवाक्षत मौक्तिक मुंजाः ॥ फाल्गुन ॥ ४ ॥
दौकित पन्कज चम्पक माला रेजुर रंजित गीत रसाला ॥ फाल्गुण, ॥ ५ ॥
स्वादित मोदक पायस भक्ता मेंनिर आत्म सु पुण्यमरक्ताः फाल्गुण. । ६ ॥

द्योतित रत्न कदम्बक दीपाः, रंजुर रंवर नाक महीपाः ॥ फाल्गुण. ॥ ७ ॥
धूपित पेशल गंध सुरुपाः रेजुरहत घृत मोहन रुपा. ॥ फाल्गुण. ॥ ८ ॥
अर्पित चोच रसाल कदंबाः रेजुरर्हत करमल दंभाः ॥ फाल्गुण. ॥ ९ ॥

(वसंत तिलका)

नन्दीश्वरोत्तर गतांजन मुख्य शैल, वह्नीन्दु भान शिखर स्थित चैत्य संस्था ।
वेदाभ्र वेद कुमिता प्रतिमा जिनानां संपूजयामि जलगादत चन्दनाद्यैः ॥

॥ महार्घ्यम् ॥

॥ समुच्चयाष्टक ॥

विमल कांचन कुंभ विनिस्सरत्प्रचुर कुंकुम पिंजर वारिणा ।
रस हिमांशु रसेषु मितांश्चतान, जिनवरान्दिव साष्टक पूजयेत् ॥ जलम् ॥
शुभ हरिन्मणि संश्रित कुंकुमैः, रस तरै रिव नाल गतारुणैः ॥ रसहि० ॥ चन्दनम् ॥
कनक पात्र गतोज्वल तन्दुलै, विधुकरै रिव नैषध संगतैः ॥ रसहि० ॥ अक्षतम् ॥
सलिल जन्य कदम्बक चंपकै, भ्रमर घोरिणि पीतपरागकैः ॥ रसहि० ॥ पुष्पम् ॥
हरि हविः सम पायस संचयैः, घृत वरेषु रसैः रसनेष्टकैः ॥ रसहि० ॥ नैवेद्यम् ॥
निबिड पाप तमो भर नाशकै, मुनि विबोध समै र्मणि दीपकैः ॥ रसहि. ॥ दीपम् ॥
त्रिदिव मार्ग गतैरगुरुद्भवैः सुरभी धूम भरै भ्रमर प्रियैः ॥ रसहि० ॥ धूपम् ॥
क्रमुक दाडिम चोच लतोद्भवैः रस विशेष युतै र्मधुरैफलैः ॥ रसहि० ॥ फलम् ॥

द्वापंचाशच्चैत्य गेहीय सर्वान्शुभ्राषाढे कार्तिके फाल्गुनाख्ये ।
स्वष्टाह्नं वै पूजयन्त्यष्टधा ये, भव्यास्ते वै मुक्ति भाजः भवंति ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

॥ जयमाला ॥

घत्ता–सकल सुह कारणु, दुग्गइ वारणु, पुज्जहु णंदीसर दीवं ।
आसाढह मासउ, कातिय मासउ फागुण अट्ठमी जिण सेवं ॥ १ ॥

(मणुयणाइन्द की चाल)

सुहम कप्पादिया, मिलवि सवि सुंदरा, चालिया अट्ठमं दीव णंदीसुरा ।
छित्त संरत्तिआ सव्व भत्ति भरा, देव देवी जुआ जोइसा वितरा ॥ २ ॥
इन्द एरावयं चढ़िय सोहावणं, घंट स किंकिणि चामरा ढोलणं ।
कुन्थ संभार सिन्दूर संलेपणं, णच्चए अप्छरा देव देवी गणं ॥ ३ ॥
वज्जए ताल कंसाल वर मद्दला, गज्जए ढोल नीसाण वीणा दला ।
भेरी संताड़िया संख कोलाहला, सद्दए सोड़िआ काहला भूंगला ॥ ४ ॥
काविवि वज्जए वंससिरि मंडला, काविवि गायए गीत रागा कुला ।
काविवि णच्चए धरीय एकाउला काविवि ढावए रम्म मुत्ताहला ॥ ५ ॥
हार चंदामला जिण गुणा सीयला, बोलए कामिणि करिय मण णिम्मला ।

पंचमं गायए रामसुर किण्णरा णारया तुंबरा हाहु हूहु वरा । ६ ॥
तित्थ वारि वरं पंम संवासियं, सिम्मलं सीयलं पाव परिणासियं ।
धोवए कोमलं जिण पय जु अलं, दीव खंदीसरे ते सुरा सीयलं ॥ ७ ॥
गंध संकम्मियं भमर भुयंगमं, भूरि कप्पूर संवासियं संगमं
चच्चए चंदणं जिण पयजु अलं, मग्गए ते सुरा तुम्ह गुण पेसलं ॥ ८ ॥
अक्खुआ उज्जला हार मुत्तोपमा, खंड संवज्जिया पंच मेरोपमा ।
पुंज संढोकया जिणवर अग्गए, अरकयं ठाणयं ते सुरा मग्गए ॥ ९ ॥
मोगरा चंपआ रम्म गंधालया कुंद मंदारया पोम्म संमालया ।
जाई जूई मयानीय निमालया पुज्जए तच्छिया तेह दिवालया ॥ १० ॥
वाप्प संदूरया कूर सप्पियरा पायसा पावना गोरसा सर्करा ।
विय संपाविया फेणया घेवरा दीव खंदी सुरेतेठवे बावरा ॥ ११ ॥
भूरि कप्पूर वहिय उज्जालणं, फार अन्धार सं फडणे कारणं ।
संठिया दीवया रयण मम्भायणं द्योतए ते जिणं कम्म संचूरणं ॥ १२ ॥
धूव सिल्लारसं अगर संवस्सणं, पूरमा कस्सियं भिंग सिंधोरणं ।
दुट्ठ कम्मह विंदेवणं जालणं, धूवए जिणवरं दिव्व पूजालणं ॥ १३ ॥
नालिकेराम्बया पूग बीजोरया, चीमडा खिरणी मूल कुम्हंड्या ।
गोत्थनी दाडिमा तिंदुका केलया, दीव खंदीसरे पुज्जए एलया ॥ १४ ॥

अव्व उचारये भावये भावना इत्थ संजोहिया णामणं ते जिणा ।

दीव णंदीसरे बेहरा बावणा, मग्गए सासयं ठाण सोहामणा ॥ १५ ॥

घत्ता–इह णंदीसर भावऊ, पुज्ज सुहावऊ अट्ठमिदिणाइ पुन्निमापयणं ।

सिरिभूसण सिस्सउ, रविसम दिस्सउ, चन्द कीत्ति सोहावयणं ॥ १६ ॥

महार्घ्यम ॥

नन्दीश्वरेष्टमेद्वीपे, सर्वेऽर्हंतस्त्रियार्चिताः । पुनातु त्रिजगत्सर्वं शांतिधारा त्रयेण वै ॥

(इति शांति धारा त्रयं दद्यात्)

नाना हाव विलास विभ्रमवरान् दारासु रम्यांगजान् ।

दुर्वारान्मदनेन्दुरान्गजरवीन्, वारान्मनोरंहसः ।

कीर्ति कांति मनेकधामरलस च्छत्रांकितां सद्रमा ।

मेतत्पूजन तत्पराः शुभजनां संप्राप्नुवंतु ध्रुवं ॥

इत्याशीर्वादः ॥

अस्ति श्री काष्ठ संघो यतिजन कलितो गच्छ नन्दी तटाख्यो,

विद्या पूर्वे गणान्तेऽजनिशत गुरवो रामसेनश्चलस्मिन ,

तद्वंशेरेजिरेवै मुनिजन सहिता सूरयो विश्व सेनाः ,

विद्याभूषाख्य सूरिर्जिनमति रमवचत्पद्मांभोधिचन्द्रः ॥ १ ॥

तत्पट्टोदय भूधरैकतरणि, पंचेष्वरण्यारणिः । श्री श्रीभूषण सूरिराट् विजयते सर्वज्ञ विद्या चणः ॥
तच्छिष्यो जिन पाद पद्म मधुपः श्री चन्द्रकीर्ति वरः । तेनाचार्य वरेण निर्मितमिदं मन्दीश्वर स्यार्चनं ॥२॥

॥ श्री रत्नत्रय पूजा विधान ॥

श्रीमन्तं सन्मतिं नत्वा, श्रीमतः सुगुरूनपि । श्रीमदागमतः श्रीमद्रत्नत्रयार्चनम् ॥ १ ॥
अनंतानंत संसार, कर्म सम्बन्ध विच्छिदे । नमस्तस्मै नमस्तस्मै, जिनाय परमात्मने ॥ २ ॥

ध्रौव्योत्पादव्ययानेक, तत्व संदर्शनविद्वे ॥ नमस्तस्मै० ॥ ३ ॥
संसारार्णवमग्नानां, यः समुद्धर्तुमीश्वरः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ४ ॥
लोकालोक प्रकाशात्मा, यश्चैतन्य मयो महः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ५ ॥
येन ध्यानाग्निना दग्धं, कर्म दत्तमलक्षणं ॥ नमस्तस्मै० ॥ ६ ॥
येनात्मात्मनि विज्ञातः, परं परमिदं वपुः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ७ ॥
य एव परमं ज्योतिः, परं ब्रह्म मयः पुमान् ॥ नमस्तस्मै० ॥ ८ ॥
सर्वानंदमयो नित्यं, सर्वसत्व हितंकरः ॥ नमस्तस्मै० ॥ ९ ॥

इत्याद्यनेकधा स्तोत्रैः, स्तुत्वा सज्जिन पुंगवम् । कुर्वे दृग्बोधचारित्रार्चनं संक्षेपतोऽधुना ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि अत्र मम संन्निहितो भव भव वषट् संन्निधिकरणम् ।

संसार दुःख ज्वलनावगूढ, प्रदृढ संतापमलोप शांत्यै ।

सद्दर्शनज्ञान चरित्र पंक्तेर्जलस्यधारां पुरतो ददामि ॥ जलं ॥ १ ॥

रत्नत्रयं भूषित भव्य लोक,-मशोकमन्तर्गत भावगम्यं ।

काश्मीरकर्पूरसुचन्दनार्द्रै, सुगन्धिगन्धैरहमर्चयामि ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

आर्या छन्दः—अक्षतमक्षत पुञ्जैः, शालेयैः शुद्ध गन्धिभिः शुद्धैः ।

दर्शन बोध चरित्र त्रितयं तन्संयजे भक्तया ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

उद्गताच्छन्दः—विकसित कुंद कुसुम शत पत्र सु जात समूह शोभया,

घन कर्पूर नीर शुभ चन्दन, चर्चित चारु गंधया ।

अलिकुल रणित कलित मधुर ध्वनि, श्याम समूह रसालया ।

सुकलितमातनोमि रत्नत्रय, मत्र पवित्र मालया ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

इन्द्रवज्रा—प्रसिद्ध सद्द्रव्यमनन्य लभ्यं, वचो गुरुणामिव साधुसिद्धं ।

सद्दृष्टि सद्बोध चरित्र रत्न, त्रयाय नैवेद्य महं ददामि ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपैः सुकर्पूर पराग भृंगैरंगद्भिरंगद्युति दीप्यमानैः ।

सद्दृष्टि सद्बोध चरित्र रत्न, त्रयं त्रयाशाप्तिकरं यजामि ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

आर्याछन्दः-धूपैः कालागुरुभि विशुद्ध संशुद्ध कर्म संधूपैः ।

दर्शन बोध चरित्र त्रितयं संधूपयामि संशुद्धयै धूपं ॥ ७ ॥

इन्द्रवज्रा-पूगैरनर्घैर्वर नारिकेलैः, नारंग जम्बीर कपित्थ पुञ्जैः ।

रत्नत्रयं तर्पित भव्य लोकं, शक्यावलोकं तदहं यजामि ॥ फलं ॥ ८ ॥

आर्या छंद–जल गंधाक्षत पुष्पैश्चरु दीपैर्धूप सत्फलैः सर्वैः ।
दर्शन बोध चरित्र, त्रितयं त्रेधा यजामहे भक्त्या ॥ अर्घ्यं ॥

मोक्षाद्रि संकट तटी विकट प्रपात, संपादिने सकल सत्त्व हित कराय
रत्नत्रयाय शुभ हेति सम प्रभाय, पुष्पांजलि प्रविमलां ह्यवतारयामि ॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

❀ अथ सम्यग्दर्शन पूजा ❀

परस्यामिमुखी श्रद्धा, शुद्ध चैतन्य रूपतः । दर्शनं व्यवहारेण, निश्चयेनात्मनः पुनः ॥ १ ॥

द्रुतविलम्बितच्छन्दः–पदविगम्य नयः शिव संपदा, मनिशं प्रतिपद्य विरेजिरे ।
तदिह मानसतामरसेलसद्विशतु दर्शनमष्ट विधं मम ॥ २ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टांगसम्यग्दर्शनात्रावतरावतर स्वाहा ॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

अनंतानंत संसार सागरोत्तार कारणम् तीर्थतीर्थकृतामत्र, स्थापयामि सुदर्शनम् ॥ ३ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टांगसम्यग्दर्शन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ॥ प्रतिष्ठापनं ॥

अष्टाङ्गैरष्टधापूत–मष्टैक गुण संयुत । मदाष्टक विनिर्मुक्तं, दर्शनं सन्निधापये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टांगसम्यग्दर्शन अत्र ममसन्निहितं भव भव वषट् । सन्निधिकरणम् ॥

दर्शन यंत्र स्थापनम् ॥

शरदिन्दु समाकार , सारया जल धारया । सम्यग्दर्शनमष्टांगं , संयजे संयमावहम् ॥ जलं० ॥१॥

चारु चन्दन काश्मीर, कर्पूरादि विलेपनैः । सम्यग्० ॥ चंदनं ॥ २ ॥
अखंडैः खंडिता नेक,–दुरितैः शालितंदुलैः । सम्यग्० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
शत पत्र शतानेक, चारु चम्पक राजिभिः । सम्यग्० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
न्यायैरिव जिनेन्द्रस्य, सद्भाज्यैः पुष्टि कारिभिः । सम्यग्० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
चञ्चत्काञ्चन संकाशै दीपैः सदीप्ति हेतुभिः ॥ सम्यग्० ॥ दीपं ॥ ६ ॥
कृष्णागुरुमहाद्रव्य, धूपैः संधूपिताशुभैः ॥ सम्यग्० ॥ धूपं ॥ ७ ॥
पूग नारिङ्ग जम्बीर, मातुलिङ्ग फलोत्करैः । सम्यग्० ॥ फलं ॥ ८ ॥
जलगंधाक्षतानेकः पुष्पनैवेद्य दीपकैः ॥ सम्यग्० ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

॥ इन्द्र वज्रा ॥

यस्य प्रभावाज्जगतांत्रयेऽपि, पूज्या भवंतीह घना जनौघाः ॥
सुदुर्लभायामर पूजिताय निः शंकिताङ्गाय नमोस्तु तस्मै ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं निः शङ्किताङ्गाय इदं जलं गंधं पुष्पं, अक्षतं चरुं दीपंधूपं फलं समर्पयामि स्वाहा ॥

सुदर्शनं येन विना प्रयुक्तं, मन्तःफलं नैव भवेज्जनानां ।
सुदुर्लभायामर पूजिताय; निः कांक्षिताङ्गाय नमोस्तु तस्मै ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं निःकांक्षिताङ्गाय जलाद्यर्घं ।

यदंगतः संयम वृक्ष सेकी, तस्मात्फलं संलभते शरीरी ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय, निर्निन्दितांगाय नमोस्तु तस्मै ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सितांगाय जलाद्यर्घं ॥

यदुज्झित चाऽ चरित्र मेतत् सिद्धयैभवेन्नैव मुनीश्वराणां ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय, निर्मूढतांगाय नमोस्तु तस्मै ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं अमूढदृष्ट्यङ्गाय जलाद्यर्घम् ॥

सुरेन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्रवृन्दै-र्वंद्यं पदं यद्वशतो लभन्ते ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय, निगूढतांगाय नमोस्तु तस्मै । ५ ॥

ॐ ह्रीं उपगूहनांगाय जलाद्यर्घं ॥

भवन्ति वृद्धा गुण वृद्धि सिद्धा, येनानु वृद्धा जगति प्रसिद्धा: ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय, सुस्थापनांगाय नमोस्तु तस्मै ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं स्थितिकरणांगाय जलाद्यर्घं ॥

सुरत्नवद्दुर्लभतामुपेतं, भव्यावनौ यत्प्रतिभासमानं ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय, वात्सल्यतांगाय नमोस्तु तस्मै ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं वात्सल्यांगाय जलाद्यर्घं ॥

प्रबंधभूयिष्ठमलञ्चकार यच्छासने शासित भव्य लोकः ।

सुदुर्लभायामर पूजिताय प्रभावनांगाय नमोस्तु तस्मै ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं प्रभावनांगाय जलाद्यर्घम् ।

॥ समुच्चयाष्टक ॥

सौरभ्याहृत सद्गंग, सारया जल धारया ।
निःशंकित्वादिकान्यस्य, सदंगानि यजामहे ॥

ॐ ह्रीं निःशंकिता द्यष्टांगाय जलं निर्वपामि स्वाहा ॥ १ ॥
चारु चन्दन काश्मीर कर्पूरादि विलेपनैः ॥ निःशंकि० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥
अक्षतैरक्षतानंत सुख दान विधायकैः ॥ निःशंकि० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
जाति कुन्दादिराजीव, चम्पकानेक पल्लवैः ॥ निःशंकि० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
खाद्यैराद्य पदैः स्वाद्यैः सन्नाज्यैः सुकृतैरिव ॥ निशंकि० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
दशार्चैः प्रस्फुरद्रूपैर्दीपैः पुण्य जनैरिव ॥ निःशंकि० ॥ दीपं ॥ ६ ॥
धूपैः संधूपितानेक कर्मभिः धूपदायिनां ॥ निशंकि० ॥ धूपं ॥ ७ ॥
नारिकेलाम्रपूगादि फलैः पुण्य फलैरिव ॥ निशंकि० ॥ फलं ॥ ८ ॥

(आर्या) जल गंध कुसुम मिश्रां, फल तन्दुल कमल कलित ललिताढ्यं ।
सम्यक्त्वाय सुभव्यां, भव्याः कुसुमांजलिं ददतु ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

(पुष्पांजलिंक्षिपेत)

जाप्य ९ कुर्यात् ॥ ॐ ह्रीं अष्टांग सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं निःशंकितांगायनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं निःकांक्षितांगाय नमः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सितांगाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं निर्मौढ्याय नमः ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं उपगूहनाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं स्थितिकरणाय नमः ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं वात्सल्याय नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं प्रभावनांगाय नमः ॥ ९ ॥

एभिर्मंत्रैर्जाप्यं कुर्यादर्घं चापि समुद्धरेत् ॥

॥ जयमाला ॥

श्रद्धाश्चन्द्रः=तत्वानां निश्चयो यस्तदिह निगदितं दर्शनं शुद्ध बुद्धै,
स्तस्मादानष्टकर्माष्टकघनतिमिरो जायते ज्ञान सूरः ।
ज्ञानात्सिद्धि प्रसिद्धि श्रुति वचनमिदं शाश्वतं सिद्धि सौख्यं ।
चंचच्चन्द्रांशु शुद्धं तदहमिहमहे दर्शनं पूजयामि ॥ १ ॥

जय सम्यग्दर्शनदर्शिताश, कमलार्चितहतघनकर्मपाश ।
जयनिःशंकित निश्चित सुतत्व, शतपत्र शतार्चित मुदितसत्व ॥ १ ॥

जय निःकांक्षित वर्जित विकार कुन्दार्चितकृतसंसारपार ।
जय निर्विचिकित्सित भाव भंग, कुमुद प्रसून पूजित सुसंग ॥२॥

जय निर्मूढांग महाप्ररूढ, शुभ चम्पक चर्चित चारू रूढ ।
जय २ उपगूहन परम पक्ष, वर मल्लिकार्च्चदर्शित सुलक्ष ॥ ३ ॥

जय २ सुस्थित सुस्थितीकरण, जातीकुसुमार्चित दुखः हरण ।

वात्सल्यमन्त्र जय २ विशाल, वैतकदल पूजित दलित काल ॥ ४ ॥

प्रतिभावनांग जय २ वरेण्य, जय वसुविध कुसुमार्चितसुरेण्य ॥

(वक्त्र) इति दर्शनवर्गं भावनिसर्गं, दर्शनमिष्टमनिष्ट हरं ।

सुममः सत्पुञ्जं, शर्म निकुञ्जं, भव्य जनाय ददातु वरं ॥

ॐ ह्रीं भावाङ्ग सम्यग्दर्शनाय महार्घं ॥

पंचाति चारमति मतं प्रपूतं, पञ्चप्रदं पंचम बोधहेतुं ।

सद्दर्शनं रत्नमनर्घ्यमर्घ्यैः भक्तया सुरत्नैरहमर्चयामि ॥ रत्नाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

मुक्ताः श्रेणिगताविभाति नितरां, यत्प्रस्फुरत्तेजसा,

येनालंकृत विग्रहं गृहमुचं सिद्धयंगनाऽऽलुब्धति ॥

यत्संसार महार्णवे भवभृतां दुष्प्राप्यामपृच्छतः,

तत्सम्यक्त सुरत्नमर्चितधियां, देयादनिद्यं पदं ॥ रत्नांजलिं देयात् ॥

मालिनीछंदः=अतुल सुख निधानं, सर्वकल्याण बीजं, जनन जलधिपोतं, भव्यसत्वैक पात्रम्

दुरितवरु कुठारं, पुण्यतीर्थं प्रधानं, पिबतुजिन विपचं, दर्शनाख्यं सुधाम्बु ।

इत्याशीर्वाद

॥ अथ सम्यग्ज्ञान पूजा ॥

प्रणम्य श्री जिनाधीश,-भवोघं सर्वसम्पदां । सम्यग्ज्ञान महारत्नपूजां वक्ष्ये विधानतः ॥ १ ॥
श्रीजिनेन्द्रस्यसद्दिव्य,-मुत्तरेण महाधियः । पुस्तक स्थापनीयं चेत्तस्यैवादर्शमध्यमम् ॥ २ ॥
कल्पनातिगता बुद्धिः परमात्म विभाषिका । ज्ञानंनिश्चयतो ज्ञेयं, तदन्यदव्यवहारतः ॥
ज्ञानाचारोऽष्टधापुंसां, पवित्री करण क्षमः । प्रभावेन तु पूजायै समागच्छतु निर्मलः

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टांग सम्यग्ज्ञानाचार अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ आह्वाननं ॥

सम्यग्ज्ञान प्रभापूत, कर्म कक्ष क्षयानल । पूजा क्षणेतु गृह्णातु, स्थित्वा पूजामनिन्दिताम् ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टांग सम्यग्ज्ञानाचार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा ॥ प्रतिष्ठापनं ॥

अचिन्त्यमाहात्म्यमचिन्त्य वैभवं, भवार्णवोत्तीर्ण विसारि सर्वतः ।
प्रबोध चारित्रमिहान्तरान्तरं निरंतरं तिष्ठतु सन्निधौमम ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अष्टांग सम्यग्ज्ञानाचार अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् । सन्निधिकरणं ॥

शरदिन्दु समाकार सारया जल धारया । बोधतत्व समाचारं, संयजे संयजाम्यहम् ॥ जलं ॥ १ ॥
कर्पूर नीर काश्मीर मिश्रसच्चन्दनैर्घनैः । बोधतत्व० । चन्दनं ॥ २ ॥
अखण्डैः खंडितानेक-दुरितैः शालि तन्दुलैः । बोधतत्व० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
शतपत्रशतानेक चारु चम्पक राजिभिः । बोधतत्व० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

न्यायैरिव जिनेन्द्रस्य साम्यायैः शुद्धिकारिभिः । बोधतत्त्व० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
चञ्चत्काञ्चन संकाशैः दीपैः सद्दीप्ति हेतुभिः । बोधतत्त्व० ॥ दीपं ॥ ६ ॥
कृष्णागुरू महाद्रव्य, धूपैः संधूपिताशुभैः । बोधतत्त्व० ॥ धूपं ॥ ७ ॥
पूग नारिंग जम्बीर मातुलिंगफलोत्करैः । बोधतत्त्व० ॥ फलं ॥ ८ ॥

वसंततिलकाच्छंदः—मोहाद्रि संकट तटी विकट प्रपात, सम्पादिने सकलसत्त्व हितंकराय ।
बोधाय शक्र शुभ हेतु समग्रमाय पुष्पाञ्जलिप्रविमलांह्यवतारयामि ॥ अर्घं ॥

सुव्यञ्जनैर्व्यंजित व्यंगभाव, प्रभावना भावित भाव शुद्धयै
सुदुर्लभायामर पूजिताय, प्रबोधतत्त्वाय नमोस्तु तस्मै ॥

ॐ ह्रीं व्यञ्जन व्यंजिताय इदं जलं गंधं पुष्पं अक्षतं नैवेद्यं दीपंधूपं फलमित्याद्यर्घं ॥ १ ॥

पदार्थ सम्बंधमुपेत्यनीतः समग्रतामग्रपदप्रदायि । सुदुर्ल० ॥

ॐ ह्रीं अर्थ समग्राय इदं जलं गंध मित्याद्यर्घं ॥ २ ॥

शब्दार्थ श्रद्धान विधानमान, द्वयेन बन्धं सुनिबंधमेति । सुदुर्ल० ॥

ॐ ह्रीं तदुभय समग्राय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं । ३ ॥

पवित्रकालाध्ययन प्रभाव प्रदर्शितानेक कला कलापं । सुदुर्लभा० ॥

ॐ ह्रीं कालाध्ययन पवित्राय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥ ४ ॥

समृद्ध शुद्धोपधि शुद्धसिद्धं, सुभावमंतः स्फुरदङ्गसङ्गम् ॥ सुदुर्ल० ॥
ॐ ह्रीं उपाध्ययनोपहिताय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥ ५ ॥

विनीत चेतो वितनोतिनीति प्रणीतमानन्त्यमनन्तरूपम् ॥ सुदुर्लभा० ॥
ॐ ह्रीं विनय लब्ध प्रभावनांगाय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥ ६ ॥

अपन्हुते निन्हुति तो गुरुणां गुरु प्रभावोपहितान्धकारः ॥ सुदुर्ल० ॥
ॐ ह्रीं गुर्वध्ययनानप ह्नव समृद्धाय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥ ७ ॥

अनेकधामान्यवितानवृद्धं प्रभावितानंतगुणं गुणानां । सुदुर्ल० ॥
ॐ ह्रीं बहुमानोन्मुद्रिताय इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥ ८ ॥

सौरभ्याहृतसङ्गं, सारया जल धारया ।

व्यञ्जनाद्यमलांगानि संयजे जन्म विच्छिदे ॥ जलं ॥ १ ॥
चारु चन्दन काश्मीर कर्पूरादि विलेपनैः ॥ व्यंजना० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥
अक्षतैरक्षतानंत सुखदान विधायकैः ॥ व्यञ्जना० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
जाती कुन्दादि राजीव चम्पकानेक पल्लवैः । व्यञ्जना० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
खाद्यैराद्य पदैः स्वाद्यैः सम्राज्यैः सुकृतैरिव ॥ व्यंजना० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
दशाग्रैः प्रस्फुरद्रत्नैर्दीपैः पुण्य जनैरिव ॥ व्यंजना० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
धूपैः संधूपितानेक कर्मभिर्धूपदायिनां व्यञ्जना० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

नालिकेराम्रपूगादि फलैः पुष्प फलैरिव ॥ व्यंजना० ॥ फलं ॥ ८ ॥
जलगंधाक्षतानेक पुष्प नैवेद्य शालिना ॥ व्यंजना० ॥ अर्घं ॥ ९ ॥
मोहाद्रि संकट तटी विकट प्रपात, संपादिने सकल सत्वहितंकराय ।

बोधाय शक्र शुभ हेति समप्रभाय पुष्पांजलि प्रविमलां ह्यवतारयामि ॥ पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥ जाप्य ९ कुर्यात् ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं व्यंजन व्यञ्जिताय नमः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं अर्थसमग्राय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं तदुभयसमग्राय नमः ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं कालाध्ययन पवित्राय नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं उपाध्ययनोपहिताय नमः ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं विनय लब्ध प्रभावनांगाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं गुर्वाद्यनपह्नव समृद्धाय नमः ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं बहुमानोन्मुद्रिताय नमः ॥ ९ ॥ एभिर्मंत्रैर्जाप्यं कुर्यात्, अर्घं चापि समुद्धरेत् ॥

॥ जयमाला ॥

सुग्धराच्छन्दः-व्योम्नीव व्यक्त रूपं, विगत घन मलं, भानि नक्षत्र भेकं,
जीवाजीवादि तत्वं स्थगित गत मलं, यस्य दृग्गोचरस्थम् ।
तत्वज्ञैः प्रार्थ्यते यत्प्रविपुलमतिभिर्मोक्षसौख्याय जज्ञे
तद्भव्याम्भोज भानुं ललित गुण मणिं बोधमभ्यर्चयामि ॥ १ ॥

घन मोह तमः पटलापहरं, यम संयम संगम भार भरं ।
भुवि भव्य पयोज विकासमहं, प्रणमामि सुबोध दिनेश महं ॥ २ ॥

कृत दुष्कृत कौशिक चार हरं, भृतभूरि भवार्णव शोष करं । भुवि० ॥ ३ ॥
निखिलामल वस्तु विकास पदं, हत दुर्धर दुर्जय काष्ट पदं ॥ भुवि० ॥ ४ ॥
कलिकल्मषकर्दम शोष करंहृदयादव सर्पित कर्म जलं ॥ भुवि० ॥ ५ ॥
जड़ता तम हारक सूर्य समं, सुमनोभव संग विभंगसमं ॥ भुवि० ॥ ६ ॥
हृदयामललोचन लक्षमितं, निजभासुर भानु सहस्र युतं ॥ भुवि० ॥ ७ ॥
अलि कज्जल नील तमाल तमं, प्रति मद्धिक आव निशापगमं । भुवि० ॥ ८ ॥
निज मण्डल मण्डित लोक मुखं, नत सत्व समर्पित सर्वसुखं ॥ भुविभ० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं अष्टाङ्ग ज्ञानाचाराय इदं जलंगधं पुष्पं अक्षतं चरू दीपं धूपं फलं यजामहे स्वाहा ॥

स्तुत्वेति बहुधास्तोत्रै र्बहुभक्ति परायणः नाना भव्यैः समंश्रीमानर्घ्यं चापिसमुद्धरेत् ॥

संसार पाथो निधि शोष कारि, प्रबंध भूयिष्ठमनंत रूपं ।
सज्ज्ञान रत्नं बहु रत्न भृंगैः रत्नैः शुभैरर्चितमर्चयामि । रत्नाञ्जलिः ॥

चिन्तामूल महादृढस्तदमल स्थूलस्थल स्कंधमा, नंगोपांग सदागमैक विसरच्छाखोपशाखान्वितः ।
एकानेक विधावधि प्रभृतिभिः सत्पत्र पुष्पैर्वरैः, देयाद्बोधतरु शिवः शिवसुखं न्यासे वितोऽनेकशः ॥

मालिनीच्छंदः—दुरिततिमिर हंसं, मोक्षत्र सरोजं मदन भुजग मंत्रं चित्त मातंग सिंहं ।
व्यसन घनसमीरं, विश्व तत्वैक दीपं, विषय शफर जालं ज्ञानमाराधयत्वं

॥ इत्याशीर्वाद ॥

॥ सम्यक् चारित्र पूजा ॥

देवश्रुत गुरुन्नत्वा कृत्वाशुद्धिमथात्मनः । सम्यक्चारित्र रत्नस्य वच्ये संक्षेपतोर्चनम् ॥ १ ॥
सम्यक् रत्नत्रयस्याथ, पुस्तकं चोत्तरेणतु गणेश पादुका युग्मं, स्नपयित्वामहोत्सवे ॥ २ ॥
मौनं चारित्रमाख्यातं यत्सावद्य निवर्तनं । आनंद सान्द्रमानात्मा पवित्रं परमार्थतः ॥ ३ ॥
त्रयोदश विधानेक भव्यलोकैक पावनं । चारित्राचारकर्मैत कमलं विमलं शिवः ॥ ४ ॥

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यक चारित्राचार अत्रावतरावतर स्वाहा ।
स्थाप नोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् । आह्वाननं ॥

विषय कर्म महाकुल पर्वत, प्रकट कूट विभञ्जन सत्तपः ।
य इह तिष्ठतु जन्म भयान्तकत्रिमल हारि चारित्र महामहः । ५ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यक्चारित्राचार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । प्रतिष्ठापनं ।

सकल भव्य पयोज विकास कृत् प्रकटिताखिल भाव विभावकः ।
प्रबल मोह निशाचर चारहृच्चरण भानुरुदेतु मनोम्बरे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः त्रयोदश विध सम्यक्चारित्राचार अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि करणं ।

॥ चारित्र यंत्र स्थापनम् ॥

शरदिन्दु समाकार सारया जलधारया ।

सच्चारित्र समाचारं संयजे संयजावहम् ॥ जलं ॥ १ ॥

कर्पूर नीर काश्मीर मिश्रमच्चन्दनैर्घनैः ॥ सच्चारित्र० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

अखंडैः खंडितानेक दुरितैः शालि तंदुलैः ॥ सच्चारित्र० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

शतपत्र शतानेक चारु चम्पक राजिभिः । सच्चारित्र० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

न्यायैरिव जिनेन्द्रस्य, सद्भाग्यैः पुष्टि कारिभिः । सच्चारित्र० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥

चञ्चत्कांचन संकाशैर्दीपैः संदीप्ति हेतुभिः ॥ सच्चारित्र० ॥ दीपं ॥ ६ ॥

कृष्णागुरु महाद्रव्यैः धूपैः संधूपिताशुभैः । सच्चारित्र० ॥ धूपं ॥ ७ ॥

पूग नारिग जम्बीर मातुलिंग फलोत्करैः । सच्चारित्र ॥ फलं ॥ ८ ॥

कर्माणि हि महारोगा नश्यन्ति यत्प्रयोगतः । सच्चारित्र० ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

प्राणातिपातविरति, रुपं सर्वत्र तत्वतः । पूजयामि समीचीनं, चारित्राचार मर्चितं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अहिंसा पूर्ण महाव्रतायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

असत्य विरतिप्राप्त परभागमनेकधा ॥ पूजया० ॥ ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रतायार्घ्यं० ॥

चैर्याद्यावृत्त वृत्तात्मा, सर्वथा सुमनीषिणाम् ॥ पूजया० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रतायार्घ्यं ।

ग्राम्य धर्म विनिर्मुक्तं यद्वंद्यं त्रिदशैरपि ॥ पूजया० । ४ ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रतायार्घ्यं ॥

सर्व ग्रंथ विनिर्मुक्तमनेकग्रंथ संयुतं । पूजया० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रतायार्घ्यं ॥

सौरभ्याहृत सद्भृंग, सारया जलधारया ।

अहिंसाव्रत पूर्वाणि तदंगानि यजामहे ॥ जलं ॥

चारु चन्दन काश्मीर कर्पूरादि विलेपनैः । अहिंसा० ॥ चन्दनं ॥

अक्षतैरक्षतानंत सुखदान विधायकैः ॥ अहिंसा० ॥ अक्षतं ॥

जाती कुन्दादि राजीव , चम्पकानेक पल्लवैः । अहिंसा० ॥ पुष्पं ॥

न्यायैरिव जिनेन्द्रस्य, सन्नाज्यैः शुद्धिकारिभिः ॥ अहिंसा० ॥ नैवेद्यं ॥

चञ्चत्काञ्चनसंकाशैः दीपैः सद्दिप्तिहेतुभिः ॥ अहिंसा० ॥ दीपं ॥

धूपैः सन्धूपितानेक कर्मभिः धूपदायिनां ॥ अहिंसा० ॥ धूपं ॥

नारि केलादिभिः पूगैः फलैः पुण्य फलैरिव ॥ अहिंसा० ॥ फलं ॥

कर्माणि हि महारोगा नश्यन्ति यत्प्रयोगतः ।

सुचारित्रौषधायास्मैददामि कुसुमाञ्जलिम् ॥ अर्घं ॥

अधृष्यं सर्व लोकानां यन्मनस्तन्नियामकं

पूजयामि सभीचीनं चारित्राचारमर्चितं ॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तये इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥

यद्वागव्यापारजानेक दोष संगविवर्जितं । पूजया० ॥

ॐ ह्रीं वाग्गुप्तये इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥

शरीराश्रवसंचार परिहारविनिर्मलं ॥

ॐ ह्रीं काय गुप्तये इदं जलं गंधमित्याद्यर्घं ॥

ईर्यासमिति संशुद्धमतिचार विवर्जितं ॥ पूजयामि० ॥

ॐ ह्रीं ईर्या समितये अर्घं ॥

चतुर्विध महाभाषा शुद्ध संयम संगतं ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं भाषा समितये अर्घं ॥

एषणाशुद्धि संशुद्ध, यत्प्रवृद्धं विभागतः ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं एषणा समितये अर्घं ॥

यस्मिनादान निक्षेपौ स्यातां संयम वृद्धये ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपण समितये अर्घं ॥

व्युत्सर्गेण विशुद्धं यत्कर्म व्युत्सर्ग कारणं ॥ पूजया० ॥

ॐ ह्रीं प्रतिष्ठापनासमितये अर्घं ॥

सौरभ्यहृतसद्भृंग सारया जलधारया ।

मनोगुप्ति, प्रपूर्णानि तदंगानि यजामहे ॥ जलं ॥

चारु चन्दन कस्मीर कर्पूरादि विलेपनैः ॥ मनोगु० ॥ चन्दनं ॥

अक्षतैरक्षतानंत सुखदान विधायकैः ॥ मनोगु० ॥ अक्षतं ॥

जाती कुन्दादि राजीव चम्पकानेक पल्लवैः ॥ मनोगु० ॥ पुष्पं ॥

खाद्यैराद्य पदैः स्वाद्यैः सन्नाज्यैः सुकृतैरिव ॥ मनोगु० ॥ नैवेद्यं ॥

दशाग्रैः प्रस्फुरद्रूपैर्दीपैः पुण्य जनैरिव ॥ मनोगु० ॥ दीपं ॥

धूपैः संधूपितानेक कर्मभिः सुख कारिभिः ॥ मनोगु० ॥ धूपं ॥

नालिकेराम्रपूगादि फलैः पुण्य फलैरिव ॥ मनोगु० ॥ फलं ॥

कर्माणि हि महारोगा नश्यन्ति यत्प्रयोगतः ।

सच्चारित्रौषधायास्मै ददामि कुसुमाञ्जलिम् ॥ अर्घं ॥

(जाप्य १३ कुर्यात्)

ॐ ह्रीं अहिंसा पूर्व त्रयोदश विधि सम्यक्चारित्राचाराय नमः ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं असत्यविरत महाव्रताय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं चौर्यविरत महाव्रताय नमः ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मैथुनविरत महाव्रताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परिग्रहविरत महाव्रताय नमः ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तये नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं वाग्गुप्तये नमः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं काय गुप्तये नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं ईर्या समितये नमः ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं भाषा समितये नमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं एषणा समितये नमः ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण समितये नमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं प्रतिष्ठापना समितये नमः । १३ ॥

॥ एभिर्मंत्रैः जाप्यं कुर्यात् ॥ अर्घं चापि समुद्धरेत् ॥

॥ जयमाला ॥

अरधराच्छंदः–नद्वेषोद्वेषवृत्तिन्यरुणदृशिकृतानेकघोरोपसर्गे,

यस्मिन्रागोपि नस्यान्मलयजकुसुमं, दीयते भक्ति भाजा ॥

स्वर्णे जीर्णे तृणेवा, भवतिसमतुला, पुण्य पापाश्रवेऽपि ।

सम्यक्चारित्रमेतत्तदहमिहमहे, पूजयाम्यादरेण ॥ १ ॥

स्वात्मानं योगिनो यस्माल्लभंते शुद्ध चेतसः ।

नमः समस्त साराय चारित्रायामलत्विषे ॥ २ ॥

यानि कानि तु सौख्यानि जायन्ते तानिउद्वशात् ॥ नमः सम० ॥ ३ ॥

दौर्गतानि तु दुःखानि यद्दते लभते नरः ॥ नमः सम० ॥ ४ ॥

लोकालोक विभागात्मा यतः प्राप्नोति केवलं ॥ नमः सम० ॥ ५ ॥

यच्छ्रद्धानान्नृणां जन्म सफलं सफलं भवेत् ॥ नमः सम० ॥ ६ ॥

लक्ष्मी लोचन लक्ष्याङ्गं यत्करोति नरं वरं ॥ नमः सम० ॥ ७ ॥

चक्रिणां तीर्थ कर्त्तॄणां येनयाति पदं नरः ॥ नमः सम० ॥ ८ ॥

मुक्त्वायन्नापरं किञ्चित् योगिनो योग जन्म कृत ॥ नमः सम० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राचाराय महार्घं ॥

विधायेत्थं मया पूजां चारित्रस्य विशुद्ध धीः ।
करोमि पूर्ववत्सर्वं मर्घ्यादिकमनिन्दितम् ॥ १ ॥

स्तुत्वेति बहुधा स्तोत्रैर्बहु भक्ति परायणः ।
नानाभव्यैः समं लोके करोम्यानंद नाटनम् ॥ २ ॥

अलंकृतायेन सदाश्रयंति सत्साधवः सिद्धि वधूवरत्वम् ।
मालामुपक्षिप्य सुरत्न पूतां, चारित्र रत्नं परिपूजयामि ॥३॥

॥ रत्नांजलिः ॥

अन्तर्लीन मलीमस प्रसरजिल्लीलोल्ल सत्केवलं,
लोकालोकविलोकन, क्रमगुण, ग्रामैक शुद्धि नयत् ॥
येनालंकृत विग्रहाः, क्षणमपि; क्षीणा नरानिर्मला ।
नैर्मल्यं प्रतिपद्य शाश्वत तमं, वन्दे॰ चरित्रं च तत् ॥ ४ ॥

ततोऽपि गुरुणा दत्ता-माशिषं शिरसा सुधीः ।
गृह्णाति व्रतनिमुक्तोः मुक्तये व्रत कारकः ॥ ५ ॥

अनंतानन्त संसार कर्म विच्छिति कारकम्
देयाद्वः संपदः श्रीमच्चरणं शरणं नृणाम् ॥ ६ ॥

॥ मालिनी ॥

विरम विरम संगान्मुञ्च मुञ्च प्रपञ्चं, विसृजमोहं विद्धिविद्धि स्वतत्वं ।

कलय कलय वृत्तं पश्य पश्य स्वरूपं । कुरु कुरु पुरुषार्थं निर्वृतेः नन्द हेतोः ॥ ७ ॥

इत्याशीर्वादः

❀ जयमाला ❀

घत्ता–रयणत्तय सारउ, भव्व पियारउ, सयलह जीवह दुरियहरो ।
मुणियण गण महियउ, गुण गण सहियउ, मिच्छमोह मयणास करो ॥ १ ॥

पणवीस दोस वज्जिउ पवित्तु, अइयार रहिउ वसुगुण विजुत्त ।
अट्ठंगई णिम्मल विप्फुरंति, जो तिरहं देवत्तण विलिंति ॥ २ ॥

णारइयवि तित्थयरा हवंति देव वि ए इन्दिय पउ लहंति ।
जे मिच्छत्तय सम्मत्त हीण, दालिद्दय णासिय ते भणीण ॥ ३ ॥

मइ सुय अवही मणपज्जयाण, केवलु वि कहिज्जइ मइयवाण ।
अण्णाणे तिण्णइ भणइ जोइ, कुच्छिय मिच्छत्त जईण होइ ॥ ४ ॥

वोभुव णिम्मल पवणुवि असंग, परि अजिउ विकणयर मुत्ति संग
लोया लोहाविजयउ णियोइ बहु भेयह जउ चारित्त होइ ॥ ५ ॥

पंचाइ महव्वय समिदि पंच, गुत्तीउ तिण्णि पय जिय अवंच ।
पुण पंचायार तिभेय जुत्त, मुणि धम्म कहहि देविंद वुत्त ॥ ६ ॥

घत्ता–जिहिं तिण्णि णिरंतर चिरु, गहणमुणे मुइ, अंधउ आलस्सउपंगुलवि ।
जिणवर भासिय तिण्ण तरइ विणु, मुत्तिण मण्णइ गणपइ वि महार्थ ॥

इन्द्रवज्रा=दुरंत संसार वने विपन्ने, बम्भ्रम्यते येन विना जनोयं ।

भवाम्बुधौ तद्भुवि नामरत्नं, रत्नत्रयं नौमिपरं पवित्रं ॥ १ ।

अलक्ष्य लक्ष्य प्रतिबंधभेदी, योगीश्वरो यद्वशतः क्षणेन ॥ भवाम्बु० ॥ २ ॥

अनेक पर्याय गतेरभावाद्यस्मादनंतं लभते शरीरी ॥ भवाम्बु० ॥ ३ ॥

जनोभवेत्तं नजितान्तरंगं स्वर्गापवर्गामलसौख्यखानि । भवाम्बु० ॥ ४ ॥

तं नारकं दुःखमसह्यमस्मादुपासकानां विलयं प्रयाति । भवाम्बु० ॥ ५ ॥

प्रभावतो यस्य पृथग्जनौघाः स्वर्गाधिपत्यं क्षणतो लभंते । भवाम्बु० ॥ ६ ॥

हत्वा विघ्नानि सर्वाणि यानि कानिपुरा कृतैः ।

सम्यग्रत्न त्रयं पूतं, मंगलं वितनोतु वः ॥ ७ ॥

नरामरं कृतानेकैरुपसर्गं निवारकैः । सम्यग्रत्न० ॥ ८ ॥

विपत्संपति नाशाय संपत्संपत्ति कारणम् ॥ सम्यग्रत्न० ॥ ९ ॥

तुष्टि पुष्टि करं नित्यं, सर्व रोगापहारकं ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १० ॥

यदारिद्रय महावल्ली दहनैक दवानलं ॥ सम्यग्रत्न० ॥ ११ ॥

संकल्पि कल्पितानेक दान कल्प द्रुमोपमं ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १२ ॥

यद्भाः शुद्धि सामान्यं, दुर्लभं द्रव्य कोटिभिः ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १३ ॥

मंगलानां हि सर्वेषां, यदेवामल मंगलं, ॥ सम्यग्रत्न० ॥ १४ ॥

दुर्निवादि महादोष, निवारणं परापरं, कुर्वन्तु जगतः शांतिं, जिनश्रुत मुनीश्वराः ॥ १५ ॥

सम्यक्त्वं पूजकानां हि प्रयच्छंत्यनघं पदं । कुर्वंतु० ॥ १६ ॥
यस्य स्मरणमात्रेण विघ्ना नश्यंति मूलतः । कुर्वन्तु० ॥ १७ ॥
पदार्थान्लभतेप्राणी यत्प्रसादैः प्रसीदतः । कुर्वन्तु० ॥ १८ ॥
दृष्टाः पृष्टाः स्मृताः संतो येनंतसुखदायकाः । कुर्वन्तु० ॥ १९ ॥
देवाराध्यका निर्ग्रंथा, नजेपास्त्रिदशैरपि । कुर्वन्तु० ॥ २० ॥
सिद्धा बुद्धा विशुद्धा ये प्रसिद्धा जगतां त्रये । कुर्वंतु० ॥ २१ ॥
नानागुण महारत्ना-लंकृता निरलंकृताः ।
कुर्वन्तु जगतः शांतिं जिन श्रुत मुनीश्वराः ॥ २२ ॥

विसर्जन मंत्र ॥

❀ सप्त ऋषि पूजा ❀

श्रीमद्गणेन्द्र हिमवन्मुख निर्गतायां, मुनि प्रवरसरिति चारू विनिर्गतायां,
स्नातानेक विधि धर्म तरंगिकायां, योगीश्वराननघरत्नधरान्समर्चे ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण योगीन्द्र स्थापनार्थं सुमनाञ्जलि क्षिपेत् ।

॥ श्री दक्षिण योगीन्द्र पूजन प्रतिज्ञा ।

त्रिपथगा यमुनाजघनर्मदा, प्रभृति पुण्य जलाशयजैर्जलैः ।
सुजन चित मधुव्रत रंजित, गुरू पदाम्बुज युग्ममहंयजे । जलम् ॥

सुरभिताखिल दिङ्मुख नंदन प्रभव चंदन सौरभहारिभिः ।
परिमलोत्कट कुंकुम चंदनैश्चरणयोर्गुरु पूजनमारभे ॥ चन्दनम् ॥

विगत खंडमुखैर्धवल प्रभैः कमलबीजमयैर्विधृतातैः ।
अति नवैरिव पुण्यलवैर्भजे, पुरुवरांघ्रि सरोजयुगं शुभम् ॥ अक्षतं ॥

विकसनोत्तमवासविलोभितैरविकृतैर्भ्रमरालि निसेवितैः
शुचितरैः कुसुमैरहमादरात्–परिचरामि पदे परमं गुरोः ॥ पुष्पम् ॥

पृथु मंडन भाजनगैः शिवै, श्चरुवरैर्घृतपूर सुपूरितैः ।
अमृतजैरिव पिंड चयैर्यजे, मुनिवर क्रम पंकजमुत्तमम् ॥ नैवेद्यं ॥

मंडित सुप्रभयोत्प्रभतारका–वलिकयेव सुदीपक मालया ।
अरुण गगनरवांशुसमुज्ज्वलं, परिचरेम्बुज पाद युगं गुरोः ॥ दीपम् ॥

अविरलैरप धूपकृशानुजै, गगनजैर्वर धूप समुच्चयैः ।
अगुरुजैर्हरिचंदन गंधिभिर्गतिपते पदवारिजमर्चये ॥ धूपम् ॥

नयन भृंग महोत्सव कारिभिः परिणतैः सुधयेव विनिर्मितैः
मधुर चित्ररसैर्विविधैर्फलैः कृतमनो विजयं जयमर्चये ॥ फलम् ॥

विद्या सागर पार दर्शन वराः : काष्ठान्वयोद्योतिनः ।
स्वानंदं परमंगताः कृततपो–ध्यानाः कृपाम्भोधनाः ॥

येव प्राक्तनकर्म दाव दहने मेयामहेन्द्राभिधं
कीर्तिमामनुकंपयंतु गुरवः, पुष्पाञ्जलिः प्रार्थिताः ॥ अर्घं ॥

इति दक्षिणयोगीन्द्र पूजा ॥

॥ अथ वाम योगीन्द्रार्चनम् ॥

योगार्यमोदय बलेन निहत्य दूरं. मोहान्धकारमखिलं नयनानुरोधं ॥
यैः संयतैः सकल वस्तुमयो हि लोको, दृष्टस्वदंघ्रियजनं वरमत्रकुर्वे ॥
ॐ ह्रीं वाम योगीन्द्र स्थापनार्थं पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्

॥ श्री वाम योगीन्द्र पूजन प्रतिज्ञा ॥

परम गंधमनोहर शी करेण्याद्यष्ट कं देयं ॥ इति वाम योगीन्द्रपूजा ॥

प्रथमः सुर मन्युश्च, श्रीमन्युर्हि द्वितीयकः ॥
अन्यः श्री निचयोनामा, तुरीयः सर्व सुन्दरः ॥
पंचमो जयवान् ज्ञेयः षष्ठोविजय लालसः
सप्तमो जय मित्राख्यः सर्वे चारित्र सुन्दराः ।
चारणर्द्धि समरुढाः वसुवुर्ये मुनीश्वराः ॥
स्थापयित्वा प्रपूज्येहं, तान्मुदा शांति हेतवे ।
इत्युच्चार्य लिखितनां सप्तर्षिणामुपरि कुंकुमाक्षतानि विक्षिपेत् ॥

(उक्त श्लोक पढ़कर सप्त ऋषि की स्थापना के लिये पुष्प तथा अक्षत क्षेपण करें)

॥ अथ प्रत्येक पूजा ॥

श्री सत्सुचारित्र विभूषितंयं, तपोनुभावावत व्योममानं ।
आद्यं मुनिनां भव संख्यकानां, समाह्वयेत्तं सुरमन्यु संज्ञं ॥

ॐ ह्रीं सुरमन्युषे अत्रावतरावतर संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
अत्र मम सन्निहितोभव २ वषट् सन्निधिकरणम् ॥
ॐ ह्रीं सुरमन्यु ऋषये जलम् । गंधं, इत्यादि सर्वत्र प्रयोज्यं ॥

इस प्रकार ॐ ह्रीं इत्यादि मन्त्र पढ़कर अलग २ आठों द्रव्य चढ़ावे । एवं आगे भी इसी प्रकार सातों ऋषियों की अलग २ स्थापना कर के मन्त्र पढ़ कर आठों द्रव्य चढ़ावे ।

नैकव्रतो यस्य बभूव लोको, निरामय सत्यतपोधनस्य ।
श्रीमन्यु रित्याख्य तया द्वितीयं, तमाह्वये शांति करं नराणाम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्यु ऋषये अत्रावतरावतर इत्यादिना स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्रीमन्यु ऋषये जलं इत्यादि ।

ध्यानाग्निदग्धाऽशुभकर्मकक्षं, निः संगवृत्तं बहुशील पात्रं ॥
प्राज्ञं बुधानां सुखदं प्रजाया, आरोग्यये श्रीनिचयं तृतीयं ॥

ॐ ह्रीं श्री निचय ऋषये आत्रावतरावतरेत्यादिना स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री निचय ऋषये जलमित्याद्यष्टकं देयं ॥

अनेकधा संयम तोयसेकैस्तपो नगो यस्य सुधर्मशास्त्र ।
आर्षैः फलैः संकलितस्तुरीयं, संस्थापये सुन्दरमादि सर्वम् ॥

ॐ ह्रीं सर्व सुन्दर ऋषये अत्रावतरा वतरेत्यादि ।
ॐ ह्रीं सर्व सुन्दर ऋषये जलमित्याद्यष्टकं देयं ॥

वचो यदीयं बहु भव्यसंघं, प्रमोदयामासजिनेशमार्गे
ऋषि गणेशागमनेत्र निष्ठं, सः पंचमःसंजयवान ऋषिणाम्

ॐ ह्रीं जयवान् ऋषये अत्रावतरावतरेत्यादि
ॐ ह्रीं जयवान् ऋषये जलमित्याद्यष्टकं देयं ।

मेधागमे यो मथुरा नगर्यां, न्यग्रोधमूलेसह परमुनीन्द्रैः ।
संस्थाप्य रम्याम्बर चारणर्द्धिं संस्थाये वैनयलालसं तं ॥

ॐ ह्रीं विनयलालस ऋषये अत्रावतरावतरेत्यादि० ॥
ॐ ह्रीं विनयलालस ऋषये जलम् । इत्यादि अष्टकं देयं ।

यन्नामतो माथुरसर्व लोको, विमुच्य रोगान् बहु दुःख देयान् ।
सुखी हृषीक बहुधा प्रपद्यं, त्वमेव शान्त्यै जयमित्र संज्ञं ॥

ॐ ह्रीं जयमित्र ऋषये अत्रावतरावतरेत्यादि ॥
ॐ ह्रीं जयमित्र ऋषये जलम् इत्याद्यष्टकं ॥

❀ समुच्चयाष्टकम् ❀

अंभोभिरंभो जयरागमिश्रै, रोते वसुग्रैर्यः निस्समानैः

अमर्त्य मंथादि मुनीश्वराणाम् प्रक्षालयामो वरपादपद्मम् ॥

ॐ ह्रीं सप्तर्षिभ्यो जलम् यजामहे स्वाहा ।

सुचन्दनैश्चन्द्रगतैश्चशीतैः ऋषीश्वराणां वचनानुगीतैः ॥ अमर्त्य मं० ॥ चन्दनम् ॥

ब्रह्माक्षतै निस्तुष धौतरम्यैः, नासाक्षि सौद्गत्यकरैश्चदीर्घैः ॥ अमर्त्य० ॥ अक्षतम् ॥

तपः प्रभावाजितकाम त्यक्तैर्गतानुमोदैरिव पादलग्नैः ॥ अमर्त्य० ॥ पुष्पम् ॥

त्यक्तं यतीशैरिवसर्पिपूर पूरःस्थितं भाति रसैः समृद्धम् । अमर्त्य० ॥ नैवेद्यम् ॥

तपः प्रदीप्यैव विनिर्जितायौ, प्रदीपिका सेवितुमागतांस्तान् । अमर्त्य० ॥ दीपं ॥

वैराग्य भावेन निवेषितायौ, मुनीश्वरैस्तानपिधूप धूम्नान् । अमर्त्य० ॥ धूपम् ॥

आसादितारंग सुमोच मोचै रन्यैनूनै र्बहुभेद युक्तैः । अमर्त्य० ॥ फलम् ॥

सद्वत्तामलरत्न भूषण भृतां सत्संयतानां वराम्

इज्या सज्जल चन्दनाक्षत चयैः पुष्पाक्ष संदीपकैः ।

धूपैर्दिव्यफलैर्सुभक्ति मनसो, ये कुर्वते तेनराः ।

सर्वोपद्रव व्याधिभेद रहिताः यान्त्येवसौख्यं परम् ॥ अर्घं ॥

ॐ ह्रीं सुरमन्यु ऋषये नमः । ॐ ह्रीं श्रीमन्यु ऋषये नमः । ॐ ह्रीं श्री निचय ऋषये नमः ।

ॐ ह्रीं सर्व सुन्दर ऋषये नमः। ॐ ह्रीं जयवान् ऋषये नमः। ॐ ह्रीं विनयलालस ऋषये नमः।
ॐ ह्रीं जयमित्र ऋषये नमः॥ एभि मंत्रै जाप्यं कुर्यादर्घंचापि समुद्धरेत् ॥

(स प्रकार ७ जाप्य देकर अर्घ चढ़ावे)

॥ जयमाला ॥

ऋषिनिकर महं सारं, नाकेश्वर सकल सौख्य दातारं ।
ईज्ययति गुण हारं, निर्मलध्यानाग्नि दहति संसारं ॥ १ ॥
अयमनिराश, जित चित्तदोषगतकर्मपाश ।
जय जयनिष्काम, संयत सुरमन्यु सुसौख्य धाम । २ ॥

भावित सुभाव, निर्नाशित पीन समेश्वराव । श्री मन्युदेव, जयविहित दविश्वरस्वचर सेव । ३ ॥
श्रीनिचयनोसि, सुखदातानिर्मलगततमांसि । नष्टानिचेही, जय बोधिसतो मे देवदेही ॥ ४ ॥
निखिलैर्नतोसि लोकैर्भक्त्या जय तव तपांसि । जनतापहानि, सर्वादिसुन्दर सौख्यदानी ॥ ५ ॥
चारित्रवीर, विद्यापितकामानल सुधीर । जयवान ऋषीश, जयमोह नाम विषनाग विष ॥ ६ ॥
दुर्गोपसर्ग, दूरीकृत तर्पितभव्यवर्ग । तत्त्वार्थ भाव, वैनयलालस जय निरभिलाष ॥ ७ ॥
ज्ञानोघ गेह वरचारणद्धिभूषित स्वदेह । नष्टोरुरोग, जय जय जयमित्र सुत्यक्त भोग ॥ ८ ॥

घत्ता=इति जयमाला, भक्ति विशाला, येपठंति भविषणनराः ।
ते सर्विसुखसक्ता, गुण गण रक्ता, यातिसुख बहु विघ्नहराः ॥ महार्घं ॥

येषां संग समुद्य मुद् गतमहाघाताच्चसंपूर्णितो. वंधो भूरि नरादि कालनिचिते भुक्तकर्मणां क्लेशदे । तेभ्यो भव्यजना तपोधन चराः सप्तर्षि संज्ञाभृतो । नित्यं पुत्र कलत्र धान्य धनदा कुर्वंतु वोमंगलं ॥

इत्यापिर्वाद ॥

॥ श्री अनंत व्रत पूजन विधान ॥

प्रणिपत्य महावीरं, वक्ष्ये पूजा विधानकम् ।
अनंत व्रततत्वस्या,–नंत सौख्यस्य सिद्धये ॥ १ ॥

चतुर्दशं तीर्थकरेषुवंद्यं, समाह्वयाम्यत्र जिनेन्द्रवर्यं ।
अनंतनाथं जित मोह मारं, चतुष्टयानंत विभूषितांगं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री रिषभ नाथ तीर्थंकर अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री रिषभ नाथ तीर्थंकर अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्री रिषभ नाथ तीर्थंकर अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(ऊपर का श्लोक पढ़ कर इसी प्रकार चौदहों पुजाओं में अलग २ भगवान की स्थापना करे)

॥ अनंत यंत्र स्थापित करे ॥

देव सिन्धु यमुनादि संजलैः सुरभिवस्तु मिश्रितैः ।
पावनैरमृतसौख्यदायकम् तीर्थ नाथ वृषभं यजाम्यहं ॥ जलम् ॥

गंधलुब्ध मधुपैः सु चन्दनैः, कुंकुमाक्त घनसार मिश्रितैः ।
जन्म मृत्यु भव ताप हारकैस्तीर्थनाथ वृषभं यजाम्यहं ॥ चन्दनम् ॥

कुंद चन्द्र कर हार शुभ्रकै, स्तन्दुलैः सुरभि शालि संभवै ।
देव मानव मुनीन्द्र सेवितम्–तीर्थनाथ ..... । अक्षतम् ॥

मालती कमल कुंद केतकी, पाटला बकुल चम्पकोदगमैः ।
काम कुंजर निपात तोद्यतैस्तीर्थनाथ ..... ॥ पुष्पम् ॥

पायसाज्य घृत पक्व पूरिका, घेवरोदन सुशाकक्वान्वितैः ,
पावनैश्चरुभिरिष्ट सिद्धये, तीर्थनाथ ..... ॥ नैवेद्यम् ॥

मोहतामस हरैः शिखोज्ज्वलै–श्चंद्रवर्ति घृत तैल निर्मितैः ।
दीपकै र्विमल केवलीश्वरम् तीर्थनाथ ..... ॥ दीपम् ॥

कर्म काष्ठ दहने हुताशनं, चंदनागुरुसुधूपधूम्रकैः ।
गंध व्याप्त दश दिक्प्रदेशकैः तीर्थ नाथ ..... ॥ धूपम् ॥

मोच चोच कदली सुमाधवी पूगचिर्भट सुचूतसत्फलैः ।
नासिका नयन चित्त तोषदैः, तीर्थ नाथ ..... ॥ फलम् ॥

पानीय चन्दनवरोद्गम तन्दुलोघैः, नैवेद्य दीप शुभ धूप फलार्घ पादैः ॥
सं पूजयामि वृषभं जित मोह मल्लं, श्री नाभिराज तनुजं जयकीर्ति धारम् ॥ अर्घं ॥

❀ जयमाला ❀

रिषभ जिनेन्द्रं गतभवतन्द्रं, सुर नर पूजित पद कमलम् ।
भवजलधारं दुःख विदारं, मनः सुसिद्धयै गुण विमलम् ॥ १ ॥

भुवि पाप तमो भव बाल दिनं, भुवनत्रय पूजित पाद जिनं ।
वृषभं प्रणमामि जिनेन्द्रवरं, शिव सौख्य सुधारस पान करं ॥ २ ॥
शतपंचक चापसु दीर्घ तनुं, शुभ लक्षण हाटक वर्ण तनुं । वृषभंत्र, ॥ ३ ॥
नृप नाभि कुलाम्बर चन्द्रनिभं, मरु देवि मसुद्भव रत्न विभं । वृषभं ॥ ४ ॥
धन देव विनिर्मित कोष्ठसभं, जिनकांति विनिर्जित तिग्म विभं । वृषभं, ॥ ५ ॥
शत शक्र समर्चित पाद कजं, रज भूमिनिपातितमानसजं । वृषभं० ॥ ६ ॥
वचनामृत तर्पित भव्य जनं, गगनांगण दुंदुभिनाद घनं । वृषभं. ॥ ७ ॥
निज दर्शनजीव कुवैरी हरं, शत योजन सौम्य सुभिक्षकरं । वृषभं. ॥ ८ ॥
अतिमायितमानव देव भरं, भुवनातिग संस्थित मुक्तिवरं । वृषभं. ॥ ९ ॥

घत्ता—जय वृषभ जिनेन्द्रं ध्वनिघन केन्द्रं, जन्म जरान्तक भय हरणं ॥
त्रिभुवनमणि भूषं, गतघन दूषः जयकीर्ति विद्धि हि शरणम् ॥ १० ॥

॥ श्री अजित नाथ पूजा ॥

त्रिपथगामृत सागर वारिणा, सुरभिवस्तुसु शीतल कारिणा ।

जनन मृत्यु जराभय हारिणा, परियजे ऽजितनाथमहं श्रियैः ॥ जलम् ॥

प्रचुर कुंकुम पंक विमिश्रितै, मलय पर्वत संभव चन्दनैः ।

विविधताप हरै भुवनाधिपं, परियजे०····· ॥ चन्दनम् ॥

सुरभि शालिज तंदुल पुंजकैः कुमुद, वल्लमहार हिमोज्ज्वलैः

[illegible] ॥ अक्षतम् ॥

विकसिताब्ज सुकैरवमल्लिका, बकुल चंपक मोगर पुष्पकैः ।

मधुर गंधसमाहृतषट्पदैः परियजे०····· ॥ पुष्पम् ॥

कटक घेवर मोदक पूरिका; बहुल पायस गव्य वरोदनैः ।

नयनचित्तहरैर्मधुरैर्नवैः परियजे०····· । नैवेद्यम् ॥

शशि दिवाकर धामसमानकैः, परमकांति तिरस्कृततामसैः ।

सुघनसारविनिर्मित दीपकैः परियजे०····· ॥ दीपम् ॥

अगुरु चूर्ण सु चनदन धूपकैः विगतधूमसु पावक संगतैः ॥

सजल नीरद पंक्ति समानकैः, परियजे०····· ॥ धूपम् ॥

क्रमुक जंभल निम्बुक चोचकैः, प्रमुख कानन मध्य समुद्भवैः ॥

सुरभिपक्व फलैनयन प्रियैः परियजे०····· ॥ फलं ॥

विमल सलिल धारा, गंधपुष्पाक्षतोघैः,

विविध चरूभिरुद्यद्दीप धूपैः फलोघैः ।

अजित जिनवरेंद्रं पूजयाम्यर्घ्यदानैः
सकल विमल बोधं श्री : याद्यंत कीर्तिः ॥ ९ ॥ अर्घं ॥

॥ जयमाला ॥

विगत मल कलंकं, विष्टपेशं विशंकं,
धृतं चरण सुभारं, प्राप्त संसार पारं ।
हत मदन मदेभं, स्वीकृतापेन्द्र शोभं,
विनमित सुरनाथं, कीर्तये लोक नाथं ॥ १ ॥

केवल नयन विलोकित लोकं, ध्वस्त पापरिपु जनित कुशोकं ।
अजित विजित कर्मारि समूहं, वन्दे सुनुतसु सुर नर व्यूहं ॥ २ ॥
ध्यानानल भस्मी कृत कामं, शरणागत केवल विश्रामं ॥ अजितवि० ॥ ३ ॥
प्रशम बाण हतकर्म कठारं, निजमत निर्जित परमत घोरं ॥ अजित० ॥ ४ ॥
श्री जितशत्रु महीपतिनुजं, विजयादेवी मोहित मनुजं ॥ अजित० ॥ ५ ॥
गगनान्दोलित चामर वृन्दं, शिरसि धृतच्छत्र त्रय बंधं । अजित० ॥ ६ ॥
रत्न त्रय संयम शुभचित्तं, मुक्ति वधूरस लिप्त सुचित्तं । अजित. ॥ ७ ॥
सूर्य कोटि भामण्डल भासं, दयाकलानिधिविमलाकाशं । अजित. ॥ ८ ॥
वचनामृत तर्पित गुण तानं, मानस्तंभ दलित परमानं, । अजित. ॥ ९ ॥

आयुः सप्तति पूर्व सु लक्षं, संस्तुत साकेतापुर रत्नं ॥ अजित. ॥ १० ॥

मालिनी=अजित जिनवरयोन्मुक्ति कांतावरस्य
विरचित जयमालां, भावपुष्पै विशालां ।
पठति विमल भक्त्यायो जनः शुद्ध चेताः,
स भवति भवमुक्तः श्री जयार्यत कीर्तिः ॥ पूर्णार्घम् ॥

॥ श्री शंभवनाथ पूजा ॥

गंगा नीराम्बितोयैर्मुनि वचन समैर्धर्मतापाप नोदैः ।
सद्यः तृष्णा प्रहारैः कलिमल हरणैः शुद्ध कर्पूर गौरैः ॥
श्रीगर्भोऽजन्मदीक्षा, समवसृति सभा केवला लोककाले ।
सेव्यं देवेन्द्र वृन्दैः जिनपतिममलं संभवं पूजयामि ॥ जलम् ॥ १ ॥
अन्तः पापापनोदैर्मलयवन भवैश्चन्दनैः केशराढ्यैः ।
गंधाकृष्टेभ कुंभस्थल गत मधुपै, र्घ्राणपैर्यैर्नराणाम् ॥ श्रीगर्भो० ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥
शुभ्रमुक्ताफलाभैर्हिमशशिकिरणोद्भासुरैः शुभ्रवर्णैः ।
प्रोद्यत्कुन्दावदातैः शकलविरहितैर्गंधशालेयपुंजैः ॥ श्रीगर्भो० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥
मन्दारैः पारिजातैर्बकुल कुवलयैश्चम्पकैश्चारुगंधैः ।
संतानैः पाटलाद्यैर्विकसित कुसुमैः सिन्धुवारैरनिन्द्यैः ॥ श्रीगर्भो० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

नव्यै गंध्यैः पवित्रैश्चरुभिरतितरां व्यंजनैर्गंधवद्भिः ।

नित्यं वाष्पायमानै, घनरस निचितैः सूपशाल्योदनाज्यैः ॥ श्रीगर्भो. ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

कर्पूर व्रातजातैः किमुरवि किरणैः केवलज्ञान तुल्यैः

दीपैर्ध्वस्तान्धकारैः कनक मणिमयैः पात्रमध्याधिरूढैः ॥ श्रीगर्भो० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

धूम्रैः कृष्णागुरूत्थैः सुरपति कमलं शीघ्रमाकृष्टुकामै-

र्भ्राम्यद् भृंगार नोद्यैरिव पवन वशात् प्रोच्छ्रिये व्योममार्गैः ॥ श्रीगर्भो. ॥ धूपम् ॥

मोचा चोचाम्रराजादन पनसतं सन्माधवी लातुलिंगैः ॥

जम्बीराचोट पूगादिकफल निवहैर्मुक्ति कान्ता कुचाभैः ॥ श्री गर्भो० ॥ फलम् ॥

पाथोगन्ध प्रसूनाक्षत शुभचरुभिर्दीपधूपैर्फलौघैः ।

दूरीभूतोग्रबन्धं त्रिविधरिपुजयोत्कीर्तये रत्नभूषं ॥ श्री गर्भो० ॥ अर्घं ॥

❀ जयमाला ❀

चतुस्त्रिंशदतिशयै, रष्ट प्रातिहार्यकैः ॥

भूषितं संभवस्तौमि धृतानंतचतुष्टयम् ॥ १ ॥

निखिलामर पूजितपादकजं, व्रतकेशरि संहत कामगजं ।

प्रणमामि भवोदधिनीरतरं, जिन संभवमंहः पुन्जहरं ॥ १ ॥

भवदुःख दवानल मेघ जलं, हतमोह महारिपु दुष्ट बलं । प्रणमामि० ॥ २ ॥

अच्छाय निमेष सुदेहधरं, धृत शुद्ध सुसंयम भारधरं ॥ प्रणमामि० ॥ ३ ॥

नख केश विवर्धन संरहितं, विविधर्द्धिविभूषण संसहितं ॥ प्रणमामि० ॥ ४ ॥

सकलामय वर्जित संवपुशं, कनकोज्ज्वलतूर्यशतं धनुषं ॥ प्रणमामि० ॥ ५ ॥

सुशतोत्तर पन्च गणेश नुतं, सुर मानव चर्चित कीर्ति युतं ॥ प्रणमामि० ॥ ६ ॥

वचनामृततोषित भव्य जनं, फल पुष्प सुपल्लव नम्र वनं ॥ प्रणमामि० ॥ ७ ॥

भुवने कुमताख्यतमस्तरणं, विगताश्रय देह भृतां शरणं ॥ प्रणमामि० ॥ ८ ॥

मालिनीछंद–परमगुण निधानं, कर्म वल्ली कुठारं, ।

त्रिभुवनपति सेव्यं सर्व लोकप्रदीपम् ।

दुरित तिमिर भानुं संभवं संदधेहं ,

मनसि विगत सेव्यं, श्री जयाद्यंत कीर्तिः ॥ ९ ॥ पूर्णार्घं ॥

॥ श्री अभिनंदननाथ पूजा ॥

विविध जन्म जरान्तक शांतये, त्रिविधया मलया जल धारया ॥

शिशिरसीकर जालहृतां हृषा, समभिनंदन पाद युगं यजे ॥ जलं ॥ १ ॥

अतिहिमैर्हरि चन्दन घर्षजैः पटलितैर्वरगंधसुचन्दनैः ।

अहुर दारुचयेकं विभावसुं समभि० ..... ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

विलसदक्षत धाम लतांकुर प्रकर बीजमयैः सितमाक्षतैः
रुचिकरै र्भव दारुणता हरैः समभि०····· ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
रतिमिवारचयद्भिरलिव्रजै-र्मधुर गुंजित कैतकतानितैः
बकुल चंपक मोगर पंकजैः समभि०····· ॥ पुष्पं० ॥ ४ ॥
वितुषशालिज भक्त मयैर्नवै, श्चरुभिराचित पाचित संस्तुतैः ।
बहुविधैर्विमलैर्घृत पायसैः, समभि०····· नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
मणिगणैः प्रभयाजिततारकैः रविसुरालयजैस्तिमिरापहैः ।
परिसर प्रसृत प्रभदीपकैः, समभि०····· ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
सुरपतेः श्रियमाव्रजितुं जनादवनितोऽम्बर मध्यगजैरिव
विततधूमभिषेणसुधूपकैः समभिपंदन०····· ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
अमृतजैरिव रत्न रसायनैः सुभतमैर्वर मोद विधायकैः
फलवरैर्फलवत्फल लब्धये, समभिनं०····· ॥ फलं ॥ ८ ॥
सलिल चन्दन पुष्प सुतंदुलै-श्चरु सुदीप सुधूपफलोच्चयैः ।
प्रवरभक्ति चयोपहृतैर्मुदा, समभि०····· ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

❀ जयमाला ❀

आर्याछंद-अभिनंदनमघहारं, भुवन त्रय वन्द्य सौख्य दातारम् ।
नौम्युज्वल गुण धारं, ध्यानानल दग्ध संसारम् ॥

विबंध निसंध विरोध विदोष, विकाय विमाय वितोष विशोष ।

सुरोरग नेत्रसदाकृतसेव, जयाभिसुनंदन तीर्थ सुदेव ॥ १ ॥

विरोग विभोग वियोग विदेह, विपुत्र विशत्रु विहङ्ग विगेह ॥ सुरोरग. ॥ २ ॥

विमंत्र वियंत्र वितंत्र विगंध, विरोध विशोध विबोध विरंध्र ॥ सुरोरग० ॥ ३ ॥

विनेत्र विमित्र विशत्रु विदार, विमृत्यु विभृत्य विनृत्य विभार ॥ सुरोरग० ॥ ४ ॥

विचित्त विवित्त विपस्त्व विमोह विशंस विदंश विवंश ॥ सुरोरग० ॥ ५ ॥

विभास विपास विदास विलोक, विकेश विदेश विवेश विशोक ॥ सुरोरग० ॥ ६ ॥

विदान विमान विपान विगीत, विधर्म विकर्म विशर्म विभीत ॥ सुरोरग० ॥ ७ ॥

घत्ता:–अभिनंदन जिनवर, मुक्ति वधूवर, नाशित कर्म कलंक भर ॥

जयकीर्ति सुखाकर, धर्मदयाधर, जय जय भवजल नीरतर ॥ ८ ॥ महार्घं ॥

❀ श्री सुमति नाथ पूजा ❀

सुरवास समुद्भूतैस्तोयैः कर्पूर वासितैः ।

हेमभृंगार नालस्थैः सुमतिं प्रार्चयाम्यहं ॥ जलम् ॥ १ ॥

सुगन्धद्रव्यसम्मिश्रै श्चन्दनैर्मलयोद्भवैः ।

मृगाक्षवास घृष्टैश्च, सुमतिं..... ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

अक्षतैः शालि संभूतै रुज्ज्वलैश्चन्द्र संनिभैः ।

कुशमाक्षालितक्षारैः, सुमतिं..... ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

केतकी पारिजातैश्च: चम्पकैश्चीम रंजुकैः, ।

मन्द कुन्दोद्भवैः पुष्पैः सुमतिं..... ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

नानाविधैश्च पक्वान्नैः, सद्यस्तन घृतोद्भवैः

विशिष्टैर्मोदकैर्वर्यैः, सुमति ..... ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

हेमकाञ्चन स्थानैः, दीपैर्दीप्तप्रभाभरैः

त्रिपुलः लोक कैर्दीपैः सुमति ..... ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

कृष्णागुरु भवै रम्यैः धूपैर्वासितदिङ्मुखैः

धूम्रमाला विलासाढ्यैः, सुमति ..... ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

नारिकेलादि नारंगैः, कपित्थैर्बीजपूरकैः ।

क्रमुकाम्र फलैर्भव्यैः सुमति ..... ॥ फलम् ॥ ८ ॥

नीरैश्चन्दन संयुतैः सुकुसुमैः, शाल्यक्षतैरक्षतैः ।

नानाज्यादि सुपक्व गंधसहितैः नैवेद्यसार व्रजैः ।

भास्वद्दीपसुधूपसंयुत फलैरर्चंतियेनित्यशः,

स्तेवै वांछित प्राप्नुवंतिसततं, जयकीर्ति चन्द्रोपितम् ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

राज्यंराज्य गजादि; कामकमला, गेहं तुरङ्गान्वितम् ।

यः श्रीमानमिरूप वस्तु निचितं, त्यक्त्वाचितौ सर्वतः ॥

श्रामण्यं समवाप केवल मयं, ज्योतिः परं प्राप्तवान्,

अर्हन्तो सुमतिं प्रयच्छतुतरां तीर्थेश्वरः सोऽधुना ॥ १ ॥

गुण गण भूषितज्ञान करंडं, संसाराम्बुधितरणतरंडं ।

वन्दे प्रशमित कुनय समूहं, सुमतिप्रदलित कर्म समूहं ॥ २ ॥

गर्भाधानेहरिशत सेव्यं, दिक्कुमारिकृतमातृनिषेवं । वन्दे प्रश० ॥ ३ ॥

मेरुशिखरकृतजनुरभिषेकं, रोधः प्रसरित कीर्ति निषेकं । वन्दे० ॥ ४ ॥

त्रिभुवन जन नयनोत्पल चन्द्रं, ध्यानाध्ययनविनिर्जित तन्द्रं ॥ वन्दे० ॥ ५ ॥

रुधिर दुग्धचित चर्मसुपात्रं व्यंजन लक्षण लक्षित गात्रं ॥ वन्दे० ॥ ६ ॥

वज्र वृषभ नाराच शरीरं, समचतुरस्राकार गंभीरं ॥ वन्दे० ॥ ७ ॥

मलवर्जित समभाव स्वरूपं, निस्वेदं ज्ञानामृत कूपं ॥ वन्दे० । ८ ॥

षट् चत्वारिंशद्गुण गौरं, कौसलपुर परिपूरित पौरं ॥ वन्दे० ॥ ९ ॥

दुर्धर योग चरित्रसुधरणं, कृतसम्मेदाचल शिखरणम् ॥ वन्दे० ॥ १० ॥

मालिनीच्छंदः—अनुपम सुखकर्ता, दुःख संतप्तहर्ता,

प्रहत जनन कालः, स्फोटित ध्वान्त जालः ।

स जयतु जिन नाथः पंचमः प्राञ्जितात्मा,

सकल विमल मूर्तिः, श्री जयाद्यंत कीर्तिः ॥ महार्घं ॥ १ ॥

॥ श्री पद्म प्रभ पूजा ॥

विलिम्प पति वाहिनी, प्रभृतितीर्थ रम्योदकैः,
सुरेन्द्र वचनोपमैः सुघनसार संवासितैः
अमेयमहिमाकरं विकच पद्म भासां निधिं
महामिसुर सेवितं जिनवरेन्द्र पद्मप्रभं ॥ जलम् ॥ १ ॥

प्रभूत मलयोद्भवैः सरस केशरालि श्रितैः
मिलिन्द निकरोद्भवत्सरस रम्य झंकारकैः ॥ अमेय० ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

तुषार हेम कुकास सिधरी श्रुकोज्वलैः,
सुगंधवन शालिजैः सुहिमुषित बीजाङ्कुरैः ॥ अमेय० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

कदम्ब सुख मल्लिका बकुल कुंद नीलोत्पलैः,
मेरु कुसुमोत्करैर्विकच सिन्धु वाराम्बुजैः ॥ अमेय० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

विराज्य परिपचितैर्घटक सूप शाल्योदनैः
क्षुधाभयनिवारकैर्विमल हेम पात्रस्थितैः ॥ अमेय० ॥ नैवेद्यं ॥ ॥ ५ ॥

दिगंत तिमिरापहैः मिहिर कोटि राशी प्रभैः
प्रबोधनिकरैरिव स्फुरित दीप रत्नैः रत्नैः ॥ अमेय० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

मिलिन्द सुख कारणैरगुरु संगधूपोद्भवैः
रदभ्रगुरुधूपकैर्निचित सर्व काष्ठाम्बरैः ॥ अमेय० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

रसाल फल कंदली क्रमुक चोचराजादनैः

महामधुर माधवी फल सु चित्रपूगदितैः ॥ अमेय० ॥ फलम् ॥ ८ ॥

पयः सुरभिपुष्पकेशरूभिरक्षतै दीपकैः

फलैस्तुलधूपकैः जयति कीर्ति संकीर्तितम् ॥ अमेय० ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

घत्ता–जयवीर दयाकर, गुणरत्नाकर, सुखकर निर्मलशीलधरं ।

जिनकमलदिवाकर; कलिमल हरजिन, पद्मप्रभ शिव नारी वरं ॥ १ ॥

अजरामर केवलं लब्धिधर, शिवसौख्य सुधारस पानकरं ।

प्रणमामि भवोदधिपारकरं, जिनपद्मन विभासुर नादवरं ॥ २ ॥

पमसंयम भावकमारधरं, शतयोजनसौम्य सुभिक्षकरं; ॥ प्रणमामि० ॥ ३ ॥

कलि कल्मष पंक सुशौचकरं, भवनार्जितगद्यसुवर्णधरं ॥ प्रणमामि० ॥ ४ ॥

निज भासुर भानु सहस्र रुचि, कुतदुर्धर काम कलत्र शुचिं ॥ प्रणमामि. ॥ ५ ॥

अभिमान महोरुह तोदकरं, गुणरत्न नदीपतिसारतरं ॥ प्रणमामि० ॥ ६ ॥

सविवेक गृहं हत मृत्युमदं, कुमतान्धतमोपहध्यानपदं ॥ प्रणमामि० ॥ ७ ॥

कमलांकितसुन्दर देहधरं, कमलावलि सेवित बोधमरं ॥ प्रणमामि० ॥ ८ ॥

हरि शंकरधातृ सुदर्प हरं, हरितापसंयम लब्धिधरं ॥ प्रणमामि० ॥ ९ ॥

शार्दूल विक्रिडितछंद–विद्यासागर पार दर्शन परः काष्ठान्वयो द्योतकः,
स्वात्मानंद पयोधिमध्य विलसत्कल्लोलकेली करः ।
भास्वद्दिव्य पयोज कांति कलितः पद्मप्रभः सद्गुरुः
जीयाद्रत्नमुनीश दीक्षित जयोत्कीर्तिस्तुतः संततम् ॥ महार्घं ॥

॥ श्री सुपार्श्वनाथ पूजा ॥

श्री क्षीरसागर सुरम्य तरंग जातैः शृंगार सारमुख निर्जित चारुतोयैः ।
देवेन्द्र चन्द्र नुत पाद पयोजयुग्मं, तीर्थंकरं जिनसुपार्श्व मवंयजामि ॥ जलम् ॥

सद्गंधद्रव्यपरिपूरित चन्दनौघैः, सत्कुंकुमाभघनसार विमिश्रितांगैः ॥ देवेन्द्र, ॥ चन्दनम् ॥
क्षीरोद वारिज समुज्वल फेन कल्पैरिन्दु प्रभा निकर निर्मल तंदुलोघैः ॥ देवेन्द्र ॥ अक्षतम् ॥
मंदार चम्पक पयोज कदम्ब जातैः वृन्दारक प्रथित वृत्त विशेष पुष्पैः ॥ देवेन्द्र ॥ पुष्पम् ॥
आज्य प्रपक्व घन चारुतरोद्यमोज्यैः, सद्वेवरादिभिरनीक विधानयुक्तैः ॥ देवेन्द्र० ॥ नैवेद्यम् ॥
दीपैः सुहंसततिदीप्त्यभिधाम तुल्यैः अष्टापद प्रभृतिनिर्मितभाजनस्थैः, । देवेन्द्र० ॥ दीपम् ॥
श्रीमद्गिरीन्द्र मलयोद्भवचारुधूपैः, गंधोरुभिर्हृयभि समाहृत षट् पदोघैः ॥ देवेन्द्र ॥ धूपम् ॥
द्राक्षा फल प्रमुखदाडिम मातुलिंगैः, कम्राम्रपूग कदली फल नारिकेलैः ॥ देवेन्द्र० ॥ फलम् ॥
गंधपुष्प शुभ तन्दुल मोज्यदीपैः, धूपैर्फलावलिभिरेव जयाद्यकीर्तिः ॥ देवेन्द्र० अर्घं ॥

❀ जयमाला ❀

जिनेन्द्रं शंकरं स्तौमि, सुपार्श्वं नाम धारकम् ।
सुतरां सेवितं पार्श्वं, यत्पदं शिव सौख्यदम् ॥ १ ॥

त्रिभुवन पतिनुत चरण सरोजं: ब्रह्मचर्यजित सबल मनोजं ।
वन्दे स्वस्तिक लांछन देहं, केवलज्ञान सुधारस गेहं ॥ १ ॥
नील वर्ण सुन्दर शुभकायं, निर्जित मोह महाभटमायं ॥ वन्दे० ॥ २ ॥
परम निरंजन कृतपदवासं, दिनकर कोटि तिरस्कृत भासं । वन्दे० ॥ ३ ॥
द्वादश गण धर्मामृत पोषं, दिव्यध्वनि योजन शुभ घोषं ॥ वन्दे० ॥ ४ ॥
सेव्याध्यानसु शुक्ल सुधरणं, भव भीतानां निर्भय शरणं ॥ वन्दे० ॥ ५ ॥
अष्टादश दोषैश्चाभिमुक्तं, संख्यातीत गुणैः संयुक्तम् ॥ वन्दे० ॥ ६ ॥

मालिनीछंद—अखिल गुण निधानं, संयतानां प्रधानं, दुरितितिमिरहंसं, मोह माया प्रणाशं ।
जगति जगति सारं मुक्ति नार्यंग हारं, जिनवर वर नाथं श्रीसुपार्श्वं नमामि । महार्घ॥

॥ श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजा (८) ॥

स्वर्ग सिन्धु दारिणा, सुधाम गौर धारिणा
मुक्ति सौख्य कारिणा, त्रयोपमृत्यु हारिणा ।

निर्जराहि मर्त्यनाथ, सेवितांघ्रिमष्टव चन्द्रभास मर्चयामि तीर्थनाथ मीश्वरं ॥ जलम् ॥ १ ॥

शीतलेन चन्दनेन, केशरेणवासिना,

गंध लुब्ध षट् पदेन, पाप ताप हारिणा । निर्जरा० ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

पुष्यशालि बीजकै, रिवाब्रहारपाण्डुरैः

धन्यशालि संभवैरखण्ड कोटि तन्दुलैः । निर्जरा० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

सिन्धु वार कर्णिका, पुण्डरीक मल्लिका ।

पारिजात केतकी, कदम्ब कुन्द चम्पकैः । निर्जरा० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

नव्य भव्य सूप तूप भक्त सक्त पायसैः

व्यञ्जनाढ्य पूरिका सुमोद कादिभिर्वरैः ॥ निर्जरा० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

दीपकैः सुरत्नजात, निर्मितैः शिखोज्वलैः,

वातचात वर्जितैः सुपात्रमध्यसंस्थितैः । निर्जरा० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

व्योम भ्रम संगतैरनर्घ धूप धूम्रकैः

नीरदालि सन्निभैः कुकर्म मर्म दाहकैः । निर्जरा० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

कम्रकाम्र नारिकेल बीजपूग कर्कटी

गोस्तनी कपित्थ पुंगराज भव्य दाडिमैः । निर्जरा० ॥ फलम् ॥ ८ ॥

नीर गंधपुष्पकाक्षतादि द्रव्य दीपकैः ।

धूप धूम्र सत्फलैः जयाद्य कीर्ति सेवितम् । निर्जरा० । अर्घं । ९ ॥

॥ जयमाला ॥

चन्द्रप्रभ जिन जय, हवमंभूतिमय, जन्म जरादि विपचिहुं ।

वन्दे शशिदेवं, विगतसंदेहं, सर्व जीव करुणा निकरम् ॥ १ ॥

जय चन्द्रप्रभ चंद्रांशु वर्ण, जय चन्द्रपुरी सुपवित्र करण ।

जय वज्र वृषभ नाराच काय, जय क्षीर रुधिर वर्जित कषाय ॥ २ ॥

आदिम संस्थान निस्स्वेद खेद, मल वर्जित तर्जित पुरुष वेद ।

जय जय स्वरूप शुभ लक्षणांग, अप्रमित वीर्य प्रिय वचनरंग ॥ ३ ॥

अतिशय दस राजित सहज गात्र, जय घाति कर्म रिपु विजय पात्र

जय देव निर्जिता तिशयशेष, वसुधाविहार भूषित सुदेश ॥ ४ ॥

सदनन्तचतुष्टय धरणवीर, जय सहस्र नाम सागर गंभीर ॥

जय समंतभद्र सुख करणरूप, वाराणसि प्रणमित सकल भूप । ५ ॥

घत्ता–अष्टम तीर्थंकर, पार तिमिर हर, चन्द्रप्रभ शशि कांतिधरं ॥

जय रत्नसु भूषण, भुवन विदूषण, जयकीर्ये जय लक्षकरं । महार्घं ॥

॥ श्री पुष्पदन्तनाथ पूजा ॥ ९ ॥

दुग्धाम्बुधि प्रमुख तीर्थ समुद्भवैश्च, तोयैः सुशीतल वरैः परिपिंजराभैः ॥

गीर्वाण सार नरनाथ मुनीन्द्र सेव्यं, श्री पुष्पदंत जिननाथ महं यजामि । जलम् ॥ १ ॥

श्री चन्द्र नैर्मलचभूधर संभवैश्च, काश्मीर चन्द्र मिलितैरलि झंकृतैर्वै ॥ गीर्वाण० ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥
श्री राज भोगवन शालि समग्र जातै, श्री तन्दुलैरमृतफेन हिमाम्बु वर्णैः । गीर्वाण० ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥
संतान चम्पक नमेरू कदम्ब पुष्पैः सौरभ्यराग मिलितालिकदम्बकैश्च ॥ गीर्वाण० ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥
शाल्योदन प्रचुर गव्य घृतूप शाकै,—रन्यून घेवर युतैश्च हविर्विचित्रैः । गीर्वाण० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
दीपोत्करैस्तिमिर राशि विनाशदक्षैः सुवर्ण पात्र मुगतैर्भणि भासुरांगैः ॥ गीर्वाण० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
कृष्णागुरू प्रमुखशुद्ध सुगंध द्रव्यैः धूपैर्विदीपित दिगंतर शुभ्रदेशैः । गीर्वाण० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
श्रीनारिकेल पनसाम्र सुबीज पूरैः, राजादनादि कदली फल दाडिमैश्च ॥ गीर्वाण० ॥ फलम् ॥ ८ ॥
पानीय गंध कुसुमाक्षत पक्व द्रव्यैः दीपैश्च धूप फलकै जयकीर्ति सेव्यं । गीर्वाण० ॥ अर्घ ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

घत्ता—श्री सुविधि जिनेन्द्रम् परमानंदं, सेवित सुरनर वर निकरं ।
वन्देऽहं गुणार्हं, त्रिभुवनराजं, दर्शनज्ञान चरित्र धरम् ॥ १ ॥

जगन्नाथ सेव्यं, जगद्वंद्य पादं; जगन्मित्र मान्यं, हताशेष सादं ।
यजे भावशुद्धयान्वहं पुष्पदंतं, शुभैरष्ट द्रव्यैः शशिज्योति कान्तं ॥ २ ॥

विमोहं विशोकं विरोगं विदेहं, विमायं विकायं विलोभं विखेहं ॥
महाधीर वीरं, महाबुद्धिरूपं, महाज्ञान भानुं नरेन्द्रादि भूपम् ॥ ३ ॥
महाशीलधारं भवाल्लब्धपारं, महानव्य हारं महाकर्म कारं ॥

महामेरू शिखरे कृतस्नानमानं, परंदेव देवैः स्तुतध्यान भानं ॥ ४ ॥

समानंद रूपं सदानंत वीर्यं, सदानंत साख्यं सदानंत धैर्यं ।

सदा सिद्धि वाहं सदाकर्म दाहं; सदा मोह भानुं सदा कामराहुं ॥ ५ ॥

घत्ता—जय सुविधि स्वामिन् शिवपद्गामिन् हरिहर चर्चित पदकमल

जयकीर्ति सु जयकर, कलिमल क्षयहर, क्षीर नीरसम कीर्तिधर ॥ महार्घं ॥

॥ श्री शीतल नाथ पूजा ॥ १० ॥

अमर सिन्धु समुद्भव सज्जलैः, सुघनसार पराग विमिश्रितैः ।

परम पंचम बोध निधानकं, दशम तीर्थंकरं परिपूजये ॥ जलम् ॥ १ ॥

मलय भूधर संभव चन्दनैः, सरस केशर चन्द्र सुगन्धितैः । परम. ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

शशिकरामृतफेनसमानकैः, सुरभिशालि समुद्भव तण्डुलैः ॥ परम. ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

परिमलाहृत षट् पद पंक्तिभिः वकुल चम्पक मोगर पुष्पकैः । परम. ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

प्रबल पायस गव्य सितान्वितैः, सुरभिभाजन मध्यसमाश्रितैः ॥ परम ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

सघनसार समुज्वलदीपकैः, परिविरस्कृत दिग्गज तामसैः ॥ परम० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

अनल साहुत धूपसु पावकैः, गगनमार्गगतैरलिभंकृतैः ॥ परम० ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

फलसु चोच रसाल सुनिम्बुकैः, प्रमुख दाडिम पक्व फलैर्वरैः ॥ परम. ॥ फलम् ॥ ८ ॥

शालिनीच्छन्दः—नीरामोदैः, पुष्पकैस्तं दुलोघैः द्रव्यैर्दीपैः सत्फलैः धूप धूम्रैः ।
पूजयं श्रीमच्छीतलंपूजयामि मोहाघ्निं श्री जयाद्यंतकीर्तिः । अर्घं ॥ ९ ॥

❀ जयमाला ❀

आर्याछन्द— वितनोतुसुख समूहं, शीतलनाथस्तीर्थकृतां दशमः ।
वांच्छित फलंच दध्यात् भव्यानांतीर्ण भव-सिन्धु । १ ॥

शीतलनाथं श्रीपति वंद्यं, वन्देऽहीन्द्रनरेन्द्र विनन्द्यम् ।
नवति चापमित रम्य शरीरं, हेमरूचं गुण वृद्धि करीरं ॥ २ ॥

श्रीदृढ़ भूपति देवसुभूतं, मातृसुनन्दोदर परिसूतं ।
एक लक्ष पूर्वायुः सहितं, सम्मेदाचलमुक्ति सुमहितं ॥ ३ ॥

एकाशीशतगणपति राजं, त्रिंशत्कोशसभाविभ्राजं ॥

घत्ता—जय शीतल नाथः, चातकपाथः, भवजल तारण वर तरणं ।
जय भव भय भंजन, जनतारंजन, जय कीर्ते निश्चल शरणं ॥ महार्घं ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथ पूजा ॥ ११ ॥

रथोद्धताच्छन्दः—स्वर्धुनी प्रमुख तीर्थ सज्जलैः— मिश्रितैः सुरभिवस्तु शीतलैः ।
पावनैरमृतसौख्य दायकम् श्रेयसः पदयुगं यजाम्यहं ॥ जलं ॥ १ ॥

चन्दनैर्मलय भूधरोद्भवैः केशराढ्य घनसार मिश्रितैः ।
काम कुंजर महा मृगेश्वरं श्रेयसः····· ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥
हार कुन्द कलिका समुज्वलैः, पेशलेश कलशालितंदुलैः
क्षीरसागर गभीरमीश्वरं, श्रेयसः····· ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
मल्लिकानल निकुन्द केतकी, पारिजात नव मोगरादिभिः
वांछितार्थ फल लब्धिहेतवे, श्रेयसः····· ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥
नालिका नयन चित्त तोषदैः, पूरिका घृतवरेन्द्र स्वादुकैः
पावनैश्चरूभिरर्थ संपदे श्रेयसः····· ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥
सूर्यधामसदृशैः शिखोज्वलैः दीपकैः सुघनसार मिश्रितैः
देव नाग नर नाथ सेवितं, श्रेयसः पद····· ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
वह्निसार गुरु धूप धूम्रकैः, व्याप्नुवद्भिरतुलं नभोंगणं ।
मोहनीय वनवल्लि वारणं, श्रेयसः····· ॥ धूपं ॥ ७ ॥
श्रीफलाम्र कदली सुमाधवी, बीजपूर परिपक्वनिम्बुकैः ।
मोक्षरूपफलसिद्धिकारणं, श्रेयसः····· ॥ फलं ॥ ८ ॥

मालिनीच्छंदः—विमल सलिल धारा, गंधपुष्पाक्षतोघैः, शुभचरुवरदीपैः धूपयुक्तैर्फलोघैः
सुखकरजिनश्रेयांसं यजे चार्घदानैः त्रिभुवनमणिभूषं, श्रीजयाद्यंत कीर्तिम् ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

श्रेयान् दिशतु वः श्रेयो• धर्मामृत पयोनिधिः
एकादशो जिनोध्येयः मुनीन्द्रोध्यान निश्चलः ॥

जय जिन श्रेयान् जिनदेव नमः, जयधीर कृतामर सेव नमः ।
जय सर्व कर्ममल रहित नमः, जय २ त्रिभुवनपति सहित नमः ॥

जय सकल गुणाकर वीर नमः, जयशुक्लध्यानधर धीर नमः ।
जय मदन दवानल मेघ नमः, जयनिराधार जन नाथ नमः ॥

जय गुण गण सेवित पाद नमः, जय जलधर ध्वनिसमनाद नमः ।
जय पुण्यांभोनिधिचन्द्र नमः जय सम्यक्चारित धरण नमः ॥

जय कनक कांतिवर काय नमः, जय त्यक्त मोहमद माय नमः ।
घत्ता—श्रेयान् श्रेयोधः, कर्मकलंक दहं दत्त्वाकुकुल मंडनं ।
जयकीर्ति जयकृत, दुरित तमोहत, पन्चेन्द्रियमन दंडनं ॥ महार्घं ॥

॥ वासू पूज्य जिन पूजा ॥

शालिनी छंद— गंगा रेवा सिन्धु तोयैः, तृष्णा तापघ्नैरर्घदानानुभाजं ।
नित्यं दिव्य प्रातिहार्याष्टकाढ्यं, तीर्थेशं तं वासूपूज्यं यजामि ॥ जलं ॥ १ ॥

श्री खंडैश्च कुंकुमाद्यैरनिर्घैः, भृंगोद्वृत्तैः कर्पूरैश्चन्द्रकाद्यैः ॥ नित्यं दिव्य• ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

मुक्ताकारैस्तन्दुलैः सत्प्रशस्यैः कोटिद्वंद संश्रितैः पेशलांगैः ॥ नित्यं दिव्य० ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥
श्री संतानैर्भूजसत्पारिजातैः, देवद्रूणां गंधवद्भिः प्रसूनैः ॥ नित्यं दिव्य० ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
दिव्यामोदैः प्राज्य नैवेद्यवर्यैः दिव्यद्योति गंध बाष्पायमानैः ॥ नित्यं दिव्य० ॥ नैवेद्यं ॥ ५ ॥
सन्माणिक्यै र्बन्ध कर्पूर जातैः स्निग्धैर्दीपैर्द्योति ताशाखिलांगैः ॥ नित्यं दिव्य० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥
गंधोदारैः धूप जालं वहद्भिः, व्याप्तैर्धूपैः शुद्ध कृष्णागुरुवर्यैः ॥ नित्यं दिव्यं ॥ धूपम् ॥ ७ ॥
जंबीराम्रैः कम्र नारिंग पूगैः, पक्वैर्बिल्वैः श्रीफलै बीज पूरैः ॥ नित्यं दिव्य० ॥ फलम् ॥ ८ ॥

शार्दूलविक्रिडित छंद–वार्गंधोद्गमतंदुलैः शुभ चरु, दीपैश्च धूपैः फलै०
रत्नैर्दोष विवर्जितं जिनवर, श्री वासु पूज्यं यजे ।
काष्ठासंघ; सुरत्न भूषणपदद्वन्देऽलिचक्रोपमं ।
सूरि श्री जयकीर्ति सेवित पदं, श्रद्धादिभक्तया मुदा ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

॥ जयमाला ॥

इन्द्रवज्रा च्छन्दः–श्री वासुपूज्यो विदधातु शांतिम् श्री, संघकस्येह सदा जिनेन्द्रः ।
चम्पापुरी प्राप्त महोदयश्च, पूर्वांगधारी शिशु ब्रह्मचारी ॥ १ ॥
वसुपूज्य कुलाम्बर पूर्ण शशी, रवि वंश विभूषण चित्त वशी ।
वितनोतु सुखं वसुपूज्यसुतः शिव साधक धर्मक्षमादियुतः ॥ २ ॥
हरि शंकर सेवित पाद कजः शुभचिंतन नाशितः पापरजः । वितनोतु० ॥ ३ ॥

धनराज विनिर्मित सत्सुखदः, विफलीकृत काम कषाय मदः, वितनोतु० ॥ ४ ॥
निज केवल बोधित लोकभरः, निज सेवक वांछित सौख्यकरः, वितनोतु० ॥ ५ ॥
धरणी धर पूजित तीर्थ वरः, वरबोध विनाशित मोहभरः । वितनोतु० ॥ ६ ॥
घत्ता–वसुपूज्य जिनेश्वर, वर तीर्थेश्वर, भुवनेश्वर चर्चित चरणं ॥
जयकीर्ति सुखाकर, दुरित तिमिर हर, त्रिभुवन वर मंगल करणं ॥ ७ ॥ महार्घं ॥

❀ विमलनाथ पूजा ❀

सकल तीर्थ समुद्भव वारिभिः, सुरभि शीतल भावविशेषकैः
विविधताप हरैः सुख हेतवे, विमलतीर्थकरं परि पूजये ॥ जलं ॥ १ ॥
सकल गंध समन्वित चन्दनैः, परम ताप निवारण कारणैः ।
परिमलाहृत षट्पद पंक्तिभिः विमल····· ॥ चन्दनं ॥ २ ॥
अनुपमैरमृतामि समुज्ज्वलैः, सुरभि शालि समुद्भव तंदुलैः ।
उभय पक्ष विखंडित कोटिभिः, विमल०····· ॥ अक्षतं ३ ॥
परिमलोत्कट पुष्प भरैर्वरैः; बकुल चम्पक पाटल मल्लिका ।
कमल मोगर जाति समुद्भवैः, विमल०····· ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥
कनक वर्ण घृतैः फल माजन रचरूवरैर्वटकाज्य सुपायसैः ।
नयनचित्त सु नासा तोषदैः विमल०····· ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

इति विमान समान सुनिर्मलैः विपुल केवलज्ञान समानकैः ।

सुवनसार विनिर्मित वर्तिभिः विमल० ··· ··· । दीपम् ॥ ६ ॥

मलय पर्वत कल समुद्भवैः इति सुगंध पदार्थ विमिश्रितैः ।

गगन मार्ग गतं शुभ धूपकैः विमल० ····· ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

फलभरैः भुवि दाडिम मोचकैः, पनस कस्र कपित्थ कलिन्दकैः

परिमलोघ सुपक्व मनोहरैः विमल० ····· ॥ फलम् ॥ ८ ॥

जलादि सच्चन्दन पुष्पकोघैः सदक्षतैर्हव्य सु दीपधूपैः

फलैर्यजे श्री विमलं जिनेन्द्रं, जयादि कीर्ति प्रणतं महान्तं ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

❀ जयमाला ❀

॥ मालिनीच्छंदः —विमलतर सुकीर्ति, तैजस व्याप्त मूर्ति । सकलगुणगरिष्ठं, प्राप्तलक्ष्मी वरिष्ठं ॥

विमल जिनवरेन्द्रम्, सिद्धयेस्तोम्यतन्द्रं, त्रिभुवन पतिनन्द्यं, भव्यवृन्दाभि वंद्यं ॥१॥

श्री जिन मन्दिरे, भावना संयुतं, नृत्यये अप्सरा हावभावान्वितं ॥

भावनी व्यंतरी, खेचरी, भूचरी, कल्पदेवी मरी, ज्योतिषी किन्नरी ॥ १ ॥

विभ्रमादि विलासैः सदा मंडितैः, कोकिला कंदला सप्त स्वर मंडितैः ।

मादिमा वेई वेई पादसंचारणं, धमपधौ धमपधौ मादलाधारणं ॥ २ ॥

योगणि योगणि गच्चेन्मन्डलं, शब्दये भौं भौं भौं भौं भूंगलं ॥

दुमि दुमि दुमि दुमि दोदलं गज्जये, झूमिकैः झूमिकैः घूघरी घूमरैः ॥ ३ ॥

रेणुकैः रेणुकैः झल्लरी झूमये, तूर वज्जंति णाणा विहप्पाडियं ॥

पीयमी पीयमी दंश विशालये, खीणिपी खीणिपी कंस कंसालये ॥ ४ ॥

द्रुं द्रुमं द्रुं द्रुमं शंख घन शब्दये भौंमि भौंमि भौंमि भौंमि भेरी रव शब्दये

भेरवा सु पंच राग मेघ मल्हारये, राग षट्त्रिंश संगीत सद्धरये ॥ ५ ॥

नीर गंधादिभिः द्रव्यकै श्चारये, गीत नाट्यादिभिः पुष्पकैरर्चये ।

श्री विमल नायको देव देवीश्वरैः पूजितोऽष्टधा विभु द्रव्यसत्समुत्करैः ॥६॥

घत्ता–निखिल यतिनिसेव्यं, देव देवेन्द्र सेव्यं, विमलगुण समुद्रं, केवलज्ञान चन्द्रं ॥

अमितगुणगणेन्द्रं, पोह कृष्णा दिनेन्द्रं, नमतिभजति नित्यं, श्री जयाद्यंतकीर्तिः ॥ महार्घं ॥

॥ श्री अनंत नाथ पूजा ॥

सुर नदी नद तीर्थ समुद्भवैः कजपराग सुपिंजरितै र्जलैः ।

स्फुरदशोक धरारुह संश्रितैः परमनंतजिनेन्द्रमहंयजे ॥ जलं ॥ १ ॥

सुघनसार विमिश्रित चन्दनैः, परिमलागत भृङ्गसमाकुलैः ।

त्रिविध तापहरैः शुभकारकैः परमनंत ..... ॥ चन्दनं ॥ २ ॥

विशद मौक्तिक संनिभ शालि जै, र्मधुर दिव्य वचो मृत वर्षणैः ।

परि निषिक्त सुरांदिश दो गणं, परमनंत ..... ॥ अक्षतं ॥ ३ ॥

प्रचुर रत्नपरिष्कृत सत्कणैः, कनक दंड सु किंकणिका युतैः ।

नव कजैश्चमरैः परि वजितैः परमनंत..... ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

वटक मोदक घेवर पायसै श्चरूवरै घृतशर्करयान्वितैः

त्रिविधमुत्कट विष्टरमाश्रितैः परमनंत..... ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

तिमिर नाश करै मणिदीपकै, निजमहः परिधीकृत चन्द्रकैः ।

कनक कोटि प्रभा वलयांकितैः, परमनंत..... ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

अगुरू चन्दन धूप भरैर्वरैरदित नंदन ताडित दुंदुभि ।

ध्वनि घटाहृत देव नरोरगैः परमनंत..... ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

सुकदली फल चोच रसालकैः कनक चन्द्रयुतालण वारणैः ।

त्रय विभूषित सुन्दर विग्रहं, परमनंत..... ॥ फलं ॥ ८ ॥

शालिनी छंद–पाथोगधैः पुष्पकै स्तंदुलोघै र्हव्यैर्दीपैर्धूपकैः श्रीफलाद्यैः ।

स्वभूनाथैरर्चितोनंत नाथो, देयान्मोक्षः श्री जयाद्य तकीर्तिः ॥ अर्घं ॥ ९ ॥

जिस कलश में अनंत रक्खी हों उसमें "ॐ ह्रीं अर्हं हं सः अनंत केवलिने नमः", इस मंत्र के १०८ जाप्य देकर लाल वस्त्र से कलश का मुंह बांधकर कलश मांडने पर विराजमान करके पश्चात् जयमाला पढ़ना चाहिये

॥ जयमाला ॥

शार्दूल विक्रीडितच्छंद –यो भोगेऽखिल भूप वंदित पदो, राज्यं परं प्राप्तवान् ।

भक्ति प्रवृत्त सुरेन्द्र सुन्दर शिरः, कोटी प्रभाद्योतकः ॥

परचाद्यश्च निरम्बरः किलभवन तत्पाज्य सर्वं मुदा ।

श्रीमत्तीर्थमनंत माशु शिवदं, तं तीर्थनाथं भजे ॥ १ ॥

स्वर्ग विमानात् कृत भू वासं, कृत मध्यामत पंचक नाशं ।

नौमि चतुर्दशकं जिनदेवं, देवासुरनर कृतपद सेवं । २ ॥

सुरपति वंदित गर्भ कल्याणं, मेरू शिखर कृत जन्म स्नानं ॥ नौमि० ॥ ३ ॥

दीक्षा समये शिविकारूढं, भूचर खेचर पति सु व्यूढं ॥ नौमि० ॥ ४ ॥

ज्ञानावसरे सभा प्रवेशं, धनपति विरचित कोष्ठ निवेशं ॥ नौमि० ॥ ५ ॥

मानस्तंभ विदारितमानं, किन्नर युगली कृत वर गानं ॥ नौमि० ॥ ६ ॥

छत्र त्रय लोक त्रय शोभं, दूरीकृत मायामद लोभं ॥ नौमि० ॥ ७ ॥

दिव्यध्वनि नाशित पर मोहं, वैर विवर्जित जीव विद्रोहं ॥ नौमि० ॥ ८ ॥

क्रोश चतुष्टय दुख निवारं, लोक त्रय भव सागर तारं ॥ नौमि० ॥ ९ ॥

अशोक तरु दर्शनहतशोकं, भामण्डल प्रति बिम्बित लोकं । नौमि. ॥ १० ॥

समेद शिखर मुक्ति श्री वरणं, जयकीर्तेर्जय कारण शरणं ॥ नौमि० ॥ ११ ॥

स्रग्धरीच्छन्दः—वितरति भवनाशं, दुष्ट कर्मारिपाशं, जिनवर वर चन्द्रोऽनंत नाथो विनेंद्रो ।

त्रिभुवन शुभकीर्तिः, रत्नभूषाप्त मूर्ति, रगुणित सुख पूर्तिः श्रीजयाद्यंत कीर्ति ॥

महार्घं ॥

एतेनाग नरामरेन्द्रमुकुटैः सघृष्ट पादाम्बुजा,
नाभेयादि जिनाः प्रशस्त वदनाः प्रांतस्त्वनंतारुपकाः ।
श्री रत्नादि विभूषणः प्रतिदिनं, प्रार्थ्यं ज्योत्कीर्तिन ।
भक्तया संस्तु सदा चतुर्दश जिनाः कुर्वंतुनोर्मंगलं ॥

इत्याशिर्वादः ॥

अनंत व्रत के जाप्य

(एकादशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं अर्हं हंसः अनंत केवलिने नमः ॥

(द्वादशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं ह्रौं ह्रं सः अमृत वाहने नमः ॥

(त्रयोदशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं अनंत तीर्थं कराय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा सर्वशांतिं कुरू २ स्वाहा ।

(चतुर्दशी के जाप्य)

ॐ ह्रीं अर्हं हंसः अनंत केवली भगवान अनंत दान लाभ भोगोपयोग वीर्याभिवृद्धि कुरु २ स्वाहा ॥

(अनन्त मोचन मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सर्व कर्म विमुक्ताय अनन्त सुख प्रदाय अनन्त तीर्थंकराय नमः पूर्वानुबन्धित सूत्र मोचनं करोमीति स्वाहा ॥

ऊपर के मन्त्र को पढ़ कर पहले का बन्धा हुआ अनन्त सूत्र छोड़ना चाहिये।

(अनन्त बन्धन मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हं हं सः अनन्त तीर्थंकराय सर्व शांतिं कुरु २ सूत्र बन्धनं करोमीति स्वाहा।

ऊपर के मन्त्र को पढ़ कर नवीन अनन्त बांधना चाहिये।

(अनन्त बनाने की विधि)

अनन्त सोना, चांदी अथवा सूत्र की बनानी चाहिये जिसमें १४ गांठे नीचे लिखे अनुसार १६६ गुणों का चिन्तवन करते हुये लगानी चाहिये प्रत्येक गांठ पर क्रम से चौदह १४ गुणों का चिन्तवन करे।

१४	तीर्थंकर	१	१४	जीव रक्षा	८
१४	प्रतिकरण	२	१४	नदी	९
१४	कुलंकर	३	१४	भव्य जीव राशी	१०
१४	अतिशय	४	१४	रत्न	११
१४	पूर्व	५	१४	स्वर	१२
१४	गुणस्थान	६	१४	तिथि	१३
१४	मार्गणा	७	१४	अन्तराय निवारण	१४

इस प्रकार १९६ गुणों का चिन्तवन कर १४ गांठ वाली अनंत बना पश्चात् अनंत व्रत का मांडना मांडकर श्री अनंतनाथ तीर्थंकर की प्रतिमाजी विराजमानकरे एवं नवीन अनंत को भी कलश में रखकर कलश को भगवान के समक्ष मांडने पर विराजमान करे । पश्चात् श्री अनंत नाथ भगवान का अभिषेक कर पूजन करें । पूर्णाहुति के बाद अनंत व्रत की कथा पढ़कर मोचन मंत्र द्वारा पूर्व की अनंत छोड़कर बन्धन मंत्र पढ़ते हुवे नवीन अनंत दाहिनी भुजापर धारण करे ।

अनंत बनाते समय पढ़ने के १९६ गुण (मंत्र)

(अनंत व्रत के उद्यापन में इन्हीं १९६ गुणों के अर्घ चढ़ाये जाते हैं)

१ चतुर्दश तीर्थंकर मंत्र

१ ॐ ह्रीं सद्धर्म प्रवर्तकाय ऋषभनाथ तीर्थंकराय नमः ।

२ ,, कर्माष्टक रहिताय अजित जिन देवाय नमः ।

३ ,, शिवंकराय संभव तीर्थंकराय नमः ।

४ ,, लोकाभिनंदकाय अभिनंदन जिनाय नमः ।

५ ,, क्रोधाद्युन्मथकाय सुमति तीर्थंकराय नमः ।

६ ,, पद्मप्रभ तीर्थंकराय नमः ।

७ ,, कन्दर्पोन्मथकाय श्री सुपार्श्व तीर्थंकराय नमः ।

८ ,, श्री चन्द्रप्रभ तीर्थंकराय नमः ।

९ ,, श्री पुष्पदंत तीर्थंकराय नमः ।

१० ,, श्री शीतलनाथ तीर्थंकराय नमः ।

११ ,, श्री श्रेयांस तीर्थंकराय नमः ।

१२ ,, श्री वासुपूज्य तीर्थंकराय नमः ।

१३ ,, श्री विमल नाथ तीर्थंकराय नमः ।

१४ ,, श्री अनंत नाथ तीर्थंकराय नमः ।

२ चतुर्दश प्रकीर्णक मंत्र

१५ ॐ ह्रीं सामायिक क्रिया युक्त मुनये नमः

१६ ,, चतुर्विंशति जिन स्तुति प्रतिपादकाय मुनयेनमः ।

१७ ,, त्रिकाल देव वंदना युक्त मुनये नमः ।

१८ ,, प्रतिक्रमण क्रियायुक्त मुनये नमः ।

१९ ,, गुर्वादिक धर्मवृद्धि विनय क्रिया युक्त मुनये नमः ।

२० ,, दीक्षाग्रहण शिक्षादि युक्त मुनये नमः ।

२१ ,, दशवैकालिकोपदेशकाय मुनये नमः ।

२२ ॐ ह्रीं उत्तराध्ययन रत मुनये नमः ।

२३ ,, कल्प व्यवहार युक्त मुनये नमः ।

२४ ,, कल्पाकल्प युक्त मुनये नमः ।

२५ ,, महाकल्पोपदेशकाय मुनये नमः ।

२६ ,, पुण्डरी कोपदेशकाय मुनये नमः ।

२७ ,, महापुण्डरीकोप देशकाय मुनये नमः ।

२८ ,, अशीति कोपदेशकाय मुनये नमः ।

३ चतुर्दश कुलंकर मंत्र

२९ ॐ ह्रीं प्रतिश्रुति कुलंकराय नमः ।

३० ,, सन्मति कुलंकराय नमः ।

३१ ,, क्षेमंकर कुलंकराय नमः ।

३२ ,, क्षेमंधर कुलंकराय नमः ।

३३ ,, सीमंकर कुलंकराय नमः ।

३४ ,, सीमंधर कुलंकराय नमः ।

३५ ,, विमलवाहन कुलंकराय नमः ।

३६ ,, चक्षुष्मान् कुलंकराय नमः ।

३७ ॐ ह्रीं यशस्वान् कुलंकराय नमः ।

३८ ,, अभिचन्द्र कुलंकराय नमः ।

३९ ,, चंद्राभ कुलंकराय नमः ।

४० ,, मरुदेव कुलंकराय नमः ।

४१ ,, प्रसेन जित् कुलंकराय नमः ।

४२ ,, नाभिराय कुलंकराय नमः ।

४ चतुर्दश अतिशय मंत्र

४३ ॐ ह्रीं सर्वार्द्ध मागधी भाषावंत भगवते नमः ।

४४ ,, मैत्री युक्ताय भगवते नमः ।

४५ ,, सर्व ऋतु फल पुष्पाग्र पादपाय जिनाय नमः ।

४६ ,, आदर्शतल सन्निभ रत्नोर्भू युक्ताय भगवते नमः ।

४७ ,, सुगंधिवायुयुक्ताय जिनाय नमः ।

४८ ,, सर्व जनानंदकराय जिनाय नमः ।

४९ ,, निर्मल भूभाग युक्ताय जिनाय नमः ।

५० ,, दिव्य गंधोदक वृष्टि युक्ताय जिनाय नमः

५१ ,, पद्मोपरि पाद न्यासाय जिनाय नमः ।

५२ ,, वीणादि शुभ्य संगति युक्ताय जिनाय नमः ।

५३ ,, निर्मल गगनातिशय युक्ताय जिनाय नमः ।

५४ ,, अन्यदेवाह्वानन युक्ताय जिनाय नमः ।

५५ ,, धर्म चक्र युक्ताय जिनाय नमः ।

५६ ,, अष्ट मंगल द्रव्य युक्ताय जिनाय नमः ।

५ चतुर्दश पूर्व मंत्र

५७ ॐ ह्रीं एक कोटि पद प्रमाणाय उत्पाद पूर्वांगाय नमः ।

५८ ,, षण्णवति लक्ष पद प्रमाणाय अग्रायणी पूर्वाय नमः ।

५९ ,, सप्तति लक्ष पद प्रमाणाय वीर्यानुवाद पूर्वाय नमः ।

६० ,, षष्टी लक्ष पद प्रमाणाय अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्वाय नमः ।

६१ ,, एकोन कोटि पद प्रमिताय ज्ञान प्रवाद पूर्वाय नमः ।

६२ ,, षडधिक कोटि पद प्रमाणाय सत्य प्रवाद पूर्वाय नमः ।

६३ ,, षड् विंशति कोटि पद प्रमाणाय आत्म प्रवाद पूर्वाय नमः ।

६४ ,, अशीति लक्षाधिक कोटि पद प्रमाणाय कर्म प्रवाद पूर्वाय नमः ।

६५ ,, चतुरशीति लक्ष पद प्रमाणाय प्रत्याख्यान पूर्वाय नमः ।

६६ ,, षष्ठी लक्ष द्वि कोटि पद प्रमाण विद्यानुवाद पूर्वाय नमः ।

६७ ॐ ह्रीं षड् विंशति कोटी पद प्रमाण कल्याण वाद पूर्वाय नमः ।

६८ ,, त्रयोदश कोटि पद प्रमाण प्राणानुवाद पूर्वाय नमः ।

६९ ,, नव कोटी पद प्रमाण क्रिया विशाल पूर्वाय नमः ।

७० ,, सार्द्ध द्वादश कोटी पद प्रमाण लोक बिन्दु पूर्वाय नमः ।

६ चतुर्दश गुणस्थान मंत्र

७१ ॐ ह्रीं मिथ्यात्व गुणस्थान स्थितानंत भव्य जीव राशये नमः ।

७२ ,, सासादन गुणस्थान वर्ति सम्यग्दृष्टि जीव राशये नमः ।

७३ ,, मिश्र गुणस्थान स्थित भव्य जीव राशये नमः ।

७४ ,, अविरत गुणस्थान स्थित सम्यग्दृष्टि भव्य जीव राशये नमः ।

७५ ,, देशव्रत गुणस्थान स्थित भव्य जीव राशये नमः ।

७६ ,, प्रमत्त गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।

७७ ,, अप्रमत्त गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।

७८ ,, अपूर्व करण गुणस्थान श्रेणि द्वय मुनिभ्यो नमः ।

७९ ,, अनिवृत्ति करण गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।

८० ,, सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।

८१ ,, उपशांत कषाय गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।

८२ ,, क्षीण कषाय गुणस्थान स्थित मुनिराशये नमः ।

८३ ॐ ह्रीं सयोगकेवली गुणस्थान स्थित मुनिभ्यो नमः ।

८४ ,, अयोग केवली गुणस्थान वर्ति मुनिभ्यो नमः ।

७ चतुर्दश मार्गणा मंत्र

८५ ॐ ह्रीं स्वर्गादि गति हेतूपदेशकेभ्यो नमः ।

८६ ,, एकेन्द्रियादि जीव रक्षकेभ्यो नमः ।

८७ ,, षट्काय जीव रक्षक मुनिभ्यो नमः

८८ ,, योग मार्गणा ज्ञापकेभ्यो नमः ।

८९ ,, वेद त्रय रहित मुनिभ्यो नमः ।

९० ,, कषाय विध्वंस केभ्यो नमः

९१ ,, ज्ञानोपयोग युक्त जिनेभ्यो नमः ।

९२ ,, सामायिक संयमोद्धारक मुनिभ्यो नमः

९३ ,, चक्षुरादि दर्शन ज्ञापकेभ्यो नमः ।

९४ ,, षट् लेश्योपदेशकेभ्यो जिनेभ्यो नमः ।

९५ ,, भव्याभव्य मार्गणा प्रकाश केभ्यो नमः ।

९६ ,, सम्यक्त्वोपदेश केभ्यो नमः ।

९७ ,, संज्ञा संज्ञि मार्गणा भेद कथ केभ्यो नमः ।

९८ ,, आहारक मार्गणोप देश केभ्यो नमः ।

८ चतुर्दश जीव समास मंत्र

९९ ॐ ह्रीं पर्याप्त पृथ्वीकायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।

१०० ,, अपर्याप्तक पृथ्वी कायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।

१०१ ,, पर्याप्तक अपकायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।

१०२ ,, अपर्याप्तक अपकायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।

१०३ ,, पर्याप्तक तैजस कायिक जीवरक्षकेभ्यो नमः ।

१०४ ,, अपर्याप्तक तैजस कायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।

१०५ ,, पर्याप्तक वायुकायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।

१०६ ,, अपर्याप्तक वायु कायिक जीव रक्षकेभ्यो नमः ।

१०७ ,, पर्याप्तक वनस्पति जीव रक्षकेभ्यो नमः ।

१०८ ,, अपर्याप्तक वनस्पति जीव रक्षकेभ्यो नमः ।

१०९ ,, पर्याप्त द्विन्द्रियादि विकल त्रय रक्षकेभ्यो नमः ।

११० ,, अपर्याप्तक द्विन्द्रियादि विकलत्रय रक्षकेभ्यो नमः ।

१११ ,, पर्याप्तक पन्चेन्द्रिय जीव रक्षक मुनिभ्यो नमः ।

११२ ,, अपर्याप्तक पन्चेन्द्रिय जीव रक्षक मुनिभ्यो नमः ।

९ चतुर्दश नदी मंत्र

११३ ॐ ह्रीं जिन बिम्ब समन्वित गंगा नद्यै नमः ।

११४ ,, जिन बिम्ब समन्वित सिन्धु नद्यै नमः ।

११५ ,, जिन बिम्ब समन्वित रोहितायै नमः ।

११६ ,, जिन बिम्ब समन्वित रोहितास्यायै नमः ।

११७ ,, जिन बिम्ब समन्वित हरित् नद्यै नमः ।

११८ ,, जिन बिम्ब समन्वित हरिकांतायै नमः ।

११९ ,, जिन बिम्ब समन्वित सीता नद्यै नमः ।

१२० ,, जिन बिम्ब समन्वित सीतोदा नद्यै नमः ।

१२१ ,, जिन बिम्ब समन्वित नारी नद्यै नमः ।

१२२ ,, जिन बिम्ब समन्वित नरकांता नद्यै नमः ।

१२३ ,, जिन बिम्ब समन्वित सुवर्णकुला नद्यै नमः ।

१२४ ,, जिन बिम्ब समन्वित रूप्य कुलायै नमः ।

१२५ ,, जिन बिम्ब समन्वित रक्ता नद्यै नमः ।

१२६ ,, जिन बिम्ब समन्वित रक्तोदा नद्यै नमः ।

१० चतुर्दश भुवन भव्य जीव मंत्र

१२७ ॐ ह्रीं निगोदस्थ भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१२८ ,, महातमः प्रभोद्भूत भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१२९ ,, तमः प्रभोद्भूत भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३० ,, धूम प्रभोद्भूत भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३१ ,, पंक प्रभाश्रित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३२ ,, बालूका प्रभास्थित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३३ ,, शर्करा प्रभास्थित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३४ ,, रत्न प्रभाश्रित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३५ ,, तिर्यग्लोकस्थित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३६ ,, ज्योतिर्पटलाश्रित भव्य जीव राशिभ्यो नमः ।

१३७ ,, कल्पवासी भव्य देव राशिभ्यो नमः

१३८ ,, ग्रैवेयकाश्रित भव्याहमिन्द्रेभ्यो नमः ।

१३९ ,, नवानुदिश विमानस्थाहमिन्द्रेभ्यो नमः ।

१४० ,, विजयादि पंच विमानस्थाहमिन्द्रेभ्यो नमः ।

---

११ चतुर्दश रत्नाधिपति चक्रवर्ति मंत्र

१४१ ॐ ह्रीं सेनापति रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
१४२ ,, स्थपति रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
१४३ ,, हर्म्यपति रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
१४४ ,, द्वीप रत्ने कृतासनेभ्यश्चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥
१४५ ,, विजयार्द्धोपपन्नाश्वाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥
१४६ ,, स्त्री रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥
१४७ ,, पुरोहित रत्न संसेवित चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥
१४८ ,, चक्र रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥
१४९ ,, चर्म रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥
१५० ,, मणि रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ॥
१५१ ,, काकिणी रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
१५२ ,, छत्ररत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
१५३ ,, असि रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।
१५४ ,, दंड रत्नाधिपति चक्रवर्तिभ्यो नमः ।

---

१२ चतुर्दश स्वर मंत्र

१५५ ॐ ह्रीं अकार स्वर वादिने वृषभाय नमः ।

१५६ ,, आकार स्वर वादिने वृषभाय नमः ।

१५७ ,, इकार स्वर वादिने वृषभाय नमः ।

१५८ ,, ईकार स्वर वक्त्रे वृषभाय नमः ।

१५९ ,, उकार स्वर भेद कथकाय नमः

१६० ,, ऊकार स्वर भेद ज्ञायकेभ्यो नमः ।

१६१ ,, ऋकार स्वरोपदेष्ट्रे वृषभाय नमः ।

१६२ ,, ॠकार स्वरोप देशकाय वृषभाय नमः ।

१६३ ,, ऌकार स्वरस्य प्रवक्तार वृषभाय नमः ।

१६४ ,, ॡकार स्वरोच्चारकाय वृषभाय नमः ।

१६५ ,, एकार स्वर देशिने वृषभाय नमः ।

१६६ ,, ऐकार स्वर प्रकाशकाय वृषभाय नमः ।

१६७ ,, ओकार स्वरोपदेश काय वृषभाय नमः ।

१६८ ,, औकार स्वर कथकाय जिनाय नमः ।

---

१३ चतुर्दश तिथि मंत्र

१६९ ॐ ह्रीं प्रतिपदि स्वरुप निरुपक अष्टादश दोषरहिताय जिनाय नमः ।
१७० ,, द्वितीयांतिथिमाश्रित्य सागारानगार धर्माय नमः ।
१७१ ,, तृतीयां तिथि माश्रित्य दर्शनादि रत्नत्रयाय नमः ।
१७२ ,, चतुर्थी तिथि माश्रित्य प्रथमानुयोगादि वेदेभ्यो नमः ।
१७३ ,, पंचमी तिथिमुद्दिश्य पंच परमेष्ठीभ्यो नमः ।
१७४ ,, षष्ठी तिथि माश्रित्य सर्वज्ञोदित षट् द्रव्येभ्यो नमः ।
१७५ ,, सप्तमी तिथिमुद्दिश्य सामायिकादि सप्त संयमेभ्यो नमः ।
१७६ ,, अष्टमी तिथिमाश्रित्य सिद्धाष्ट गुणेभ्यो नमः ।
१७७ ,, नवमी तिथिमाश्रित्य सर्वज्ञोक्त नव नयेभ्यो नमः ।
१७८ ,, दशमी तिथिमाश्रित्य दशलाक्षणिक धर्मेभ्यो नमः ।
१७९ ,, एकादशी तिथिमाश्रित्य एकादशांगेभ्यो नमः ।
१८० ,, द्वादशी तिथिमाश्रित्य द्वादश विधतपेभ्यो नमः ।
१८१ ,, त्रयोदशी तिथिमुद्दिश्य त्रयोदश प्रकार चारित्रेभ्यो नमः ।
१८२ ,, चतुर्दशी तिथि माश्रित्य अनंत तीर्थंकराय नमः ।

१४ चतुर्दश मल त्यक्ताहार मुनि मंत्र

१८३ ॐ ह्रीं पूयमलाविरिक्ताहार ग्राहक मुनिभ्यो नमः ।

१८४ ,, अस्र मल रहित आहार ग्राहक मुनिभ्यो नमः ।

१८५ ,, पल मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।

१८६ ,, अस्थि मल रिक्त पिंड विशुद्धये नमः ।

१८७ ,, चर्म मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।

१८८ ,, नख मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।

१८९ ,, कच मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।

१९० ,, मृत विकलत्रिक मल रहित पिंड विशुद्धये नमः ।

१९१ ,, सूरणादि कंदमूल त्यक्त पिण्ड विशुद्धये नमः ।

१९२ ,, यव गोधूमादि बीज मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।

१९३ ,, मूल मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।

१९४ ,, बदर्यादि फल मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।

१९५ ,, तुष कण मल रहित पिण्ड विशुद्धये नमः ।

१९६ ,, कुंडमल रहित पिंड विशुद्धये नमः ।

॥ इति अनंत निर्माण मन्त्राणि ॥

❀ अथ महा भिषेक ❀

अड्ढेय अड्ढतया, अड्ढ सहस्साइ अड्ढ कोडी ऊ ॥
रक्खंतु मे सरीरं देवासुर पणमिया सिद्धा ॥ १ ॥

■ आत्मांग प्रत्यंग परा मर्शन मन्त्रः ■

ॐ अर्हन्मुख कमल वासिनी पापांत कारिणी श्रुत ज्वाला सहस्रा प्रज्वलिते सरस्वति मम पापं हन हन दह दह क्षाँ क्षीं क्षूं क्षौं क्षं क्षीर धवले अमृत संभवे वं वं हू फट् स्वाहा ॥

■ अथ शुची करण विधा द्वय मन्त्रः ■

ॐ नमो वायु कुमाराय सर्व विघ्न विनाशने मही पूतां कुरुष्वाशु सुगन्धी मृदुनात्मना हू फट स्वाहा

(इति भूमि संशोधनम्)

ॐ प्रक्षालयामि भूभाग, मग्निमुद्दीपयाम्यहं ॥
षष्ठि नाग सहस्राणि, भूतलेस्मिन्चरंति ये ॥
तेषां संबोधनायात्र, तेषामाह्वानाय च ॥
प्रसिंचाम्यमृतेनेमां भूमिं सम्मार्ज याम्यहम् ॥ (भूमि संमार्जनं)

ॐ मेघ कुमाराय अं हं सं वं ठं ठं ह्रः फट् स्वाहा, इति भूमि संमार्जनम्,

सौ गन्ध्य संग मधुव्रत झंकृतेन । संपत्पर्णान सिद्ध [illegible] ॥

आरोपयामि त्रिदुषेश्वर वृंद वंद्य, पादार विन्दमपि वंद्य जिनोत्तमानाम् ॥

(देवस्या मनश्च चंदन तिलकं कुर्यात्)

प्रत्युप्त नील कलशोत्पलपद्मराग, निर्यत्करप्रकर बद्ध सुरेन्द्र चाय ॥

जैनाभिषेक समयेऽगुलि पर्व मूले, रत्नांगुली यकमहं विनिवेशयामि ॥

इति मुद्रिका धारणम्

सम्यक् विनद्ध नव निर्मल रत्न पंक्ति, रोचिर्वृहद्वलय जात बहु प्रकाशं ॥

कल्याण निर्मितमहं कटकं जिनेशं, पूजा विधान ललितेस्वकेरकरोमि ॥

कंकण धारणम्

पूर्वं पवित्र तर सूत्रविनिर्मितंयत्, प्रीतः प्रजापति रकल्प यदंग संगैः ॥

सद्भूषणं जिनमहं निजकंधराय, यज्ञोपवीत मह मेष तदा तनोमि ॥ यज्ञोपवीतं ॥

पुन्नाग चंपक महीरुह किंकरात, जाति प्रसून नव केसर कुंददृष्टं ॥

देव त्वदीय पद पंकज सत्प्रसादात्, मूर्ध्नि प्रमाणवति शेखर कंदर्पेऽहम् ॥ शेखरं ॥

ये संतिके विदिह दिव्य कुल प्रसूताः, नागा प्रभूत बल दर्प युताः बोधाः ॥

सं रक्षणार्थम मृतेन तेषां । प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम् ॥ भूमिशोधनम् ॥

क्षीरार्न वस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः, प्रक्षालितसुर वरैर्य दनंतवारम् ॥

अस्तु वमु वतमहं जिन पाद पीठं, प्रक्षालयामिभव संभव ताप हारिः ॥ पीठ प्रक्षालनं ॥
प्रत्यग्र तार तर मौक्तिक चूर्ण वर्णैः, भृंगार नाल मुखनिर्गत चारु गंधैः ॥
क्षीरैः सुगांधगिरतीह जलैर्जिनेन्द्रं, निर्वेशवे स्नपनसार समारभेऽहं ॥ जलस्नपनं ॥
इंद्राग्नि दंडधर नैऋतपाश पाणि, वापूत्तरेण शशिमौलिफणींद्र चंन्द्रम् ॥
आगत्य यूय मिह सानु चराः सचिन्हाः, स्वं स्वं प्रतीच्छतु वलिं जिनयाभिषेके ॥ दिग्पालचर्चनम् ॥
पुण्याह मघसुम हांति च मंगलानि, सर्व प्रहृष्ट मनसश्च भवंतु भव्याः ॥
पुण्यो दकेनभगवंत मनंत कान्ति, महन्त मुज्वल तनुं परि वर्तयामि ॥ पुष्पा क्षतोद कावतारणम्
नाथ त्रिलोक महिताय दश प्रकार, धर्माम्बु वृष्टि परिषिक्त जग त्रयाय ॥
अर्घमहार्घ गुणरत्न महार्णवाय, तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विश दाक्षतैश्च ॥ पुष्पाक्षतावतारणं ॥
जन्मो त्सवादि समयेषु यदीय कीर्तिः, सेन्द्राः सुराः प्रमद भार नुताः स्तुवंति
तस्या ग्रतो जिनपतेः परया विशुध्या, पुष्पाञ्जलि मलय जाद्र मुपाक्षिपेहं ॥

॥ पुष्पाञ्जलि श्री खंडा वतारणम् ॥

(अथ अर्हत्प्रतिमां नेतुं गत्वा पूजां कृत्वा इदंस्तोत्रं पठयमान मानीयते)

आगत्य देव्यैर्जननीं प्रपूज्य, नीत्वा वि भूत्या नगराज मूर्ध्नि ॥
सृगेन्द्र पीठे वर पाण्डु कायां, निवेश्य पूर्वाभिमुखं जिनेन्द्रम् ॥ १ ॥
क्षीरोद तोयैरमरोप नीतैः, प्रियंगुसच्चंदन पद्म मिश्रैः ॥
आपूरिता नष्ट सहस्र संख्यान्, प्रगृह्य सत्कांचन रत्न कुंभान् ॥ २ ॥

अतोद्य गीतध्वनि मिन्द्र घोषैः, रवेभूरितै नंद जयेति शब्दैः ॥

वि कुर्य शक्र कृत कर्म कांड, प्रकाशयन् भक्तिरयंविषेवे ॥ ३ ॥

नीत्वा सुरै र्यः परया विभूत्या, मेरौ विशाले शिखरे विचित्रे ॥

संस्नापितो रत्न मयैश्च कुंभै, सौवर्णकैश्चंदन चर्चितांगैः ॥ ४ ॥

स्वयं भुवं तीर्थकरं प्रधानं, हिरण्य गर्भं पुरुषं पुराणम् ॥

हितावहं नित्य मनन्त कीर्तिं, तपोगिनं ध्यान विशुद्धिगम्यं ॥ ५ ॥

सुदर्शिनं दर्शित सर्व तत्त्वं, लोकेश्वरं शान्त तनुं सुरूपं ॥

ज्ञानात्मकं ज्ञान समस्त तत्वं, निरम्बरं वीत समस्तरागं ॥ ६ ॥

भवार्णवोत्तीर्णमुदार सत्त्वं, सत्यं च कल्याण विभूति युक्तं ॥

आताम्र नेत्रं वरपद्म पाणिं, रजोमल स्वेद विमुक्त गात्रं ॥ ७ ॥

पूतं च पुण्यं सुगतं महान्तं, कल्याणकं मंगलमुत्तमं च ॥

तपोनिधि शांति दयोपपन्नं, समाधिनिष्ठं व्रत भूरि भारं ॥ ८ ॥

अनंत धामाचार मिन्द्र जुष्टं, सुराहतानेक सुतारनर्घ्यम् ॥

छत्रेण पूर्णेन्दु निभेन गीतं, अशोक वृक्षेण सुपल्लवेन ॥ ९ ॥

भामंडलेन प्रतिमा प्रभेण, तथागिरा चामर चारु पंक्त्या ॥

विभाति नित्यं सुर पुष्प वृष्टया, तं देव देवं मुनि वृंदवंद्यं ॥ १० ॥

वेदेषु शास्त्रेषु तमेव गीतैः, भूतै सुभाव्यैरिति वर्तमानैः ॥

गुणैस्तुतं देव निकाय मुख्यैः, निरंजनं शाश्वतमव्ययं च ॥ ११ ॥

मंत्रा चरास्तिंगित वाग्भिरुच्चैः, सुवर्ण रत्ना चत पुष्पपाणि ।
जिनेन्द्र चंद्रं परया विभूत्या, संस्नापयामि प्रवरासन स्थम् ॥ १२ ॥

॥ अथ प्रतिमा स्थापनं ॥

यः पांडुकामलशिलागतमादि देव, संस्नापयन्सुर वराः सुर शैलमूर्ध्नि ॥
कल्याणमीष्सुरहमचततोयपुष्पैः, संस्नापयामि पुर पूर उदीय बिम्बं ॥

इति प्रतिमा स्थापनम् ॥

ॐ श्वेतवर्ण स्फटिक मणि विनिर्मित सहस्त्र योजन प्रमाणं पंच क्रोश प्रमाण मुखं क्षीरोदधि जलपूर्ण पूर्वोत्तरस्यां दिशि कलशं स्थापयामि

ॐ ह्रीं अनन्त महा अनन्त गुरु गर्वित नादं नंद नाम प्रथम कलशं स्थापयामि कलशेषु स्थापितेषु सोदकानि सपुष्पाणि साक्षतानि सहिरण्यानि क्षिपामि स्वाहा

ॐ पूर्व दक्षिणस्यां दिशि नील मणि विनिर्मित सहस्त्र योजन प्रमाणं भद्र नाम द्वितीय कलशं स्थापयामि,

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण पार्श्वभागायां दिशि पीत वर्ण विनिर्मित सहस्त्र योजन प्रमाणं जय नाम तृतीय कलशं स्थापयामि, शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ पश्चिमोत्तरस्यां दिशि रत्न मणि विनिर्मित सहस्त्र योजन प्रमाणं विजय नाम चतुर्थ कलशं स्थापयामि, शेषं पूर्ववत् ॥

सत्पल्लवार्चित मुखान् कलधौत रौप्य ॥
ताम्राश्मकूट घटितान् पयसा सुपूर्णान् ॥
संश्रावतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान् ॥
संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकान्ते ॥

कलशेषु स्थापितेषु सोदकानि सपुष्पाणि साक्षतानि क्षिपामि स्वाहा,

चर्चितश्चन्दनैः पूर्णाः; स्वेष्ट वस्तुभिरेव च ॥
शोभिताः कलशाः ये च, पुष्प पल्लव धारिणः ॥

एतत्पठित्वा चतुः कोणेषु स्थापित कलशानामुपरि पुष्पाणि क्षिपेत्

दध्युज्ज्वलाक्षत मनोहर पुष्प दीपैः ॥
यात्रार्पितं प्रतिदिशं महतादरेण ॥
त्रैलोक्य मंगल सुखालय कामदाह ॥
मारार्तिकं तव विभोरव तारयामि ॥

मंगलार्तिकावतरणम् ॥

ॐ मघोनः ककुब्भागे, दर्भं निर्भिन्न विघ्नकं ॥

भोगैश्वर्या भिवृद्धयर्थं, क्षिपामि क्षिप्र कल्मषं ॥

इति इन्द्र दर्भः ॥

ॐ पूर्वस्यां दिशि कुंडलांशु निचय, व्यालीढ गण्ड स्थलम् ॥
शक्रं मूर्धनि बद्ध साधु मुकुटं, सरूढ मैरावतम् ॥
पत्नी बांधवभृत्य वर्ग सहितो, देवं समाह्वानये ॥
पाद्यार्घ्य क्षत दीप गंध कुसुमं, दत्तं मया गृह्यताम् ॥

ॐ पूर्वस्यां दिशि क्षीर जलधि संजात डिण्डीर पिण्ड पाण्डुर शरीर शोभां, गुणनिर्मित चारु चाप सहशोन्नत पृष्ठ वंश पार्श्व विलम्बितं, घंटा युगल कराल टंकारं मुखरित दिगन्तरं, सुवर्ण रुचिर नक्षत्र माला विराजित कुंभस्थल नभस्तल तुंग तरुवपुष्माण मैरावत मभिराज मारुढः कर कलश कुलिश रश्मि रंजित समस्त भुवनं, नाना विध महामणि रचित शिखर शेखर विन्यास शोभि तोत्तमांगं, प्रसाद चित्त महत्तर सुर परिषदानुयातं पौलोम सहितं, सपरिजनं सपरिवारं इन्द्र देव माह्वानयामहे, स्वाहा ॥ हे इन्द्र आगच्छ २ इन्द्राय स्वाहा ।

इन्द्र महत्तराय स्वाहा, इन्द्रपरि जनाय स्वाहा, इन्द्रानु चराय स्वाहा, अग्नये स्वाहा, अनलाय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, ॐस्वाहा भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा, स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वस्व धायै स्वाहा,, इन्द्र देवाय स्वगण परि वृताय इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं चरुं बलिमक्षतं स्वस्तिकं यज्ञभागंच भावाभिवेदितं यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा

❀ इन्द्र लोक पाल आह्वानन मंत्रः ❀

यस्यार्थं क्रियते कर्म, सुप्रीतो भव मे सदा ॥
शांतिकं पौष्टिकं चैव, सर्वं कार्येषु सिद्धिदः ॥ कुसुमांजलि क्षिपेत् ॥

ॐ संतापापनोदार्थं, प्राणिनां प्रक्षिपाम्यहं ॥
दर्भं हुताशनायां च, सर्वज्वरापनोत्सेव ॥ इति अग्नि दर्भः ॥

ॐ अग्नि पालित पूर्व दक्षिण दिशं, पिंगोग्रनेत्रद्वयं ॥
छागारोहणमक्ष सूत्र वलय; व्यग्रोग्रहस्तांगुलिम् ॥
स्वाहा संयुत मुज्वलांगमहसं, संशब्दये संमुदा ॥
देवाधीश महेशदासमुचितं, गृह्णातु दीपादिकं ॥ पाद्यार्घ ॥

ॐ पूर्व दक्षिणस्यां दिशि चल चटुलगुरू पृथुल प्रोथभाभि नवमील नीरज वर्ण तस्करं कार्तस्वर मयमधुर वद्युच्चरिक मालिका, परित कंठ कंदलं महंतं छागमारूढं, ज्वल ज्वलन स्फुलिंगं, पिंगल विलोल लोचन युगलं, मलयज वलक्षाक्ष मालि कोयलक्षित दक्षिणकराग्र. अखंड कमंडल मंडित वाम हस्त प्रकोष्ठं, प्रहृष्ट सुंदर दार परिवार परिगतं, यज्ञोपवीत पवित्र देहं, अग्नि देवमाह्वानयामहे; स्वाहा, हे अग्नि आगच्छ २ आग्नये स्वाहा ॥

तीक्ष्णं दक्षिणाशायं, दर्भ लक्ष्या समीक्षितं ॥
क्षिपाम्यभिषेकारंभे, यमारंभ विधित्सया ॥
इति यम दर्भः ॥

ॐ आसीनं सिति वर्णभाजि महिषे, वैवस्वतं च स्वयं ।
दूरोल्लासित दंड मंडित भुजां, तं दक्षिणस्यां दिशि ॥
उग्रं व्यग्रं परिग्रहं निजनिजैः कर्मव्यथा कारये ॥
गृह्णाम्येव बलिं बलिं जिनयतेः, स्नानेय मानीयुतः ॥ पाद्यार्घः ॥

ॐ दक्षिणस्यां दिशि अंजन धरणी धर समाना कारं निष्ठुर खुर पुटपात निर्दलित कुलाचल शिलातलं, दर्पोद्भट विकट विषाण कोटि विलेखन स्फुटित सुर शैल कटकं, त्रिगुणी कृत भुजंगभूषणं, परिणद्धकंधरं, विषम तप शीलं, महिषमारूढं, प्रचंड भुजदंड, भ्रमित दंडोऽमरित सकल मही मंडल, क्रूर परिवारं, मित्र कलत्रो पेतं, यमलोकपालमाह्वानयामहे स्वाहा, हे यम लोक पाल आगच्छ २ यमाय स्वाहा ॥

ॐ नरा रोहण दिग्भागे । निः शेष क्लेश नाशनं ॥
विदधे दर्भं मारब्ध । जिनेन्द्राभिषवक्रिया म् ॥ इति नैऋत्य दर्भः ॥

ॐ आशां दक्षिण पश्चिमां निज बला, दाक्रम्य लोके स्थितं ॥
नैऋत्यं दृढ मुगदूर प्रहरणं, भीमं कला वृत्तगं ॥

अस्मिन्पुण्यमहोत्सवेऽद्य. मचिरादामं त्रये मक्रमा ॥
दादत्ता मय माष शेष कलितं, पत्न्यादि युक्तं वरूं ॥ पाद्यार्घः ॥

ॐ दक्षिण पश्चिमायां दिशि धूमधूम्र सटा टोप भासुरोरुवपुषं, अभिनवांबुदरोदनानु कारावजनित समस्त जन कौतुकं, निपुणोप लक्षितं सूक्ष्म सूक्ष्माक्ष बुध बुध युगं रक्षण रूढं वरट कलाप कुसुम सम देह दीप्ति संशयेत, नव जलद पटलं; सकल परिच्छिद समन्वितं, नैऋत्य देवमाह्वानयामहे स्वाहा, शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ त्रैलोक्य नाथाय, नमस्कृत्य जिनेशिने ॥
वरुणस्य हरिद्भागे, स्थापयेदर्भमद्भुतम् (वरुण दर्भः ॥

ॐ पर्द्दिमभन्याश्रित दंत दंति मकरा, रूढं भुजंगायुधं ॥
मुक्ताविद्रुमभूषणं चवरुणं, काष्ठां प्रतीच्याश्रित ॥
भार्या संयुतमाह्वयामि जगता, मीशस्य पूजा क्षणे ॥
प्रीतः स्वीकुरुतामसा वपिमया, संपादमर्घादिकम् ॥

ॐ पश्चिमायां दिशि संतत जलनि मज्जन जनित पांडुर कपिल वर्णं, उद्दंडशुंडाग्र पुष्कर निर्गत शीकर सार विन्दु दन्तुरित कुंभ पीठं, कठोर केतकी विशद दंत किरणां कुर तिरस्कृत कपोत मद मलिनमाव, जलकिरणमारूढं; निर्मल मुक्ता फलोपचित्त तार हारि वृक्षः स्थलं, सजव नागराज पाशपात्त प्रारब्धं, शक दोर्मद शालि संपन्नं, पत्न्यादि संयुतं वरुण देवं, समा ह्वानयामहे । स्वाहा, हे वरुण आगच्छ २ वरुणाय स्वाहा ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ मातरिश्व विदिग्भागे, विश्वविश्वं धरा प्रभो ॥
अभिषेक समारंभे, दर्भं गर्भं प्रकल्पये ॥

ॐ एकस्यामपि पश्चिमोत्तर दिशि, स्थानेसदा सर्वगं ॥
वायुं तुंग कुरंग पृष्ट गमनं, हस्तस्थ वृत्तायुधं ॥
देवं संप्रचलच्छ रीर घटने, दारैरुदारैः समं ॥
सम्यक संप्रति बोधयामि भवता, पाद्यादिकं गृह्यतां ॥

ॐ पश्चिमो त्तरस्यांदिशि चलाचल चरणामि घात स्फुटित धराधर शिखरदेशं,, नव यौवन बल समुद्भूत स्वेदोदबिन्दु प्रसर प्रशमित मार्ग पांसुपद्रवं, निज जव निर्जित मनोवेगं, हरिण मारूढं, सहज गमनारंभ संरंभ, प्रकंपमानं, समस्त देहावयव हस्तप्राप्तं, महीरुह महा युद्ध कृत रिपुबल प्रभंजनं, शशि भाजनंच, वायु देवं समाह्वानयामहे स्वाहा ॥ हे वायु आगच्छ २ वायवे स्वाहा, शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ यत्र रीक्षत सत्क्षेत्रे, क्षिपामि क्षणविक्षणम् ॥
याग दीक्षाक्षणे क्षेमं, विभिस्तुदर्भ मुत्तमम् ॥ यत्र दर्भः ॥

ॐ हंसौ घेन समुह्यमान मनघं, प्रेंस द्विमानध्वजैः ॥
आरूढं पृथु पुष्पकं धनपतिः, प्रोच्चैरु दीच्यांदिशि ॥
कान्तैरप्सरसां कुलैः परिगतं, शक्त्यायुधं बोधये ॥
गंधं बंधरधीः प्रतीच्छतुतरा, मत्रार्हतः पूजने ॥ पाद्यार्घ ॥

ॐ उत्तरस्यां दिशि रंभाद्य सरकर चरणाभरण मणिगण झणत्कार श्रवण विहित सुर गण रण [illegible], [illegible] विधवत पट पवन विदारित; जीमूत पटलं, रसना बंधन प्रबल मुक्तामय, दाम शोभमान हेम दंडोपेतं, पुष्पक विमानमारूढं, अनादर मुक्त शक्ति प्रहारोपार्जित, समर संघट्ट विजय मुकुट संघटित रत्नकिरण, विरचित्ता खंडल चाप प्रपंच धन देव्यादि दिव्य महा पुण्य, परिवारो पेतं, कि कुबेर देवमाह्वानयामहे स्वाहा, हे कुबेर, आगच्छ २, कुबेराय स्वाहा । शेषं पूर्ववत ॥

ॐ सर्वस्य शांतये शांतं, नत्वा श्री वृत्त लक्षितं ॥
वर्धमाने समैशानं, विदधे दर्भिणी दिशां ॥ ईशान दर्भः ॥

ॐ ईशान वृष पष्टगं गणशतै, रावध्य मूर्ध्दांजलिं ॥
हस्तो दस्त कराल शूल मयदं, पूर्वोत्तरस्यां दिशि ॥
नागैराभरणै रलंकृत मलं. काले ह्वयामि स्वकं ॥
पात्रं द्राक्प्रति गृह्यतामिहमहे, पुष्पादि काम्यर्चनम् ॥ पाद्यार्घः ॥

ॐ पूर्वोत्तरस्यां दिशि दर्पोद्धारित मंदाकिनी पंकज मंडित विशंकट कुटिल विषाण कोटि उत्कृष्ट हाटक घटित कल, कूणित किंकणी सनाथ प्रलंबमान गल कंबलोन्नतैः पूर्णकं धरं, धराधर कैलाश धवलिमा लंघयंतं, वृषभमारूढं, भुजंगराज रज्जू संयुतं, केतकी कुसुमदल दाम सुरभि मौलि सरल शुभा युद्धोत्पादित प्रतिकूलवर्ति सर्वांग शूलं दिव्य कुल योषित् अशेष विभूषित समाजन समेतं ईशानदेवं समाह्वानयामहे ॥ स्वाहा
हे ईशान आगच्छ २ ईशानाय स्वाहा ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ प्रज्वाल्य पवित्राग्निं, प्रसिंच्याम्य स्टतांजलिं ॥
तुष्टैः तुष्टी महाहीनां, सहस्राणांच तावतां ॥ नाग दर्भः ॥

ॐ तिष्ठन्तं कमठस्य निष्ठुरतरे, पृष्ठे धराशा प्रभुं ॥
नागेन्द्रं फण चक्र वाल मणिभि, र्ध्वस्तांधकारोदयं ॥
आरक्त द्विसहस्र लोचनमुखं, क्रूरं करोम्यग्रत ॥
स्तन्नाम्नैव मनु प्रियेण बहुधा, गंधेन संप्रीयतां ॥ पाद्यार्घः ॥

ॐ अधरस्यां दिशि कठिन चक्रा कारोन्नत मध्य पृथु पृष्ठकं कुल सामर्थाष्ट गुण शरीर सामर्थं, चारु चरण संचरण पराजित पवन रभसं, कूर्मराज पृष्ठमारूढं, शिर सहस्र चूड़ामणि मरीचि बिडंबितं, शरत्समय विमल नक्षत्र चक्रं: स्थूल स्फूर्त मुक्ताफल हारालंकृत, परीत कंठ कंदलं सपद्मावति परिजनं, भूत धात्री धरणं धरणेन्द्रदेवं, समाह्वानयामहे ॥ स्वाहा ॥
ॐ धरणेन्द्र देव आगच्छ २ ; धरणेन्द्राय स्वाहा ॥

ॐ दर्भकांड समादाय, विश्वविघ्नौघखंडनम् ॥
क्षिपामि ब्रम्हणः स्थाने, भक्त्या वाद्यं महामहे ॥ सोम दर्भः ॥

ॐ ऊर्ध्वायां दिशि सिंह वाहन मुडु त्रातानुजातं स्फुरत् ॥
कांतिं कैरवदाम रम्य वपुषं सोमं, सवित्र्या समम् ॥
अत्युग्र ग्रहमण्डलस्य सकल, व्योमैक चूड़ामणिं ॥
पूजास्वा गमये प्रतीच्छतुतरा मे, पोत्रगंधादिकम् ॥ पाद्यार्घं ॥

ॐ ऊर्ध्वायां दिशि कुटिल दंष्ट्रा रूप वाल, चन्द्रांशु धवलित, दिक्प्रदेशं, खर नखर कुटिल जर्जरित गर्जद्घ्वनान्त, घनसदृश सटाटोप भासुरोरू वपुषं, केशरिणमारूढं, निरुपम काय कांति संदिह्यमान, कुमुद स्रजं, तार तारागण परिवार परिगतं, रोहिणी समन्वितं सोम देवं, समाह्वानयामहे, स्वाहा ॥ हे सोम आगच्छ २ सोमाय स्वाहा, शेषं पूर्ववत ॥

❀ इति दश लोक पालाह्वाननम् ❀

ॐ स्थानास नार्घ्य प्रतिपत्ति योग्यान्, सद्भाव सन्मान जलादिभिश्च ॥

जैनाभिषेके समुपागतानां, करोमिपूजामिह दिक्पतीनां ॥ जलम् ॥

श्रीखंड कर्पूर सुकुंकुमाद्यैः, गंधैः सुगंधी कृत दिग्विभागैः ॥

जैनाभिषेकेमुपागतानां, करोमिपूजामिह दिक्पतीनां ॥ चंदनं ॥

शाल्यक्षतैः रक्षतदीर्घगात्रैः, सुनिर्मलैश्चंद्र कर वदातैः ॥

जैनाभिषेके समुपागतानां, करोमिपूजामिह दिक्पतीनां ॥ अक्षतं ॥

अंभोजनीलोत्पलपारि जातैः, कदंब कुंदादि वर प्रसूनै ॥ जैनाभिषे ॥ पुष्पं ॥

नैवेद्यकैः कांचन रत्न पात्रै, न्यस्तैरुदस्तै र्हरिणा सुहस्तै ॥ जैनाभि ॥ नैवेद्यं ॥

दीपोत्करैर्ध्वस्त तमोभिघातै, रुद्योतिता शेष पदार्थ जातैः ॥ जैनाभि ॥ दीपं ॥

तगार कृष्णागुरु चंदनाद्यैः संचूर्ण जैहुत्तम धूपवर्गैः ॥ जैनाभि ॥ धूपम् ॥

लवंग नारिंग कपित्थ पूग, श्रीमोच चोचादि फलैः पवित्रैः ॥ जैनाभि ॥ फलम् ॥

श्री चंदना क्षत चरु वर दीपमिश्रै, विकाश पुष्पांजलिनासुभक्त्या ॥
जैनाभिषेके समुपागतानां, करोमि पूजामिह दिक्पतीनाम् ॥ अर्घं ॥

ॐ संस्थाप्य पीठं शशिशंख शुभ्रं, समीप देशे जिन पटिकस्य ॥
ग्रहाश्च वादित्र सुखानथैतान्, यजामि गंध प्रसवाक्षतोघैः ॥

मध्ये तु भास्करं स्थाप्य, शशिनं पूर्व दक्षिणे ।
दक्षिणे लोहितांगंच, बुधं पूर्वोत्तरेण तु ॥
उत्तरेण गुरुं विद्यात्, पूर्वेणैव तु भार्गवं ।
पश्चिमे तु शनिं विद्यात्, राहुं दक्षिण पश्चिमे ॥
पश्चिमोत्तर के केतुः, स्थाप्याः वै शुक्ल तन्दुलैः ॥ ग्रहपीठ स्थापनं ॥

ॐ पूर्वस्यां दिशि सप्तदंडकनलु, छेद कुसुम प्रभं ।
पृथ्वी तोष्ट शतं० विहाय गमने, यो यो जनानां व्रजेत् ॥
यद्दृष्ट्वा दुगणं प्रमोक्षततनु, स्यात् श्री भूदव्जा करः ।
कालश्च प्रमितश्च येनभुवने; सूर्या दर्भं ददे ॥ सूर्य दर्भः ॥
यस्मात्ध्वान्त समुष्मितं जगदिदं, निर्दोष भाभासते ।
यस्योत्संगमि योगिनामभि चतुः, शंखै सहस्रैः क्रमात् ॥
सिंहे मोच तुरंगमा चति भृतां, यानैः प्रति स्यन्दनं ।
बिम्बं यस्यतु सप्तमांशसहितं, क्रोशस्य कोशत्रयम् ॥

पल्यं वर्षसहस्र युक्तमुदितं, यस्मिन्स्थितं जीवितम् ॥

रक्तैश्चामर वस्तु केतु कुसुमं, छत्रध्वजैराजितम् ॥

आत्मीयायुध वंध वाहनयुतं, भृत्यौघ पूर्वान्वितैः ॥

अस्मिन्पुण्य महोत्सवे जिनपते, मंत्र्यांबुजानंदनैः ॥

अर्कों बंधन पक्वभक्त पयसा, सर्पि गुडा संयुतं ॥

श्री खंडागुरु कुंकुमैः सतुहितैः, रेलावरांगोत्कटैः ॥

पुष्पैर्किंशुक पाटलोत्तम जपा, बन्धूक पद्मादिभिः ॥

तोयैर चत दीप धूप सफलैः, त्वां संयजे भास्करम् ॥

हे सूर्य आगच्छ २ सूर्याय स्वाहा अर्क काष्ठे क्षीर खांड घृत रक्तध्वजा ॥ सूर्य ग्रहानुचराय स्वाहाः सूर्य महत्तराय स्वाहा, आदित्याय स्वाहा, सोमाय स्वाहा, भौमाय स्वाहा, बुधाय स्वाहा, बृहस्पतये स्वाहा, शुक्राय स्वाहाः शनैश्चराय स्वाहा, राहवे स्वाहा, केतवे स्वाहा, ॐ स्वाहा, भूः स्वाहा, भुवः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वस्वधाय स्वाहा, ॐ सूर्य देवाय स्वगुण परिवृताय इदमर्घं पाद्यं गंधं पुष्पं दीपं धूपं चरुं बलिमक्षतं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रति गृह्यताम् प्रति गृह्यतामिति स्वाहा।

यस्यार्थं क्रियते कर्म, सुप्रीतो भव मे सदा ॥

शांतिकं पौष्टिकं चैव, सर्व कार्येषु सिद्धिदः ॥ कुसुमांजलिं क्षिपेत्।

ॐ आग्नेयां दिशि सप्तचाप वपुषं, रौप्याद्रि दीप्तयान्वितम् ॥

धर्मग्लान समस्त कैरवनं, नाना प्रमोदप्रदं ॥

पल्यं वत्सर लक्ष युक्त मुदितं, यस्यायुरा वेदितम् ॥

अष्टाशीति बल ग्रहैः परिवृतं, राज्यंगना नायकम् ॥

अष्टाविंशति संख्य विष्णय सहितं, पंचाननाधिष्ठितम् ॥

षट्षष्टाख्य सहस्र नंद शतकं, पंचोत्तरा सप्ततिः ॥

कोटा कोटिभिरात ताम्बर तले, तारागणैः सेवितं ॥

उत्पाट प्रभवं जिनेश्वर महं, सोमं समाह्वानये ॥ सोम दर्भः ॥

ॐ बिम्बं यस्यतु योजनंतु विततं, क्रोश त्रिभागाविन्वतं ॥

सार्धात्यष्ट शतेषु योजन वरैः, पृथ्वीतलाद्यास्थितं ॥

यस्योच्चंच चतुःसहस्रमितिभि, र्यानैः प्रतिस्यन्दनम् ॥

पंचास्येन वृषाश्वचक्राकृति धरैः, भक्त्याभि योग्यामरैः ॥

आस्मिन्पुण्य जिनाभिषेक समये, भार्याद्विभिः संयुतं ॥

शुभ्राभ्रोपम चामराम्बरधरैः, छत्रध्वजालंकृतं ॥

पालाशोत्थसमित्प्रपक्व चरुभि, र्दध्याज्य क्षीर घृतैः ॥

सध्दूपैः सरलान्वितश्च, सलिलाद्यर्चाभिरिन्दुं यजे ॥

हे सोम आगच्छ २ सोमाय स्वाहा शेषं पूर्ववत् ॥ नैवेद्यं कराम्बु पलाश ईंधनश्वेतध्वजा

ॐ दक्षिणस्यांदिशि तस्थि वासं, निर्धूम धूमध्वज देह दीप्तिं ॥

उत्पादजं सप्त धनुः प्रमाणं, चक्रं यजे पद्म दलायुधं ॥

उत्तार गोलार्द्धं निभं जयार्धं, द्विक्रोशमात्रद्विसहस्रसंख्या ॥

सिंहेभ गोरवः कृतयो भियोग्या, वहन्ति यानं प्रतियस्यबिम्बं ॥ भौमदर्भः ॥

अत्र रक्तध्वजा खदिर ईंधर सहित नैवेद्यं

ज्यूयेन दशभि विहाय वसुधा, यो योजनानाम्बरे ॥

पत्नी बांधव भृत्य वाहन सुहृत, शस्त्रायवर्गान्वितं ॥

तोयै लोहित चन्दनै सुघृसणै, दीपैश्च रक्ताक्षतैः ॥

धूपैर्खं जुरसैलगुग्गुल गुड, स्योयेण कर्पूरजैः ॥

नैवेद्य गुड शर्करा घृत युतैः, शीतोदक प्लावितैः ॥

गंधाढ्यैर्यव सक्तुभिः सुखदिरां, गार प्रजुष्टै र्मनाक ॥

द्राक्षेक्षाम्बु रसैः रसांक कुसुमै, संसेक्तनाद्यैर्फलैः ॥

यज्ञेऽस्मिन् परितर्पयामि बहुशः, श्रीलोहितांग्रं ग्रहं ॥

हे मंगल आगच्छ २ मंगलाय स्वाहा शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ यातुधानि दिशं संस्थितिज ग्रहं पुस्तकं न्यस्त हस्तं स्मितास्यास्तु जंचारु सूत्र तथालंकृतोरः स्थलं दर्भोद्भवार्धहस्तोऽहमाह्वानये ॥ बुधदर्भः ॥

ॐ नैऋत्यां दिशि सप्त कार्मुक तनु, भिन्नेन्द्र नील द्युति, ॥

साष्टाशीति मुताष्ट संख्य शतकै, र्यस्यार्ध क्रोश प्रभं ॥

ध्यायं दिव्य हरीभ गोश्वनि करैः, भौमोक्त संख्यैः रथैः ॥

पन्थाद्धायुर कल्मषां बहुविधां, बुद्धि सदेयाद्बुधः ॥

नीलैरातप वारणाम्बर लसद्यज्ञोपवीतध्वजैः ॥

नीलाम्भोरुह दाम चारु चमरैः राराजितः सर्वतः ॥

सत्वीरैः स्वर मंजरी भव सभीत्पक्वैः सशाल्योदनैः ॥

धूपैर्खर्जुर सान्वितैं बुधमहं, छागाधिरूढं यजे ॥

हे बुध आगच्छ २ बुधाय स्वाहा शेषं पूर्ववत्

ॐ पश्चिमायां दिशि संस्थितं वाक्पतिसद्ग्रहं पंकजाख्यं बलिचारुमालाकरं गंधं शाल्य चत पुष्प धूपप्रियं चार्घं हस्तो महास्मिन्महेशं शब्दये गुरुदर्भः समदि ईंधन नील ध्वज सहितं नैवेद्यम् ॥

ॐ पन्थैकायुधमष्टविंशति, करोत्सेधं सुवर्ण प्रभं ।

धात्रीतोरसवर्जितैनवशते, शत योजनानां दिवि ॥

ज्ञेयं पश्य रथं सुमेरुमभित, स्तोकेन क्रोश प्रभं ।

मुष्टांगैर्हरि हस्ति गोऽश्वनि करै, र्दिव्यै सहस्राष्टकैः ॥

हस्तं न्यस्त सु पुस्तकं बहु मतिं, यज्ञोपवीतां कि तं ॥

पीतैरंशुक पुष्पदाम चमरैः, छत्रध्वजै भूषितं ॥

अश्वत्थोत्थ समित्प्रपक्व चरुभिः, शाल्योदनार्घैरहम् ॥

पद्मस्थं प्रयजे जिनेश्वरमहं, वाचस्पतिं संग्रहं ॥

हे बृहस्पति आगच्छ २ बृहस्पतये स्वाहा, इति पीपल ईंधन पीत ध्वजसहितं नैवेद्यम् ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ वायु देवोत्तराशा श्रितं, स्फुर द्रोचि ज्वालाचल नागपाशायुधं ॥

दिव्य मंडूक पृष्ठे समाविष्टितं, व्याघ्रराजो हमस्मिन्मितं सद्ग्रहं ॥ शुक्र दर्भः ॥

ॐ वायव्याशा श्रितोयः, शशिविशद तनुः सप्तचाप प्रमाणं ॥

देहोत्सेधोत्तमाला परिकरि प्रकरो, ब्रम्ह सूत्रांकितोरः ॥

सूर्यादेको नवत्यामुपरिगतो, योजनानां जनोयं ॥

दृष्टोयं जीव लोके परिणयन, जिनस्थापनार्घं करोति ॥

दिव्यं यस्योद्वहन्ति स्फुरदमलरुचि, क्रोशमात्रं विमानं ॥

सिंहेभ्यो चाश्व मुख्य तुहिन किरण, जश्चाद्रु संख्या प्रमाणं ॥

यस्मिन्पन्यं प्रतिष्ठं शत युत मरुजै, जीवितं वत्सराणाम ॥

पालाशोत्सेधपक्वैः सघृत गुरु युतैः, सांस्थितं तर्पयामः ॥

हे शुक्र आगच्छ २ शुक्राय स्वाहा, खेरध्वजईंधन नैवेद्यं, शेषं पूर्ववत् ॥

ॐ उत्तरस्यांदिशि स्फुरन्मेच कांग, द्युतिं कृष्ण यज्ञोपवीतादिभिः ॥

भूषितं चात्मदास्त्रान्वितं, देव देवाभिषेकेशनिमब्दये ॥ शनिदर्भ ॥

ॐ उदीच्यांदिशि संस्थितोज्जननिभः, पल्याद्धं जीवीमतो ॥

मंद सप्तशरामनोन्नत तनु, नेत्राल देशार्चितः ॥

मार्तण्डात्मज योजनो परिगतं, कृष्णाम्बराद्यैर्युतं ॥

यस्य स्पंदन माहवंति सततं, क्रोशार्द्ध मात्रं दिवि ॥

दिव्यांगादिवि सार्द्धिमर्द्ध मितयः, सिंहेभगोवा जयः ॥

सच्छत्रैः सुशमी समद्भिरशतै भर्षैं, स्तिलैस्तंदुलैः ॥

साज्यैश्चारु गुडैः शनीश्चर महं, संतर्पयामो वयं ॥

धूपैः सर्ज्ज रसोत्कटैर्गुरु युतैः, सुतेतरा वाचये ॥

हे शनीश्चर आगच्छ २ शनीश्चराय स्वाहा इति कृष्णाध्वजसहितं नैवेद्यम्

पूर्वोत्तरस्यांदिशि चाष्ट विंशति, करोन्नतां दिव्य तनूदपातिवः ॥

आजानु बाहुर्निज शक्ति वान्स्तभः, सर्वं गृहीत्वात्रिषडा यगोस्तुमे ॥ राहुदर्भ ॥

ॐ किं चिद्धीन जिनोक्त योजनमितं, चन्द्रादधोगं सदा ॥

दिव्यं यस्य विमान मंजननिभः कृष्णां करोत्यैदवं ॥

बिम्बं रश्मिभिरूर्द्ध गाभिरमलं, पर्वावसानेष्वपि ॥

श्री मद्राहु महाग्रहं जिनमहे, दूर्वादिभिस्तं यजे ॥

हे राहु आगच्छ २ राहवे स्वाहा शेषं पूर्ववत्

ॐ केतुः स्फुरत्केतु सहस्र विग्रहो, रिष्ट ग्रहाख्यो रविमंडलाद्धः ।

व्रजेदरिष्टान विमान संस्थितं, जिनाभिषेके वसुदर्भ माददे ॥ केतु दर्भः ॥

ॐ ईषन्नू न तरैकयो जनमितं, धूम्रौघ धूम्रत्विषम् ॥

यस्य स्पंदनमूर्द्ध्व गासित करै, राच्छादये द्भास्करम् ॥

दर्शान्ते प्रतिपत्तिवा बुदयनि, षण्मासि षण्मासितम् ॥

रिष्टं सप्त धनुस्तनुं ग्रह महं, केतुं च सम्यक् यजे ॥

हे केतु आगच्छ २ केतवे स्वाहा ॥ शेषं पूर्ववत् ॥

स्थानासनार्घ्य प्रति पत्ति योग्यान्, सद्भावसन्मान जलादिभिश्च

जैनाभिषेके समयेसमेतान्, नवग्रहान्शान्ति करान्यजामि ॥

जलं गंधं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं पुष्पांजलिं क्षिपेत्

क्षीरार्णवो त्तुंग तरंगगौरं, कस्तूरि का मोद विकृष्ट तुंगम् ॥

रजोपनोदाय ददामिधौतं, भक्त्या ग्रहेभ्यो वर वस्त्र मुख्यं वस्त्रम्

॥ अथ क्षेत्र पालार्चनम् ॥

सद्यो नाति सुगन्धेन, स्वच्छेन बहुलेनच ॥

स्नपनं क्षेत्रपालस्य, तैलेन प्रकरोम्यहम् ॥ तैलाचनम् ॥

शश्वत् सुसौगन्ध्य सुनिर्मलेन, सद्येन तैलेन गुडान्वितेन ॥

श्री क्षेत्रपालं बहुविघ्न शान्त्यै, संस्नोमि सिंदूर कृतानु लेपम् ॥

पानीये घनसारकैः सुमनसै, श्चंद्रा क्षतैरक्षतैः ॥

नैवेद्यैर्दीप धूप विविधै, र्नानाविधैः श्री फलैः ॥

संकलीष्टा समपात नाशनपरैः, क्षेत्राधिपस्याग्रतः ॥

तद्वद्भक्ति पदार विंदमभितः, संचर्चयामोवयम् ॥

॥ इति क्षेत्र पालार्चनं ॥ अर्घं ॥

इत्ये लोक पालाः ये, समाहूताः मयाधुना ॥

निजासनेषु ते सर्वे, सम्यक् तिष्ठंतु सादराः ॥ १ ॥

विघ्नान्निहत्य निः शेषान् सहायाः संतु ते मम् ॥

सप्त धान्यैस्तथैतेषां, जले दद्यात् समाहुतिः ॥ २ ॥

सद्यस्तन प्रलघु गोमय पिंडिकाभिः, यत्पारि वर्त्तक मिद क्रियते जिनस्य । तत्स्नेहजटमितमहो नहि लौकिकेन, रक्षादिनाकिमपिसाध्यमिहस्तदेवैः ॥

॥ इति गोमय पिंड का वतरणम ॥

सुस्निग्ध कुंद कलिकोज्वल चारुमक्त, पिंडान खंडगुणमंडित विग्रहस्थं अत्यादराज्जि नपतेरव तारयामि, निर्वीण संभवमहासुख लब्धयेऽहम् ॥

॥ इतिभक्त पिंडिका वतारणम् ॥

पूता वनौ पतित शीतल भूति पिंडैश्चंद्रांशु खंडधवलैः कर कुड्मलस्थै, भास्मार्थमष्टविधकर्म महेन्धनस्य, लोकेश्वरस्य परिवर्तनमा तनोमि

॥ इति भस्म पिंडकावतारणम् ॥

हस्त द्वयाग्र कलितामलतार्ण जूटः कोटिस्थितेन शिखिना सुख दर्शनेन ॥
निर्दग्ध कर्म रजसो जिननायकस्य, नीराजनं सटिति दूरत एव कुर्वे ॥

॥ इति नीरांजनाः वतारणम् ॥

दूरावनम्र सुर नाथ किरीट कोटि, संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रीः ॥
प्रस्वेद तापमल मुक्तमपि प्रकृष्टै, भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे ॥

ॐ जिन पतिमतिरिव सर्वजन जीवनैः,
सज्जन मनोभिरिव स्वच्छ तमैः,
तर्क शास्त्रैरिव बुद्धि वर्द्धनैरनुपचार प्रसादित,
स्वामि सन्मान दानैखिसंतर्पकैः,
यौवना रंभैरिवमनोहरैः ,
चतुरस्त्र बन्धु जनं संमुतै, रिव सदा क्लादने हेतुभिः,
शशिकिरण प्रकरैरिवातिशीतलैः , नदीनद वापी कूप तडागसरोवरादि,

शुचितमः प्रदेश संभूतैः ,

शुक्लभिरं भोभरनेभिः ॥

ॐ एतानि जिनानांगसंग मंगला निदाघ तप तप्त सकल जगतापापनोदन दक्षानि, जिन चरणाराधनां शक्रस्य, संवर्द्धन कराणि, स्नान सलिलानि जगतः, शांतिं कुर्वन्तु स्वाहा, ॥

जलस्नपनम् ॥

पुण्यै र्वार्भिः प्रसर्पत, परिमल सहितै, रक्तै रक्तांगैः,

पुष्पै पुष्पद्भिरन्त श्चरुभिः, शुभवरै, दीपयद्भिः प्रदीपैः ॥

धूपैः सद्धूप नव्यै रूप हत गुणैः, संफलैः संफलाढ्यैः ॥

पुष्प जल्योय युक्तै, स्त्रिभुवनमहितं, संयजे देव देवं ॥ अर्घ्यम्

उत्कृष्ट वर्ण नव हेम रसाभिराम, देह प्रभावलय संगम लुप्त दीप्तिं ॥

भारां घृतस्य शुभ गंध गुणानु मेयां, वंदेऽर्हत, सरभ संस्नपनोप युक्तां ॥

ॐ विलीनि जातरूप रस धारा समुज्वलायाः, उदयगत बाल तरणि किरणारुणारुचा, नवजल धरधीर ध्वनि हेतु समुन्मिरवतरल तांडदंड विडंबन कारिण्या, श्रेष्ट मंजिष्टाः निर्यास वर्ण मुपहसन्त्या, मनः शिलाभंग समुत्थित रेणु पिंजरयानि सुख सहकार हरि द्राग्रंथि निष्पंद मनो हरया, सुगंधि कमल मकरंद कर्णिका रजपुंजपिंरितमिवासक्त देशं, निजद्युति विभवेन, जनयन्त्या मृदुपवन विसर्पमान, परमामोद सुरभि कृत, समस्त ककुब्भागया, घनसार सौरभभर समुद्वहंत्या

स्निग्ध शुचि विमल घृत धारया, भगवंतमर्हन्तं संस्नाप यामः ॥ धर्मं स्निग्धमनोज्ञशाकं विदधातु भगवानिति स्वाहा ॥

★ इति घृतस्नपनम् ॐ पुण्यै वीभिरित्यादिना पुष्पांजलिं ★

संपूर्ण शारद शशांक मरीचि जाल, स्यन्दैरिवात्म यशसामि वसुप्रवाहैः ॥
क्षीरैं जिनाः शुचि तरैमिपि च्यमानाः, संपादयंतुमम चित्त समीहितानि

ॐ अथ निष्कथित कलधौत द्रव्य सन्निभेन, सरसमयं प्रसन्न महत्पथ, प्रस्थित राजहंस श्रेणि सदृशेण, चन्द्रबिंबाश्रितामृतरस प्रवाहानुकारिणा, स्निग्धोपहसित, सरस्वतिहसितेन, पवनान्दोलित दुग्ध सिंधु प्रवाह लोल कल्लोल लीलां दधानेन, जिन दर्शन कुतूहलेन, रसातल महाप्रागतस्य शेषस्य शरीरेण, वहीर्भूतेन धवलितम्नायच, सर्वमेव जिनायतनं शंख दर्भादि वोत्कीर्णं पुण्य हृदयादिग्वाहनं, बुद्धि नांशु बिम्ब मिवोदितं, नीहार गिरि निर्दर प्रक्षालितमिव, देवराज मतंग जदंत मध्यमिव, चन्द्र शिलाहचित मिव प्रकुर्वाणेन, शरदभ्र वृन्देनैव, द्रवीभूतेन, यज्ञोपवीतेन, क्षीरोदधि सर्व स्वेनेव, शुचिना क्षीर पूरेण, भगवन्तं अर्हंतं स्नापयामः, निरवधि यशः अस्माकं करोतु भगवानिति स्वाहा ॥

इति दुग्धस्नपनं पुण्यै वीभिरित्यादिना अर्घ्यम्

दुग्धाब्धिवीचि चय संचय फेनराशि, पांडुत्व कांतिमव धीरयतामतीव ॥
दृष्टांगता जिनपतेः प्रतिमां सुधारा, संपद्यतां सपदि वांछितसिद्धयेवः ॥

ॐ पुंडरीक खंड केतकी प्रसूनदलाच्छातेन, स्फटिक मणि कुट मन लोनिपतीव, चंद्रातप प्रकारेण, कनक महीधर तट विकट कोटि घटित नक्षत्र चौद विशदेन, कुसुम कुंदा सित सिंदु वार छायो पामितेन, अमृतफेन पिंड इव पांडुरी कृतेन, पारद रस धाराभिरिव धौतेन: परमर्षिध्यान संपद्विशे षेणेव, कृतमूर्ति परिग्रहेन जिननाथ यशसेव भुवने भ्रमयमानेन, पिंडी भूतेन कास कुसुमविकास कांति कान्तेन, सर्व शुक्लैरिव विहित संविभागेन, कैलाशोपल पट लेनेव, कोमल तामापन्नेन, दध्ना भगवन्तमर्हन्तं स्नापयामि, शुभ शीतल ध्याने नास्माकं संयोजयतु, भगवानिति स्वाहा ॥ दधि स्नपनं ॥

ॐ भक्त्या ललाट तट देश निवेशितोच्चैः ॥
हस्तैः स्तुता: सुर वरा सुर मर्त्य नाथैः ॥
तत्काल पीलित महेक्षु रसस्य धाराः ॥
सद्यः पुनातु जिनबिम्ब शतैव युष्मान् ॥

ॐ सकल मनोभिरुचित स्वादु भावेन; राज। वर्तशिला घर्षिताः कल्याण रेखापि संगेन, विविध सुगन्धि द्रव्य संचय परिमला मोदरिस्कृत ककुब्वलयेन, निरयदादेन, इक्षु रसेन, भगवन्तमर्हन्तं स्नापयामि स्वाहा निर्मलमज्ञानं अस्माकमुत्पादयतु भगवानिति स्वाहा ।

॥ इति इक्षु रस स्नपनम ॥

सुस्वादु ऋष्य गुरु कोमल नारि केल, स्थूल प्रभूत फलनिर्मल वारि पूरैः ॥
संसार सागर समुत्तरणैक सेतु, भूतं जिनेन्द्रममितः परिषेचयामि, ॥

ॐ निरुपमहत सुमहत जेरत मधुरत रस धूप प्रति गवा परिम्लान, स्निग्धमश्रुतणच्चगुण ग्राम समग्रता समधिक स्पृह णियानां निखिल भुवन जन निवह नयनसंदो होद्य मानंददा व्यसनिनां, केषांचित्संफुल्ल सेफालि कोल्ल सुल्लोहित कांतीनां, अधरित विराग पद्मराग घट सौष्ठवानां; केषांचित्समुल्लसत्पीत शरीरीष पुष्प भरित द्युतीनां, न्यक्कृत विद्यो द्योतमान मरकत कलश विलासनां, केषांचित्प्रविकासित चंपक प्रसव प्रीति दीप्तीनां; अभिभूत शुभशात कुंभ कुंभि सौभाग्यानां, प्रभूत भूरिवारि गंभीरोद्धर कुहराभ्यन्तरामानां, लक्षणा विरच्यमान परिनिर्मित रुचिर द्वार, प्रणाल सनाथ सुललित निजाप्रकाश, सरस सदुरोत्पत्ति उत्पत्ति नव तर नीर दुर्दिव्यनव्यति कराणां, नारि केलि फलोत्कराणां, कर्तुं जन्माभिषेकं त्रिदुष वरि वृद्धा संगता, यस्य कीर्ति लोके कृष्णेऽपि चन्द्रा तपशिवद रुचा चेति ते, जात शंका ॥

मूर्ध्न्यें वो तुंग भावा त्कनक शिखरिणां, पृष्ठ सौधर्मधाम्ना ।
दुग्धाब्धिः शंकयै वस्फुरतरमविधुः, पंचमं चार्णवानां ॥
प्रोद्य द्राका मृगांक प्रति नव किरण, श्रेणि संभेद भूरि ।
प्रश्च्योतश्चंद्रकांतोपलविमल जला, सार पूर प्रपन्नैः ॥
प्रालेयाम्भृणाली मलयज कदली, हार कलहार शीतैः ।
रेतैस्तोय प्रवाहैः जग दधिपति, तंजिनं स्नापयामः ॥
श्री मज्जैनेन्द्र गात्रक्षिति धरणि पत, त्रि जैरांभः प्रवाहः ।
श्च्योतत् पयूष राशी द्रव रस विभव, स्फर्द्धि माधुर्य धुर्यः ॥

विश्वामेनां प्रसर्य द्रुहल कल कलं, मेदिनीं व्यश्नु वानः ।
स्तादेनः शातयेनः चपित जगदघ, चोच तोयौघ एषः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं बं बं हं सं तं तं बं बं हं हं सं सं तं तं पं पं भवीं भवीं क्वीं क्वीं द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोर्हतेभगवते श्रीमते पवित्रतर नालि केर रसेन जिनमभिषिंच यामि स्वाहा,

॥ इति नालि केर रसेन स्नपनं ॥

श्री शात कुंभ कलशोद्धृतशुद्ध वर्णैः, सकुंकमाभ मधुराम्ररस प्रवेकैः रागादि वैरिपरि मर्दन लब्ध कीर्ति, रदेती कृता समभुवंस्नपयामि वीरं ।

ॐ निरुपम मद कल कल कंठ वचन रचन चातुरि चमत्कार सहकाराणां, आमोद भर भरित दिगंत राल विरर संधानां अनेक शुक पिक कंठ माधुर्य धुरीणां, पंचम कोका कलित ललित श्रुतीनां, विभूति बहुत परिमल पृथुल फलभाराणां, अभिनव घन पटल श्यामल द्वंदीतीणां निंदी वीर मधुर झंकार मुखरित शाखामृगाणां, गगन चुम्बितां दोलित पल्लवानां, निजमहिम विनिर्जित तर्जितरुणां, अमंदम करंद अवधारित शुद्ध बोधैः सिद्धरसै रिवाखिल सिद्ध कारकैः मरकत मय कपि कार फल संभृत्यै हत्तप्त सुवर्ण प्रभैरप्यामोद सुभगैः धनद निर्मित पंचाश्चर्यैरिव माणिक्य पुष्पराग प्रवाल विद्युद्दर्शितं रत्नत्रयाश्चर्यैरिव सुदर्शन पर्वताग्र स्थितमर्हद्भक्त्या भिषेकोत्सव मनोहरै रति पवित्र तमाम्र रसैः फल संभूतैः ॐ तुष्टि करैः पुष्टि करैः पक्व पुष्पैर्मधुरैर्मनोहरैः गुरुवचनैरिव गुरुभिश्चाम्ररसै स्नापयामि स्वाहा ॥

आम्र रस स्नपनम् ॥

ॐ संस्नापितस्य घृत दुग्ध दधीक्षुवाहैः ॥
सर्वाभिरौष धिभिरर्ह तमुज्वलाभिः ॥
उद्वर्ति तस्य विदधाम्यभिषेक मेला ॥
कालीय कुंकुम रसोत्कट वारि पूरैः ॥

ॐ वलाति बला सहदेवी, मलयजा जात्य कुंकुम एला लवंग कंकोल नाग केशर महौषधि पृष्ठाः पर्णि शाला पर्णि मुद्गपर्णि माषपर्णि जय विजया अमृता सुगंधा सुरदारा जीवक ऋषभक काकोली क्षीर काकोली विशदा मोहिनी शता वरी ह्री बेलि कादि औषधिगण मिश्रितेन इन्द्र हस्तोयनिता भरण विमिश्रितेराजित श्रोत्रप्रवाहं पन्च वर्ण लिट्गत शोभा प्राप्त साश्चर्येण अनेक देवांगना विरचित जय जय शब्दात्यन्त कोलाहला गत भव्य जीव कृत श्रृद्धानेन, बहु शुभ सुगंध वस्तु निक्षिप्ता जीव जल प्रवाह मंदाकि नी प्रमाणेन, नानाविधे शोत्पम सर्वौषधि परिमल सुगंधि कृत समस्त चैत्य भवनेन, सर्वौषधिपयः पूरेण सकल विमल केवल ज्ञान दर्शन जिनेश्वरं संस्नापयामि, चतुर्गति क संसार दुःख मस्माकं भगवान् स्फोट यत्वामंति स्वाहा ।

" सर्वौषधि मंत्रः ॥

ॐ नमो र्हते भगवते श्रीमते त्रैलोक्य गुरवे त्रिदशेश्वर मणि मुकुट मस्तक स्पष्टी कृत विमल रुचिर वर कनक विकृत स्फुट लटह मुकुट किरीट कोटि परिमंडित मरकतेन्द्र नील महा नील चन्द्रकांत सूर्य कान्त पद्मराग पुष्पराग वज्रवैडूर्य प्रभृति विविध प्रकारानेक रत्न चूडामणि गुणगणो-

दय स्फुरद्गुरु विद्युद्विलास लोल ज्वाला कुल प्रभा कलाप मालालंकृत पाद पंकज दयाल धर्म तीर्थ कराय धर्म नायकाय श्री मत्सिद्धार्थ राज कुलाम्बरोदिताय विविधानेक विमल सम्पूर्ण लावण्य गुण गणोदयाभिरामाति शय विशेष केवल ज्ञान किरण प्रकाशित सकल जगत्त्रय भव्य जन प्रति बोधकाय श्री वर्द्धमान दिवा कराय असुर सुर मुनि गण मनुज प्रतिमोह प्रकर्षमति संशय मूढ़ संकल्पान्ध कारोच्छेदन कराय इहास्यां अवसर्पिण्यां सर्वज्ञानां सर्वदर्शिनां अष्टोत्तरसहस्र लक्षण व्यंजनविधि छुरित जलदमल कमल विलासविस्फुरित रुचिर वर चरणानां चतुर्विंशति तीर्थ कराणां वृषभ जिनेन्द्रादीनां वीर जिनाधीश पर्यन्तानां अत्र बुधोत्पत्ति मतुलया परम भक्त्या देवाश्चतुर्निकायाम हर्णिगण भवन वासी व्यन्तर ज्योतिर्गण विद्याधर चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव सिद्ध चारण किन्नर किं पुरुष महोरग गरुड़ गान्धर्व यक्षराक्षस भूत पिशाच गज गवय महिष वृषभवर तुरंग मकर रवकर भ्रमर रुरु करीण वराहाष्टापद पृरु व्याघ्र हरिगरुड़ कुक्कुट कुरूर कारंड सारस कलहंस चक्रवाक बलाका पर्वत रथयान विमान वाहनाधिरूढ़ा वर कनक किंकिणि कानां मुकुट मुक्तादाम कलाप मालालंकृत विबुधाकीर्णविभाग शरदमल पूर्ण चंद्रद्युतिहर वर विकृतोद्धृत छत्रायुधं चामरमणि ध्वजपताकावर शंख पटह दुन्दुभिभेरी तालकाहल मृदंग तुर्य वेणु वीणा पल्लव बल्लरी प्रमुखोत्कृष्ट कलकल प्रक्षुभित समुद्र घोषसिंह निनाद सहर्षा तुल घोष कोलाहल समंततोन्य द्युति विभमान् विकृता स्पर्द्धइव दर्शयन्तां विमल रूचिर माणिक्य कनक रजतमय ज्वलदमल ॥ लंकार प्रलंब वर हार कुंडलांगद मणि केयूर कटक कटि सूत्र मुकुट धरा रूचिर आपूर्ण नव यौवन मदनोन्मादक विमल जलावर्ति विपुल गंभीर नाभि प्रजाय मानसिति रूचिर वर रोम राजि विभूषित त्रिवलित रंगतनु

मध्यांजन नील केशर भार कमलायतन वान सकल शशि वदन पीनोन्नत पयोधर बिम्बाधर विपुल जघन श्रृंगार वेषविभूषित स्मित हसित विमल विलास लावण्य हावभाव ललित पृथु शिथिल रसना गुप्त गण कलादिभिर्दिव्य देवांगनाभिश्चाप्सरोगण सहिताभिः शक्र प्रबोधिताः देवगणाः मत्तभ्रमद्भ्रमर किलकिली मृदु मधुर वचन ललित फुल्ल वल्ली गुल्म द्रुमपतित पुष्प वासिता नेक द्रुम मंडप कानन वनदरी गुहारण्य तल नितम्ब संशोभित मंदर कूटे अनेक रत्नोज्वल कूट कोटि परि मंडितो विधिना सिंहासने संपादपीठो निक्षिप्यतान् जिनेन्द्रास्त्रैं लोक्य महितान् त्रैलोक्योद्योतकरान् देवाधिदेवान् स्नापयाञ्चक्रिरे । यथा कोकनद कुमुद कुवलय कल्हार सौगन्धिक चंपक पुन्नाग बकुल तिलक सहकाराशोक कुरवक कर्णिकारक केतकी कुल्ल शाल तमाल दाडिम मातुलिंग प्रियंगु नव यूथिकाः वासंतिका जाति मल्लिका माधवी कुंकुम रक्तोत्पल कुटज कोरंट पाटली कुंद मंदार कदंब कदली सिन्दुवार प्रभृति स्थल स्थल जनानेक पंच वर्ण सुरभि कुसुमोपहार पुष्प वास धूप दीप विचित्र नृत्य गीत दिव्य स्तोत्र मंत्र पवित्र मंगलाभिधानैः क्षीरोदधि सलिल कुसुमपरिपूर्ण मंगल रजत कलशैः एवं कृताभिषेका, इहाप्यनेक गंधोदक परिपूर्ण कलशैरभिषेचनं प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा।

इति सर्वौषधि स्नपनम् ।

इष्टैर्मनोरथ शतैरिव भव्यपुंसां, पूर्णैः सुवर्ण कलशै निखिलावसानैः ॥
संसार सागर विलंघन हेतु सेतु, माप्लावये त्रिभुवनैक पतिं जिनेंद्रम् ॥

ॐ जांबूनदरजतादि॰ मय कलश वदन विनिर्गतेन वज्रोपल संघातेनेव द्रव्यतामुपादितेन प्रालेय गिरिरिव द्रवी भूतेन जिनस्नपनाय स्वयमागतेन घनांत हरिण लांछन मरीचि कलापेनेव रासी भूतेन

स्वच्छतया दयाधन मुनिमनोभिरिव निर्मितेन नवी नवीनाकुश छायापहारिणां हारि हरिण तरलतर लोचनप्रभा प्रवाहिणा, परकीय यैशः प्रकाश सज्जन गुण विमलेन मुक्ता फलांशु जाला मालाकालयता पीयूषरसेनैव, सर्वेन्द्रियाणां प्रणिन, करेण निर्मल तया लोचनानंदमुत्पादयता सुगंधि कमल संबंधितया घ्राणे न्द्रियाप्यायनमादधत तां समु चित शिशिर तया स्पर्श सुख मय जनयता गंध जिघ्रासयानुयातु मधुकर झंकारेण श्रवणमानंदयता शुचितया चांतः करणमाबर्जतां, रजनी पति ज्योति परि स्पष्ट चंद्र कान्त शिलाइव सम्मिश्रितेन अच्छ स्फटिक छाया शुभ्रेण सलिलेन भगवन्तमर्वन्तं स्नापयामः, सर्वमभिलषित मस्माकं करोतु भगवानिति स्वाहा ।

इति चतुः कलश स्नपनम् ॥

द्रव्यैरनल्प घनसार चतुः समाढ्यै, रामोद वासित समस्त दिगंतरालैः ॥
मिश्री कृतेनपयसां जिन पुंगवानां, त्रैलोक्य पावनमहं स्नपनं करोमि ॥

ॐ यथा लब्ध सुगंध पदार्थ संयोग सुंदरेण केनचि दुत्तिन्द्रारविंद मकरंद रचित चारु चंद्रिकेन, केनचित्पुष्पित कुमुद कुवलय रज कषाया मोदितेन, केनचित्प्रचल दलि कलिध कारी सौगंधिकगंध सम्बन्धेन, अपरैरपि सलजात वसुमिर्बहुल परिमला कारिभिः सुरभि कृतेन, सर्म र पर्याश्रित लवंग पुष्पात् पतित रस पुष्प निष्पंद संग संजनित हृद्य गंधेन, प्रविक सच्चंपक कुसुम समूह वासितेन, साधुगंधा घ्राणे मुदित मधुकर फुल्लरवि चावालितेन, मृदुपटु निमज्जदैरावतदान संक्रान्ति सुरभी कृत मंदाकिनी प्रवाह पराजय कारिणी करि कलशमग्न चंदनानोकुह स्कंध देश विनिश्चित रस धारा विलासेन, कुंकुम कर्पूरादि

संसर्गेण, सुगंधिना बहुविधेन गंधोदकेन, भगवन्तमर्हन्तं स्नापयामः, सुरभित भुवनांत कीर्ति मस्माकं करोतु भगवानिति स्वाहा ।

❀ अष्टक ❀ इति गंधोदक स्नपनम् ॥

सद्गंधतोयः परि पूरितेन, श्री खंड माल्यादि विभूषितेन ॥
पादाभिषेकं प्रकरोमि भूत्यै, भृंगार नालेन जिनस्य भक्त्या ॥ जलं ॥

काश्मीर पंक हरि चंदन सार सांद्र, कर्पूर पूर रचितेन विलेपनेन ॥
अव्याज सौख्यय तनोः प्रतिमां जिनस्य, संपूजयामि भव दुःख विनाशनाय ॥चंदनं॥

तत्काल भक्ति समुपार्जित सौख्य बीज, पुण्यात्मरेणु निकरैरिव संगलद्भिः ॥
पुञ्जैः कृतै प्रतिदिनं कलमाक्षतौघैः, पूजां पुरोविरचयामि जिनाधिपानां ॥अक्षतं॥

अम्भोज कुंद बकुलोत्पल पारि जात, मंदार जाति विदलत्रयमालिकाभिः ॥
देवेन्द्र मौलिविरजी कृतपादपीठं, भक्त्या जिनेश्वर महं परि पूजयामि ॥ पुष्पं ॥

अत्युज्वलं सकल लोचन हारि चारू, नानाविधा कृति निवेद्यमनिंद्यगंधं ॥
बाष्पाय मान मनघीयासिहेम पात्रे, संस्थापितं जिन वराय निवेदयामि ॥नैवेद्य॥

निष्कज्जल स्थिर शिखा कलिकाकलापै,-र्माणिक्यरश्मि शिखराणि विडंबयद्भिः
सर्पिर्भिरुज्वल विशाल तरावलोके, दीपै जिनेन्द्र भवनानि यजे त्रिसंध्यं ॥ दीपं ॥

कर्पूर चंदन तरुष्क सुरेन्द्र दारू, कृष्णागुरू, प्रभृति चूर्णवि धानसिद्धम् ॥

नासाविकंठ मनसां प्रिवधूम वर्ति, धूपं जिनेन्द्र पुरतो बहुधा क्षिपेहं ॥ धूपं ॥

वर्णैं नवाभि नयनोत्सवमावहंति, यानि प्रियाणि मनसोरस संपदा च ॥

गंधेन सुष्ठु रमयति चयानि नासां, तैस्तैः फलैर्जिनपते विदधामि पूजा ॥ फलं ॥

एवं यथाविधिमनागपि यः सपर्यामर्हत्तवस्तव पुरस्सर मातनोति ॥

कामं सुरेन्द्रनर नाथ सुखानिभुंक्त्वा, मोक्षोत्तमप्यमयनंदि पदं सयाति ॥ अर्घं ॥

घत्ता—सिसिव निम्मलु हाजा, सिवछ प्रभामंडलु पिहव, जस तरु असोने सुर कुसुम वरसिणु,

वर चामर धूप द्वय पंसरू ॥ दुं दुहि पुरे इन हंसणु,

केसरि आसण दिव्य धुणि, अट्ठई पयडइ नाह ।

इइ कुसुमांजलि दिन्नमई, भत्तिय अरहंताह ॥

जेहि दहुई अट्ठ कम्माई, परकाल विकलीमलई ॥

अपठहि सुह जणि निम्मल जाहं एकट बहुगुण सहिउ

अछि नाणु सु पसिद्धं, केवलु ताहं शरीर विवज्जियहं ॥

सासय सुख वजुयाहं, राय समुदय दिन्नमई ॥

कुसुमांजलि सिहाय जणीय जणं मयाणम् ॥

दसब्भाव छत्तीस गुण, परिवार संगहुय जलहि पारय ॥

सिद्धंत आगम कुसल । नवयपच्छ सब्भावभावय ॥

जिवय संयम नियमधर । पंचायार समुन्नतहं
आयरिय एह कुसुमांजलि मई दीन्न ॥ ११ ॥

जेहिं वसि किउमाण, मायंगु अयंदुड्डउ कोहजिन ॥
कवडु वसहु दुव्वार नठऊ सम्मतु मणुविक करविहि लोहू ॥
पसरंतु रूधन भवियहं, भववणि मुल्लाहं ॥
मुगदेसय दाहं, दिव्वपचये, पाठ यहं इय कुसुमांजलि ताह ॥ १२ ॥

जियपरिसह मोह परिचित्त, वारस विहित तवजिय कषाय ॥
भयसंग वज्जिय जिय इंदिय विसय, मुह काम कोह नियमणु विसज्जिय
जीव दयावर गुण निलय, विणय समुज्जय चित्त ॥
एह कुसुमांजलि समर यहं, तेह साहुई मई खित्त ॥ १३ ॥

विमल कोमल कमलदल नयणी, कमला लय मुहि कमलहल्ल
कमल किया सखि, जाविजय संयमधरहं
दुरिय दुरक दोहग नासखि, जाजिय वयण, विणग्गाई सयल पयासई ।
लोहितहिं देवीहिं, सिरि सयही एह, कुसुमांजलि होई ॥ १४ ॥

जाह निम्मणु हियई सम्मतु जेसव्व उवव हरई
जीव इसन कय विहछइ पर घरणी णिय अणणे

समतिण समाणु पर दव्वु पिछई जेखि सिमोयण वज्जिया
दिंति सुपत्त हंदाणं तहं साचयहं सकरोमिहऊ कुसुमांजलि सम्माणु
जेहि मच्चिनई धम्म दयामूल खिग्गथ रिसि परमगुरु सुहपयास संतास वज्जिय
जेसद्दयइ देउजिणऊ अट्ठारस दोस वज्जिय ।
जे सामिय वछला चंकि मंदिय न जाहं, एहसम धुप दिन्नमई कुसुमांजलि भवियाह ॥

❀ अथ शांतिकम् ❀

अथ चतुर्विंशति का पुरतः शतपत्रैस्तंदुलैः श्रीखंडादिभिः शांतिं कुर्यात्

ॐ पुण्याहं ३ श्रीयंतां ३ भगवतोर्हतस्त्रैलोक्य [illegible] पूज्यास्त्रिलोकोद्योत कराः ऋषभादयो वर्द्धमानांतश्चतु र्विंशति अर्हन्तः सर्वज्ञः सर्व दर्शिनः सभिश्च नमस्कार देवाधि देवता ऋषभाजितसंभवाभिनंदनसुमतिपद्मप्रभ सुपार्श्व चंद्रप्रभ पुष्पदंत शीतल श्रेयांस वासु पूज्य विमलानंत धर्म शांति कुन्थु अरह मल्लि मुनिसु व्रत नमिनेमिनाथ पार्श्वनाथ वर्धमानांताः सशिष्य वर्गाः शान्ति कराः भवन्तु मुनयश्च दृढव्रताः शान्तिं प्रयच्छन्तु, श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी वनदेव्यो विद्या साधन प्रस्थान करणादिषु स्वगृहीत नामानि सर्व कार्य साधनेष्विह चान्यत्र सिद्धाः सिद्धि कराः भवन्तु, सर्व देव रिपु जय दुर्ग कांतार विषमे षु जयन्ति जिनेन्द्र चंद्राः परम मांगल्य भूता। परम कल्याण दायिनो नित्यमाचार्यः साधवश्चातुर्वर्णा श्रमण संघ सहिताः शान्तिः प्रयच्छन्तु ।

अथ दिक्पालानां ग्रहाणां पुरतो बलि विधान बलिभिः कुर्वंति ग्रहाः सूर्य चंद्रांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनि राहु केतु सहिताः साष्टाविंशति नक्षत्राः अश्विनी भरणी कृतिका रोहिणी मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा मघा पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा उत्तरा षाढा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्र पद उत्तरा भाद्रपद रेवती अभिजित सलोकपाला यम वरुणा कुबेर वासवाद्याः स्कन्द विनायक दक्षिण कोश कोष्टा गारा दीनां आयुर्वर्द्धताम् धर्मो वर्द्धतां पुण्यं वर्द्धतां कुलगोत्रं चाभिवर्धताम्, पुर राष्ट्र ग्राम च परचक्र तस्कर दुर्भिक्षमारीति कलह वैरी रोगाद्युपद्रव विनाश नाय नित्यमर्हन्तो मंगलं प्रयच्छंतु,

पुनः सदा दान पतीनां श्रावकाणांच भ्रातृ पुत्र मित्र कलत्र स्वजन संबंधी बन्धु वर्ग सहितानां धन धान्यैश्वर्य यशो विभूति कांति बल द्युति कीर्तयो वर्द्धन्तां, सर्वस्मिन् जिनायतन मंडले श्री कीर्त्यैश्वर्य महाभिषेकोत्सवे पूजाभिवर्धये च यतीनांच तत्र निवासिनां रोग शोक व्याधि उपसर्ग दुःख दौर्बल्य पर हनानि विनाशयन्तु । पापानि नश्यंतु घोराणि निघ्नंतु प्रति शत्रवः पराङ्मुखाः संतु देशाश्च निरुपद्रवाः भवंतु सर्वं कालमपी सर्व कल्याण संप्राप्तिरस्तु भूयोभूयः श्रेयः प्राप्तिरस्तु सुखं हितैश्वर्यमेवास्तु शिवंच सत्वानां ऋषि ऋषभादयः सदादिशंतु स्वाहा ॥ इति शांति मंत्रः पुनरपि जिनाग्रे । ॐ अर्हद्भ्यो स्वाहा, ॐ सिद्धेभ्यो स्वाहा, ॐ सूरीभ्यो स्वाहा, ॐ पाठकेभ्यो स्वाहा, ॐ सर्व साधुभ्यो स्वाहा, अतीतानागत वर्तमान त्रिकाल गोचरानंत द्रव्य गुण पर्यायात्मक वस्तु परिच्छेदक सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राद्यनेक गुण गणाधार पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः

पुनरपि दिक्पालानां ग्रहाणां पुरतः पुण्याहं ३ प्रीयंतां ३ वृषभादि वर्धमानांताः परम तीर्थंकर देवाः स्वसमय पालिन्यो प्रतिहत चक्रेश्वरी, रोहिणी, प्रज्ञप्ती, वज्र शृंखला, पुरुष दत्ता मनोवेगा कालिका ज्वाला मालिनी जया विजया अपराजिता बहुरूपिणी चामुंडा अम्बिका पद्मावती सिद्धायिकाश्चतुर्विंशति शासन देवताः गोमुख यक्ष प्रभृति चतुर्विंशति यक्षाः आदित्य चंद्र मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनिराहु केतु प्रभृत्यष्टाशीति ग्रहाः वासुकी शेषपालक वैकोटक पद्म कुलीशा नंत तक्षक महापद्म जय विजय नागौ देवनाग यक्ष गंधर्व ब्रह्म राक्षस भूत व्यंतर प्रभृतयश्च सर्वेपते जिन शासन धर्म पालकाः श्राव्यार्जिका श्रावक श्राविका यज्ञ क्रिया याजक राजा मंत्री पुरोहित सामंत रक्षक प्रभृति समस्त लोक समूहस्य शांति वृद्धि पुष्टि तुष्टि क्षेम कल्याणैश्वर्य आयुरारोग्य प्रदा भवंतु सर्व सौख्य प्रदा भवंतु देशे राष्ट्रे पुरे च सर्वदा एव चौरासीमारीति दुर्भिक्ष विग्रह विघ्नौघ दुष्ट भूत शाकिनी प्रभृत्य शेषानिष्टानि विलयं प्रयान्तु राजा विजयी भवतु राजा सुखी भवतु राजा प्रभृति समस्त लोकाः सततं जिन धर्म शीला पूजा दान व्रत शील महा मोहत्रा व प्रभृति प्रजाभवतु यत्रस्थिताः भव्य प्राणिनः संसार सागर लीलयोत्तीर्यानुपममं सिद्धि सौख्य मनंत कालमनुभवंति, तदा शेष प्राणीगण शरण भूता जिनशासनं दत्विति स्वाहा ।

बलि विधानमंत्रः इति शांति कारणीयाः

आयाताः यूयमेते, प्यमर परिवृताः, प्राप्तसन्मान दानाः ॥
स्थाने स्वस्मिन्समाव्यं, प्रमुदितमनसो, लब्धरक्षा धिकाराः ॥
निघ्नंतो विघ्न वर्गान्, परि जन सहितो, योगभूमिं समन्तात् ॥

दिक्पाला पालयध्वं, विधिरपि शरणे, वर्ततां वर्धमानः ॥

इति दिक्पाल क्षमा पन मंत्रः ।

(अथ लवणोत्तारणम्)

रयणायरितं लेवेसि, जंकिपि सिध हितणुछजंति ॥
कंपि सइं भरी सुगन्धऊ, अवरिदि आणी थउ विवहं रसहं ॥
जंमभि चंगउंनि जगजिणो सरसंति कर उत्तारहिं व, लुअ ॥
उपावदी द्विपरि चंचलीय, फीट्टई लवणि खणिणा ॥
जन्मोत्सवे जिनवरस्य सुमेरु श्रृंगे ॥
शांतिः सुरै र्लवण तोय निधेर्गृहीत्वा ॥
प्रारभ्यते सकल दोष निवारणार्थ ॥
मुत्तारणं भव हरं लवणस्य अद्यः ॥

(अथ जलोत्तारणम्)

खीर सायरजं जिसु पवित्तु, जांत्रम्मल सुरसरहिं जजित्तु
कंपी अमियस्स तुल्ल उत आणीऊ अमराहिव इह छकल सऊ
खित्तभल्लऊ जोतिय लेहिं पुंज इहसंति
सुहुं करवीरु तिणिवार जिण सामियहं उतारीह वर नीरू ॥

दुग्धाम्बुधेः सलिल मुज्ज्वलतीरु गंधं ॥ कर्पूर पूर परिपांडुरितं जनस्य ।
उच्चार्यते निज करेण निवेदयामि ॥ शक्रेण भक्ति भरतो भव शोषणाय ॥
जलोत्तारणम् ॥

क्षेमं सर्व प्रजानां प्रभवतु बलवान्, धार्मिको भूमिपालः ॥
काले कालेच सम्यक् वर्षतु मघवाः, व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्षं चौर मारी क्षणमपि जगतां, मास्मभूज्जीव लोके ॥
जैनेन्द्रं धर्म चक्रं प्रभवतु सततं, सर्व सौख्य प्रदायी ॥
प्रथयतु मुदमंतः क्षेममारोग्य मायु,-र्वितरतु शुभ बुद्धिं पाप बुद्धिं धुनोतु
सफलयतु शुभवांछां पूजकानां जनानां, जगदधिपति पूज्यः पूजितोयंजिनेन्द्रः ॥

शिव मस्तु सर्व जगतः, परहित निरतः भवंतु भूतगुणाः ॥
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः ॥
मंगलार्थं समाहूताः, विसर्ज्याः किलदेवताः ॥
विसर्जनाख्य मंत्रेण, वितीर्य कुसमांजलिः ॥

॥ इति श्री महाभिषेक पाठ समाप्त ॥

❀ अथ क्षेत्र पाला पूजा ❀

श्रीमज्जिनेन्द्र यज्ञेस्मिन्, क्षेत्राधिपतये सदा ।
बलिं ददामि सौख्याप्त्यै, दुष्ट विघ्न विनाशिने ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं जय विजय अपराजित भद्र क्षेत्रपालाः अत्र अवतर २ संवौषट् । अत्र तिष्ठ २ ठः ठः । अत्रमम सन्निहिताः भव २ वषट् ॥

शुद्धेनाऽति सुगंधेन, स्वच्छेन बहुलेन च ।
स्नपनं क्षेत्र पालस्य; तैलेन प्रकरोम्यहं ॥ तैल स्नपनं ॥

सिन्दूरैरुक्षाकारैः पीतवर्णसु संभवैः ।
चर्चनं क्षेत्र पालस्य, सिन्दूरेण करोम्यहं ॥ सिन्दूरार्चनं ॥

सद्यः पूतैर्महा स्निग्धैः, सुष्ट मिष्ट सुपिण्डकैः, ।
क्षेत्र पाल मुखे देयं, मोदकं दुःख हानये ॥ मोदक दद्यात् ॥

तिल पिण्डस्थ पिंडेन, माषादि बहुलेनच ।
ददामि क्षेत्र पालाय, विश्व विघ्नौघ शांतये । तिल पिंडस्थापनं ॥

भो क्षेत्रपाल जिनपः प्रतिमांक भाल,
दंष्ट्रा कराल जिन शासन रक्षपाल ।
तैलादि जन्म गुड चन्दन पुष्प धूपैः
भोगं प्रतिच्छ जगदीश्वर यज्ञ काले । अर्घम् ॥

❀ अथाष्टकम् ❀

क्षीर हीर गौर नीरपूर वारि धारया,
मंद कुन्द चन्दनादि सौरभेन सारया ।
भूत प्रेत राक्षसादि कष्ट दुष्ट नाशनं
शांति सिद्धि ऋद्धि वृद्धि क्षेत्रपाल चर्चनं ॥ जलम् ॥

अर्क तर्क वर्जितैरनर्घ्य चन्दन द्रवैः
कुंकुमादि मिश्रितैरनल्प षट्पदाश्रितैः ॥ भूतप्रे. ॥ चन्दनम् ॥

औषधेन सिन्धुफेन हारभा समुज्ज्वलैः—
रक्षतैः सुलक्षणैरजात खंड वर्जितैः ॥ भूत प्रे ॥ अक्षतम् ॥

पारि जात पाटिंच कुन्द हेम केतकी,
मालती सुचम्पकादि सार पुष्पमालया ॥ भूत प्रे. ॥ पुष्पम् ॥

व्यंजनेन पायसादिभिः समंच षट रसैः ॥
मोदकोदनादिभिः सुवर्ण भाजन स्थितैः ॥ भूत प्रे. नैवेद्यम् ॥

रत्न सोम सर्पिषादि दीपकैः शिखोज्वलैः ।
वात घात ताप कोप कंपरूप वर्जितैः ॥ भूत प्रे. ॥ दीपम् ॥

सिल्हिकामितागुरू प्रधूपकैरलिश्रितैः,
दान मान वर्धमान मानिनी ममोदरैः ॥ भूत प्रे. ॥ धूपम् ॥

श्री फलाम्र कर्कटी सुदाडिमादिभिः फलैः

वर्ण मिष्ट सौरभादि चक्षुरादि मोदनैः । भूत प्रे. ॥ फलम् ॥

जीवनासिता गुरुद्रवाचत प्रसूनकैः, चारू चारू व प्रदीप धूपरूप सत्फलैः ।

सुवर्ण भाजन स्थितैः रमा रमा रमा भिदैः, श्री ज्ञान भूषणाय संमहामहैक विच्छिदैः ॥अर्घ्यम्॥

❀ जयमाला ❀

लक्ष्मीधामकरं जगत्सुखकरं, संदीर्घ कायं वरं ।

रात्रौ जागर वाहनं, सुरवरं करवालया धारणं ॥

निर्विघ्नं ग्रह नाशनं भयहरं, भूतादि त्रासोत्करं ।

वंदे श्री जिन सेवकं अरिहरं, श्री क्षेत्र पालं सदा ॥ १ ॥

सुरासुर खेचर पूजित पाद, गुणाकर सुन्दर हुंकृत नाद ।

मनोहर पन्नग कंठ विशाल, सदा सु महोदय क्षेत्र सुपाल ॥२॥

सुडाकिनी शाकिनी नाशन वीर, जिनेश्वर पूजन सेवन धीर ।

अनूपम शोभित मस्तक वाल, सदासु·· ····· ॥ ३ ॥

सुलाकिनी हाकिनी पन्नगत्रास, सुभूपति तस्कर दुर्भिक्षनाश ।

निशाकर शेखर मंडित भाल, सदासु····· ॥ ४ ॥

सुमंगल शब्दित शूकर वृंद, सुराक्षस भोक्षस दुर्भय क्रंद ।

सदामल कोमल केलि विशाल, सदासु····· ॥ ५ ॥

सुचित्रक कुंजर सागर पार, सुदुर्जन शोषण शत्रु संहार ।

सुकंपित किन्नर भूत रसाल, सदासु····· ॥ ६ ॥

सु वृद्धि समृद्धि सुदायक शूर, सु पुत्रक मित्र कलत्र सुपूर।

सुरंजित नागिनि कामिनि बाल, सदासु····· ॥ ७ ॥

सुकेयूर कुण्डल हार सुवाद, सुशेखर सुस्वर किंकिणी नाद।

भयंकर भीषण आसुर काल, सदासु····· ॥ ८ ॥

सु कामिनी खेलत दिव्य शरीर, सुवाहन हासन मोहन धीर।

सुभाषण रंजित विश्व रसाल, सदासु····· ॥ ९ ॥

सुथापित निर्मल जैन सुवाक्य, निकंदित दुर्मति दुर्मति वाक्य ।

प्रकाशित शासन जैन रसाल, सदासु····· १०॥

सुभाषित श्रेय सुभव्य सु हंस, महोदय जैन सरोवर वंश ।

महा सुख सागर केलि विशाल, सदासु····· ॥११॥

असम सुरद सारं तीक्ष्ण दंष्ट्रा करालं,

सकल सुकृत जटिलं, जिह्वा दीर्घ करालं ।

सुघट विघट वक्रं, शांतिदास प्रशस्यं ।
भजतु भजतु जैनं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ १२ ॥ महार्घ्यम् ॥

॥ अथ भैरवाष्टक स्तोत्रं ॥

यं यं यं यक्षराजं, दश दिशाधिगतं, भूमि कम्पाय मानं,
सं सं संहार मूर्तिं, शिर मुकुट झटा शेखरं चन्द्र बिम्बम् ॥
दं दं दं दीर्घ कायं, विकृतिगत नखं, उर्ध्व रोमं करालम्
पं पं पंपाप नाशं, प्रणमति सततं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥ १ ॥

रं रं रं रक्त वर्णं, कर कृत झटिलं तीक्ष्ण दंष्ट्रा करालम् ।
घं घं घं हंस घोषं घट घट घटितं घर्घरा राव घोषं ।
कं कं कं काल रूपं, धिग धिग धिगतं ज्वालितं उग्रतेजं,
तं तं तं दिव्य देहं, प्रणमति ..... ॥ २ ॥

लं लं लं लम्ब लम्बं लल लल ललितं दीर्घ जिह्वाकरालम्,
धूं धूं धूं धूम्र वर्णं स्फुट विकट मुखं भास्वरं भीम रूपम् ।
रुं रुं रुं रुण्डमालं रुधिर मय मयं, ताम्र नेत्रं विशालं,
नं नं नं नम्र रूपं प्रणमति ..... ॥ ३ ॥

वं वं वं वायुवेगं, प्रलय परिणतं ब्रह्मरूप स्वरूपं,
खं खं खं खड्ग हस्तं, त्रिभुवन निलयं काल रूपं प्रशस्तं ।
चं चं चं चंचलत्वं, चल चल चलितं चालितं भूतवृन्दं ।
मं मं मं माय रूपं प्रणमति सततं ..... ॥ ४ ॥

शं शं शं शंख हस्तं, शशिकर धवलं यत्न सम्पूर्ण तेजं ।
मं मं मं माय मायं कुल सकुल कुलं, मंत्र मूर्ति सु तत्वम् ।
धं धं धं भूत नाथं सिद्ध सिद्धिश्वरं, गुह्य गुप्तहा लुलत्वं,
अं अं अं अंतरीक्षं प्रणमति सततं ..... ॥ ५ ॥

खं खं खं खंग भेदं विषममृत करं, कालकीलान्धकारम् ।
चं चं चं क्षिप्रवेगं, दह दह दहनं नेत्र संदीप मानं ।
हूं हूं हुंकार नादं, हरि हरि सहितं एहि एहि प्रचंडं,
मं मं मं सिद्धनाथं प्रणमति ..... ॥ ६ ॥

सं सं सं सिद्ध योगं, सकल गुण मयं देव देव प्रसन्नं,
यं यं यं यक्षनाथं हरि हर वरदं चन्द्र सूर्याग्नि नेत्रं ।
जं जं जं जंभ नादं, वस वरुण सुरा सिद्ध गंधर्व नागं,
रूं रूं रूं रूद्र रूपं प्रणमति सततं ..... ॥ ७ ॥

हं हं हं हंस घोषं, हसित कुहकुरा रावरो राज हंसं ।
यं यं यं यक्ष रूपं सिर कनक महा बद्ध खट्टांग नाशं
रं रं रं रग रंगं, प्रहसित वदनं पीग कस्म स्मशानं,
सं सं सं सिद्ध नाथं प्रणमति सततं भैरवं क्षेत्रपालं ॥ ८ ॥

इत्येवं भाव युक्तं पठति च नियतं भैरवस्याष्टकं हि,
निर्विघ्नं दुःख नाशं, असुर कृत भयं शाकिनी डाकिनीनां
त्रासोन व्याघ्र सर्प्प धृति वहसि सदा राज त्रासोपि न स्यात् ।
ज्ञानं प्राप्नोति दूराः ग्रह गण विषमाश्चिंतिता स्वेष्ट सिद्धिः ॥

॥ इति क्षेत्र पाल स्तोत्रम् ॥

❀ अथ पद्मावती देवी पूजा ❀

ॐ ह्रीं शक्ति रूपे भगवती वरदे, देवी आगच्छ पीठे,
पद्मनाभे पद्म नेत्रे सपरिजन युते, एहि एहि सुशक्ते ।
धूपं गंधाष्ट द्रव्यं परमफल प्रदं, भोग वस्त्राद्यनेकं,
भक्तानां देहि सिद्धिं मम सकल भयं देव दूरी करत्वम् ॥ १ ॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्रीपद्मावती देवी अत्रागच्छ आगच्छ ।
ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री पद्मावती देवी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्री पद्मावती देवी अत्र मम सन्निहिता भव २ वषट ।

अमल पद्म द्रहे समुद्भव कनक कुंभ सुधारया ।

रिंद पाद समान शीतल कमल वासित वारया ।

नरवरा नृप खेचरा स्तुत विघन कोटि विनाशिनीम्,

पूजयेत्पद्मावतीपद रिद्धि सिद्धि निवासिनीम् ॥ १ ॥ जलम् ॥

हेम कुंकुम मिश्रीतैः मलयाख्य भूधर संभवैः,

परम ताप निवार चंदन गंध गंधित दिङ्मुखैः ॥ नरवरा नृ. ॥ चन्दनम् ॥ २ ॥

कुन्द हार तुषार सुन्दर गगन तारक संनिभैः,

सिन्धु फेन समान उज्ज्वल खंड वर्जित तंदुलैः । नरवरा. ॥ अक्षतम् ॥ ३ ॥

पद्म जाति मनोज्ञ चंपक मालती मच कुन्दकैः,

कनक केतकी पारिजात सुगंध लुब्ध शिलीमुखैः । नरवरा. ॥ पुष्पम् ॥ ४ ॥

पायसान्न वरोदनादिक खज्ज मंडप घेवरैः,

सूप तूप मनोज्ञ मोदक व्यंजनाद्य रसाढ्यकैः । नरवरा० ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

तिमिर पटल विकार वर्जित कोटि भानु प्रकाशनैः,

घृत मणि मय कनक भाजन प्रगट दीप सुज्योतिकैः । नरवरा० ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

काक तुंग गिरीन्द्र संभव निविड जलधर संनिभैः,

अब धूप सुदीपकाष्ट मनोज्ञ घ्राण प्रमोदकैः । नरवरा॰ ॥ धूपम् ॥ ७ ॥

आम्र काम्र नम्बीर फनसह पूग चिर्भट लिम्बुकैः ।

गोक्षनैक क्षविध दाडिम पक्व विल्व फलोत्तकैः । नरवरा. ॥ फलम् ॥ ८ ॥

अंबु चन्दन अक्षताब्ज चरूत्कटैर्वर दीपकैः,

धूप पक्व फलोर्घ संचय नैक भूषण संयुतैः ।

श्री लक्ष्मीसेन सुरेन्द्र संस्तुत विनिद खलु तिमिरापहं,

पाद पंकज वंद्य गोविन्द मणित मस्तक मोददैः ॥ अर्घ्यम् ॥ ९ ॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं पद्मावत्यै नमः । इस मंत्र के ९ जाप्य देवे ।

❀ जयमाला ❀

श्रीमत्पद्मावतीं वन्दे, नत्वा खेचर नर वर चरणे, ।

जिनशासन उद्धरणे, श्री जिन पार्श्व बिम्ब धरणे ॥ १ ॥

संस्नापय पद्मावती चरणं, सेवक नरवर असरण शरणम् ।

दुःख दावानल दूरी कृत दलनं, संतत जन सुख सम्पति करणम् ॥ २ ॥

संकट विकट कोटि सब नाशे, तुझ नामे सुख सम्पति वासे ।

ग्रह एकोन नडे तुझ नामे, विषम व्याधि दुख दूरे वामे ॥ ३ ॥

जल निधी थल होवे तुझ नामे, वैरी व्याघ्रसिंह दूरे वामे ।
हय रथ मंगल लहे महमत्ता, तुझ नामे नव निधि सम्पदा ॥ ४ ॥

कुष्ट रोगश्वासादिक नाशे, शाकिणी सर्व न आवे पासे ।
जय जग में जग दम्बादेवी, सेवक तुझ चरणाम्बुज सेवी ॥ ५ ॥

त्रिभुवन में तुझ नाम विख्याता, नहीं को जननि तुझसमजाता ।
तुझ गुण तणोंन लावे पारं, जय पद्मावती नाम विचारं ॥ ६ ॥

सुरगुरु तुझ गुण पार न जाणे मूख मानव केम बखाणे ।
पाप फलै दुःख दारिद्र आवे, ते तुझ दर्शन दूर पलावे ॥ ७ ॥

अल्प बुद्धि हुँ कांई न जाणु, करुण गति सति तुझ नाम बखाणु ।
तू जिन शासन जन सुखकारी, दुःख दावानल दूरीकृत ॥ हारी ॥ ८ ॥

मस्तक मूर्ति श्री जिन पार्श्व, संतत जन मन पूरण आशं ।
भाग्य फले तुझ दर्शन पामी, कहे गोविन्द नमो शिरनामी ॥ ९ ॥

घत्ता – इह वर जयमाला, भावविशाला जे पठंति नित भावधारी ।
ते अशुभ प्रणाशे, सुरतरू पासे, मनवांछित फल पूर्णकरी ॥ १० ॥

आरोग्यं धन धान्य सम्पदकरी, दारिद्र निर्नाशनी ।
मौली पर्श्व जिनेन्द्र बिम्ब धरणी, बालार्कवद्भासिनी

संक्लिष्टा भय नाशिनी परि रमा, मंमन्य सद्दायिनी
श्रीधरणेन्द्र शचि पराक्रम युते, पद्मावती भारी ॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ अथ पद्मावती की आरती ॥

श्री स्याद्वाद् मताब्ज वर्धन करी, भव्याब्जसुदीपनी ।
पद्मे पद्म दले निवास यदिते दारिद्र निर्नाशनी ।
मौली पार्श्व जिनेन्द्र बिम्ब धरणी, पद्मावती भारती ।
ते देवी नित पाद पंकज नमी वच्चे मुदा आरती ॥ १ ॥

प्रगट पीठ पद्मावती, परतोपूरण हार
कलियुगमें अतिशयधणी, वांछित फलदातार ॥ २ ॥

अष्टभेद पूजा भली, नित करे नरवर चंग ।
अमर कुमरी धरी आरती, करती मन तणे रंग ॥ ३ ॥

चाल—मणि मुकता फल भरि हेम थालं, घृत कपूरा दीप विशालं ।
अमर कुमरी मन आनंद धरती, पद्मावती प्रति आरती करती ॥ ४ ॥

वस्त्रादिक बहु भूषण धरती, अमिय समान वाणी मुखे झरती । अमर कु० ॥ ५ ॥

ढाल चँवर ऊभी इन्द्राणी, आरती त्रिभुवन शिवसुख दानी । अमर कु० ॥ ६ ॥

धरणराय पद्मावती राणी, पार्श्वनाथ केरी यक्षाणी । अमर कु० ॥ ७ ॥

सेवकनी संभाल जु करजो, तुष्ट थई ने माता कष्ट जु हरजो । अमर कु० ॥ ८ ॥

अर्घ भरी करूं आरती मनधरी प्रेम अपार

श्री जिनवर चरणे नमि करूँ आरती मनहार ॥

❀ पंच परमेष्ठी की जयमाला ❀

मणुय–णाइन्द सुर धीरय छत्त तया, पंचक ब्भाण सुक्खावली पत्ताया ॥

दंसणं णाण झाणं अणंत बलं, तेजिणा दिंतु अम्हं वरं मंगलं ॥ १ ॥

जेहिं झाणग्गि वाणेहि अइ थड्ढयं, जम्म जर मरण णय रत्तयं दट्ठयं ॥

जेहिं पत्तं सिवं सासयं ठाणयं, ते महा दिंतु सिद्धा वरं णाणयं ॥ २ ॥

पंच हाचार पंचग्गि संसाहया । बार संगाइ सुय जलहिं अवगाहया ॥

मोक्ख लच्छी महंती महं ते सया । सूरिणो दिंतु मोक्खं गया संगया ॥ ३ ॥

घोर संसार भी माडवी काणणे । तिक्ख विय्रालणह पाव पंचाणणे ॥

णट्ठमग्गाण जीवाण पह देसया । वंदिमो ते उव ज्झाय अम्हे सया ॥ ४ ॥

उग्ग तव यरण करणेहिं झीणं गया । धम्म वर झाणसुक्क क झाणं गया ॥

णिब्भरं तवसिरी ये समा लिंगया । साइ ओ ते महा मोक्ख यह मग्गया ॥५॥

एस व्यो तेण जो पंच गुरु वंदए । गुरुय संसार घण वेल्लि सोहिदये ॥

लहइ सो सिद्ध सुक्खाइ वर माणणं । कुणइ कम्मि घणं पुंज पज्जा लणं ॥ ६ ॥

अरिहा सिद्धा इरिया । उवझाया साहु पंच परमेट्ठी ॥

एयाण णमु क्काऐ । भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धा चार्यो पाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्योऽनर्घ्यं पदार्थं निर्वपामीति स्वाहा ।

इच्छामि भंते पंच गुरु भक्ति काओसग्गो कओ तस्सा लोचे ओ

अट्ठ महापाडि हेर संजुत्ताणं अरहंताणं ।

अट्ठ गुण संपण्णाणं उड्ढ लोयम्मि पइट्ठि याणं सिद्धाणं ।

अट्ठपव यण माऊ सं जुत्ताणं आइरियाणं ।

आयारादि सुद णाणो व देस याणं उवज्झायाणं ।

तिर यण गुण पालड़ा रयाणं सव्व साहूणं ।

णिच्च कालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमस्सामि

दुक्ख क्ख ओ कम्मक्ख ओ बोहि लाहो सुगइ गमणं

समाहि मरणं जिन गुण संपत्ति होउ मज्झं ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

❀ अथ शांति पाठ ❀

शांति जिनं शशि निर्मल वक्त्रं, शील गुणव्रत संयम पात्रं ।
अष्ट सहस्र सुलक्षण गात्रं नौमि जिनोत्तममम्बुज नेत्रं ॥ १ ॥

पंचम मीप्सित चक्रधराणां, पूजित मिन्द्र नरेन्द्र गणैश्च
शांति करं गण शांतिमभीप्सु, षोड़श तीर्थ करं प्रणमामि ॥ २ ॥

दिव्य तरुः सुर पुष्प सु वृष्टि दुंदुभिरासन योजन घोषौ ।
आतप वारण चामर युग्मे, यस्य विभाति च मंडल तेजः ॥ ३ ॥

तं जग दर्चित शांति जिनेन्द्रं शांति करं शिरसा प्रणमामि ।
सर्वं गणायतु यच्छतु शांतिं मह्यधरं परमांच ॥ ४ ॥

येभ्यर्चिता मुकुट कुण्डल हार रत्नैः, शक्रादिभिः सुर गणैः स्तुत पाद पद्माः ।
ते मे जिनाः प्रवर वंश जगत्प्रदीपा, स्तीर्थंकराः सतत शांति कराः भवंतु ॥५॥

संपूजकानां प्रतिपाल कानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः ॥ ६ ॥

अशोक वृक्षः सुर पुष्प वृष्टिः, दिव्य ध्वनिश्चामरमासनंच ।
भामंडलं दुंदुभिरात पत्रं सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणां ॥ ७ ॥

क्षेमं सर्व प्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यांतु नाशम् ।
दुर्भिक्षं चौर मारीम् क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीव लोके,
जैनेन्द्रं धर्म चक्रं प्रभवतु सततं सर्व सौख्य प्रदायि ॥ ८ ॥

प्रध्वस्त घाति कर्माणः केवल ज्ञान भास्कराः ।
कुर्वन्तु जगतः शांतिं वृषभाद्याः जिनेश्वराः ॥ ९ ॥

अथेष्ट प्रार्थना प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः,
शास्त्राभ्यासो जिन पति नुतिः संगतिः सर्वदार्यैः ।
सद्वृत्तानां गुण गण कथा दोष वादे च मौनं,
सर्वस्यापि प्रियहितं वचं भावना चात्मतत्त्वे ।
संपद्यंतां मम भव भवे यावदेतेऽपवर्गः ॥१०॥

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पद द्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावत् यावन्निर्वाण सम्प्राप्तिः ॥११॥

अक्खर पयत्थ हीणं, मत्ता हीणं च जं मए भणियं ।
तं खमउ णाण देव दुक्ख खओ मयं दिन्तु ॥१२॥

दुक्ख खओ कम्मक्खओ, समाहि मरणं च बोहि लाहोय ।

मम होऊ जगत बंधव, तव जिणवर चरण शरणेण ॥१३॥

❀ श्री ऋषभनाथ की आरती ❀

आज मेरे मन मंगल है, मैं तो भेट्या ऋषभ जिनंद ।

परसत पाप पलाइयें, प्रभु पूजो परमानन्द । आज मेरे म. ॥ टेक ॥

पिता धन्य नाभिनन्दजी, धन्य मरू देवी माताजी ।

नगरी अयोध्या धन्य भली, तहां जनम्या त्रिभुवनराया ॥ आज मेरे म. ॥ १ ॥

समव शरण मध्य शोभता, प्रभु चार दिशामुख चार ।

प्रभु विश्वंभर जीव बोधिया हैं तो जीव दया व्रतधार ॥ आज मेरे म. ॥ २ ॥

दोष रहित गुण शोभता, प्रभु अतिशय के अधिकार ।

अष्ट मंगल छवि गोपुरा हांजी मानस्थंभ विशाल । आजमेरे० ॥ ३ ॥

पंच कल्याणक सुरकरे प्रभु आप गये निरवाण ।

हर्ष भयो त्रिभुवनमें जय जयकार बखाण ॥ आजमेरे० ॥ ४ ॥

साढि बार को विनाद सुमांतु नेघ चटा गरजंत ।

निरत करे अति अपछराः रूमजुम नाद ठम कंत ॥ आज मेरे० ॥ ५ ॥

सुरनर तिरयंच नारकी, आरती ले मनभाव
रतन कपूर घृत मेली के सब आरती हरि जिनराय ॥ आज मेरे० ॥ ६ ॥

चक्रवर्ति इन्द्र फणीन्द्रजी सुरनर मुनि समासार
अम्हेभी जिन प्रभुध्यावहिं शोभेसार सरोवर तार ॥ आज मेरे० ॥ ७ ॥

मंगल गावे नरनारी, पुत्र कलत्र सभी कोई ।
आनंद घन नव निधि पावहिं शिव सुगति वधु पति होई ॥ आज मेरे. ॥ ८ ॥

मंगल गायोरे म्हें तो भावसुं हुंतो श्री जिन कागुणपासुं ।
मुनि शुभचंद्र प्रभुविनवे मुजने दीजो सुगति विसराम ॥ आजमेरे० ॥ ९ ॥

॥ अथ विसर्जन पाठ ॥

ज्ञानतो ज्ञानतो वापि, शास्त्रोक्तं न कृतंमया
तत्सर्वं पूर्णं मेवास्तु त्वत्प्रसादा जिनेश्वरः ॥ १ ॥

अह्वानं न जानामि नैव जानामि पूजनम् ।
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर: ॥ २ ॥

मंत्र हीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैवच ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वरः ॥ ३ ॥

आहूता ये पुरा देवाः लब्ध भागायथाक्रमं
ते मयाभ्यर्चिता भक्त्या सर्वेयांतु यथास्थितिम् ॥ ४ ॥

॥ लघु होम (यज्ञ) विधान ॥

वेदी–घर के किसी उत्तम भाग में या मंडप के अग्रभाग में आठ हाथ लम्बी, आठ हाथ चौड़ी, और एक हाथ ऊँची तीन कटनी वाली वेदी बनावे। इस वेदी के ऊपर पश्चिम की ओर तीन कटनी की एक हाथ लम्बी एक हाथ चौड़ी और एक हाथ ऊँची एक छोटी वेदी बनाने। इस छोटी वेदीपर श्री जिनेन्द्र देवकी प्रतिमा स्थापन करे एवं दाहिनी तरफ यक्ष तथा बाई ओर यक्षिणी विराजमान करे। वेदी कच्ची ईंट तथा गारे से ही बनवानी चाहिये फिर उसे खड़िया आदि से पोत कर विविध चित्र बना कर रंग देना चाहिये।

नोट–इस विधान में जिसदिशा में भगवान का का मुंह हो वह पूर्व दिश मानी जाती है। तदनुसार अन्य दिशाएं भी समझ लेनी चाहिये। मंडप या स्थान संकीर्ण हो तो ४ हाथ की वेदी से ही काम चला लिया जाय कदाचित वेदी बनाने की असुविधा होतो उतनी ही मीन लींपकर उसपर रंग द्वारा लाइनें करके वेदी की कल्पना करलेना चाहिये। वेदी को चंदोवा, चित्र, तोरण, वन्दनवार, पुष्पमाला आदि से सुसज्जित बनादेना चाहिये चर्व चारों कोनोंपर कदली स्तंभ (केल के थम्भे) इक्षुदंड भी लगादेना चाहिये।

——

❀ हवन कुण्ड ❀

उक्त छोटी वेदी के सामने एक हाथ जगह छोड़कर निम्न प्रकार तीन कुण्डों की रचना करनी चाहिये ।

तीर्थंकर कुंड–मध्यभाग में एक अरत्नि चौड़ा, एक अरत्नी ऊँडा चतुष्कोण कुण्ड बनावे जिसे तीर्थंकर कुण्ड कहते हैं कुंड की गहराई आधी तो वेदी के भीतर ऊंडी हो एवं आधी की ऊपर तीन कटनी होवें । " बद्ध मुष्टि करोऽरत्नि " मुट्ठी बांधे हुवे एक हाथ को अरत्नि कहते हैं जो कि आधुनिक नाप के हिसाब से करीब १८ इंच होता है तदनुसार १८ इंच लम्बा चौड़ा एवं १८ इंच ऊँडा कुंड बनावे जिसमें से ९ इंच तो जमीन में ऊंडा हो एवं ९ इंच में क्रमसे ३॥ इंच, ३ इंच तथा २। इंच की ऊंची व उतनी ही चौड़ी इस प्रकार ३ कटनी बनावे बड़े कुण्डों में भी मेखलाओं (कटनियों) की चौड़ाई व ऊँचाई इसी प्रकार प्रथम कटनी की ५ मात्रा द्वितीय मेखला की ४ मात्रा एवं तृतीय मेखला की ३ मात्रा के प्रमाणसे होना चाहिये । इसकी अग्नि को गार्हपत्य कहते हैं । सामान्य केवली कुण्ड–चौकोर कुण्ड के दाहिनी तरफ उची नापका अर्थात् एक अरत्नि लम्बा एक चौड़ा व एक अरत्नि ऊँडा त्रिकोड कुंड बनाने इसे सामान्य केवली कुण्ड कहते हैं इसकी तीनों भुजाएँ एक एक अरत्नि लम्बी होवें । इसकी अग्नि को आहवनीय कहते हैं ।

गणधर कुण्ड–चौकोर कुण्ड के उत्तर की ओर गोल कुण्ड बनावे जिसे गणधर कुंड

कहते । जिसका व्यास तथा गहराई एक-एक अरत्नि ही हों तथा मेखला भी उसी प्रमाण से ३ हों । इस कुण्ड की अग्नि दक्षिणाग्नि कहलाती है तीनों कुण्डों के भीतरी भाग की दीवारों को बराबर रखना चाहिये । एवं कुंड को रोली (गुलाल) से रंगदेना चाहिये । यद्यपि तीन कुण्ड बनाने की विधि लिखी है परंतु संक्षेप में करना हो तो एक ही चतुष्कोण कुण्ड बनाकर उसमें छः आहुतियें देनी चाहियें । यदि वैसा भी संभव न हो तो पृथ्वीपर ही रंगावली से चौकोर कुण्ड बना लेना चाहिये ।

❀ स्रुक् और स्रुवा ❀

अग्नि में जिस पात्र से संकल्प (होम द्रव्य) डाला जाता है उसे स्रुवा कहते हैं तथा जिससे घी होमा जाता है उसे स्रुक् कहते हैं। स्रुक् बरगद की लकड़ी का तथा स्रुवा चंदन का बनवाना चाहिये या दोनों पीपल की लकड़ी के बनावे पीपल की लकड़ी भी न मिले तो पीपल के पत्ते काम में लेवे ।

॥ समिधा ॥

होम में जो लकड़ियां डाली जाती हैं उसे समिधा कहते हैं । आक, ढाक, आम, पीपल, शमी, बरगद, खदिर (खैर,) अपामार्ग आदि की सूखी घुन रहित लकड़ियां तथा रक्तचंदन, सफेद चंदन आदि की पतली व सीधी लकड़ियों की समिधा बनानी चाहिये ।

॥ साकल्य ॥

बदाम पिस्ता खजूर मंजा वै नारि केलकः ।
दुग्धे प्रचुर सर्पिश्च शर्करा द्राक्षयान्वितम् ।
लवंग कर्पूर सुमिश्रितानां, चूर्ण सितैलादि सुगंधजातैः ।
युक्तं जिनेन्द्रस्य मते प्रशस्तं, होमार्हकं द्रव्य कदंब कंच ॥

बादाम, पिस्ता, छुहारा, जायफल, नारियल, दूध, घी, दाख, लौंग, कपूर, इलायची, धूप, शर्कर, नैवेद्य आदि वस्तुओं का साकल्य कहते हैं साकल्य यजमान की शक्त्यानुसार और घी सब वस्तुओं से दूना होना चाहिये। हवन सामग्री में धान्य, जव, और तिल ये तीन वस्तुएं भी परम आवश्यक हैं। इनमें थोड़ा घी मिलाकर होमना चाहिये इसके अलावा खीर, मावा, लपसी तथा और भी भक्ष्य पदार्थ एवं केले दाड़िम, जामफल गन्ना आदि पके फल भी टुकड़े करके साकल्य में मिलाये जाते हैं

॥ होम के भेद ॥

होम तीन प्रकार से किया जाता है। जलहोम, बालुका होम, कुण्डहोम ।

जल होम–धोये हुवे शुद्ध चावलों के पुंज पर मिट्टी या तान्बे का गोल कुण्डा जोकि उत्तम जल से भरा हो रखकर उसे चंदन, अक्षत, माला, सूत्र आदि से सुशोभित करे उस जल कुण्ड में सात धान्यों से दिक्पालों को तथा ३ धान्यों से नवग्रहों को आहुति देवे। अन्त में नारियल

अथवा किसी पके फल से पूर्णाहुति देवे ।

सात धान्य–चना, उड़द, मूंग, गेहूँ, धान (शालि,) तिल, जौ

तीन धान्य–तिल, धान्य, जौ, ।

॥ बालुका होम ॥

भूमि को गोबर से लींपकर उसपर गन्धोदक का छिड़काव देकर एक हाथ लम्बी व एक हाथ चौड़ी भूमि में नदी की बालू बिछाकर उसपर पीपल आदि की लकड़ियों को शिखर के आकार रखकर उसमें अग्नि प्रज्वलित कर नवग्रह, तथि देवता, दिक्पाल एवं शेष देवताओं को आहुति देवे ।

कुण्ड होम–वेदीपर कुण्ड बनाकर उनमें समिधा जलाकर साकल्य तथा घी आदि होमना चाहिये।

होम की आद्य विधि

होम की सब सामग्री यथा स्थान रख कर होम कराने वाला प्रतिमा के सन्मुख मुख कर बैठे । होम की समाप्ति पर्यंत मौन व्रत धारण करे । पश्चात् चांदी पत्र पर सुगंधित द्रव्य से अग्नि मंडल लिखकर बीच के तीर्थंकर कुंड में स्थापित करे ।

❀ अग्नि मंडल ❀

साथ ही हो कुण्ड की कटनियों पर सफेद तथा पंच रंग सूत्र वेष्ठित कर के कुण्ड में शिखराकार समिधा स्थापित करके कुण्ड की कटी पर आठों दिशाओं में दिग्पालों की स्थापना करने के लिये आठ अक्षत और पुष्प के पुंज रखकर उन पर एक एक सुपारी या बादाम रखदेना चाहिये। कुण्ड के चारों किनारों पर चावल के पुंजरखकर एक एक लघु कलश सुवर्णित जल से भर कर उस पर श्रीफल रख कर केशरिया वस्त्र से आवृत कर विराज मान करना चाहिये कुण्ड के चारों किनारों पर दीपक तथा धूपदान भी रखना आवश्यक है। पश्चात् संध्या या सकलीकरणादि क्रियाकरके निम्न मंत्र पढ़कर सामग्री की शुद्धि करे।

ॐ ह्रीं पवित्रतर जलेन शुद्धि करोमि स्वाहा। इस मंत्र से सामग्री का शोधन करे पश्चात् निम्न मंत्र पढ़कर कपूर या डाभ जलाकर कुंड में अग्नि स्थापन करे।

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं दर्भं निक्षिप्य अग्नि सन्धुक्षणं करोमि स्वाहा।

अब नीचे लिखे अनुसार कुण्डों की पूजा कर अग्नि का आह्वानन करे।

श्री तीर्थनाथ परि निवृत्ति पूज्य काले, आगत्य बहिः सुरपा मुकुटोल्ल सद्भिः।
वह्नि व्रजैर्जिन पदेऽह मुदार भक्त्या, देहुस्तदाग्नि महमर्चयितुं दधामि॥

ॐ ह्रीं प्रथमे चतुरस्रे तीर्थंकर कुण्डे गार्हपत्याग्नयेऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा गणाधि पानां शिव प्राप्ति कालेऽग्नीन्द्रोत्त मांगस्फुरदग्निरेषः।

संस्थाप्य पूज्यः समभाह्वनीयो, सत्कार्य शांतौ विधिना हुतीशः ।

ॐ ह्रीं द्वितीये वृत्ते गणधर कुण्डे आहवनीयाग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री दक्षिणाग्नि पर केवलि स्व शरीर निर्वाण नुताग्नि देव ।

तिरीट संस्फुर दसौमयापि, संस्थाप्य पूजामिसुकार्य शान्त्यै ॥

ॐ ह्रीं त्रिकोणे सामान्य केवलि कुण्डे दक्षिणाग्नयेऽर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।

इसके बाद निराकुलता से आचार्य मंत्रों का उच्चारण करे एवं यजमान (होम करने वाला) प्रत्येक मंत्र के बाद स्वाहा शब्द का उच्चारण करते हुए होम करे ।

॥ अथ पीठिका मंत्र ॥

ॐ सत्यजाताय नमः ॥ १ ॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः ॥ २ ॥ ॐ परम जाताय नमः ॥ ३ ॥
ॐ अनुपम जाताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ स्व प्रधानाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अचलाय नमः ॥ ६ ॥
ॐ अक्षयाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ अव्याबाधाय नमः ॥८॥ ॐ अनंत ज्ञानाय नमः ॥ ९ ॥
ॐ अनंत दर्शनाय नमः ॥१०॥ ॐ अनंत वीर्याय नमः ॥११॥ ॐ अनंत सुखाय नमः ॥१२॥
ॐ नीरजसे नमः ॥ १३ ॥ ॐ निर्मलाय नमः ॥१४॥ ॐ अछेद्याय नमः ॥ १५ ॥
ॐ अभेद्याय नमः ॥ १६ ॥ ॐ अजराय नमः ॥ १७ ॥ ॐ अमराय नमः ॥ १८ ॥
ॐ अप्रमेयाय नमः ॥ १९ ॥ ॐ अगर्भवासाय नमः ॥२०॥ ॐ अक्षोभ्याय नमः ॥ २१ ॥
ॐ अविलीनाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ परमघनाय नमः ॥ २३॥ ॐ परम काष्ठयोग रूपाय नमः ॥२४॥

ॐ लोकाग्र निवासिने नम ॥२५॥ ॐ परम सिद्धेभ्यो नमः ॥२६॥ ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नमः ॥२७॥ ॐ केवलि सिद्धेभ्यो नमः ॥२८॥ ॐ अन्त कृत्सिद्धेभ्यो नमः ॥२९॥ ॐ परंपर सिद्धेभ्यो नमः ॥३०॥ ॐ अनादि परम सिद्धेभ्यो नमः ॥३१॥ ॐ अनाद्यनुत यसिद्धेभ्यो नमः ॥ ३२ ॥ ॐ सम्यग्दृष्टे आसन्न भव्य निर्वाण पूजार्ह अग्नीन्द्राय नमः स्वाहा ॥ ३३ ॥

इस प्रकार ३३ आहुतियां देने के पश्चात् निम्न काम्य मंत्र पढ़कर घी की ३ आहुति देवे ।

सेवाफलं षट् परमस्थानं भवतु अपमृत्यु विनाशनं भवतु ॥

फिर नीचे लिखे पांच मंत्रों को पढ़कर तर्पण करे ।

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिनस्त पर्यामि स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ २ ॥ ,, ह्रीं आचार्य परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥३॥ ,, ह्रीं उपाध्याय परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥४॥ ,, ह्रीं सर्वसाधु परमेष्ठिनस्तर्पयामि स्वाहा ॥ ५ ॥ (अवान्तरे पंच तर्पणानि)

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर कुंण्ड के चारों कोनों में दूध, दही इक्षुरस और सुगंधित जल की धारा देनी चाहिये । धारा थोड़ी २ और पतली ही देना चाहिये जिससे अग्नि न बुझने पावे । इस को पर्युक्षण कहते हैं ।

ॐ ह्रीं अग्निं परिषेचयामि स्वाहा (इति पर्युक्षणं)

इसके अनंतर नीचे लिखे मंत्रों से २१ आहुतियां देवे ।

ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं सूरिभ्यः स्वाहा ॥३॥ ,, ह्रीं पाठकेभ्यः स्वाहा ॥ ४ ॥ ,, ह्रीं सर्व साधुभ्यः स्वाहा ॥५॥ ,, ह्रीं जिन धर्मेभ्यः स्वाहा ॥६॥ ,, ह्रीं जिनागमेभ्यः स्वाहा ॥ ७ ॥ ,, ह्रीं जिनालयेभ्यः स्वाहा ॥ ८ ॥ ,, ह्रीं सम्यगदर्शनाय स्वाहा ॥९॥ ,, ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा ॥ १० ॥ ,, ह्रीं सम्यक्चारित्राय स्वाहा ॥११॥ ,, ह्रीं चतुर्विंशति यक्षेभ्यः स्वाहा ॥ १२ ॥ ,, ह्रीं चतुर्विंशति यक्षीभ्यः स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्दश भवनवासिभ्यः स्वाहा ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं अष्ट विध व्यन्तरेभ्यः स्वाहा ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं चतुर्विध ज्योतिष्केन्द्रेभ्यः स्वाहा ॥ १६ ॥ ,, द्वादश विध कल्पवासिभ्यः स्वाहा ॥ १७ ॥ ,, अस्मद् गुरुभ्यः स्वाहा ॥ १८ ॥ ,, अस्मद् विद्या गुरुभ्यः स्वाहा ॥ १९ ॥ ,, स्वाहा ॥ २० ॥ भूः स्वाहा ॥ २१ ॥ भुवः स्वाहा ॥ २२ ॥ स्वः स्वाहा ॥ २३ ॥

इस प्रकार २३ आहुतियां देकर निम्न काम्य मंत्र से घी की ३ आहुतियां देवे ।

सेवा फलं पट् परमस्थानं भवतु । अप मृत्यु विनाशनं भवतु ।

इसके पश्चात् ॐ ह्रीं अर्हत्पारमेष्ठिनस्तर्पयामि । इत्यादि पांच मंत्रो से तर्पण करे । और ॐ ह्रीं अग्निं परि सेचयामि इसमंत्र से कुंड के चारों कोनों में दूध दही आदि की धारा देकर पर्युक्षण करे ।

❀ निस्तारक मंत्र ❀

ॐ षट् कर्मणे स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ग्राम पतये स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ अनादि क्षत्रियाय स्वाहा ॥ ३ ॥ ,, स्नात काय स्वाहा ॥ ४ ॥ ,, श्रावकाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ,, देवब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ६ ॥ ,, सुब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ७ ॥ ,, अनुपमाय स्वाहा ॥ ८ ॥ ,, सम्यग्दृष्टे ! सम्यग्दृष्टे ! निधपते वैश्रवण ! वैश्रवण ! स्वाहा ॥ ९ ॥

पूर्ववत् काम्य मंत्र पढ़कर घी की ३ आहुतियां देवे। तर्पण मंत्र से ५ बार तर्पण कर पर्युक्षण करे ।

❀ शोड़ष विद्या देवी मंत्र ❀

ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं प्रज्ञप्त्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं वज्रशृंखलायै नमः ॥ ३ ॥ ,, वज्रांकुशायै नमः ॥ ४ ॥ ,, जाम्बूनद्यै नमः ॥ ५ ॥ ,, पुरुषदत्तायै नमः ॥ ६ ॥ ,, काली देव्यै नमः ॥७॥ ,, महाकाली देव्यै नमः ॥८॥ ,, गौरी देव्यै नमः ॥ ९ ॥ ,, गांधारी देव्यै नमः ॥ १० ॥ ,, ज्वाला मालिनी देव्यै नमः ॥११॥ ,, मानवी देव्यै नमः ॥१२॥ ,, वैराटी देव्यै नमः ॥ १३ ॥ ,, अच्युतायै नमः ॥ १४ ॥ ,, मानसी देव्यै नमः ॥१५॥ ,, महामानसी देव्यै नमः ॥ १६ ॥

पूर्ववत् काम्य मंत्र पढ़कर घी की तीन आहुतियां दे पश्चात् ५ बार तर्पण और पर्युक्षण करे ।

❀ जयादि अष्ट देवी मंत्र ❀

ॐ ह्रीं जयायै नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विजयायै नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अजितायै नमः ॥ ३ ॥
,, अपराजितायै नमः ॥ ४ ॥ ,, भ्रामर्यै नमः ॥ ५ ॥ ,, मोहायै नमः ॥ ६ ॥
,, स्तंभायै नमः ॥ ७ ॥ ,, स्तंभिन्यै नमः ॥ ८ ॥

पूर्ववत् काम्य मंत्र से घी की ३ आहुतियां देकर तर्पण व पर्युक्षण करे ।

॥ नवग्रह मंत्र ॥

ॐ ह्रीं हँः आदित्याय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं हँः सोमाय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं हँः भौमाय नमः ॥ ३ ॥
,, बुधाय नमः ॥ ४ ॥ ,, बृहस्पतये नमः ॥ ५ ॥ ,, शुक्राय नमः ॥ ६ ॥
,, शनिश्चराय नमः ॥ ७ ॥ ,, राहवे नमः ॥ ८ ॥ ,, केतवे नमः ॥ ९ ॥

पश्चात् पूर्ववत् काम्य मंत्र पढ़ कर घी की ३ आहुतियां देवे । एवं ५ तर्पण कर पर्युक्षण करे ।

॥ दश दिक्पाल मंत्र ॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं इन्द्राय स्वाहा ॥१॥ ॐ आँ क्रौं ह्रीं अग्नये स्वाहा ॥२॥ ॐ आँ क्रौं ह्रीं यमाय स्वाहा ॥३॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत्याय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुणाय स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं
पवनाय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेराय स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं ईशानाय स्वाहा

ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणीन्द्राय स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ आं क्रौं ह्रीं सोमाय स्वाहा ॥ १० ॥

इस प्रकार २३+२५+९+१६+८+९+१० कुल १०८ आहुतियां देकर पूर्ववत् काम्य मंत्र पढ़कर घी की ३ आहुतियां देकर तर्पण व पर्युक्षण करे ।

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़ कर पूर्णाहुति देवे । पूर्णाहुतिका मंत्र आरंभ करते ही अन्तपर्यंत जब तक मंत्र पूरा न हो तब तक अग्नि में घी की धारा करते रहना चाहिये । पूर्णाहुति में चून के अष्ट द्रव्य पान [illegible] श्रीफल या सुपारी अवश्य होना चाहिये ।

॥ पूर्णाहुति मंत्र ॥

ॐ तिथि देवाः पंच दशवा प्रसीदन्तु ।
नव ग्रहदेवाः प्रत्यवायहरा भवन्तु ।
भावनादयो द्वात्रिंशद्देवा इन्द्राः प्रसीदन्तु ।
इन्द्रादयो विश्वे दिक्पाला पालयंतु ।

अग्नीन्द्र मौल्युद्भवाप्यग्निदेवता प्रसन्ना भवतु ।
शेषाः सर्वेपिदेवा एते राजानं विराजयंतु ।
दातारं तर्पयंतु । संघं श्लाघयन्तु ।
वृष्टिं वर्षयंतु । विघ्नं विघात यन्तु ।
मारीं निवारयन्तु ।

ॐ ह्रीं नमोर्हते भगवते पूर्ण ज्वलित ज्ञानाय सम्पूर्ण कलाभ्यां पूर्णाहुति विदध्महे ।

(इति पूर्णाहुतिः)

पूर्णाहुति देने के बाद हाथ जोड़ कर निम्न शांति प्रार्थना का मंत्र पढ़े

ॐ दर्पणोद्योत ज्ञान प्रज्वलित सर्वलोक प्रकाशक भगवन्नर्हन् श्रद्धां मेधां प्रज्ञां बुद्धिं श्रियं बलं आयुष्यं तेजः आरोग्यं सर्व शांति विधेहि स्वाहा पश्चात् शांति धारा देकर भगवान के चरणों में पुष्पांजलि चढ़ाकर चतुर्विंशति तीर्थंकरों का स्तवन कर पंचांग नमस्कार करे तथा अग्नि कुन्ड में से उत्तम भस्म लेकर याजक (आचार्य) स्वयं अपने ललाट पर लगावे और अन्य सबको लगाने देवे। पश्चात् प्रतिमाजी व यंत्रादिको यथास्थान विराजित कर देवों को विसर्जन करे ॥

❀ समाप्त ❀